उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी

बी.ए. कर्मकाण्ड (पंचम सेमेस्टर)

BAKA(N)-301

(CORE COURSE)

सूक्त पाठ, स्तोत्र, व्रतोद्यापन एवं दानादि विधान

मानविकी विद्याशाखा

भारतीय कर्मकाण्ड विभाग

तीनपानी बाईपास रोड , ट्रॉन्सपोर्ट नगर के पीछे
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139
फोन नं .05946- 261122 , 261123
टॉल फ्री न0 18001804025
Fax No.- 05946-264232, E-mail- info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

विशेषज्ञ समिति एवं अध्ययन समिति

प्रोफेसर ओमप्रकाश सिंह नेगी – अध्यक्ष
कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रोफेसर रेनू प्रकाश – निदेशक
मानविकी विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी – समन्वयक
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रोफेसर रामराज उपाध्याय
अध्यक्षचर, पौरोहित्य विभाग, श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रोफेसर उपेन्द्र त्रिपाठी
अध्यक्ष, वेद विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रोफेसर रामानुज उपाध्याय
अध्यक्षचर, विभाग, श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजन एवं सम्पादन

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, वैदिक ज्योतिष-भारतीय कर्मकाण्ड विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी

इकाई लेखक	खण्ड	इकाई संख्या
प्रोफेसर रामराज उपाध्याय पौरोहित्य विभाग श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	1	**1 से 10**
डॉ. धनेश कुमार पाण्डेय असिस्टेन्ट प्रोफेसर, कर्मकाण्ड एवं वेद विभाग हिमाचल आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, जांग्ला, शिमला	2	**11 से 18**

कापीराइट @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रथम संस्करण : 2025 **ISBN No. -**

प्रकाशक : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी **मुद्रक :**

नोटः - इस पुस्तक के समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी स्थित सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।

सूक्त पाठ, स्तोत्र, व्रतोद्यापन एवं दानादि विधान CORE COURSE BAKA(N)-301

बी.ए. पंचम सेमेस्टर – (कर्मकाण्ड)

क्रम व इकाइयों के नाम	पृष्ठ संख्या
खण्ड 1 सूक्त पाठ एवं सहस्रनाम	**2**
इकाई 1 सूर्यसूक्त	3-18
इकाई 2 उत्तरनारायण सूक्त	19-33
इकाई 3 ललितासहस्रनाम	34-51
इकाई 4 श्रीशिवसहस्रनाम	52-69
इकाई 5 श्रीदुर्गासहस्रनाम	70-91
खण्ड 2 स्तोत्र पाठ	**92**
इकाई 6 सत्यनारायणाष्टक	93-107
इकाई 7 श्रीगणेशपंचरत्न	108-123
इकाई 8 श्रीशिवमानसपूजास्तोत्र	124-138
इकाई 9 मधुराष्टक	139-153
इकाई 10 रामरक्षास्तोत्र	154-170
खण्ड 3 व्रत एवं उद्यापन	**171**
इकाई 11 एकादशी व्रत एवं उद्यापन	172-187
इकाई 12 प्रदोष व्रत एवं उद्यापन	188-198
इकाई 13 वटसावित्री व्रत एवं उद्यापन	199-216
इकाई 14 ऋषि पंचमी व्रत एवं उद्यापन	217-231
इकाई 15 श्रीगणेश चतुर्थी व्रत एवं उद्यापन	232-245
खण्ड 4 दान विधान	**246**
इकाई 16 गोदान विधान	247-261
इकाई 17 शैय्या दान विधान	262-272
इकाई 18 विविध दान विधान	273-285

बी.ए. (पंचम सेमेस्टर) कर्मकाण्ड

CORE COURSE

सूक्त पाठ, स्तोत्र, व्रतोद्यापन एवं दानादि विधान

BAKN(N)-301

खण्ड - 1
सूक्त पाठ एवं सहस्रनाम

इकाई -1 सूर्य सूक्त

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 सूर्य सूक्त एवं स्तोत्र –

1.3.1 वैदिक सूर्य सूक्त (यजुर्वेदोक्त)

1.3.2 वैदिक सूर्य सूक्त (ऋग्वेदोक्त)

1.3.3 आदित्य ह्रदय स्तोत्र

1.3.4 चाक्षुष उपनिषद्

1.4 सारांश

1.5 पारिभाषिक शब्दावली

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.8 सहायक पाठ्य सामग्री

1.9 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई बी.ए. कर्मकाण्ड पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पंचम सेमेस्टर की BAKA(N)-301 से सम्बन्धित है। यह सर्वविदित है कि कर्मकाण्ड भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है| पारिवारिक व्यवस्था में पलने बढ़ने वाले हम सभी लोग पारंपरिक स्वरूप को सम्मानित करते हुए अपने जीवन में होने वाली समस्त गतिविधियों में कर्मकाण्ड को किसी न किसी रूप में अवश्य पाते हैं| चाहे वह पुत्र जन्म का अवसर हो या विवाह हो या मृत्यु हो या अन्य कोई समय हो ,उस अवसर को सुखद बनाने के लिए कर्मकाण्ड द्वारा आराधना का हमारा उपक्रम रहा है| भारतीय शास्त्रों की यह मान्यता है कि मानव जीवन का सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी देवता से सम्बंधित है| हमारे जीवन के शुभ या अशुभ समय में देवताओं या ग्रहों का योगदान है| इसी प्रकार के एक देवता हैं जिनका नाम है - सूर्य|

अतः प्रस्तुत इकाई में आप जानेगें कि सूर्य की प्रसन्नता के लिए किस सूक्त, स्तोत्र का पाठ किया जाना चाहिए और इन सूक्त या स्तोत्रों का क्या फल हमारे जीवन में हमें प्राप्त होता है|

1.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ सकेगें कि –

1 – मानव जीवन में सूर्य का क्या महत्त्व है ?

2 – सूर्य को वेदों में क्या स्थान प्राप्त है ?

3 - सूर्य की प्रसन्नता के लिए क्या करना चाहिए ?

4 - नेत्र रोग निवारण में सूर्य का योगदान क्या है ?

5 – सूर्य उपासना की व्यस्था कर्मकाण्ड में किस तरह व्यवस्थित है ?

6– सूर्य के सम्बन्ध में अगस्त्य ऋषि का क्या कथन है ?

1.3 सूर्य सूक्त एवं स्तोत्र –

सूर्य सूक्त भगवान सूर्य से सम्बंधित सूक्त है| इसमें सूर्य संबंधी ज्ञान निहित है| सूर्य प्रकृति के प्रत्यक्ष देवता हैं| इनके दर्शन से दिन का प्रारंभ एवं इनके अस्त होने से दिन का अंत एवं रात्रि का प्रारंभ माना जाता है| इनको नवग्रहों का राजा या ग्रहों में प्रधान

भी कहा गया है| सूर्य को प्रेरक देवता के रूप में भारतीय संस्कृति स्वीकार करती है| सूर्य उदय के साथ ही समस्त जगत् को प्रेरणा देतें हैं कि आप सभी लोग निद्रा को त्यागकर अपने दैनिक कार्यों में लग जाइए| न केवल समस्त विवेकी जन अपितु पशु पक्षी भी सूर्य उदय के साथ ही अपने- अपने कार्यों में लग जाते हैं| यहाँ सूर्य से सम्बंधित विविध सूक्तों एवं स्तोत्रों को इस प्रकार दिया जा रहा है-

1.3.1. वैदिक सूर्य सूक्त (यजुर्वेदोक्त)

इस सूर्य सूक्त के ऋषि विभ्राड् हैं , देवता सूर्य और छन्द जगती है| सूर्य सौर मण्डल के प्रत्यक्ष देवता हैं जिनका दर्शन सबको प्रतिदिन होता रहता है | पञ्च देवों की उपासना में भी सूर्य नारायण का महत्त्व पूर्ण स्थान है | भगवान श्री सूर्य नारायण को प्रसन्न करने के लिए प्रतिदिन के उपस्थान एवं प्रार्थना में सूर्य सूक्त के पाठ करने की परम्परा है| शरीर के असाध्य रोगों से मुक्ति पाने में सूर्य सूक्त अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है| यजुर्वेद के अनुसार सूर्य सूक्त अधोलिखित है --

विभ्राड्वृहत्पिबतुसोम्यंमद्ध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्|
व्वात्जूतोयोऽअभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विराजति ||1||
उदुत्यंजात वेद्संदेवं वहन्ति केशवः| दृशे विश्वाय सूर्य्यम् ||2||
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तंजनाँ 2 ऽ अनुँ त्वं व्वरुण पश्यसि ||3||
दैव्यावध्वर्जू ऽ आगत ठँ रथेनसूर्य्यत्वचा | मध्वा यज्ञं ठँ समंजाथे|
तं प्रत्क्था यं व्वेन श्चित्रं देवानाम् ||4||
तं प्रत्नथापूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिम्बहिर्षद गुँ स्वर्विदम्|
प्रतीचीनं वृजनन्दोहसे धुनिमाशुं जयंतमनुयासुवर्धसे ||5||
अयं ब्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायु रजसो व्विमाने|
इममपा गुँ संगमे सूर्यस्य शिशुन्नविप्रामतिभीरिहंति ||6 ||
चित्रं देवानामुदगाद्नीकं चक्षुर्मित्रस्य व्वरुणस्याग्ने |
आप्रा द्यावा पृथिवी अंतरिक्ष गु सूर्य्य आत्मा जगतस्थस्थुषश्च || 7||
आ न ऽ इडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव ऽ एतु |
अपि यथा युवानो मत्सथानो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ||8||
यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगाऽ अभिसूर्य | सर्वंतदिन्द्रते व्वशे ||9||
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य |विश्वमाभासि रोचनम् ||10||
तत्सूर्यस्यदेवत्त्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं गुं संजभार|

यदेदयुक्तहरितः सधस्थादादात्री वासस्तनुते सिमस्मै ||11||
तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे |
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्ध्वरितः संभरन्ती ||12||

वण्महाँ 2 ||ऽ असि सूर्य्य बडादित्यमहाँ 2 ||ऽ असि ||

महस्ते सतो महिमापनस्यतेऽ द्धादेवमहाँ 2|| ऽ असि ||13|

बट्सूर्य्यश्रवसा महाँ 2 || ऽ असिसत्रादेव महाँ 2|| ऽअसि||

मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो ब्बिभुज्यो तिरदाभ्यम् ||14||

श्रायंत ऽ इव सूर्य्य व्विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत|

व्वसूनिजाते जनमान ऽ ओजसा प्रति भागन्नदीधिम || 15||

अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निर गुँ हसः पिपृता निरवद्यात् |

तन्नो मित्रो व्वरुण मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिविऽ उत द्योः ||16||
आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मृत्यंच |
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्न ||17||

इस सूर्य सूक्त का संक्षेप में हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है –

वायु से प्रेरित आत्मा द्वारा जो महान दीप्तिमान सूर्य, प्रजा की रक्षा तथा पालन पोषण करता है और अनेक प्रकार से शोभा पाता है वह अखंड आयु प्रदान करते हुए मधुर सोम रस का पान करे|1| विश्व की दर्शन क्रिया सम्पादित कराने के लिए अग्नि ज्वाला स्वरूप उदीयमान सूर्य देव को ब्रह्म ज्योतियाँ ऊपर उठाये रखें |2| हे पावक रूप एवं वरुण रूप सूर्य , तुम जिस दृष्टि से ऊर्ध्व गमन करने वाले को देखते हो , उसी कृपा दृष्टि से सभी जनों को देखो |3| हे दिव्य अश्विनी कुमारों, आप भी सूर्य की सी कान्ति वाले रथ में आवें और हविष्य से यज्ञ को परिपूर्ण करें| उसे ही जिसे ज्योतिष्मानों में चन्द्र देव ने प्राचीन विधि से अद्भुत बनाया है |4| यज्ञादि श्रेष्ठ क्रियाओं में अग्रणी रहने वाले और विपरीत पापादि का नाश करने वाले, श्रेष्ठ विस्तारवाले, श्रेष्ठ आसन पर स्थित,स्वर्ग के ज्ञाता आपका हम पुरातन विधि से, पूर्ण विधि से, सामान्य विधि से और इस प्रस्तुत विधि से वरण करते हैं |5| जल के निर्माण के समय यह ज्योतिर्मंडल से आवृत चन्द्रमा अन्तरिक्षीय जल को प्रेरित करता है , इस जल समागम के समय ब्राह्मण सरल वाणी से वेन (चन्द्रमा) की स्तुति करते हैं |6| क्या यह आश्चर्य नही है कि स्थावर

जंगम जगत् की आत्मा , किरणों का पुंज , अग्नि ,मित्र और वरुण का नेत्र रूप यह सूर्य भूलोक , द्युलोक और अंतरिक्ष को पूर्ण करता हुआ उदित होता है |7| सुन्दर अन्नों वाले हमारे प्रशंसनीय यज्ञ में सर्व हितैषी सूर्य आगमन करें| हे अजर देवों , जैसे भी हो आप लोग तृप्त हों और आगमन काल में हमारे सम्पूर्ण गौ आदि को बुद्धि पूर्वक तृप्त करें |8| हे इंद्र, हे सूर्य, आज आप जहाँ कहीं भी विद्यमान हो वे सभी प्रदेश आपके अधीन है |9| हे विश्व के प्रकाशक सूर्य, आप देखते ही देखते विश्व का अतिक्रमण करने वालें हैं, इस दीप्तिमान विश्व के आप ही प्रकाशक हैं |10| सूर्य के देवत्व की चर्चा करते हुये बतलाया गया है कि सूर्य इस सृष्ट जगत के मध्य स्थित होकर समस्त ग्रहों को धारण करते हैं| आकाश में जब सूर्य हरित वर्ण की किरणों से संयुक्त हो जाते हैं तब रात्रि सबके लिए अन्धकार का आवरण फैला देती है|11| सूर्य ही मित्र एवं वरुण का स्वरूप धारण कर द्युलोक के अंक में से सबको देखतें हैं | सूर्य के कई स्वरूप हैं जिसमें एक स्वरूप अनन्त शुक्ल देदीप्यमान है जो अद्वैत रूप में है, दूसरा कृष्ण वर्ण का जिसे इन्द्रियां ग्रहण करती है जो द्वैत रूप में जाना जाता है|12|| हे सूर्य परमात्मन् आप सत्य ही महान हैं, हे आदित्य आप सत्य ही महान हैं| आपके महान एवं सद्रूप होने के कारण ही आपकी महिमा गाई जाती है| आप सत्य ही महान हैं |१३| हे सूर्य देवता आप सत्य ही यश से महान हैं , यज्ञ से महान और महिमा से भी महान है| आप देवों के हितकारी एवं अग्रणी हैं और अदम्य व्यापक ज्योति वाले हैं|१४| जिन सूर्य की आश्रय करने वाली किरणें इन्द्र की सम्पूर्ण वृष्टि संपत्ति का भक्षण करती हैं और वर्षण करने के समय यथा भाग उत्पन्न करती हैं उन सूर्य को हम सदा धारण करते हैं|१५| हे देवों , आज सूर्य का उदय हमारे पापों और दोषों को दूर करें और मित्र, वरुण, अदिति , सिन्धु, पृथिवी तथा स्वर्ग सब के सब मेरी इस वाणी का अनुमोदन करें|१६| सबको प्रेरित करने वाले सूर्य देव स्वर्णिम रथ में विराजमान होकर अन्धकार पूर्ण अंतरिक्ष पथ में विचरते हुए देवों और मानवों को उनके कार्य में लगाते हुए लोंकों को देखते हुए चले आ रहे हैं |१७||

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

1- यजुर्वेदोक्त सूर्य सूक्त के ऋषि विभ्राड् हैं |
2- यजुर्वेदोक्त सूर्य सूक्त के देवता सूर्य और छन्द जगती है |
3- सूर्य सौर मण्डल के प्रत्यक्ष देवता नहीं हैं |
4- पञ्च देवों की उपासना में सूर्य नारायण का महत्त्वपूर्ण स्थान है |

5- भगवान श्री सूर्य नारायण को प्रसन्न करने के लिए प्रतिदिन के उपस्थान एवं प्रार्थना में सूर्य सूक्त के पाठ करने की परम्परा है |

1.3.2 वैदिक सूर्य सूक्त (ऋग्वेदोक्त)

इस ऋग्वेदीय सूर्य सूक्त के ऋषि कुत्स आंगिरस् , देवता सूर्य और छन्द त्रिष्टुप् है| इस सूक्त के देवता सूर्य सम्पूर्ण विश्व के प्रकाशक के रूप में ज्योतिर्मय नेत्र है , जगत की आत्मा है और प्राणिमात्र को सत्कर्मों में प्रेरित करने वाले देव हैं | देवमंडल में इनका अन्यतम एवं विशिष्ट स्थान है, क्योंकि ये जीवमात्र के लिए प्रत्यक्ष गोचर हैं | ये सभी के लिए आरोग्य प्रदान करने वाले एवं सर्वविध कल्याण करने वाले देवता हैं , अतः सभी के लिए स्तवनीय और वन्दनीय है –

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः|
आ प्रा द्यावा पृथिवी अंतरिक्ष गुँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ||1||
सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्त्यो न योषामभ्येति पश्चात् |
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम् |2|
भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः |
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्तुः परिद्यावा पृथिवी यान्ति सद्यः|3|
तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्वितत गुँ संजभार|
यदेदयुक्तहरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै|4|
तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे|
अनन्तमन्यद्रुशदस्यपाजः कृष्ण मन्यध्वरितः सं भरन्ति |5|
अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निर गुँ हसः पिपृता निरवद्यात्|
तन्नो मित्रो वरुणोमामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवि उत द्यौः |6|

उपरोक्त सूर्य सूक्त का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है –

प्रकाशमान रश्मियों का समूह सूर्य मण्डल में सूर्य के रूप में उदित हो रहे हैं | ये सूर्य ही मित्र ,वरुण, अग्नि और सम्पूर्ण विश्व के प्रकाशक ज्योतिर्मय नेत्र के समान है | इन्होनें उदित होकर द्युलोक पृथिवी और अंतरिक्ष लोक को अपने तेज से चारो ओर से देदीप्यमान कर दिया है | इस मण्डल के सूर्य अन्तर्यामी है इसलिए सबके प्रेरक परमात्मा है तथा जंगम एवं स्थावर सृष्टि की आत्मा है |1 |

सूर्य गुणमयी ऊषा देवी के पीछे- पीछे चलते हैं | जब प्रकाश की देवी ऊषा प्रकट होती है तब सूर्य की उपासना करने के लिए कर्मनिष्ठ मनुष्य अपने कर्त्तव्य कर्म का निर्वाह

करते हैं | सूर्य कल्याण रूप हैं और उनकी आराधना से कर्तव्य कर्म के पालन से कल्याण की प्राप्ति होती है | 2|

सूर्य का यह रश्मिमंडल अश्व के समान उन्हें सर्वत्र पहुचाने वाला चित्र विचित्र एवं कल्याण रूप है | यह प्रतिदिन अपने पथ पर ही चलता है एवं अर्चनीय तथा वन्दनीय है | यह सबको नमन की प्रेरणा देता है और स्वयं द्युलोक के ऊपर निवास करता है | यह अत्यन्त तीव्र वेग से द्युलोक और पृथ्वी का परिभ्रमण करता है | 3 |

सर्वान्तर्यामी सूर्य का यह महत्त्व है कि प्रारंभ किये हुए अपरिसमाप्त कर्म को ज्यों का त्यों छोड़कर अस्ताचल जाते समय अपने किरणों को अपने में समेट लेता है | साथ ही उसी समय अपने रस आकर्षी किरणों एवं अश्वों को एक स्थान से खीचकर दूसरे स्थान पर नियुक्त कर देतें हैं | उसी समय रात्रि अंधकार के आवरण से सबको आवृत कर लेती है |4|

सूर्य नारायण प्रातः काल मित्र ,वरुण और समग्र सृष्टि को सामने से प्रकाशित करने के लिए पूर्व दिशा के आकाशीय क्षितिज से अपना प्रकाशक रूप प्रकट करते हैं | इनकी रस ग्राही रश्मियाँ अथवा हरे घोड़े बलशाली रात्रि के निवारण में विलक्षण तेज धारण करते हैं | उन्हीं के अन्यत्र जाने के कारण रात्रि में काले अन्धकार कि सृष्टि होती है |5|

हे प्रकाशमान रश्मियों सूर्योदय के समय आप लोग इधर- उधर विखर कर हमें पापों से बचा लें| न केवल पापों से अपितु निन्दनीय से , गर्हणीय से , दुःख दारिद्र्य से , सबसे हमारी रक्षा करें | हमने जो कुछ भी कहा है उसका मित्र, वरुण, अदिति, सिन्धु, पृथिवी और द्युलोक के अधिष्ठातृ देवता आदर करें ,अनुमोदन करें और वे भी हमारी रक्षा करें|6|

अभ्यास प्रश्न – 2

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

1 - इस ऋग्वेदीय सूर्य सूक्त के ऋषि कुत्स आंगिरस नहीं हैं|

1 - इस सूक्त के देवता सूर्य और छन्द त्रिष्टुप है|

2 - इस सूक्त के देवता सूर्य सम्पूर्ण विश्व के प्रकाशक नहीं हैं |

4 - सूर्य ज्योतिर्मय नेत्र हैं |

5 - सूर्य जगत की आत्मा है और प्राणिमात्र को सत्कर्मों में प्रेरित करने वाले देव हैं |

1.3.3 . आदित्य हृदय स्तोत्र

आदित्य हृदय स्तोत्र भगवान सूर्य्य को प्रसन्न करने का महत्त्वपूर्ण स्तोत्र है | विधि पूर्वक आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ व्यक्ति की मनोकामना को पूर्ण करता है |

विनियोग – ॐ आदित्यहृदयस्तोत्रस्य अगस्त्यऋषिरनुष्टुप् छन्दः , आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च पाठे विनियोगः||

ऋष्यादिन्यासः – ॐ अगस्त्य ऋषये नमः शिरसि| ॐ अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे | ॐ आदित्यहृदयभूतब्रह्मदेवतायै नमः हृदि | ॐ बीजाय नमः गुह्ये | ॐ रश्मिमते शक्तये नमः पादयोः | ॐ तत्सवितुरित्यादि गायत्री कीलकाय नमः नाभौ |

करन्यास – इस स्तोत्र के अंग न्यास एवं करन्यास केवल प्रणव से, गायत्री मन्त्र से या रश्मिमते आदि छः नामों से यानी तीन प्रकार से किये जाते हैं | यहाँ नाम मन्त्र से न्यास इस प्रकार दिया जा रहा है –

ॐ रश्मिमते अंगुष्ठाभ्यां नमः| ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः| ॐ देवासुर नमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः| ॐ विवश्वते अनामिकाभ्यां नमः| ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः| ॐ भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः |

हृदयादिन्यासः

ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः| ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा | ॐ देवासुर नमस्कृताय शिखायै वषट्| ॐ विवश्वते कवचाय हुम् | ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट् | ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट् |

इस प्रकार न्यास करके भगवान सूर्य का ध्यान एवं नमस्कार पूर्वक श्री आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए |

श्री- आदित्य- हृदय- स्तोत्रम्

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम् |
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ||1|
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतोरणम् |
उपागम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा ||2|
राम राम महाबाहो श्रृणु गुह्यं सनातनम् |
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ||3|
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् |
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ||4|
सर्व मंगलमांगल्यं सर्वपापप्रणाशनम् |
चिंता -शोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ||5|
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् |
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ||6|
सर्वदेवात्मकोह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः |
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ||7|
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः |
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपाम्पतिः ||8|
पितरो वसवः साध्या अस्विनौ मरुतो मनुः |
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राणा ऋतुकर्ता प्रभाकरः ||9|
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान् |
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ||10|
हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् |
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽ शुमान् |11 |
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽ हस्करो रविः ||
अग्निगर्भो ऽ दितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः|12|
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुस्सामपारगः |
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः||13|
आतपी मण्डली मृत्युः पिंगलः सर्वतापनः|

कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ||14|
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः |
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोस्तुते ||15|
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः|
ज्योतिर्गणानाम्पतये दिनाधिपतये नमः ||16|
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः |
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ||17|
नम उग्राय वीराय सारंगाय नमो नमः|
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचंडाय नमोऽस्तु ते ||18 |
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे |
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ||19|
हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने |
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ||20|
तप्तचामीकराभाय हरये विश्व कर्मणे |
नमस्तमोऽ भिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ||21|
नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः |
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ||22|
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः |
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ||23|
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च |
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परम प्रभुः ||24|
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च |
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ||25 |
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत् पतिम् |
एतत् त्रिगुणितं जस्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ||26 |
अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावण त्वं जहिष्यसि |
एवमुक्त्वा ततो ऽ गस्त्यो जगाम स यथा गतम् ||27 |
एतत्च्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽ भवत् तदा |
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् || 28 |
आदित्यं प्रेक्ष्य जस्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् |

त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ||29 |
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागतम् |
सर्वयत्नेन महता वृत्तस्तस्य वधे ऽ भवत् ||30 |
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामः मुदित मनाः परमं प्रहिष्यमाणः |
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ||31|

|| इति श्रीवाल्मीकीये रामायणे युद्धकाण्डे अगस्त्यप्रोक्तमादित्यहृदयस्तोत्रम् ||

यह वाल्मीकि रामायण में ऋषि अगस्त्य प्रोक्त आदित्य ह्रदय स्तोत्र है|

अभ्यास प्रश्न – 3

निम्नलिखित में रिक्त स्थान की पूर्ति करिए –

1- आदित्य ह्रदय स्तोत्र भगवान सूर्य्य को ------ करने का महत्वपूर्ण स्तोत्र है |

2- विधि पूर्वक आदित्य ह्रदय स्तोत्र का पाठ व्यक्ति की मनोकामना को ----- करता है |

3- ॐ अगस्त्य ऋषये नमः ---------|

4 – आदित्य हृदय स्तोत्र के अंग न्यास एवं करन्यास केवल प्रणव से, गायत्री मन्त्र से या रश्मिमते आदि छः नामों से यानी --------प्रकार से किये जाते हैं |

5 – हृदयादिन्यास में ॐ रश्मिमते ------- नमः |

1.3.4 . चाक्षुष उपनिषद्

चाक्षुषी विद्या

इस चाक्षुषी विद्या का पाठ नेत्र सम्बन्धी समस्त रोगों को दूर करने के लिए किया

जाता है| इस स्तोत्र के पाठ करने से आँख की ज्योति स्थिर रहती है| जन्म कुंडली में नेत्र भाव जिसका कमजोर हो ऐसे लोगों को चक्षुषी विद्या का पाठ प्रतिदिन करना चाहिए| इस विद्या का पाठ करने वाले लोगों के नेत्र ही नही अपितु उनके कुल में कोई भी अन्धा नही होता है| इसकी विधि बतलाते हुए कहा गया है कि पाठ के अंत में जल में गंध, अक्षत, पुष्प इत्यादि डालकर सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए| यह कृष्ण यजुर्वेदीया चाक्षुषी विद्या है|

विनियोग – हाथ में जल लेकर अग्रलिखित विनियोग बोलना चाहिए –

ॐअस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्यऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्योदेवता चक्षूरोगनिवृत्तये विनियोग:|

ॐ चक्षु: चक्षु: चक्षु: तेज: स्थिरो भव| माँ पाहि पाहि त्वरितं चक्षू रोगान् शमय शमय| मम जात रूपं तेजो दर्शय दर्शय| यथा अहम अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय| कल्याणं कुरु कुरु| यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानी चक्षु: प्रतिरोधक- दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय|

नम: चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय ॐ नम: करुणाकरायामृताय | ॐ नम: सूर्यायाक्षितेजसे नम:| खेचराय नम:| महते नम:| रजसे नम:| तमसे नम:| असतो मा सद् गमय| तमसो मा ज्योतिर्गमय | मृत्योर्मा अमृतं गमय| उष्णो भगवान् छुचि रूप:| हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः|

य इमां चाक्षुषमति विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति| न तस्य कुले अन्धो भवति| अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यक् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति| ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा|

श्रीकृष्णयजुर्वेदीया चाक्षुषी विद्या सम्पूर्णा

अभ्यास प्रश्न – 4

निम्नलिखित में रिक्त स्थान की पूर्ति करिए –

1 - चाक्षुषी विद्या का पाठ ---- सम्बन्धी समस्त रोगों को दूर करने के लिए किया जाता है |

2- इस स्तोत्र के पाठ करने से आँख की ------- स्थिर रहती है |

3-जन्म कुंडली में ------ भाव जिसका कमजोर हो एसे लोगों को चक्षुषी विद्या का पाठ प्रतिदिन करना चाहिए |

4-इस विद्या की विधि बतलाते हुए कहा गया है कि पाठ के अंत में जल में गंध, अक्षत, पुष्प इत्यादि डालकर सूर्य को--------देना चाहिए |

5- श्रीकृष्णयजुर्वेदीया -------------विद्या|

1.4 सारांश

इस पाठ में सूर्य सूक्त के बारे में बतलाया गया है| सनातन धर्म में सूर्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है| सूर्य प्रकृति के प्रत्यक्ष देवता है | सूर्य ही मित्र ,वरुण, अग्नि और सम्पूर्ण विश्व के प्रकाशक ज्योतिर्मय नेत्र के समान है | सूर्य अन्तर्यामी है इसलिए सबके प्रेरक परमात्मा है तथा जंगम एवं स्थावर सृष्टि की आत्मा है| सूर्य की रश्मियाँ गुणमयी हैं| प्रकाश की देवी ऊषा के प्रकटन से सूर्य की उपासना करने के लिए कर्मनिष्ठ मनुष्य अपने कर्त्तव्य कर्म का निर्वाह करते हैं | सूर्य कल्याण रूप हैं और उनकी आराधना से कल्याण की प्राप्ति होती है| सूर्य का रश्मिमंडल अश्व के समान उन्हें सर्वत्र पहुचाने वाला चित्र विचित्र एवं कल्याण रूप है| यह प्रतिदिन अपने पथ पर ही चलता है एवं अर्चनीय तथा वन्दनीय है| सूर्य सबको नमन की प्रेरणा देते हैं और स्वयं द्युलोक के उपर निवास करतें है| सर्वान्तर्यामी सूर्य का यह महत्त्व है कि प्रारंभ किये हुए अपरिसमाप्त कर्म को ज्यों का त्यों छोड़कर अस्ताचल जाते समय अपने किरणों को अपने में समेट लेता है | साथ ही उसी समय अपने रस आकर्षी किरणों एवं अश्वों को एक स्थान से खीचकर दूसरे स्थान पर नियुक्त कर देतें हैं| सूर्य नारायण प्रातः काल मित्र ,वरुण और समग्र सृष्टि को सामने से प्रकाशित करने के लिए पूर्व दिशा के आकाशीय क्षितिज से अपना प्रकाशक रूप प्रकट करते हैं| सूर्य के अन्यत्र जाने के कारण रात्रि में काले अन्धकार की सृष्टि

होती है| सूर्य न केवल पापों से अपितु निन्दनीय कर्मों से , गर्हणीय से , दुःख दारिद्र्य से , सबसे हमारी रक्षा करें|

1.5 पारिभाषिक शब्दावली

आदित्य – सूर्य

चक्षु – आंख

समर –युद्ध

दृष्ट्वा – देखकर

भास्कर- सूर्य

तदा –तब

सृजति – सृजन करता है

प्रेक्ष्य – देखना

मुदित – प्रसन्न

त्रिगुणितं - तीन गुना

युद्धेषु – युद्धों में

विजयिष्यसि – विजयी होगा

अस्मिन् क्षणे - इस क्षण में

एवमुक्त्वा – इस प्रकार कहकर

एतत्च्छ्रुत्वा – यः सुनकर

आदित्यं- सूर्य को

प्रेक्ष्य- देखकर

हर्षमवाप्तवान् – हर्ष प्राप्त किया

त्रिराचम्य- तीन बार आचमन करके

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर—

अभ्यास प्रश्न -1

1- सत्य , 2- सत्य , 3- असत्य ,4 –सत्य ,5- सत्य |

अभ्यास प्रश्न-2

1- असत्य ,2-सत्य ,3-असत्य ,4 –सत्य ,5-सत्य |

अभ्यास प्रश्न 3

1-प्रसन्न ,2- पूर्ण , 3- शिरसि ,4-तीन 5- हृदयाय

अभ्यास प्रश्न 4

1-नेत्र , 2- ज्योति , 3- नेत्र, 4- अर्घ्य ,5- चाक्षुषी

1.7 -सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क – शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी – चतुर्थ अध्याय (सम्पूर्ण) , सम्पादक –पण्डित श्रीवेणीरामशर्मागौण , प्रकाशक – व्यास प्रकाशन डी . १६/१३.मान मन्दिर , वाराणसी |

ख – वेद- कथांक, सूर्यसूक्त पृष्ठ ४३१-४३२. कल्याण पत्रिका तिहत्तरवें वर्ष का प्रकाशन , गीता प्रेस , गोरखपुर |

1.8 सहायक पाठ्य सामग्री

क – नित्य कर्म पूजा प्रकाश , गीता प्रेस ,गोरख पुर – २७३००५ |

ख – सूर्यांक , कल्याण पत्रिका ,गीता प्रेस गोरख पुर – २७३००५ |

1.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. यजुर्वेदोक्त सूर्य सूक्त लिखिए |
2. ऋग्वेदोक्त सूर्य सूक्त का लेखन करें |
3. आदित्य हृदय स्तोत्र का महत्त्व क्या है ?
4. आदित्य हृदय स्तोत्र सविधि लिखें |
5. चाक्षुष उपनिषद् लिखें |

इकाई - 2 उत्तरनारायण सूक्त

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 उत्तर नारायण सूक्त

2.3.1. उत्तर नारायण सूक्त परिचय

2.3.2. उत्तर नारायण सूक्त

2.3.3 उत्तर नारायण सूक्त का हिन्दी अनुवाद

2.3.4 'नारायण- कवचम्' का मूल पाठ

2.3.5 'अच्युताष्टकम्' का मूल पाठ

2.3.6. श्री कमलापत्यष्टकम् का मूल पाठ

2.4 सारांश

2.5 पारिभाषिक शब्दावली

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.8 सहायक पाठ्य सामग्री

2.9 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई बी.ए. पंचम सेमेस्टर से सम्बन्धित है। इस पाठ में उत्तर नारायण सूक्त के बारे में ज्ञान कराया जायेगा| इसके ज्ञान से आप उत्तर नारायण सूक्त के महत्त्व को अच्छी तरह से समझ सकेगें| इस सूक्त का ज्ञान न केवल कर्मकाण्ड से सम्बंधित जनों के लिए अपितु सभी के लिए अनिवार्य बतलाया गया है| आप जानते है कि कर्मकाण्ड भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है| इसमें विभिन्न सूक्तों , मन्त्रों , श्लोकों आदि का प्रयोग होता रहता है | इस सूक्त का प्रयोग प्रायः हमारे और आपके घरों में रुद्राभिषेक के अवसर पर किया जाता है| हालाकि रुद्राभिषेक के अवसर पर बहुत से सूक्तों का प्रयोग होता है जिसमें उत्तर नारायण सूक्त भी है| श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर सन्ध्योपासन के प्रकरण पर भी पारंपरिक विद्वानों द्वारा उत्तर नारायण सूक्त के पाठ की परम्परा पायी जाती है| संस्कार इत्यादि संपादन के अवसर पर चाहे वह पुत्र जन्म का अवसर हो या विवाह हो या मृत्यु हो या अन्य कोई समय हो ,उस अवसर को सुखद बनाने के लिए कर्मकाण्ड द्वारा आराधना का हमारा उपक्रम रहा है जिसमें सूक्त पाठ की प्रवृत्ति देखने को मिलती है| भारतीय शास्त्रों की यह मान्यता है कि मानव जीवन का सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी देवता से सम्बंधित है| उन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए एवं प्राच्य ज्ञान को अर्वाचीन तरीके से विकसित करने के लिए किसी न किसी सूक्त का पाठ व्यक्ति को करना चाहिए जिसमें एक है -उत्तर नारायण सूक्त|

2.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ सकेगें कि –

1– मानव जीवन में उत्तर नारायण सूक्त का क्या महत्त्व है?

2. – उत्तर नारायण सूक्त को वेदों में क्या स्थान प्राप्त है?

3. देवताओं की प्रसन्नता के लिए क्या करना चाहिए?

4- रोग निवारण में उत्तर नारायण सूक्त का योगदान क्या है?

5. सूर्य उपस्थान की व्यस्था कर्मकाण्ड में किस तरह व्यवस्थित है?

6. भगवान विष्णु के सम्बन्ध में उत्तर नारायण सूक्त का क्या कथन है?

2.3 उत्तर नारायण सूक्त –

उत्तर नारायण सूक्त को नारायण सूक्त के नाम से जाना जाता है| इस सूक्त से पहले पुरुष सूक्त आता है जिसमें सोलह मन्त्र पाए जाते हैं| इन सोलह मन्त्रों के बाद उसी अध्याय में छः मन्त्र और शेष बच जाते हैं, जिन्हें उत्तर नारायण सूक्त के नाम से जाना जाता है| इस सूक्त के ऋषि नारायण को माना जाता है इसीलिए इसे नारायण सूक्त कहा जाता है| पुरुष सूक्त के बाद आने के कारण इस सूक्त की प्रसिद्धि उत्तर नारायण सूक्त के रूप में है|

2.3.1. उत्तर नारायण सूक्त परिचय

जैसा कि आप सभी लोग जानते हैं कि उत्तर नारायण सूक्त के ऋषि नारायण हैं, इसलिए इस सूक्त को नारायण सूक्त भी कहा जाता है| इस सूक्त के देवता आदित्य पुरुष हैं और इसका छन्द भूरिगार्षी त्रिष्टुप्, निच्यृदार्षी त्रिष्टुप् एवं आर्ष्यनुष्टुप् है| इस सूक्त में मात्र छः मन्त्र पाए जाते हैं| इस सूक्त में सृष्टि के विकाश के साथ – साथ व्यक्ति के कर्तव्य बोध को ब्यक्त किया गया है| यह सूक्त मानव जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी है| जीवन में कर्तब्य बोध का महत्वपूर्ण स्थान है| कर्तब्य बोध के ज्ञान के अभाव में ब्यक्ति स्व कर्म विरत हो जाता है| स्व कर्म से अलग होने से समस्त दोष उत्पन्न होते हैं| श्रीमद्भगवद्गीता में 'स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य' का आदेश देते हुए कहा गया है कि अपने कर्तब्य कर्म की अभ्यर्चना करो| अभ्यर्चना का मतलब उपासना से है| इस प्रकार उत्तर नारायण सूक्त को समझना मानव जीवन के लिए उपयोगी है|

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

1- उत्तर नारायण सूक्त के ऋषि नारायण है|

2- इस सूक्त के देवता आदित्य पुरुष हैं|

3- इसका छन्द भूरिगार्षी त्रिष्टुप्, निच्यृदार्षी त्रिष्टुप् एवं आर्ष्यनुष्टुप् नही है|

4- इस सूक्त में मात्र छः मन्त्र पाए जाते हैं|

5- इस सूक्त में सृष्टि के विकाश के साथ – साथ व्यक्ति के कर्तव्य बोध को ब्यक्त किया गया है|

2.3.2. उत्तर नारायण सूक्त

उत्तर नारायण सूक्त इस प्रकार है –

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे|
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ||1 ||
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् |
तमेव विदित्वाति मृत्युमेतिनान्यः पन्था विद्यतेऽ यनाय ||2 ||
प्रजापतिश्चरति गर्भे अंतर्जायमानो बहुधा वि जायते |
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्हतस्थुर्भुवना विश्वा ||3||
यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः |
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ||4 ||
रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्|
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्या तस्य देवा असन् वशे ||5 ||
श्रीश्वते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्रा रूपमश्विनौ व्यात्तम्
इष्णन्निषाणामुं म ईषाण सर्व लोकं म इषाण || 6 ||

अभ्यास प्रश्न - 2

निम्नलिखित प्रश्नों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

1- अद्भ्यः ------------ पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे|
2- वेदाहमेतं ----------महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् |
3- प्रजापतिश्चरति -------अंतर्जायमानो बहुधा वि जायते |
4- यो देवेभ्य आतपति ----- देवानां पुरोहितः |
5- रुचं ब्राह्मं जनयन्तो ----- अग्रे तदब्रुवन् |

2.3.3 .उत्तर नारायण सूक्त का हिन्दी अनुवाद—

पृथ्वी आदि की सृष्टि के लिए अपने प्रेम के कारण वह पुरुष जल इत्यादि से परिपूर्ण होकर पहले ही आक्षादित हो गया| उस पुरुष के रूप को धारण करते हुए सूर्य उदित होते हैं , जो मनुष्यों के प्रधान देवता के रूप में जाने जाते हैं| संस्कृत भाष्य में प्राप्त होता है कि त्वष्टा नामक आदित्य यानि सूर्य 'अद्भ्यः' अर्थात् जल से पहले और पृथ्वी से भी पहले उत्पन्न हुआ| पृथ्वी पद को यहाँ पञ्चभूतों का उपलक्षण माना है| अर्थात् पंचभूतों से पहले यह आदित्य उत्पन्न हुआ| यहाँ तक कहा गया है कि ब्रह्म जो विश्वकर्मा है उसने जगत् के निर्माण की इच्छा की| विश्व का सृजन करने के कारण विश्वकर्मा संज्ञा भी ज्ञातब्य है| सामविधान ब्राह्मण भी कहता है कि 'ब्रह्म ह वा इदमग्र आसीत् , तस्य तेजो रसो अत्यरिच्यत्, स ब्रह्मा समभवत्' अर्थात् ब्रह्म विश्व का निर्माणक है इसलिए उसका एक नाम विश्वकर्मा भी है| उसने जगत् के निर्माण की इच्छा की| सृष्टि में मनुष्य से पूर्व देवताओं का आविर्भाव हुआ| वे देवता भी मनुष्य के ही समान थे परन्तु ज्ञानवान थे| देवताओं को अतिशय ज्ञानवान माना गया है| दो प्रकार के देवताओं का वर्णन मिलता है जिसमें एक को कर्म देवता और दूसरे को प्रधान देवता कहा गया है| उत्कृष्ट कर्म से जो देवत्व को प्राप्त करते हैं उन्हें कर्म देव कहते हैं और सृष्टि आदि में पहले उत्पन्न होने वाले जो देवता हैं उन्हें प्रधान देवता कहा गया है|1|

मैं अज्ञानान्धकार से परे आदित्य प्रतीकात्मक उस सर्वोत्कृष्ट पुरुष को जानता हूँ| मात्र उसे जानकर ही मृत्यु का अतिक्रमण होता है| शरण के लिए भी उसके आलावा अन्य कोई मार्ग नही है| संस्कृत भाष्य में कहा गया है कि मैं उस पुरुष को जानता हूँ| वह पुरुष अनुभव सिद्ध है क्योकि वह सर्व व्यापक है| आदित्य ज्योतिर्मय को कहते हैं| 'आदित्यः स्वप्रकाशकः परान् अपि प्रकाशयति' अर्थात् आदित्य वह है जो अपना प्रकाश तो करता ही है साथ में दूसरे को भी प्रकाशित करता है| यह ब्रह्म रुपी जगत् का प्रकाश है जिससे जगत् प्रकाशित होता है | यह प्रकाश ही व्यक्ति को अविद्यात्मक संसार से मुक्ति दिलाता है| उसी आदित्य रूपी पुरुष को जानकर व्यक्ति मृत्यु का अतिक्रमण करता है अर्थात वह मोक्ष को प्राप्त करता है| इसके आलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है| 2|

वह परमात्मा आभ्यंतर में विराजमान है| उत्पन्न न होने वाला होकर भी नाना प्रकार से उत्पन्न होता है| संयमी पुरुष ही उसके स्वरूप का साक्षात्कार करते हैं| सम्पूर्ण भूत उसी में संनिविष्ट है| संस्कृत भाष्य कहता है कि प्रजाओं के पति को प्रजापति कहा जाता

है| वह पुरुष रूप में सूर्य रूप है| वह पुरुष प्राणियों के देह के मध्य में जीवात्मा रूप से वास करता है| गर्भ में अजायमान रहने वाला ,नित्य अनुत्पत्ति धर्म का पालन करने वाला विविध प्रकार से उत्पन्न होता है| स्थावर-जंगमात्मक देहों में भी यह शरीर धारण करता है| उसके उत्पत्ति स्थान को ब्रह्मवादी पुरुष जानते हैं| प्रजापति में विश्व के समस्त भुवन एवं प्राणी , स्वर्ग ,मर्त्य ,पातालादि सभी स्थित हैं |3||

जो देवताओं के लिए सूर्य रूप में प्रकाशित होता है, जो देवताओं का कार्य साधन करने वाला है और जो देवताओं से पहले स्वयं भूत है उस देदीप्यमान सूर्य को या ब्रह्म को नमस्कार है| संस्कृत भाष्य में कहा गया है कि सूर्य आतपति है अर्थात् 'आ समन्ताद्भावेन तपति' हमेशा तपता रहता है| प्रश्न उठता है कि क्यों तपता रहता है? उत्तर मिलता है- देवताओं के प्रयोजन के लिए वह तपता रहता है| क्योंक वह देवताओं के हित को पहले स्थापित करता है| इसीलिए उसको पुरोहित भी कहा जाता है| देवताओं को हवि प्रदान करने के लिए अग्नि की स्थापना पहले की जाती है| यह अग्नि देवों के साथ पहले उत्पन्न हुआ था| आदित्य भी इसका रूप है इसलिए आदित्य को नमस्कार है |4|

उस शोभन ब्रह्म को प्रथम प्रगट करते हुए देवता बोले – जो ब्राह्मण तुम्हे इस स्वरूप में जाने, देवता उसके वश में हों| संस्कृत भाष्य में कहा गया है कि देवता स्वयं उत्पन्न होने वाले होते हैं| देवताओं ने उस प्रकाशमान ब्रह्म सुत को बोला कि यह हम लोगों में मुख्य है| इस प्रकार का ज्ञान जो ब्राह्मण रखता है उसके वश में सभी देवता रहें| अर्थात् उस ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के इच्छा के अनुसार देवता लोग व्यवहार करें |5|

समृद्धि और सौन्दर्य तुम्हारी पत्नी के रूप में हैं, दिन तथा रात तुम्हारे अगल बगल हैं| अनन्त नक्षत्र तुम्हारे रूप हैं| द्यावा पृथ्वी तुम्हारे मुखस्थानीय हैं| इच्छा करते समय परलोक की इच्छा करो| मैं सर्व लोकात्मक हो जाऊं – ऐसी इच्छा करो, ऐसी इच्छा करो| संस्कृत भाष्य में कहा गया है कि हे पुरुषोत्तम श्री और लक्ष्मी आपकी सहचारिणी पत्नी हैं| यहाँ चकार का प्रयोग तुल्यता दिखाने के लिए किया गया है| श्रीः को ऐश्वर्य और लक्ष्मीः को धन कहा गया है| 'यद्वशात्पुरुषो लोकानामाश्रयणीयो भवति सा श्रीः'| 'यद्वशात्पुरुषो लोकानां दर्शनीयो भवति सा लक्ष्मीः '| जिसके कारण पुरुष लोक में आश्रयणीय होता है उसे श्री कहा गया है और जिसके कारण पुरुष लोक में दर्शनीय होता है उसे लक्ष्मी कहा गया है| अह दिन को कहा जाता है अर्थात् दिन एवं रात्रि उस

परमात्मा के पार्श्व है| अह शब्द प्रकाशात्मक ब्रह्म के रूप में भी बतलाया गया है| रात्रि शब्द संसार रूपा प्रकृति के लिए बतलाया गया| धर्म, अर्थ, काम को संसार के रूप में और मोक्ष को प्रकाशात्मक परमेश्वर के रूप में जाना जा सकता है| नक्षत्रों को नारायण की मूर्ती के रूप में जाना जाता है| अश्विनौ द्यावा पृथ्वी को कहा गया है| इस परमेश्वर से जो कुछ भी याचना की जाती है वह सब कुछ मिलता है | 6|

अभ्यास प्रश्न – 3

निम्नलिखित प्रश्नों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

1 - उत्कृष्ट कर्म से जो देवत्व को प्राप्त करता है उसे -------कहते हैं |

2-सृष्टि आदि में पहले उत्पन्न होने वाले जो देवता है उन्हें --------कहा गया है |

3- प्रजाओं के पति को ---------कहा जाता है |

4-जो देवताओं का कार्य साधन करने वाला है और जो देवताओं से पहले स्वयं भूत है उस देदीप्यमान सूर्य को या ब्रह्म को -------है |

5-जिसके कारण पुरुष लोक में आश्रयणीय होता है उसे श्री कहा गया है और जिसके कारण पुरुष लोक में दर्शनीय होता है उसे -------कहा गया है|

2.3.4- 'नारायण- कवचम्' का मूल पाठ

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान् |
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम् |१ |
भगवन्स्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम् |
यथा ऽ ऽ ततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽ जयन्मृधे|२ |

श्रीशुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्राया ऽ नु पृच्छते |
नारायणाख्यं वर्माहं तदिहैकमनाः शृणु || ३|

विश्वरूप उवाच

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः |
कृतस्वाङ्गकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः |४|
नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते |
देवभूतात्मकर्मभ्यो नारायणमयः पुमान् | ५|

पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि |
मुखे शिरस्यानुपूर्वदोङ्कारादिनि विन्यसेत् | ६|
ॐ नमो नारायणेति विपर्ययमथापि वा |
करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया |७|
प्रणवादि यकारान्तमङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु|
न्यसेद् हृदय- ओङ्कारं विकारमनुमूर्धनि | ८ |
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया न्यसेत् |
वेकारं नेत्र्योर्युन्ज्यान्कारं सर्वसन्धिषु | ९|
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः |
सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत् |१० |
ॐ विष्णवे नमः | इत्यात्मानं परं ध्यायेद्धेयं षट्शक्तिभिर्युतम् |
विद्या – तेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत् |११|
ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे|
दरा –ऽरि –चर्माऽ सि- गदेषु -चाप -पाशान् दधानो ष्टगुणो ऽ ष्टबाहुः |
जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात् |
स्थलेषु मायावटुवामनो ऽ व्यात् त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः |१३|
दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः|
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्चगर्भाः |१४|
रक्षत्वसौ मा ऽ ध्वनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः |
रामोऽद्रिकूटेष्वथः विप्रवासे सलक्ष्मणोऽ व्याद् भरताग्रजोऽस्मान् | १५|
मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादान्नारायणः पातु नरश्च हासात् |
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धनात्|१६|
सनत्कुमारोऽवतु कामदेवाद्ध्याननो मां पथि देवहेलनात् |
देवर्षिवर्यःपुरुषार्चनान्तरात् कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् |१७|
धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद् द्वन्द्वाद्भयादृषभो निर्जितात्मा |
यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद् बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः |१८|
द्वैपायनो भगवान् प्रबोधाद् बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात् |
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावनायोरुकृतावतारः |१९|
मां केशवो गदया प्रातरब्यात् गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः |

नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्तिर्मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः |२०|
देवो ऽ पराह्ण मधुहोग्रधन्वा सायं त्रिधामाऽवतु माधवो माम् |
दोषे हृषीकेश उत्तार्धरात्रे निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः |२१|
श्रीवत्सधामाऽपररात्र ईशः प्रत्यूष ईशोऽ सिधरो जनार्दनः |
दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं प्रभाते विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः |२२|
चक्रं युगान्तानल – तिग्मनेमि भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम् |
दन्दग्धि दन्दग्ध्यरि सैन्यमाशु कक्षं यथा वातसखो हुताशः |२३|
गदे ऽ शनिस्पर्शन –विस्फुलिङ्गे निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि|
कूष्माण्ड – वैनायक- यक्ष- रक्षो- भूत ग्रहोश्चूर्णय चूर्णयाऽरीन् |२४|
त्वं यातुधान -प्रथम -प्रेत- मातृ -पिशाच -विप्रग्रह -घोरदृष्टिन् |
नरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो भीमस्वनोऽ रेर्हृदयानि कम्पयन् |२५|
त्वं तिग्मधारासि वरारि सैन्यमीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि|
चक्षूंषि चर्मन् शतचन्द्रछादय द्विषामघोनां हरपापचक्षुषाम् |२६|
यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽ भूत् केतुभ्यो ऽ होभ्य एव च |
सरीसृपेभ्यो दन्ष्ट्रिभ्यो भूतेभ्यो ऽ होभ्य एव च | २७|
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात्|
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः |२८|
गरुणो भगवान् स्तोत्रस्तोमच्छन्दोमयः प्रभुः |
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनस्य वाहनम् |२९|
सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयाना ऽऽ युधानि नः |
बुद्धिन्द्रियमनः प्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः |३०|
यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत् |
सत्येना ऽ नेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः |३१|
यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम् |
भूषणा ऽऽ युधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तिः स्वमायया |३२|
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः |
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः |३३|
विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः |
प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्त – समस्ततेजाः |३४|

मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम् |
विजेष्यस्यन्जसा येन दंशितोऽ सुर –यूथपान् |३५|
एतद्धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा |
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते |३६|
न कुतश्चिद्भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत् |
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याध्यादिभ्यश्च कर्हिचित् |३७|
इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः |
योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स मरुधन्वनि |३८|
तस्योपरि विमानेन गन्धर्व पतिरेकदा |
ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः |३९|
गगनान् न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः|
स बालखिल्य वचनादस्थीन्यादाय विस्मितः |४०|
प्रास्य प्राची सरस्वत्यां स्नात्वा धामस्वमन्वगात् |
श्रीशुक उवाच
य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः |
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात् |४१|
एतं विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः |
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधे ऽ सुरान्| ४२|

इति श्रीमद्भागवते षष्ठऽस्कन्धेऽष्टमेऽध्याये नारायणवर्म(कवच)संपूर्णम् ||

अभ्यास प्रश्न – ४

निम्नलिखित प्रश्नों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

1 - दोषे हृषीकेश उत्तार्धरात्रे ....एकोऽवतु पद्मनाभः |

२- दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं ....विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः |

3 - चक्रं युगान्तानल – तिग्मनेमि भ्रमत् .... भगवत्प्रयुक्तम् |

4 -त्वं यातुधान -प्रथम -प्रेत- मातृ -पिशाच -......... घोरदृष्टिन् |

5--चक्षूंषि ....शतचन्द्रछादय द्विषामघोनां हरपापचक्षुषाम् |

2.3.5 'अच्युताष्टकम्' का मूल पाठ

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् |
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे |1|
अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं माधवं श्रीधरं राधिका ऽ ऽ राधितम् |
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दनं सन्दधे |2|
विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये |
बल्लवीवल्लभाया ऽ र्चितात्मने कंसविध्वन्सिने वन्सिने ते नमः|3|
कृष्ण गोविन्द हे रामनारायण श्रीपते वासुदेवाजितश्रीनिधे|
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक|4|
राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः|
लक्ष्मणेनाऽन्वितो वानरैः सेवितोऽगस्त्यसंपूजितो राघवः पातु माम्| 5|
धेनुकारिष्टकोऽनिष्टकृद् द्वेषिणां केशिहा कन्सहृद्वंशिकावादिकः |
पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो बालगोपालकः पातु मां सर्वदा |6|
विद्युद्योत्वान् प्रस्फुरद्वाससं प्रावृडम्भोदवत् प्रोल्लसदविग्रहम् |
वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे |7|
कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः |
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं किङ्किणीमन्जुलं श्यामलं तं भजे |8|
अच्युतस्या ऽ ष्टकं यः पठेदिष्टदं प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् |
वृत्ततः सुन्दरं कर्तु विश्वंभरं तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्त्वरम् |9 |
| इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितमच्युताष्टकं संपूर्णम् |

अभ्यास प्रश्न – 5

निम्नलिखित प्रश्नों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

1 - विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने ....रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये |
2- अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज ----------------द्रौपदीरक्षक|
3-धेनुकारिष्टकोऽनिष्टकृद् द्वेषिणां ....कन्सहृद्वंशिकावादिकः |
4-वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं लोहिताङ्घ्रिद्वयं भजे |
5-अच्युतस्या ऽ ष्टकं यः पठेदिष्टदं ---------प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् |

2.3.6. श्री कमलापत्यष्टकम् का मूल पाठ

भुजगतल्पगतं घनसुन्दरं गरुडवाहनमंबुजलोचनम् |
नलिनचक्रगदाकरमब्ययं भजत रे मनुजा कमलापतिम् |1|
अलिकुलासितकोमलकुन्तलं विमलपीतदुकूलमनोहरम् |
जलधिजाङ्कितवामकलेवरं भजत रे मनुजा कमलापतिम् |2|
किमु जपैश्च तपोभिरुताध्वरै रपि किमुत्तमतीर्थनिषेवणैः |
किमुतशास्त्रकदम्बविलोकनैः भजत रे मनुजा कमलापतिम् |3|
मनुजदेहमिमं भुवि दुर्लभं समधिगम्य सुरैरपिवाञ्छितम् |
विषयलंपटतामपहाय वै भजत रे मनुजा कमलापतिम् ||4|
न वनिता न सुतौ न सहोदरौ न हि पिता जननि न च बान्धवः |
व्रजति शाकमनेन जनेन वै भजत रे मनुजा कमलापतिम् || 5|
सकलमेव चलं सचराचरं जगदिदं सुतरां धनयौवनम् |
समवलोक्य विवेकदृशां वयम् भजत रे मनुजा कमलापतिम् |6|
विविधरोगयुतं क्षणभङ्गुरं परवशं नवमार्गमलाकुलम् |
परिनिरीक्ष्य शरीरमिदं स्वकं भजत रे मनुजा कमलापतिम् | 7|
मुनिवरैरनिशं हृदि भावितं शिवविरञ्चिमहेन्द्रनुतं सदा |
मरण जन्म जरा भय मोचनम् भजत रे मनुजा कमलापतिम् | 8|
हरिपदाष्टकमेतदनुत्तमं परमहंसजनेन समीरितम् |
पठति यस्तु समाहित चेतसा व्रजति विष्णु पदं स नरो ध्रुवम् | 9|
इति श्रीमद् परमहंसस्वामिब्रह्मानन्द्विरचितम् श्रीकमलपत्यष्टकं संपूर्णम् ||

अभ्यास प्रश्न – 6

निम्नलिखित प्रश्नों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

1 -जलधिजाङ्कितवामकलेवरं ....रे मनुजा कमलापतिम् |
2-मनुजदेहमिमं ....दुर्लभं समधिगम्य सुरैरपिवाञ्छितम् |
3-न वनिता न सुतौ न सहोदरौ न हि पिता ....न च बान्धवः |
4-सकलमेव ....सचराचरं जगदिदं सुतरां धनयौवनम् |

5-विविधरोगयुतं क्षणभङ्गुरं ....नवमार्गमलाकुलम् |

2.4 सारांश-

उत्तर नारायण सूक्त को नारायण सूक्त के नाम से जाना जाता है| इस सूक्त से पहले पुरुष सूक्त आता है जिसमें सोलह मन्त्र पाए जाते हैं| इन सोलह मन्त्रों के बाद उसी अध्याय में छह मन्त्र और शेष बच जाते हैं जिन्हें उत्तर नारायण सूक्त के नाम से जाना जाता है| इस सूक्त के देवता आदित्य पुरुष हैं और इसका छन्द भूरिगार्षी त्रिष्टुप्, निच्यृदार्षी त्रिष्टुप् एवं आर्ष्यनुष्टुप् है| इस सूक्त में मात्र छः मन्त्र पाए जाते हैं| इस सूक्त में सृष्टि के विकाश के साथ – साथ व्यक्ति के कर्तव्य बोध को ब्यक्त किया गया है| यह सूक्त मानव जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी है| जीवन में कर्तब्य बोध का महत्वपूर्ण स्थान है| कर्तब्य बोध के ज्ञान के अभाव में ब्यक्ति स्व कर्म विरत हो जाता है| स्व कर्म से अलग होने से समस्त दोष उत्पन्न होते हैं|

त्वष्टा नामक आदित्य यानि सूर्य 'अद्भ्यः' अर्थात् जल से पहले और पृथ्वी से भी पहले उत्पन्न हुआ| पृथ्वी पद को यहाँ पञ्चभूतों का उपलक्षण माना है | अर्थात् पंचभूतों से पहले यह आदित्य उत्पन्न हुआ| यहाँ तक कहा गया है कि ब्रह्म जो विश्वकर्मा है उसने जगत् के निर्माण की इच्छा की| सूर्य आतपति है अर्थात् 'आ समन्ताद्भावेन तपति' हमेशा तपता रहता है| प्रशन उठता है कि क्यों तपता रहता है? उत्तर मिलता है- देवताओं के प्रयोजन के लिए वह तपता रहता है| क्योंक वह देवताओं के हित को पहले स्थापित करता है| इसीलिए उसको पुरोहित भी कहा जाता है| इसमे उत्तर नारायण सूक्त के अलावा नारायण कवच , अच्युताष्टक एवं कमलापत्यष्टकं भी दिया गया है।

2.5 पारिभाषिक शब्दावली-

अद्भ्यः – जलात्

आदित्य –सूर्य

अग्रे – आगे

ब्रह्म सुत – ब्रह्म का पुत्र

पुरुषोत्तम – पुरुषों में उत्तम

तपति – तपता है

पश्यन्ति – देखते हैं

बहुधा – बहुत प्रकार से

प्रजापति – प्रजा के स्वामी

पुरः – आगे

श्री – ऐश्वर्य

लक्ष्मी –धन

अहोरात्र – रात्रि और दिन

निहित –स्थापित

वनिता-स्त्री

शाकमनेन- इनके साथ

कमलापतिम् – लक्ष्मी के पति भगवान् विष्णु

विविधरोगयुतं – विभिन्न रोगो से युक्त

क्षणभङ्गुरं – एक क्षण में हि टूट जाने वाला

परवशं- दूसरे के वशं में रहने वाला

शरीरमिदं – यह शरीर

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

अभ्यास प्रश्न 1 –

1-सत्य ,2- सत्य ,3 –असत्य ,4-सत्य ,5- सत्य

अभ्यास प्रश्न 2 –

1-सम्भृतः , 2- पुरुषं ,3- गर्भे , 4-यो, 5 – देवा

अभ्यास प्रश्न -3 –

1 -कर्म देव, 2- प्रधान देवता, 3- प्रजापति, 4- नमस्कार, 5- लक्ष्मी

अभ्यास प्रश्न 4

1- निशीथ, २- प्रभाते,3- समन्ताद्,4- विप्रग्रह -,5- चर्मन्|

अभ्यास प्रश्न 5

1- चक्रिणे, 2- द्वारकानायक,3- केशिहा,4- वारिजाक्षं, 5- प्रेमतः

अभ्यास प्रश्न 6

1- भजत, 2-भुवि,3- जननि,4- चलं,5- परवशं|

2.7. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1-मन्त्रार्थ दीपिका – चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस , वाराणसी -1
काशी संस्कृत ग्रंथमाला १०८ , महामहोपाध्याय श्री शत्रुघ्न मिश्र मैथिलेन विरचिता |
2-वेद कथांक – कल्याण , तिहत्तरवें वर्ष का विशेषांक , गीता प्रेस ,गोरख पुर |

2.8 सहायक पाठ्य सामग्री-

1- शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी – चतुर्थ अध्याय (सम्पूर्ण) , सम्पादक –पण्डित श्रीवेणीरामशर्मागौण , प्रकाशक – व्यास प्रकाशन डी . १६/१३.मान मन्दिर , वाराणसी |
3 – शुक्ल यजुर्वेद संहिता माध्यन्दिनीया |

2.9 निबंधात्मक प्रश्न-

1- उत्तर नारायण सूक्त का परिचय दीजिये|
2- उत्तर नारायण सूक्त लिखिए|
3- अच्युताष्टक लिखिए|
4- नारायण कवच लिखिये|
5- उत्तर नारायण सूक्त का हिन्दी अनुवाद लिखिए|

इकाई - 3 ललितासहस्रनाम

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 ललितासहस्रनामस्तोत्र –

3 .3.1. ललितासहस्रनामस्तोत्र परिचय

3.3.2. ललितासहस्रनामस्तोत्र मूल पाठ

3.4 सारांश

3.5 पारिभाषिक शब्दावली

3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.8 सहायक पाठ्य सामग्री

3.9 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

इस पाठ में ललितासहस्त्रनामस्तोत्र के बारे में ज्ञान कराया जायेगा| इसके ज्ञान से आप ललितासहस्त्रनामस्तोत्र के महत्त्व को अच्छी तरह से समझ सकेगें| इस सूक्त का ज्ञान न केवल कर्मकाण्ड से सम्बंधित जनों के लिए अपितु सभी के लिए अनिवार्य बतलाया गया है| इस स्तोत्र सूक्त का प्रयोग श्रीमन् महात्रिपुर सुन्दरी षोडशी देवी की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है| हालाकि श्रीमन् महात्रिपुर सुन्दरी षोडशी देवी की कृपा प्राप्ति के लिए अन्य बहुत सारे स्तोत्र हैं परन्तु सभी स्तोत्रों में सर्वोत्कृष्ट है - ललितासहस्त्रनामस्तोत्र|

3.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ सकेगें कि –

1 – मानव जीवन में ललितासहस्त्रनामस्तोत्र का क्या महत्त्व है?

2 – ललितासहस्त्रनामस्तोत्र का तन्त्र में क्या स्थान प्राप्त है?

3- महाविद्या षोडशी देवी की प्रसन्नता के लिए क्या करना चाहिए?

4 श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी षोडशी देवी की कृपा प्राप्ति के लिए ललितासहस्त्रनामस्तोत्र का क्या कथन है?

3.3 ललितासहस्त्रनामस्तोत्र –

ललितासहत्रनामस्तोत्रषोडशी देवी को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है|

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी |
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा |
बगला सिद्धविद्या च मातंगी कमलात्मिका |
एता दशमहाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्तिताः ||

श्री देवी भागवत पुराण के अनुसार महाविद्याओं की उत्पत्ति भगवान शिव और भगवती सती के मध्य उत्पन्न एक विवाद के कारण हुई| सती के पिता दक्ष ने एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया| उस यज्ञ में अपने दामाद भगवान शंकर को आमंत्रित नहीं किया| उस यज्ञ में भाग लेने के लिए जाते हुए देवताओं को देखकर भगवती सती ने भगवान शिव से पूछा कि इतने देव गण कहाँ जा रहे हैं| भगवान शिव ने कहा कि आपके

पिता ने एक यज्ञ का आयोजन किया है, उसी में जा रहे हैं| उन्होंने स्वयं जाने की अनुमति मांगी लेकिन निमंत्रण न होने के कारण मना कर दिया| सती अपने पिता के यज्ञ में जाने के लिए जिद करने लगी| अनुमति नहीं मिलने पर उन्होंने क्रोध किया जिससे उनका स्वरूप काली का हो गया| भगवान शिव उस स्थान से भागने लगे और माता सती ने रोकने के लिए विविध रूप धारण किया जो दश रूपों में हुआ| इसे ही दस महाविद्या कहा जाता है| जिसमें श्री विद्या को षोडशी नामक महाविद्या के रूप में जाना जाता है| इनको प्रसन्न करने का प्रमुख स्त्रोत्र है -ललितासहस्त्रनामस्त्रोत्र|

3.3.1. ललितासहस्त्रनामस्तोत्र परिचय

'लोकानतीत्य ललते ललिता तेन चोच्यते' पद्म पुराण के इस वचन के अनुसार जो लोक से ऊपर जाकर ललित लालित्य से युक्त हो उसे ललिता कहते हैं| अर्थात् लालित्य में इस संसार में जिसके सामान कोई न हो उसे ललिता कहा जाता है| ललितं श्रृंगारहावजन्यः क्रियाविशेषः तद्वती ललिता| तेन श्रृंगाररसप्रधानेन इयं मूर्तिरिती| इसीलिये ललिताम्बा भगवती को त्रिपुर सुन्दरी कहा जाता है| देवी भागवत पुराण के प्रथम स्कंध में यह कथा मिलती है कि पुरा काल में यज्ञ संरक्षण हेतु भगवान विष्णु को अत्यन्त श्रम करने के कारण धनुष की प्रत्यंचा पर ही निद्रा आ गयी| देवताओं ने भगवान विष्णु को जगाने के लिए वम्री नामक कृमि को धनुष की डोरी काटने को कहा| उसके बदले उसे यज्ञ की हविओं में अंश देने को कहा| उसके डोरी काटने से प्रत्यंचा के आघात से श्री विष्णु का शिर कट गया जिससे हाहाकार मच गया| वह शिर भी नहीं मिल पाया तब देवताओं ने भगवती त्रिपुर सुन्दरी का स्तवन किया जिससे देवी प्रसन्न होकर हयग्रीव का शिर लाकर जोड़ दिया जिससे हयग्रीव नामक असुर का वध हो सका और वेद पुराण आदि शास्त्रों की रक्षा हो की| ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार श्री विद्या उपासकों में अग्रगण्य ऋषि अगस्त्य ने मन्त्र ,न्यास , पूजा, पुरश्चरण ,होम, रहस्य, स्तोत्र इन सात रूपों में श्री माता का प्रादुर्भाव बतलाया है| 'परमं रहस्यं नाम साहस्त्रम्' के अनुसार सहस्त्रनाम स्तोत्र परम मंगलकारी स्तोत्र है|

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

क – जो लोक से ऊपर जाकर ललित लालित्य युक्त हो उसे ललिता कहते हैं|

ख - ललिताम्बा भगवती को त्रिपुर सुन्दरी कहा जाता है|

ग - हयग्रीव नामक असुर का वध कभी नहीं हो सका|

घ - हयग्रीव का शिर लाकर विष्णु भगवान के गले में जोड़ दिया गया|

च -'परमं रहस्यं नाम साहस्त्रम्' के अनुसार सहस्त्रनाम स्तोत्र परम मंगलकारी स्तोत्र है |

3.3.2. ललितासहस्त्रनामस्तोत्र मूल पाठ

श्री ललिताम्बायै नमः

अथ ध्यानश्लोकाः

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत् |
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरूहाम् |
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं |
सौम्यां रक्तघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिका||
श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत् सिंहासनेश्वरी|
चिदग्नीकुण्डसंभूता देवकार्यसमुद्यता ||५२ |
उद्यद्भानुसहस्त्राभा चतुर्बाहुसमन्विता |
रागस्वरूपपाशाढ्या क्रोधाकारांकुशोज्ज्वला |५३ |
मनोरूपेक्षुकोदण्डा पञ्चतन्मात्रसायका |
निजारूणप्रभापूरमज्जदब्रह्माण्डमण्डला |५४|
चम्पकाशोकपुन्नाग- सौगन्धिकलसत्कचा|
कुरुविन्दमणिश्रेणी कनत्कोटीरमण्डिता| ५५ |
अष्टमीचन्द्रविभ्राजदलिकस्थल- शोभिता |
मुखचन्द्रकलंकाभमृगनाभिविशेषिका |५६ |
वदनस्मरमांगल्यगृहतोरणचिल्लिका|
वक्त्रलक्ष्मीपरीवाहचलन्मीलाभलोचना | ५७ |
नवचम्पकपुष्पाभनासादंडविराजिता |
ताराकान्तितिरस्कारिनासाभरणभासुरा| ५८ |
कदम्बमञ्जरीक्लृप्तकर्णपूरमनोहरा |
ताटंकयुगलीभूत -तपनोडुपमण्डला | ५९|
पद्मरागशिलादर्शपरीभाविकपोलभूः |
नवविद्रुमविम्बश्रीन्यक्कारिदशनच्छदा|६०|

शुद्धविद्यान्कुराकारद्विजपंक्तिद्वयोज्ज्वला|
कर्पूरविटीकामोदसमाकर्षिदिगंतरा| ६१ |
निजसंलापमाधुर्यविनिर्भत्सितकच्छपी |
मंदस्मितप्रभापूरमज्जत्कामेशमानसा | ६२ |
अनाकलितसादृश्यचिबुकश्रीविराजिता |
कामेशबद्धमांगल्यसूत्रशोभितकंधरा | ६३|
कनकांगदकेयूरकमनीयभुजान्विता|
रत्नग्रेवेयचिंताकलोलमुक्तफलान्विता |६४|
कामेश्वरप्रेमरत्नमणिप्रतिपणस्तनी |
नाभ्यालबालरोमालिलताफलकुचद्वयी |६५|
लक्ष्यरोमलताधारतासमुन्नेयमध्यमा |
स्तनभारदलन्मध्यपट्टबन्धबलित्रया | ६६|
अरुणारुणकौसुम्भवस्त्रभास्वतकटीतटी |
रत्नकिंकिणीकारम्यरशनादामभूषिता | ६७|
कामेशज्ञानसौभाग्यमार्दयोरुद्वयान्विता |
माणिक्यमुकुटाकारजानुद्वयविराजिता |६८|
इन्द्रगोपपरिक्षिप्तस्मरतूणाभजन्धिका |
गूढगुल्फाकूर्मपृष्ठजयिष्णुप्रपदान्विता | ६९ |
नखदीधितिसंच्छन्ननमज्जनतमोगुणा |
पदद्वयप्रभाजालपराकृतसरोरुहा || ७०|
सिंजानमणिमंजीरमण्डितश्रीपदाम्बुजा |
मरालीमन्दगमनामहालावण्यशेवधिः | ७१|
सर्वारुणानवद्यांगीसर्वाभरणभूषिता |
शिवकामेश्वराङ्कस्थाशिवास्वाधीनवल्लभा | ७२|
सुमेरुश्रृंगमध्यस्था श्रीमन्नगरनायिका |
चिंतामणिगृहान्तास्था पञ्चब्रह्मासनस्थिता | ७३|
महापद्माटवीसंस्था कदम्बवनवाशिनी |
सुधासागरमध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी | ७४ |
देवर्षिगणसंघातस्तूयमानात्मवैभवा |
भण्डासुरवधोद्युक्तशक्तिसेनासमन्विता |७५ |

सम्पत्करी समारूढसिंधूरव्रजसेविता।
अश्वारूढाधिष्टिताश्वकोटिकोटिभिरावृता ।७६।
चक्रराजरथारूढसर्वायुधपरिष्कृता।
गेयचक्ररथारूढमन्त्रिणी परिसेविता। ७७ ।
किरिचक्ररथारूढदण्डनाथापुरस्कृता।
ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवन्हिप्राकारमध्यगा। ७८ ।
भंडसैन्यवधोद्युक्तशक्तिविक्रमहर्षिता।
नित्यापराक्रमाटोपनिरीक्षणसमुत्सुका। ७९।
भंडपुत्रवधोद्युक्तबालाविक्रमनन्दिता।
मन्त्रिण्यम्बाविरचित विशुक्रवधतोषिता। ८०।
विषंगप्राणहरणवाराहीवीर्यनन्दिता।
कामेश्वरमुखालोककल्पितश्रीगणेश्वरा।८१।
महागणेशनिर्भिन्नविघ्नयन्त्रप्रहर्षिता।
भंडासुरेन्द्रनिर्मुक्तशस्त्रप्रत्यस्त्रवर्षिणी। ८२।
करांगुलिनखोत्पन्ननारायणदशाकृतिः।
महापाशुपतास्त्राग्निनिर्दग्धा सुरसैनिका।८३ ।
कामेश्वरास्त्रनिर्दग्धसभण्डासुरशून्यका।
ब्रह्मोपेंद्रमहेंद्रादिदेवसंस्तुतबैभवा।। ८४
हरन्नेत्राग्निसंदग्धकामसंजीवनौषधि।
श्रीमद्वाग्भवकूटैकस्वरूपमुखपंकजा ।८५ ।
कंठाधः कटिपर्यन्तमध्यकूटस्वरूपिणी।
शक्तिकूटैकतापन्नकट्यधोभागधारिणी।८६।
मूलमन्त्रात्मिका मूलकूटत्रयकलेवरा।
कुलामृतैकरसिका कुलसंकेतपालिनी। ८७।
कुलांगना कुलान्तस्था कौलिनी कुलयोगिनी।
अकुला समयान्तस्था समयाचारतत्परा। ८८।
मूलाधारैकनिलया ब्रह्मग्रंथिविभेदिनी।
मणिपूरान्तरुदिता विष्णुग्रन्थिविभेदिनी। ८९।
आज्ञाचक्रंतरालस्था रूद्रग्रन्थिविभेदिनी।
सहस्त्राराम्बुजारूढ़ा सुधासाराभिवर्षिणी ९० ।

तडिल्लतासमरुचिः षट्चक्रोपरि संस्थिता |
महाशक्तिः कुण्डलिनी विसतंतुतनीयसी |
भवानी भावनागम्या भवारण्यकुठारिका |
भद्रप्रिया भद्रमूर्तिभक्तसौभाग्यदायिनी ||९२ |
भक्तिप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा |
शाम्भवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी | ९३|
शांकरी श्रीकरी साध्वी शरचन्द्रनिभानना|
शान्तोदरी शान्तिमती निराधारा निरंजना |९४ |
निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला |
निर्गुणा निष्कला शान्ता निष्कामा निरुपप्लवा| ९५|
नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपंचा निराश्रया |
नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरन्तरा | ९६|
निष्कारणा निष्कलंका निरूपाधिनिरीश्वरा |
नीरागा रागमथना निर्मदा मदनाशिनी | ९7
निश्चिन्ता निरहंकारा निर्मोहा मोहनाशिनी |
निर्ममा ममताहन्त्री निष्पापा पापनाशिनी | ९८|
निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी |
निःसंशया संशयघ्नी निर्भवा भवनाशिनी |९९
निर्विकल्पा निराबाधा निर्भेदा भेदनाशिनी |
निर्नाशा मृत्युमथिनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा |१०० |
निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया|
दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहन्त्री सुखप्रदा |१०१ |
दुष्टदूरा दुराचारशमनी दोषवर्जिता |
सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिकवर्जिता | १०२|
सर्वशक्तिमयी सर्वमंगला सद्गतिप्रदा |
सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमन्त्रस्वरूपिणी | १०३|
सर्वयंत्रात्मिका सर्वतन्त्ररूपामनोन्मनी|
माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर्मृडप्रिया |१०४|
महारूपा महापूज्या महापातकनाशिनी |
महामाया महासत्वा महाशक्तिर्महारतिः |१०५ |

महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महावला |
महाबुद्धिर्महासिद्धिर्महयोगेश्वरेश्वरी|१०६ |
महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा महाशना |
महायागक्रमाराध्या महाभैरवपूजिता | १०७ |
महेश्वरमहाकल्प -महाताण्डव -साक्षिणी |
महाकामेशमहिषी महात्रिपुरसुन्दरी | १०८|
चतुष्षष्ट्युपचाराढ्या चतुष्षष्टी कलामयी |
महाचतुष्षष्टिकोटि योगिनीगणसेविता| १०९ |
मनुविद्याचन्द्रविद्या चन्द्रमण्डलमध्यगा |
चारुरूपा चारुहासा चारुचन्द्रकलाधरा | ११० |
चराचरजगन्नाथा चक्रराजनिकेतना |
पार्वतीपद्मनयना पद्मरागसमप्रभा | १११ |
पञ्चप्रेतासनासीना पञ्चब्रह्मस्वरूपिणी |
चिन्मयीपरमानंदा विज्ञानघनरूपिणी |११२|
ध्यानध्यातृध्येयरूपा धर्माधर्मविवर्जिता |
विश्वरूपा जगरिणी स्वपन्ती तेजसात्मिका | ११३|
सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्था विवर्जिता |
सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोप्त्री गोविन्दरूपिणी |११४|
संहारिणी रूद्ररूपा तिरोधानकरीश्वरी |
सदाशिवा ऽ नुग्रह्दापञ्चकृत्यपरायणा | ११५ |
भानुमण्डलमध्यस्था भैरवीभगमालिनी |
पद्मासना भगवती पद्मनाभसहोदरी | ११६
उन्मेषनिमिषोत्पन्न विपन्नभुवनावली |
सहस्त्रशीर्षवदना सहस्राक्षी सहत्रपात् | ११७ |
आब्रह्मकीटजननी वर्णाश्रमविधायिनी |
निजाज्ञा रूपनिगमा पुण्या पुण्यफलप्रदा | ११८|
श्रुतिश्रीमन्तसिन्दूरी कृतपादाब्जधुलिका |
सकलागमसन्दोह शुक्तिसम्पुटमौक्तिका | ११९|
पुरुषार्थप्रदापूर्णाभोगिनीभुवनेश्वरी |
अम्बिकाऽनादिनिधना हरिब्रह्मेन्द्रसविता | १२० |

नारायणी नादरूपा नामरूपविवर्जिता |
ह्लींकारी ह्लीमती हृद्या हेयोपादेयवर्जिता | १२१ |
राजराजार्चिताराज्ञी रम्याराजीवलोचना |
रंजनी रमणीरस्या रणत्किन्किणिमेखला | १२२ |
रमाराकेन्दुवदना रतिरूपा रतिप्रिया |
रक्षाकरी राक्षसघ्नी रामा रमणलम्पटा |१२३|
काम्या कामकलारूपा कदम्बकुसुमप्रिया |
कल्याणी जगतीकन्दा करुणारससागरा | १२४ |
कलावती कलालापा कान्ता कादम्बरी प्रिया |
वरदा वामनयना वारुणी मदविह्वला |१२५|
विश्वाधिका वेदविद्या विन्ध्याचलनिवासिनी |
विधात्रीवेद्जननी विष्णु मायाविलासिनी | १२६ |
क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिनी |
क्षयवृद्धिर्विनिर्मुक्ता क्षेत्रपालसमर्चिता | १२७|
विजया विमला वन्द्या वन्दारुजनवत्सला |
वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमण्डलवासिनी | १२८ |
भक्तिमत्कल्पलतिका पशुपाशविमोचिनी |
सं हृता शेषपाखंडा सदाचारप्रवर्तिका | १२९ |
तापत्रयाग्नीसंतप्त - समाह्लादनचन्द्रिका |
तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोपहा | १३०|
चितिस्तत् पदलक्ष्यार्था चिदेकरसरूपिणी |
स्वात्मानन्दलवीभूता ब्रह्माद्यानन्दसंततिः| १३१ |
परा प्रत्यक् चितीरूपा पश्यन्ती परदेवताः |
मध्यमा वैखरी रूपा भक्तमानसहंसिका | १३२ |
कामेश्वरप्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता |
श्रृंगाररससम्पूर्णा जयाजालंधरस्थिता | १३३ |
ओड्याणपीठनिलया बिन्दुमण्डलवाशिनी |
रहोयागक्रमाराध्या रहस्तर्पणतर्पिता |१३४ |
सद्यः प्रसादिनीविश्व - साक्षिणीसाक्षवर्जिता|
षडंगदेवतायुक्ता षाड्गुण्यपरिपूरिता| १३५ |

नित्यक्लिन्ना निरुपमा निर्वाणसुखदायिनी |
नित्यषोडशिकारूपा श्रीकण्ठार्धशरीरिणी १३६ |
प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी |
मूलप्रकृतिरब्यक्ता ब्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणी | १३७|१३७|
व्यापिनीविविधाकारा विद्याविद्यास्वरूपिणी |
महाकामेशनयनकुमुदाह्लादकौमुदी |१३८|
भक्तहार्दतमोभेदभानुमद्भानुसन्ततिः |
शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः शिवंकरी| १३९|
शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता |
अप्रमेया स्वप्रकाशा मनोवाचामगोचरा |१४०|
चिच्छक्तिश्चेतनारूपा जडशक्तिर्जडात्मिका |
गायत्रीव्याहृतिः संध्या द्विजवृन्दनिषेविता | १४१ |
तत्वाशनातत्वमयी पञ्चकोशान्तरस्थिता|
निः सीममहिमा नित्ययौवना मदशालिनी | १४२|
मदघूर्णितरक्ताक्षी मदपाटलगंडभूः|
चन्दनद्रवदिग्धांगी चाम्पेयकुसुमप्रिया |१४३|
कुशला कोमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी |
कुलकुण्डालया कौलमार्गतत्परसेविता | १४४ |
कुमारगणनाथाम्बा तुष्टिः पुष्टिः मतिर्धृतिः|
शान्तिः स्वस्तिमती कान्तिर्नन्दिनीविघ्ननाशिनी| १४५ |
तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी कामरूपिणी |
मालिनी हंसिनी माता मलयाचलवासिनी | १४५ |
सुमुखी नलिनी सुभ्रूः शोभना सुरनायिका |
कालकंठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी | १४६|
वज्रेश्वरी वामदेवी वयोवस्था विवर्जिता |
सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमातायशस्विनी | १४७|
विशुद्धिचक्रनिलया रक्तवर्णात्रिलोचना |
खट्वांगादिप्रहरणा वदनैकसमन्विता |१४८ |
पायसान्नप्रियात्वक्स्था पशुलोकभयंकरी |
अमृतादिमहाशक्ति संवृताडाकिनीश्वरी| १४९|

अनाहताब्जनिलया श्यामाभावदनद्वया |
दंष्ट्रोज्ज्वलाक्षमालादिधरा रुधिरसंस्थिता | १५० |
कालरात्र्यादिशक्त्यौघवृतास्निग्धोदनप्रिया |
महावीरेन्द्रवरदा राकिण्यम्बास्वरूपिणी |१५१ |
मणिपूराब्जनिलया वदनत्रयसंयुता |
वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता|१५३ |
रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुड़ान्नप्रीतमानसा |
समस्तभक्तसुखदा लाकिन्यम्बास्वरूपिणी | १५४|
स्वाधिष्ठानाम्बुजगता चतुर्वक्त्रमनोहरा |
शूलाद्यायुधसंपन्ना पीतवर्णातिगर्विता | १५५ |
मेदोनिष्ठामधुप्रीता बन्धिन्यादिसमन्विता |
दध्यन्नासक्तहृदया काकिनीरूपधारिणी |१५६|
मूलाधाराम्बुजारूढ़ा पञ्चवक्त्रास्थिसंस्थिता|
अंकुशादिप्रहरणा वरदादिनिषेविता |१५७|
मुग्दौदनासक्तचित्ता साकिन्यम्बास्वरूपिणी |
आज्ञाचक्राब्जनिलया शुक्लवर्णाषडानना |१५८|
मज्जासंस्थाहंसवती मुख्यशक्तिसमन्विता |
हरिद्रानैकरसिका हाकिनीरूपधारिणी | १५९ |
सहस्त्रदलपद्मस्था सर्ववर्णोपशोभिता |
सर्वायुधधरा शुक्लसंस्थिता सर्वतोमुखी |१६०|
सर्वौदनप्रीतचित्ता याकिन्यम्बास्वरूपिणी |
स्वाहा स्वधामतिर्मेधा श्रुतिस्मृतिरनुत्तमा |१६१ |
पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या पुण्यश्रवणकीर्तना |
पुलोमजार्चिता बन्धमोचनी बन्धुरालका|१६२|
विमर्शरूपिणीविद्या वियदादिजगत्प्रसूः |
सर्वव्याधिप्रशमनी सर्वमृत्युनिवारिणी | १६३ |
अग्रगण्याऽचिन्त्यरूपा कलिकल्मषनाशिनी |
कात्यायनीकालहन्त्री कमलाक्षनिषेविता | १६४|
ताम्बूलपूरितमुखी दाडिमीकुसुमप्रभा |
मृगाक्षीमोहिनीमुख्या मृडानी मित्ररूपिणी |१६५ |

नित्यतृप्ता भक्तनिधिर्नियंत्री निखिलेश्वरी |
मैत्र्यादिवासनालभ्या महाप्रलयसाक्षिणी | १६६ |
पराशक्तिः परानिष्ठा प्रज्ञानघनरुपिनी |
माध्वीपानालसामत्ता मातृकावर्णरूपिणी |१६७|
महाकैलासनिलया मृणालमृदुदोर्लता |
महनीयादयामूर्तिर्महासाम्राज्यशालिनी |१६८ |
आत्मविद्यामहाविद्या श्रीविद्याकामसेविता |
श्रीषोडशाक्षरीविद्या त्रिकुटा कामकोटिका | १६९ |
कटाक्षकिंकरीभूतकमलाकोटिसेविता |
शिरस्थिताचन्द्रनिभा भालस्थेन्द्रधनुष्प्रभा |१७० |
हृदयस्थारविप्रख्या त्रिकोणान्तरदीपिका |
दाक्षायणीदैत्यहन्त्री दक्षयज्ञविनाशिनी |१७१ |
दरान्दोलितदीर्घाक्षी दरहासोज्ज्वलन्मुखी |
गुरुमुर्तिर्गुणनिधिर्गोमातागुहजन्मभू: |१७२ |
देवेशी दण्डनीतिस्था दहराकाशरुपिणी |
प्रतिपन्मुख्यराकान्ततिथिमण्डलपूजिता |१७३ |
कलात्मिकाकलानाथा काव्यालापविनोदिनी |
सचामररमावाणी सव्यदक्षिणसेविता |१७४ |
आदिशक्तिऽरमेयाऽत्मा परमापावनाकृति: |
अनेककोटिब्रह्माण्डजननी दिव्यविग्रहा |१७५ |
क्लींकारी केवला गुह्या कैवल्यपददायिनी |
त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या त्रिमूर्तिस्त्रिदशेश्वरी | १७६ |
त्र्यक्षरी दिव्यगन्धाढ्या सिन्दूरतिलकाञ्चिता |
उमाशैलेन्द्रतनया गौरीगन्धर्वसेविता |१७७ |
विश्वगर्भा स्वर्णगर्भावरदा वागधीश्वरी |
ध्यानगम्यापरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा |१७८ |
सर्ववेदान्तसंवेद्या सत्यानन्दस्वरूपिणी |
लोपामुद्रार्चिता लीलाक्लृप्तब्रह्माण्डमण्डला |१७९ |
अदृश्यादृश्यरहिता विज्ञात्रीवेद्यवर्जिता |
योगिनीयोगदा योग्या योगानन्दयुगंधरा |१८० |

इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिस्वरूपिणी ।
सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूपधारिणी ।१८१ ।
अष्टमूर्तिरजाजैत्री लोकयात्राविधायिनी ।
एकाकिनीभूमरुपा निर्द्वैताद्वैतवर्जिता ।१८२ ।
अन्नदा वसुधावृध्दा ब्रह्मात्मैक्यस्वरुपिणी ।
बृहतीब्राह्मणीब्राह्मी ब्रह्मानन्दाबलिप्रिया ।१८३ ।
भाषारूपाबृहत्सेना भावाभावविवर्जिता ।
सुखाराध्याशुभकरी शोभनासुलभागति: ।१८४ ।
राजराजेश्वरी राज्यदायिनीराज्यवल्लभा ।
राजत्कृपाराजपीठनिवेशितनिजाश्रिता ।१८५ ।
राज्यलक्ष्मी: कोशनाथा चतुरङ्गबलेश्वरी ।
साम्राज्यदायिनी सत्यसंधा सागरमेखला ।१८६ ।
दीक्षितादैत्यशमनी सर्वलोकवशंकरी ।
सर्वार्थदात्री सावित्री सच्चिदानन्दरूपिणी ।१८७ ।
देशकालापरिच्छिन्ना सर्वगासर्वमोहिनी ।
सरस्वतीशास्त्रमयी गुहाम्बागुह्यरूपिणी ।१८८ ।
सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता सदाशिवपतिव्रता ।
संप्रदायेश्वरी साध्वी गुरुमण्डलरूपिणी ।१८९ ।
कुलोत्तिर्णाभगाराध्या मायामधुमतीमही ।
गणाम्बागुह्यकाराध्या कोमलाङ्गी गुरुप्रिया ।१९० ।
स्वतन्त्रासर्वतन्त्रेशी दक्षिणामूर्तिरूपिणी ।
सनकादिसमाराध्या शिवज्ञानप्रदायिनी ।१९१ ।
चित्कलानन्दकलिका प्रेमरूपा प्रियंकरी ।
नामपारायणप्रीता नन्दिविद्यानटेश्वरी ।१९२ ।
मिथ्याजगदधीष्ठाना मुक्तिदामुक्तिरूपिणी ।
लास्यप्रिया लयकरी लज्जारम्भादिवन्दिता ।१९३ ।
भवदावसुधावृष्टी: पापारण्यदवानला ।
दौर्भाग्यतूलवातूला जराध्वान्तरविप्रभा ।१९४ ।
भाग्याब्धिचन्द्रिकाभक्तचित्तकेकीघनाघना ।
रोगपर्वतादम्भोलिर्मृत्युदारूकुठारिका ।१९५ ।

महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना ।
अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुरनिषूदनी ।१९६ ।
क्षराक्षरात्मिका सर्वलोकेशी विश्वधारिणी ।
त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यम्बकात्रिगुणात्मिका ।१९७ ।
स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्पनिभाकृतिः ।
ओजोवतीद्युतिधरा यज्ञरूपाप्रियव्रता ।१९८ ।
दुराराध्यादुराधर्षा पाटलीकुसुमप्रिया ।
महतीमेरुनिलया मन्दारकुसुमप्रिया ।१९९ ।
विराराध्या वीराड्रूपाविरजाविश्वतोमुखी ।
प्रत्यग्रुपापराकाशा प्राणदाप्राणरूपिणी ।२०० ।
मार्तण्डभैरवाराध्या मन्त्रिणीन्यस्तराज्यवधू: ।
त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्त्रैगुण्या परापरा ।२०१ ।
सत्यज्ञानानन्दरूपा सामरस्यपरायणा ।
कपर्दिनीकलामाला कामधुक्कामरुपिणी ।२०२ ।
कलानिधि: काव्यकला रसज्ञारसशेवधि: ।
पुष्टापुरातना पूज्या पुष्करापुष्करेक्षणा ।२०३ ।
परंज्योति: पंरधाम परमाणु: परात्परा ।
पाशहस्तापाशहन्त्री परमन्त्रविभेदिनी ।२०४ ।
मूर्तामूर्तानित्यतृप्ता मुनिमानसहंसिका ।
सत्यव्रतासत्यरूपा सर्वान्तर्यामिणीसती ।२०५ ।
ब्राह्माणीब्रह्मजननी बहुरूपाबुधार्चिता ।
प्रसवित्रीप्रचण्डाऽज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ।२०६ ।
प्राणेश्वरी प्राणदात्री पञ्चाशत्पीठरूपिणी ।
विशृङ्खलाविविक्तस्था वीरमातावियत्प्रसू: ।२०७ ।
मुकुन्दामुक्तिनिलया मूलविग्रहरूपिणी ।
भावज्ञाभवरोगघ्नी भवचक्रप्रवर्तिनी ।२०८ ।
छन्द:सारा शास्त्रसारा मन्त्रसारा तलोदरी ।
उदारकीर्तिरद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ।२०९ ।
जन्ममृत्युजरातप्तजनविश्रान्तिदायिनी ।
सर्वोपनिषदुद्धुष्टा शान्त्यतीताकलात्मिका ।२१० ।

गम्भीरागगनान्तस्था गर्वितानागलोलुपा |
कल्पनारहिताकाष्ठाऽकान्ता कान्तार्धविग्रहा |२११ |
कार्यकारणनिर्मुक्ता कामकेलितरङ्गिता |
कनत्कनकताटङ्का लीलाविग्रहधारिणी |२१२ |
अजाक्षयविर्निमुक्ता मुग्धा क्षिप्रप्रसादिनी |
अन्तर्मुखसमाराध्या बहिर्मुखसुदुर्लभा |२१३ |
त्रयीत्रिवर्गनिलया त्रिस्था त्रिपुरमालिनी |
निरामया निरालम्बा स्वात्मारामासुधास्त्रुतिः |२१४ |
संसारपङ्कनिर्मग्नसमुद्धरणपण्डिता |
यज्ञप्रियायज्ञकर्त्री यजमानस्वरूपिणी |२१५ |
धर्माधाराधनाध्यक्षा धनधान्यविवर्धिनी |
विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमणकारिणी |२१६ |
विश्वग्रासाविद्रूमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी |
अयोनिर्योर्नीनिलया कूटस्थाकुलरूपिणी |२१७ |
वीरगोष्ठीप्रियावीरा नैष्कर्म्यानादरूपिणी |
विज्ञानकलनाकल्या विदग्धा बैन्दवासिनी |२१८ |
तत्त्वाधिकातत्त्वमयी तत्त्वमर्थस्वरूपिणी |
सामगानप्रिया सौम्या सदाशिवकुटुम्बनी |२१९ |
सव्यापसव्यमार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी |
स्वस्थास्वभावमधुरा धीराधीरसमर्चिता |२२० |
चैतान्यार्घ्यसमाराध्या चैतन्यकुसमप्रिया |
सदोदितासदातुष्टा तरुणादित्यपटला |२२१ |
दक्षिणादक्षिणाराध्या दरस्मेरमुखाम्बुजा |
कौलिनिकेवलाऽनर्घ्यकैवल्यफलदायिनी |२२२ |
स्तोत्रप्रियास्तुतिमति श्रुतिसंस्तुतवैभवा |
मनस्विनीमानवती महेशीमङ्गलाकृतिः |२२३ |
विश्वमाताजगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी |
प्रगल्भापरमोदारा परमोदा मनोमयी |२२४ |
ब्योमकेशीविमानस्था वज्रिणीवामकेश्वरी |
पञ्चयज्ञप्रिया पञ्चप्रेतमञ्चाधिशायिनी |२२५ |

पञ्चमी पञ्चभुतेशी पञ्चसंख्योपचारिणी |
शाश्वतीशाश्वतैश्वर्या शर्मदाशंभुमोहिनी |२२६ |
धराधरसुताधन्या धर्मिणीधर्मवर्धिनी |
लोकातीतागुणातीता सर्वातीताशमाश्रिता |२२७ |
बन्धुककुसुमप्रख्या बालालीलाविनोदिनी |
सुमङ्गली सुखकरी सुवेषाढ्यासुवासिनी |२२८ |
सुवासिन्यर्चनप्रीताऽऽशोभना शुद्धमानसा |
बिन्दुतर्पणसंतुष्टा पूर्वजा त्रिपुराम्बिका |२२९ |
दशमुद्रासमाराध्या त्रिपुराश्रीवशंकरी |
ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयस्वरूपिणी |२३० |
योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी त्रिगुणाम्बा त्रिकोणगा |
अनघाद्भुतचारित्रा वाञ्छितार्थप्रदायिनी |२३१ |
अभ्यासातिशयज्ञाता षडध्वातीतरूपिणी |
अव्याजकरुणामूर्तिरज्ञानध्वान्तदीपिका |२३२ |
आबालगोपविदिता सर्वानुल्लङ्घ्यशासना |
श्रीचक्रराजनिलया श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी |२३३ |
श्रीशिवाशिवशक्तैक्यरूपिणीललिताम्बिका |ॐ|

अभ्यास प्रश्न – 2

निम्नलिखित प्रश्नों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

1- प्राणेश्वरी -------पञ्चाशत्पीठरूपिणी |

2- सर्वोपनिषदुद्धुष्टा ---------कलात्मिका |

3- महती -------- मन्दारकुसुमप्रिया |

4- मुकुन्दा------- मूलविग्रहरूपिणी |

5- --------नित्यतृप्ता मुनिमानसहंसिका |

3.4 सारांश-

ललितासहस्त्रनामस्तोत्र भगवती श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी देवी को प्रसन्न करने वाला अत्यन्त प्रसिद्ध स्तोत्र है | इस स्तोत्र का मूल पाठ यहाँ दिया गया है | माहात्म्य के पाठ को स्थानाभाव के कारण छोड़ दिया गया है| माहात्म्य का पाठ इस स्तोत्र के आगे एवं पीछे के पृष्ठों में मिलता है | उसका सारांश यह है कि मूल पाठ करना आवश्यक है | माहात्म्य के पाठ से श्रद्धा उत्पन्न होती है और श्रद्धा पूर्वक पाठ करने का फल बतलाया गया है |

3.5 पारिभाषिक शब्दावली

गगन – आकाश , वह्नि – आग , विरचित – रचा गया, कर – हाथ , वर्षिणी –वर्षा करने वाली , वैभव – धन ,औषधि – दवा ,पंकज – कमल , कटि – कमर , धारिणी – धारण करने वाली |

3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास 1 – क –सत्य ,ख- सत्य ,ग-असत्य ,घ- सत्य ,च- सत्य |

अभ्यास 2- 1- प्राणदात्री, 2 – शान्त्यतीता,3- मेरुनिलया, 4- मुक्तिनिलया, 5- मूर्तामूर्ता|

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- ललितासहस्त्रनाम- भास्कररायप्रणीतसौभाग्यभास्कराख्यभाष्योपेतम् – नाग पब्लिशर्स 11 ए /यू .जवाहर नगर , दिल्ली -7 .

3.8 सहायक पाठ्य सामग्री

1- श्रीविद्या - वरिवस्या ,श्रीविद्या साधनापीठ, शिव सदन , नगवां (लंका) , वाराणसी |

2- श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् अर्थात् सौभाग्यपञ्चकस्तोत्रम् – पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री , प्रकाशक – मास्टर खेलाड़ी लाल संकटा प्रसाद ,संस्कृत पुस्तकालय , कचौड़ी गली , वाराणसी |

3.9 निबंधात्मक प्रश्न-

1- दस महाविद्याओं के नाम लिखिए |
2- ललितासहस्त्रनामस्तोत्र का परिचय दीजिये |
3- ललितासहस्त्रनामस्तोत्र का ध्यान लिखिए |
4- ललितासहस्त्रनामस्तोत्र पाठ को प्रारम्भ से तीस श्लोक तक लिखिए |
5- ललितासहस्त्रनामस्तोत्र पाठ को समाप्ति से पूर्व के तीस श्लोक तक लिखिए |

इकाई - 4 श्रीशिवसहस्रनाम

इकाई की संरचना

4.1.प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 श्री शिवसहस्रनाम

4.3.1. श्री शिवसहस्रनाम का परिचय |

4.3.2. श्री शिवसहस्रनाम का मूल पाठ |

4.4 सारांश

4.5 पारिभाषिक शब्दावली

4.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.8 सहायक पाठ्य सामग्री

4.9 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

इस पाठ में श्री शिवसहस्त्रनाम के बारे में ज्ञान कराया जायेगा | इसके ज्ञान से आप श्री शिवसहस्त्रनाम स्तोत्र के महत्त्व को अच्छी तरह से समझ सकेगें | इस स्तोत्र का ज्ञान से भगवान शिव के एक हजार नामों का ज्ञान होगा जो न केवल कर्मकाण्ड से सम्बंधित जनों के लिए अपितु सभी के लिए अनिवार्य बतलाया गया है | आप जानते हैं कि कर्मकाण्ड भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है | इसमें विभिन्न सूक्तों,मन्त्रों, स्तोत्रों आदि का प्रयोग होता रहता है | इस स्तोत्र का प्रयोग श्री शंकर भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है | हालाकि श्री शंकर भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए अन्य बहुत सारे स्तोत्र हैं परन्तु सभी स्तोत्रों में उत्कृष्ट है - श्री शिवसहस्त्रनाम | भारतीय शास्त्रों की यह मान्यता है कि मानव जीवन का सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी देवता से सम्बंधित है | उन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए एवं प्राच्य ज्ञान को अर्वाचीन तरीके से विकसित करने के लिए किसी न किसी स्तोत्र का पाठ व्यक्ति को करना चाहिए जिसमें एक है - श्री शिवसहस्त्रनाम |

4.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ सकेगें कि –

1 – मानव जीवन में 'श्रीशिवसहस्त्रनाम' स्तोत्र का क्या महत्त्व है ?

2 – 'श्रीशिवसहस्त्रनाम' स्तोत्र को देव पूजन में क्या स्थान प्राप्त है ?

3- 'श्रीशिवसहस्त्रनाम' में भगवान शंकर की प्रसन्नता के लिए क्या लिखा गया है?

4- 'श्रीशिवसहस्त्रनाम' में श्री शंकर भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए ?

4.3 श्री शिवसहस्त्रनाम

श्री शिवसहस्त्रनाम स्तोत्र श्री शंकर भगवान को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है| भारतीय संस्कृति में श्री शंकर भगवान को विविध नामों से जाना जाता है |

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री राम चरित मानस में लिखा है –'भाभिहि मेटि सकहि त्रिपुरारी' यहाँ त्रिपुरारी शब्द भगवान शंकर के लिए आया है | भगवान शंकर यदि प्रसन्न हो जाय तो व्यक्ति के दुर्भाग्य को मिटाकर सौभाग्य में बदल सकते हैं | भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए उनके हजार नामों का स्तोत्र रूप में पाठ किया जाता है | उसी का नाम शिव शहस्त्र नाम है | 4.3.1 श्री शिवसहस्त्रनाम का परिचय |

श्री शिवसहस्त्रनाम का वर्णन महाभारत के अनुशासन पर्व से प्राप्त होता है | इसमें भगवान शंकर के हजार नाम दिए गये हैं | यह स्तोत्र स्वर्ग को , आरोग्य को, आयुष्य को प्रदान करने वाला है | शिव सहस्त्र नाम के पाठ करने वाले को उसके कार्य में आने वाले विघ्न समाप्त होते हैं | दानव. यक्ष,राक्षस, पिशाचादि भी उसके कार्य में विघ्न उपस्थित नहीं कर सकते हैं | जो व्यक्ति पवित्र होकर जितेन्द्रिय होकर इस सहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करता है, वह अश्वमेध यज्ञ के सामान फल प्राप्त करता है | इस स्तोत्र से पुष्टि का वर्धन होता है | ऋषि एवं देवता गण भी इस स्तोत्र का पाठ करते हैं | आस्तिक श्रद्धावान व्यक्तियों पर भगवान शंकर की शीघ्र कृपा होती है | यह स्तोत्र ब्रह्म प्रोक्त है परन्तु तंडी ऋषि के द्वारा यह प्रकाश में आया | इसका आदि मध्य एवं अंत देवता लोग भी नहीं जानते हैं | यह स्तोत्र वर देने वाला है और वरेण्य भी है | ब्रह्मा जी ने इस स्तोत्र को उसी तरह निकाला है जिस तरह दधि मंथन करके नवनीत निकाला जाता है | इस सहस्त्र नाम को स्तवराज की संज्ञा दी गयी है |

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

1 – श्री शिवसहस्त्रनाम का वर्णन महाभारत के अनुशासन पर्व से प्राप्त होता है|

2 - इसमें भगवान शंकर के हजार नाम दिए गये हैं |

3 -यह स्तोत्र स्वर्ग को , आरोग्य को, आयुष्य को प्रदान करने वाला नही है |

4 - शिव सहस्त्र नाम के पाठ करने वाले को उसके कार्य में आने वाले विघ्न समाप्त होते हैं |

5 - जो व्यक्ति पवित्र होकर जितेन्द्रिय होकर इस सहस्त्र नाम स्तोत्र का पाठ करता है वह अश्वमेध यज्ञ के समान फल प्राप्त करता है |

4.3.2. श्री शिवसहस्त्रनाम का मूल पाठ

विनियोगः – अस्य श्रीशिवसहस्त्रनामस्तोत्रस्य नारायणऋषिः श्रीशिवो देवता अनुष्टुप् छन्दः , श्रीशिवो बीजम् , गौरीशक्तिः , श्रीशिवप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः |

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारू चन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतीहस्तं प्रसन्नम् |
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ||

वासुदेव उवाच

ततः स प्रयतो भूत्वा मम तात युधिष्ठिर |
प्रन्जलिः प्राह विप्रर्षिर्नामसंग्रहमादितः | १ |

उपमन्युरुवाच

ब्रह्मप्रौक्तैर्ऋषिप्रोक्तैर्वेदवेदाङ्गसम्भवै: |
सर्वलोकेषु विख्यातं स्तुत्यं स्तोष्यामि नामभिः | २ |
महद्भिर्विहितै: सत्यै: सिद्धै: सर्वार्थसाधकै: |
ऋषिणा ताण्डिना भक्त्या कृतैर्वेदकृतात्मना | ३ |
यथोक्तै: साधुभिः ख्यातैर्मुनीभिस्तत्त्वदर्शिभिः |
प्रवरं प्रथमं स्वर्ग्यं सर्वभुतहितं शुभम् | ४ |
श्रुतै: सर्वत्र जगति ब्रह्मलोकावतारितै: |
सत्यैस्तत् परमं ब्रह्म ब्रह्मप्रोक्तं सनातनम् | ५ |
वक्ष्ये यदुकुलश्रेष्ठ श्रृणुष्वावहितो मम |
वरयैनं भवं देवं भक्तस्त्वं परमेश्वरम् | ६ |
तेन ते श्रावयिष्यामि यत् तद् ब्रह्म सनातनम् |
न शक्यं विस्तरात् कृत्स्नं वक्तुं सर्वस्य केनचित् | ७ |
युक्तेनापि विभूतीनामपि वर्षशतैरपी |
यस्यादिर्मध्यमन्तं च सुरैरपि न गम्यते | ८ |

कस्तस्य शक्नुयाद् वक्तुं गुणान् कात्स्न्र्येन माधव |
किं तु देवस्य महतः संक्षिप्तार्थपदाक्षरम् | ९ |
शक्तितश्चरितं वक्ष्ये प्रसादात् तस्य धीमतः |
अप्राप्य तु ततोऽनुज्ञां न शक्यः स्तोतुमीश्वरः | १० |
यदा तेनाभ्यनुज्ञात: स्तुतो वै स तदा मया |
अनादिनिधनस्याहं जगद्योनेर्महात्मन: | ११ |
नाम्नां कन्वित् समुद्देशं वक्ष्याम्यव्यक्तयोनिनः |
वरदस्य वरेण्यस्य विश्वरूपस्य धीमतः | १२ |
श्रृणु नाम्नां च यं कृष्ण यदुक्तं पद्मयोनिना |
दशनामसहस्त्राणि यान्याह प्रपितामह: |१३ |
तानि निर्मथ्य मनसा दध्नोघृतमिवोद्धृतम् |
गिरे: सारं यथा हेम पुष्पसारं यथा मधु |१४ |
घृतात् सारं यथा मण्डस्तथैतत् सारमुद्धृतम् |
सर्वपापापहमिदं चतुर्वेदसमन्वितम् | १५ |
प्रयत्नेनाधिगन्तव्यं धार्यं च प्रयतात्मना |
मांगल्यं पौष्टिकं चैव रक्षोघ्नं पावनं महत् | १६ |
इदं भक्ताय दातव्यं श्रद्दधानास्तिकाय च |
नाश्रद्दधानरुपाय नास्तिकायाजितात्मने | १७ |
यश्चाभ्यसूयते देवं कारणात्मानमीश्वरम् |
स कृष्ण नरकं याति सह पूर्वै: सहात्मजै: |१८ |
इदं ध्यानमिदं योगमिदं ध्येयमनुत्तमम् |
इदं जप्यमिदं ज्ञानं रहस्यमिदमुत्तमम् | १९ |
यं ज्ञात्वा अन्तकालेऽपि गच्छेत् परमां गतिम् |
पवित्रं मङ्गलं मेध्यं कल्याणमिदमुत्तमम् | २० |
इदं ब्रह्मा पुरा कृत्वा सर्वलोकपितामह: |
सर्वस्तवानां राजत्वे दिव्यानां समकल्पयत् | २१ |
तदाप्रभृति चैवायमीश्वरस्य महात्मनः |
स्तवराज इति ख्यातो जगत्यमरपूजितः | २२ |
ब्रह्मलोकादयं स्वर्गे स्तवराजोऽवतारित: |
यतस्तण्डि: पुरा प्राप तेन तण्डिकृतोऽभवत् | २३ |

स्वर्गाच्चैवात्र भूर्लोकं तण्डिना ह्यवतारितः |
सर्वमंगलमागल्यं सर्वपापप्रणाशनम् | २४ |
निगदिष्ये महाबाहो स्तवानामुत्तमं स्तवम् |
ब्रह्मणामपि यद् ब्रह्म पराणामपि यत् परम् |२५ |
तेजसामपि यत् तेजस्तपसामपि यत् तपः |
शान्तानामपि यः शान्तोद्युतीनामपि या द्युतिः | २६ |
दान्तानामपि यो दान्तो धीमतामपि या च धीः |
देवानामपि यो देव ऋषीणामपि यस्त्वृषिः | २७ |
यज्ञानामपि यो यज्ञः शिवानामपि यः शिवः |
रुद्राणामपि यो रुद्रः प्रभा प्रभवतामपि | २८ |
योगिनामपि यो योगी कारणानां च कारणम् |
यतो लोकाः सम्भवन्ति न भवन्ति यतः पुनः | २९ |
सर्वभूतात्मभूतस्य हरस्यामिततेजसः |
अष्टोत्तरसहस्त्रं तु नाम्नां शर्वस्य मे श्रृणु |
यच्छ्रुत्वा मनुजव्याघ्र सर्वान् कामानवाप्स्यसि | ३० |

|| स्तोत्रम् ||

स्थिरः स्थाणुः प्रभुर्भीमः प्रवरो वरदो वरः |
सर्वात्मा सर्वविख्यातः सर्वः सर्वकरो भवः ||३१|
जटी चर्मी शिखण्डी च सर्वांगः सर्वभावनः |
हरश्च हरिणाक्षश्च सर्वभूतहरः प्रभुः ||३२|
प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च नियतः शाश्वतो ध्रुवः |
श्मशानवासी भगवान् खचरो गोचरो ऽ र्दनः ||३३|
अभिवाद्यो महाकर्मा तपस्वी भूतभावनः |
उन्मत्तवेषप्रच्छन्नः सर्वलोकप्रजापतिः ||३४|
महारूपो महाकायो वृषरूपो महायशाः |
महात्मा सर्वभूतात्मा विश्वरूपो महाहनुः ||३५|
लोकपालो ऽ न्तर्हितात्मा प्रसादो हयगर्दभिः|
पवित्रं च महान्श्चैव नियमो नियमाश्रितः |३६|
सर्वकर्मा स्वयंभूतः आदिरादिकरो निधिः |
सहस्त्राक्षो विशालाक्षः सोमो नक्षत्रसाधकः||३७|

चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्ग्रहो गृहपतिर्वरः|
अत्रिरत्र्या नमस्कर्ता मृगबाणार्पणो ऽ नघः ||३८|
महातपा घोरतपा अदीनो दीनसाधकः |
संवत्सरकरो मन्त्रः प्रमाणं परमं तपः ||३९|
योगी योज्यो महाबीजो महारेता महाबलः |
सुवर्णरेताः सर्वज्ञः सुबीजो बीजवाहनः||४०|
दशबाहुस्त्वनिमिषो नीलकंठ उमापतिः |
विश्वरूपः स्वयंश्रेष्ठो बलवीरो ऽ बलोगणः ||४१|
गणकर्ता गणपतिर्दिग्वासाः काम एव च |
मन्त्रवित् परमो मन्त्रः सर्वभावकरो हरः ||४२|
कमण्डलुधरो धन्वी बाणहस्तः कपालवान् |
अशनी शतघ्नी खड्गी पट्टिशी चायुधी महान् ||४३|
श्रुवहस्तः सुरूपश्च तेजस्तेजस्करो निधिः |
उष्णीषी च सुवक्त्रश्च उदग्रो विनतस्तथा||४४|
दीर्घश्च हरिकेशशच सुतीर्थः कृष्ण एव च |
श्रृगाल रूपः सिद्धार्थो मुण्डः सर्वशुभंकरः ||४५|
अजश्च बहुरूपश्च गन्धधारी कपर्द्यपी |
ऊर्ध्वरेता उर्ध्वलिंग ऊर्ध्वशायी नभः स्थलः ||४६|
त्रिजटी चीरवासाश्च रुद्रः सेनापतिर्विभुः |
अहश्चरो नक्तन्चरस्तिग्ममन्युः सुवर्चसः ||४७|
गजहा दैत्यहा कालो लोकधाता गुणाकरः |
सिंहशार्दूलरूपश्च आर्द्रचर्माम्बरावृतः||४८|
कालयोगी महानादः सर्वकामश्चतुष्पथः |
निशाचरः प्रेतचारी भूतचारी महेश्वरः |४९|
बहुभूतो बहुधरःस्वर्भानुरमितो गतिः ||
नृत्यप्रियो नित्यनर्तो नर्तकः सर्वलालसः |५०|
घोरो महातपाः पाशो नित्यो गिरिरुहो नभः |
सहस्त्रहस्तो विजयो व्यवसायो ह्यतिन्द्रतः ||५१|
अधर्षणो धर्षणात्मा यज्ञहा कामनाशकः|
दक्षयागापहारी च सुसहो मध्यमस्तथा ||५२|

तेजोपहारी बलहा मुदितोऽर्थोऽजितो वरः ।
गम्भीरघोषो गम्भीरो गम्भीरबलवाहनः ।५३।
न्यग्रोधरूपो न्यग्रोधो वृक्षकर्णस्थितिर्विभुः ।
सुतीक्ष्णदसनश्चैव महाकायो महाननः ॥५४।
विश्वक्सेनो हरिर्यज्ञः संयुगापीडवाहनः।
तीक्ष्णतापश्च हर्यश्वः सहायः कर्मकालवित् ।५५।
विष्णुप्रसादितो यज्ञः समुद्रो वडवामुखः ।
हुताशनसहायश्च प्रशान्तात्मा हुताशनः ।५६।
उग्रतेजा महातेजा जन्यो विजयकालवित् ।
ज्योतिषामयनं सिद्धिः सर्वविग्रह एव च ।५७।
शिखी मुण्डी जटी ज्वाली मूर्तिजो मूर्द्धगो बली ।
वेणवी पणवी ताली खली कालकटंकटः ।५८।
नक्षत्रविग्रहमतिर्गुणबुद्धिर्लयो ऽ गमः
प्रजापतिर्विश्वबाहुर्विभागः सर्वगोऽमुखः ।५९।
विमोचनः सुसरणो हिरण्यकवचोद्भवः।
मेढ्रजोबलचारी च महीचारी स्रुतस्तथा।६०।
सर्वतूर्यनिनादी च सर्वतोद्यपरिग्रहः।
व्यालरूपो गुहावासी गुहो माली तरंगवित्॥६१।
त्रिदशस्त्रिकालधृक् कर्मसर्वबन्धविमोचनः ।
बन्धनस्त्वसुरेन्द्राणां युधि शत्रुविनाशनः ॥६२।
सांख्यप्रसादो दुर्वासाः सर्वसाधुनिषेवितः ।
प्रस्कन्दनो विभागज्ञोऽ तुल्यो यज्ञविभागवित् ।६३॥
सर्ववासः सर्वचारी दुर्वासा वासवोऽमरः ।
हैमो हेमकरोऽयज्ञः सर्वधारी धरोत्तमः॥ ६४।
लोहिताक्षो महाक्षश्च विजायक्षो विशारदः ।
संग्रहो निग्रहः कर्ता सर्पचीरनिवासनः ॥६५।
मुख्यो ऽ मुख्यश्च देहश्च काहलिः सर्वकामदः ।
सर्वकालप्रसादश्च सुबलो बलरूपधिक् ॥६६।
सर्वकामवरश्चैव सर्वदः सर्वतोमुखः ।
आकाशनिर्विरूपश्च निपातो ह्यवशः खगः ॥६७।

रौद्ररूपोंशुरादित्यो बहुरश्मिः सुवर्चसी |
वसुवेगो महावेगो मनोवेगो निशाचरः |६८|
सर्ववासी श्रियावासी उपदेशकरो ऽ करः||
मुनिरात्मनिरालोकः सम्भग्नश्चसहस्त्रदः |६९|
पक्षी च पक्षरूपश्च अतिदीप्तो विशाम्पतिः |
उन्मादो मदनः कामो ह्यश्वत्थोऽर्थकरो यशः |७०|
वामदेवश्च वामश्च प्राग्दक्षिणश्च वामनः |
सिद्धयोगी महर्षिश्च सिद्धार्थः सिद्धसाधकः ||७१|
भिक्षुश्च भिक्षुरूपश्च विपणोमृदुरव्ययः|
महासेनो विशाखश्च षष्टिभागो गवां पतिः ||७२|
वज्रहस्तश्च विष्कम्भी चमूस्तम्भन एव च |
वृत्ता वृत्तकरस्तालो मधुर्मधुकलोचनः ||७३|
वाचस्पत्यो वाजसनो नित्यमाश्रमपूजितः |
ब्रह्मचारी लोकचारी सर्वचारी विचारवित् |७४ |
ईशानः ईश्वरः कालो निशाचारी पिनाकवान् |
निमित्तस्थो निमित्तं च नन्दिर्नन्दिकरो हरिः ||७५|
नन्दीश्वरश्च नन्दी च नन्दनो नन्दिवर्धनः |
भगहारी नियंता च कालो ब्रह्मा पितामहः ||७६ |
चतुर्मुखो महालिंगश्चारुलिंगस्तथैवच|
लिंगाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः ||७७|
बीजाध्यक्षो बीजकर्ता अध्यात्मनुगतो बलः |
इतिहासः सकल्पश्च गौतमो ऽ थ निशाकरः ||७८|
दम्भो ह्यदम्भो वैदम्भो वैश्यो वशकरः कलिः |
लोककर्ता पशुपतिः महाकर्ता ह्यनौषधः| ७९ |
अक्षरं परमं ब्रह्म बलवच्छक्र एव च |
नीतिर्ह्यनीतिर्शुद्धात्मा शुद्धो मान्यो गतागतः || ८० |
बहुप्रसादः सुस्वप्नो दर्पणोऽथ त्वमित्रजित् |
वेदकारो मन्त्रकारो विद्वान् समरमर्दनः |८१|
महामेघनिवासी च महाघोरो वशीकरः |
अग्निज्वालो महाज्वालो अतिधूम्रो हुतो हविः | ८२ |

वृषणः शंकरो नित्यं वर्चस्वी धूमकेतनः |
नीलस्तथांगलुब्धश्च शोभनो निरवग्रहः | ८३ |
स्वस्तिदः स्वस्तिभावश्च भागी भागकरो लघुः |
उत्संगश्च महाङ्गश्च महागर्भ परायणः | ८४ |
कृष्णवर्णः सुवर्णश्च इन्द्रियं सर्वदेहिनाम् |
महापादो महाहस्तो महाकायो महायशाः | ८५|
महामूर्धा महामात्रो महानेत्रो निशालयः |
महान्तको महाकर्णो महोष्ठश्च महाहनुः | ८६|
महानासो महाकम्बुर्महाग्रीवः श्मशानभाक् |
महावक्षा महोरस्को ह्यन्तरात्मा मृगालयः | ८७|
लम्बनो लम्बितोष्ठश्च महामायः पयोनिधिः |
महादन्तो महादंष्ट्रो महाजिह्वो महामुखः | ८८ |
महानखो महारोमा महाकोशो महाजटः |
प्रसन्नश्च प्रसादश्च प्रत्ययो गिरिसाधनः |८९ |
स्नेहनो ऽ स्नेहनश्चैव अजिताश्च महामुनिः |
वृक्षाकारो वृक्षकेतुरनलो वायुवाहनः |९०|
गण्डलीमेरुधामा च देवाधिपतिरेव च|
अथर्वशीर्षः सामास्य ऋक्सहस्त्रामितेक्षणः |९१|
यजुः पाद्भुजो गुह्यः प्रकाशो जंगमस्तथा |
अमोघार्थः प्रसादश्च अभिगम्यः सुदर्शनः | ९२ |
उपकारः प्रियः सर्वः कनकः काञ्चनच्छविः |
नाभिर्नन्दिकरो भावः पुष्करस्थपतिः स्थिरः | ९३ |
द्वादशस्त्रासनश्चाद्यो यज्ञो यज्ञसमाहितः |
नक्तं कलिश्च कालश्च मकरः कालपूजितः| ९४ |
सगणो गणकारश्च भूतवाहनसारथिः |
भस्मशयो भस्मगोप्ता भस्मभूतस्तरुर्गणः | ९५|
लोकपालस्तथालोको महात्मा सर्वपूजितः |
शुक्लस्त्रिशुक्लः सम्पन्नः शुचिर्भूतनिषेवितः | ९६ |
आश्रमस्थः क्रियावस्थो विश्वकर्ममतिर्वरः |
विशालशाखस्ताम्रोष्ठो ह्यम्बुजालः सुनिश्चलः | ९७|

कपिलः कपिशः शुक्लः आयुश्चैव परोऽपरः|
गन्धर्वो ह्यदितिस्तार्क्ष्यः सुविज्ञेयः सुशारदः | ९८|
परश्वधायुधो देवो अनुकारी सुबान्धवः |
तुम्बवीणो महाक्रोध ऊर्ध्वरेता जलेशयः | ९९|
उग्रो वंशकरो वंशो वंशनादो ह्यनिन्दितः|
सर्वांगरूपो मायावी सुहृदो ह्यनिलोऽनलः |१०० |
बन्धनो बन्धकर्ता च सुबन्धनविमोचनः |
सयज्ञारिः सकामारिर्महादंष्ट्रो महायुधः |१०१ |
बहुधा निन्दितः शर्वः शंकरः शंकरोऽधनः |
अमरेशो महादेवो विश्वदेवः सुरारिहा |१०२ |
अहिर्बुध्न्योऽनिलाभश्च चेकितानो हविस्तथा |
अजैकपाच्च कापाली त्रिशंकुरजितः शिवः |१०३ |
धन्वन्तरिर्धूमकेतुः स्कन्दो वैश्रवणस्तथा|
धाता शक्रश्च विष्णुश्च मित्रस्त्वष्टा ध्रुवो धरः|१०४ |
प्रभावः सर्वगो वायुरर्यमा सविता रविः |
उषङ्गुश्च विधाता च मान्धाता भूतभावनः|१०५ |
विभुर्वर्णविभावी च सर्वकामगुणावहः |
पद्मनाभो महागर्भश्चन्द्रवक्त्रोऽनिलोऽनलः| १०६|
बलवांश्चोपशान्तश्च पुराणः पुण्यचञ्चुरी |
कुरुकर्त्ता कुरुवासी कुरुभूतो गुणौषधः| १०७ |
सर्वाशयो दर्भचारी सर्वेषां प्राणिनां पतिः |
देवदेवः सुखासक्तः सदसत्सर्वरतन्वित् | १०८ |
कैलास गिरिवासी च हिमवद्गिरिसंश्रयः |
कूलहारी कूलकर्ता बहुविद्यो बहुप्रदः |१०९|
वणिजो वर्धकी वृक्षो बकुलश्चन्दनश्छदः |
सारग्रीवो महाजत्रुरलोलश्च महौषधः |११०|
सिद्धार्थकारी सिद्धार्थश्छन्दोव्याकरणोत्तरः |
सिंहनादः सिंहदंष्ट्रः सिहगः सिहवाहनः |१११ |
प्रभावात्मा जगत्कालस्थालो लोकहितस्तरुः |
सारङ्गो नवचक्राङ्गः केतुमाली सभावनः |११२ |

भूतालयो भूतपतिरहोरात्रमनिन्दितः |११३ |
वाहिता सर्वभूतानां निलयश्च विभुर्भवः |
अमोघः संयतो ह्यश्वो भोजनः प्राणधारण |११४|
धृतिमान् मतिमान् दक्षः सत्कृतश्च युगाधिपः |
गोपालिर्गोपतिर्ग्रामो गोचर्मवसनो हरिः |११५|
हिरण्यबाहुश्च तथा गुहापालः प्रवेशिनाम् |
प्रकृष्टारिर्महाहर्षो जितकामो जितेन्द्रियः |११६ |
गांधारश्च सुवासश्च तपः सक्तोरतिर्नरः |
महागीतो महानृत्यो ह्यप्सरोगणसेवितः |११७ |
महाकेतुर्महाधातुर्नैकसानुचरश्चलः |
आवेदनीय आदेशः सर्वगन्धसुखावहः | ११८ |
तोरणस्तारणो वातः परिधीः पतिखेचरः |
संयोगो वर्धनो वृद्धो अतिवृद्धो गुणाधिकः |११९ |
नित्य आत्मसहायश्च देवासुरपतिः पतिः |
युक्तश्च युक्तबहुश्च देवो दिविसुपर्वणः |१२०|
अषाढ़श्च सुषाढश्च ध्रुवो ऽथ हरिणो हरः |
वपुरावर्तमानेभ्यो वसुश्रेष्ठो महापथः |१२१ |
शिरोहारी विमर्शश्च सर्वलक्षणलक्षितः |
अक्षश्च रथयोगी च सर्वयोगी महाबलः | १२२ |
समाम्नायोऽसमाम्नायस्तीर्थदेवो महारथः |
निर्जीवो जीवनो मन्त्रः शुभाक्षो बहुकर्कशः |१२३|
रत्नप्रभूतो रत्नांगो महार्णवनिपानवित् |
मूलं विशालो ह्यमृतो व्यक्ताव्यक्तस्तपोनिधिः |१२४|
आरोहणोऽधिरोहश्च शीलधारी महायशाः |
सेनाकल्पो महाकल्पो योगो युगकरो हरिः |१२५ |
युगरूपो महारूपो महानागहनो ऽ वधः |
न्यायनिर्वपणः पादः पण्डितो ह्यचलोपमः| १२६ |
बहुमालो महामालः शशी हरसुलोचनः |
विस्तारो लवणः कूपस्त्रियुगः सफलोदयः | १२७|
त्रिलोचनो विषण्णाङ्गो मणिविद्धो जटाधरः |

विन्दुर्विसर्गः सुमुखः शरः सर्वायुधः सहः |१२८ |
निवेदनः सुखाजातः सुगन्धारो महाधनुः |
गंधपाली च भगवानुत्थानः सर्वकर्मणाम् | १२९|
मन्थानो बहुलो वायुः सकलः सर्वलोचनः |
तलस्तालः करस्थाली ऊर्ध्वसंहननो महान् |१३०|
छत्रं सुच्छत्रो विख्यातो लोकः सर्वाश्रयः क्रमः |
मुण्डोविरूपो विकृतो दण्डी कुण्डी विकुर्वणः |१३१|
हर्यक्षः ककुभो वज्री शतजिह्वः सहस्त्रपात् |
सस्त्रमूर्धा देवेन्द्रः सर्वदेवमयो गुरुः |१३२ |
सहस्त्रबाहुः सर्वांगः शरण्यः सर्वलोककृत् |
पवित्रं त्रिककुन्मंत्रः कनिष्ठः कृष्णपिंगलः | १३३|
ब्रह्मदण्डविनिर्माता शतघ्नीपाशशक्तिमान् |
पद्मगर्भो महागर्भो ब्रह्मगर्भो जलोद्धवः |१३४ |
गभास्तिर्ब्रह्मकृद् ब्रह्मी ब्रह्मविद् ब्राह्मणो गतिः |
अनन्तरूपो नैकात्मा तिग्मतेजाः स्वयम्भुवः |१३५ |
ऊर्ध्वगात्मा पशुपतिर्वातरंहा मनोजवः |
चन्दनी पद्मनालाग्रः सुरभ्युत्तरणो नरः |१३६|
कर्णिकारमहास्त्रग्वी नीलमौलिः पिनाकधृत् |
उमापतिरुमाकान्तो जाह्नवीधृदुमाधवः |१३७
वरो वराहो वरदो वरेण्यः सुमहास्वनः |
महाप्रसादो दमनः शत्रुहा श्वेतपिंगलः |१३८|
पीतात्मा परमात्मा च प्रयतात्मा प्रधानधृत् |
सर्वपार्श्वमुखस्त्र्यक्षो धर्मसाधारणो वरः | १३९\
चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा अमृतो गोवृषेश्वरः |
साध्यर्षिवसुरादित्यो विवस्वान् सवितामृतः |१४०|
व्यासः सर्गः सुसन्क्षेपो विस्तरः पर्ययो नरः |
ऋतुः संवत्सरो मासो पक्षः संख्यासमापनः | १४१ |
कलाः काष्ठालवा मात्रा मुहुर्ताहः क्षपाः क्षणाः |
विश्वक्षेत्रं प्रजाबीजं लिंगमाद्यस्तु निर्गमः |१४२ |
सदसद् व्यक्तमव्यक्तं पिता माता पितामहः |

स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम् |१४३|
निर्वाणं ह्लादनश्चैव ब्रह्मलोकः परा गतिः |
देवासुरविनिर्माता देवासुरपरायणः |१४४|
देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः |
देवासुरमहामात्रो देवासुरगणाश्रयः| १४५ |
देवासुरगणाध्यक्षो देवासुरगणाग्रणीः |
देवातिदेवो देवर्षिर्देवासुरवरप्रदः| १४६ |
देवासुरेश्वरो विश्वो देवासुरमहेश्वरः|
सर्वदेवमयोऽचिन्त्यो देवतात्मा ऽऽ सम्भवः| १४७ |
उद्भित त्रिविक्रमो वैद्यो विरजो नीरजोऽमरः |
ईड्यो हस्तीश्वरो व्याघ्रो देवसिंहो नरर्षभः | १४८ |
विबुधोऽग्रवरः सूक्ष्मः सर्वदेवस्तपोमयः |
सुयुक्तः शोभनो वज्री प्रासानां प्रभवोऽव्ययः | १४९|
गुहः कान्तो निजः सर्गः पवित्रं सर्वपावनः |
श्रृंगी श्रृंगप्रियो बभ्रू राजराजो निरामयः | १५० |
अभिरामः सुरगणो विरामः सर्वसाधनः |
ललाटाक्षो विश्वदेवो हरिणो ब्रह्मवर्चसः | १५१ |
स्थावराणां पतिश्चैव नियमेन्द्रियवर्धनः |
सिद्धार्थः सिद्ध भूतार्थोऽ चिन्त्यः सत्यव्रतः शुचिः || १६२|
व्रताधिपः परं ब्रह्म भक्तानां परमा गतिः |
विमुक्तो मुक्ततेजाश्च श्रीमान्श्रीवर्धनो जगत् || १५३ |

फलश्रुतिः

यथाप्रधानं भगवानिति भक्त्या स्तुतो मया |
यन्न ब्रह्मादयो देवाः विदुस्तत्वेन नर्षयः | १५४ |
स्तोतब्यमर्च्यं वन्द्यं च कः स्तोष्यति जगत्पतिम् |
भक्त्या त्वेवं पुरस्कृत्य मया यज्ञपतिर्विभुः | १५५ |
ततोऽभ्यनुज्ञा सम्प्राप्य स्तुतो मतिमतां वरः |
शिवमेभिः स्तुवन् देवं नामभिः पुष्टिवर्धनैः |१५६|
नित्ययुक्तः शुचिर्भक्तः प्राप्नोत्यात्मानमात्मना |१५७|
एतद्धिः परमं ब्रह्मपरं ब्रह्माधिगच्छति |

ऋषयश्चैव देवाश्च स्तुवंत्येतेन तत्परम् |१५८ |
स्तूयमानो महादेवस्तुष्यते नियतात्मभिः |
भक्तानुकम्पी भगवानात्मसंस्थाकरो विभुः | १५९ |
तथैव च मनुष्येषु ये मनुष्याः प्रधानतः |
आस्तिकाः श्रद्धधानाश्च बहुभिर्जन्मभिः स्तवैः | १६०|
भक्त्या ह्यनन्यमीशानं परं देवं सनातनं |
कर्मणा मनसा वाचा भावेनामिततेजसा | १६१|
शयाना जाग्रमाणाश्च व्रजन्नुपविशंस्तथा |
उन्मिषन् निमिषंश्चैव चिन्तयन्तः पुनः पुनः |१६२|
श्रृण्वन्तः श्रावयन्तश्च कथयन्तश्च ते भवम् |
स्तुवन्तः स्तूयमानाश्च तुष्यन्ति च रमन्ति च|१६३|
जन्मकोटिसहस्त्रेषु नानासंसारयोनिषु|
जन्तोर्विगतपापस्य भवे भक्तिः प्रजायते|१६४ |
उत्पन्ना च भवे भक्तिरनन्या सर्वभावतः |
भाविनः कारणे चास्य सर्वयुक्तस्य सर्वथा |१६५ |
एतद् देवेषु दुष्प्रापं मनुष्येषु न लभ्यते |
निर्विघ्ना निश्चला रुद्रे भक्तिरव्यभिचारिणी | १६६ |
तस्यैव च प्रसादेन भक्तिरुत्पद्यते नृणाम् |
येन यान्ति परां सिद्धिं तद्भावगतचेतसः |१६७|
ये सर्वभावानुगताः प्रपद्यन्ते महेश्वरम् |
प्रपन्नवत्सलो देवः संसारात् तान् समुद्धरेत् |१६८|
एवमन्ये विकुर्वन्ति देवाः संसारमोचनम् |
मनुष्याणामृते देवं नान्या शक्तिस्तपोबलम् | १६९ |
इति तेनेंद्रकल्पेन भगवान् सदसत्पतिः |
कृत्तिवासाः स्तुतः कृष्णः तण्डिना शुभबुद्धिना | १७० |
स्तवमेतं भगवतो ब्रह्मा स्वयमधारयत|
गीयते च स बुध्येत ब्रह्माशंकरसन्निधौ | १७१|
इदं पुण्यं पवित्रं च सर्वदा पापनाशनम् |
योगदं मोक्षदं चैव स्वर्गदं तोषदं तथा | १७२ |
एवमेतत् पठन्ते य एकभक्त्या तु शंकरम् |

या गतिः सांख्ययोगानां व्रजन्त्येतां गतिं तदा |१७३ |
स्त्वमेतं प्रयत्नेन सदा रुद्रस्य सन्निधौ |
अब्दमेकं चरेद् भक्तः प्राप्नुयादीप्सितं फलम् | १७४|

स्वर्ग्यमारोग्यमायुष्यं धन्यं वेदेन सम्मितम् |
नास्य विघ्नं विकुर्वन्ति दानवा यक्षराक्षसाः |
पिशाचा यातुधाना वा गुह्यका भुजगा अपि ||
यः पठेत् शुचिः पार्थ ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः |
अभग्नयोगो वर्षं तु सो ऽश्वमेधफलं लभेत् ||

इति श्रीमहाभारते अनुशासनपर्वणि श्रीशिवसहस्त्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ||

अभ्यास प्रश्न – 2

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 - स्थिरः स्थाणुः प्रभुर्भीमः .... वरदो वरः |

1 -सर्वात्मा सर्वविख्यातः ..... सर्वकरो भव |

2 जटी चर्मी शिखण्डी च सर्वांगः ----- भावनः |

3 हरश्च हरिणाक्षश्च सर्वभूतहरः -----|

4 प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च ....शाश्वतो ध्रुवः |

4.4 सारांश

श्री शिवसहस्त्रनाम स्तोत्र श्री शंकर भगवान को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है | भारतीय संस्कृति में श्री शंकर भगवान को विविध नामों से जाना जाता है जिनमें हजार नामों को संस्कृत में सहस्त्र नाम कहा गया है | श्री शिवसहस्त्रनाम का वर्णन महाभारत के अनुशासन पर्व से प्राप्त होता है | इसमें भगवान शंकर के हजार नाम दिए गये हैं | यह स्तोत्र स्वर्ग को , आरोग्य को, आयुष्य को प्रदान करने वाला है | शिव सहस्त्र नाम के पाठ करने वाले को उसके कार्य में आने वाले विघ्न समाप्त होते हैं |

4.5 पारिभाषिक शब्दावली

1 – गीयते – गाया जाता है|

2 – बुध्येत् - जगता है |

3 - सन्निधौ – सन्निधि में |

4 इदं- यह |

5 - पुण्यं – पुण्य को |

6 -पवित्रं – शुद्ध |

7 -सर्वदा-हमेशा |

8 -पापनाशनम्- पाप का नाश करता है |

9 -योगदं – योग को देने वाला |

10 -मोक्षदं- मोक्ष को देने वाला |

11 -स्वर्गदं – स्वर्ग को देने वाला |

12 -तोषदं – संतोष को देने वाला |

13 -एवमेतत् – इस प्रकार यह |

14 -पठन्ते – पढ़ते हैं |

15 - य- जो|

16 -एकभक्त्या – एक भक्त व्रत पूर्वक |

17 -सांख्ययोगानां – सांख्य योगियों को |

18 -स्त्वमेतं -यह् स्तोत्र |

१९- अब्दमेकं – एक वर्ष |

4.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास 1 – क –सत्य ,ख- सत्य ,ग- असत्य ,घ- सत्य ,च- सत्य |

अभ्यास 2 – 1- प्रवरो , 2 –सर्वः , 3-सर्व , 4- प्रभुः , 5-नियतः |

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-सहस्त्रनामस्तोत्रसंग्रह – गीताप्रेस ,गोरखपुर| २७३००५

4.8 सहायक पाठ्य सामग्री

1-स्तोत्ररत्नावली गीताप्रेस गोरखपुर, गोविन्दभवन कार्यालय कोलकाता का संस्थान

4.9 निबंधात्मक प्रश्न

1- श्रीशिवसहस्त्रनामस्तोत्र का महत्त्व लिखिए |

2- श्री शिवसहस्त्रनाम का परिचय दीजिये |

3- –श्री शंकर जी के पचास नाम लिखिए |

4- – श्रीशिवसहस्त्रनाम स्तोत्र का मूल पाठ लिखिए |

- श्रीशंकर जी के बारे में लिखिए |

इकाई – 5 श्रीदुर्गासहस्रनाम

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना

5 .2 उद्देश्य

5 .3 श्रीदुर्गासहस्रनामस्त्रोत्रम्

5.3.1. श्रीदुर्गासहस्रनामस्त्रोत्रम् का परिचय |

5.3.2. श्रीदुर्गासहस्रनामस्त्रोत्रम् का मूल पाठ |

5.4 सारांश

5.5 पारिभाषिक शब्दावली

5.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.8 सहायक पाठ्य सामग्री

5.9 निबंधात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

इस पाठ में 'श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम्' के बारे में ज्ञान कराया जायेगा| इसके ज्ञान से आप 'श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम्' के महत्त्व को अच्छी तरह से समझ सकेगें| इस स्तोत्र का ज्ञान न केवल कर्मकाण्ड से सम्बंधित जनों के लिए अपितु सभी माता दुर्गा के प्रेमियों के लिए अनिवार्य बतलाया गया है| आप जानते हैं कि कर्मकाण्ड भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है| इसमें विभिन्न सूक्तों, मन्त्रों, स्तोत्रों आदि का प्रयोग होता रहता है| इस स्तोत्र का प्रयोग दुर्गा माता की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है| हालाकि श्री दुर्गा माता की कृपा प्राप्ति के लिए अन्य बहुत सारे स्तोत्र हैं परन्तु सभी स्तोत्रों में उत्कृष्ट है - 'श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम्'| भारतीय शास्त्रों की यह मान्यता है कि मानव जीवन का सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी देवता से सम्बंधित है | उन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए एवं प्राच्य ज्ञान को अर्वाचीन तरीके से विकसित करने के लिए किसी न किसी स्तोत्र का पाठ व्यक्ति को करना चाहिए जिसमें एक है - श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् |

5.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ सकेगें कि –

1- मानव जीवन में श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् का क्या महत्त्व है ?

2– श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् को देवी पूजन में क्या स्थान प्राप्त है ?

3-श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् में भगवान कृष्ण की प्रसन्नता के लिए क्या लिखा गया है ?

4-श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् में माता दुर्गा की कृपा प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए ?

5-आदि शक्ति पराम्बा भगवती दुर्गा की उपासना किन-किन नामों से करनी चाहिए ?

5 .3 श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम्

'श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम्' माता दुर्गा को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है | भारतीय संस्कृति में माता दुर्गा को विविध नामों से जाना जाता है | गोस्वामी

तुलसीदास जी ने श्री राम चरित मानस में लिखा है –'आदि शक्ति जेहि जग उपजाया ' यहाँ आदि शक्ति शब्द भगवती दुर्गा के लिए आया है | माता दुर्गा को ही जगत् जननी कहा गया है | समस्त संसार माता दुर्गा की ही संतति है | भगवती दुर्गा को प्रसन्न करने के लिए उनके विविध स्तोत्रों का पाठ किया जाता है | उसी में एक है- श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् |

5 .3.1. श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् का परिचय |

श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् कुलार्णव तन्त्र में वर्णित है | इसमें माता दुर्गा के विविध नाम दिए गये हैं | यह स्तोत्र समस्त सिद्धिओं को प्रदान करने वाला है | श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् के पाठ करने वाले को उसके कार्य में आने वाले विघ्न समाप्त होते हैं | जो व्यक्ति पवित्र होकर जितेन्द्रिय होकर इस श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् का नियमित रूप से पाठ करता है, वह पुरश्चरण के सामान फल प्राप्त करता है | इस स्तोत्र से पुष्टि का वर्धन होता है | सायं ,प्रातः, मध्यान्ह, मध्यरात्रि में पाठ करने वाला महान बलशाली होता है | आस्तिक श्रद्धावान व्यक्तियों पर भगवती दुर्गा की शीघ्र कृपा होती है |

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

1 – श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् का वर्णन कुलार्णव तन्त्र से प्राप्त होता है |

2 - इसमें माता दुर्गा के विविध नाम दिए गये हैं |

3 -यह स्तोत्र समस्त सिद्धिओं को प्रदान करने वाला नही है |

4 - इस स्तोत्र से पुष्टि का वर्धन होता है |

5 –इस स्तोत्र का सायं ,प्रातः, मध्यान्ह, मध्यरात्रि में पाठ करने वाला महान बलशाली होता है |

5.3.2. श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् का मूल पाठ |

॥ श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्त्रोत्रम् ॥

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् |
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे |

दुं दुर्गा दुर्गतिहरा दुर्गाचलनिवासिनी |
दुर्गमार्गानुसंचारा दुर्गमार्गनिवासिनी | १ |
दुर्गमार्गप्रविष्टा च दुर्गमार्गप्रवेशिनी |
दुर्गमार्गकृतावासा दुर्गमार्गजयप्रिया | २ |
दुर्गमार्गगृहीतार्चा दुर्गमार्गस्थितात्मिका |
दुर्गमार्गस्तुतिपरा दुर्गमार्गस्मृतिपरा | ३ |
दुर्गमार्गसदास्थाली दुर्गमार्गरतिप्रिया |
दुर्गमार्गस्थलस्थाना दुर्गमार्गविलासिनी | ४ |
दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रा दुर्गमार्गप्रवर्तिनी |
दुर्गासुरनिहन्त्री च दुर्गासुरनिषूदिनी | ५ |
दुर्गासुरहरादूती दुर्गासुरविनाशिनी |
दुर्गासुरवधोन्मत्ता दुर्गासुरवधोत्सुका | ६ |
दुर्गासुरवधोत्साहा दुर्गासुरवधोद्यता |
दुर्गासुरवधप्रेप्सुर्दुर्गासुरमखान्तकृत् | ७ |
दुर्गासुरध्वंसतोषा दुर्गदानवदारिणी |
दुर्गविद्रावणकरी दुर्गविद्रावणी सदा | ८ |
दुर्गविक्षोभणकरी दुर्गशीर्षनिकृन्तिनी |
दुर्गविध्वंसनकरी दुर्गदैत्यनिकृन्तिनी | ९ |
दुर्गदैत्यप्राणहरा दुर्गदैत्यान्तकारिणी |

दुर्गदैत्यहरत्रात्री दुर्गदैत्यासृगुन्मदा | १० |
दुर्गदैत्याशनकरी दुर्गचर्माम्बरावृता |
दुर्गयुद्धोत्सवकरी दुर्गयुद्धविशारदा | ११ |
दुर्गयुद्धासवरता दुर्गयुद्धविमर्दिनी |
दुर्गयुद्धहास्यरता दुर्गयुद्धाट्टहासिनी | १२ |
दुर्गयुद्धमहामत्ता दुर्गयुद्धानुसारिणी |
दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहा दुर्गदेशनिषेविणी | १३ |
दुर्गदेशवासरता दुर्गदेशविलासिनी |
दुर्गदेशार्चनरता दुर्गदेशजनप्रिया | १४ |
दुर्गमस्थानसंस्थाना दुर्गमध्यानुसाधना |
दुर्गमा दुर्गमध्याना दुर्गमात्मस्वरूपिणी | १५ |
दुर्गमागमसंधाना दुर्गमागमसंस्तुता |
दुर्गमागमदुर्ज्ञेया दुर्गमश्रुतिसम्मता | १६ |
दुर्गमश्रुतिमान्या च दुर्गमश्रुतिपूजिता |
दुर्गमश्रुतिसुप्रीता दुर्गमश्रुतिहर्षदा | १७ |
दुर्गमश्रुतिसंस्थाना दुर्गमश्रुतिमानिता |
दुर्गमाचारसंतुष्टा दुर्गमाचारतोषिता | १८ |
दुर्गमाचारनिर्वृत्ता दुर्गमाचारपूजिता |
दुर्गमाचारकलिता दुर्गमस्थानदायिनी | १९ |
दुर्गमप्रेमनिरता दुर्गमद्रविणप्रदा |
दुर्गामाम्बुजमध्यस्था दुर्गामाम्बुजवासिनी | २० |
दुर्गनाडीमार्गगतिर्दुर्गनाडीप्रचारिणी |
दुर्गनाडीपद्मरता दुर्गनाड्यम्बुजस्थिता | २१ |
दुर्गनाडीगतायाता दुर्गनाडीकृतास्पदा |
दुर्गनाडीरतरता दुर्गनाडीशसंस्तुता | २२ |
दुर्गनाडीश्वररता दुर्गनाडीशचुम्बिता |
दुर्गनाडीशक्रोडस्था दुर्गनाड्युत्थितोत्सुका | २३ |
दुर्गनाड्यारोहणा च दुर्गनाडीनिषेविता |
दरिस्थाना दरिस्थानवासिनी दनुजान्तकृत् | २४ |
दरीकृततपस्या च दरीकृतहरार्चना |

दरीजापितदिष्टा च दरीकृतरतिक्रिया | २५ |
दरीकृतहरार्हा च दरीक्रीडीतपुत्रिका |
दरीसंदर्शनरता दरीरोपीतवृश्चिका | २६ |
दरीगुप्तिकौतुकाढ्या दरीभ्रमणतत्परा |
दनुजान्तकरी दीना दनुसंतानदारिणी | २७ |
दनुजध्वंसिनी दूना दनुजेन्द्रविनाशिनी |
दानवध्वंसिनी देवी दानवानां भयंकरी | २८ |
दानवी दानवाराध्या दानवेन्द्रवरप्रदा |
दानवेन्द्रनिहन्त्री च दानवद्वेषिणी सती | २९ |
दानवारिप्रेमरता दानवारीप्रपुजिता |
दानवारिकृतार्चा च दानवारिविभूतिदा | ३० |
दानवारिमहानन्दा दानवारिरतिप्रिया |
दानवारिदानरता दानवारिकृतास्पदा | ३१ |
दानवारिस्तुतिरता दानवारिस्मृतिप्रिया |
दानवार्याहाररता दानवारिप्रबोधिनी | ३२ |
दानवारिधृतप्रेमा दुःखशोकविमोचिनी |
दुःखहन्त्री दुःखदात्री दुःखनिर्मूलकारिणी | ३३ |
दुःखनिर्मूलनकरी दुःखदार्यरिनाशिनी |
दुःखहरा दुःखनाशा दुःखग्रामादुरासदा | ३४ |
दुःखहीना दुःखधारा द्रविणाचारदायिनी |
द्रविणोत्सर्गसंतुष्टा द्रविणत्यागतोषिका | ३५ |
द्रविणस्पर्शसंतुष्टा द्रविणस्पर्शमानदा |
द्रविणस्पर्शहर्षाढ्या द्रविणस्पर्शतुष्टिदा | ३६ |
द्रविणस्पर्शनकरी द्रविणस्पर्शनातुरा |
द्रविणस्पर्शनोत्साहा द्रविणस्पर्शसाधिका | ३७ |
द्रविणस्पर्शनमता द्रविणस्पर्शपुत्रिका |
द्रविणस्पर्शरक्षिणी द्रविणस्तोमदायिनी | ३८ |
द्रविणकर्षणकरी द्रविणौघविसर्जिनी |
द्रविणाचलदानाढ्या द्रविणाचलवासिनी | ३९ |
दीनमाता दीनबन्धुर्दीनविघ्नविनाशिनी |

दीनसेव्या दीनसिद्धा दीनसाध्या दिगम्बरी | ४० |
दीनगेहकृतानन्दा दीनगेहविलासिनी |
दीनभावप्रेमरता दीनभावविनोदिनी | ४१ |
दीनमानवचेत:स्था दीनमानवहर्षदा |
दीनदैन्यविघातेच्छुर्दीनद्रविणदायिनी | ४२ |
दीनसाधनसंतुष्टा दीनदर्शनदायिनी |
दीनपुत्रादिदात्री च दीनसम्पद्विधयिनी |४३ |
दत्तात्रेयध्यानरता दत्तात्रेयप्रपुजिता |
दत्तात्रेयर्षिसंसिद्धा दत्तात्रेयविभाविता | ४४ |
दत्तात्रेयकृतार्हा च दत्तात्रेयप्रसाधिता |
दत्तात्रेयहर्षदात्री दत्तात्रेयसुखप्रदा | ४५ |
दत्तात्रेयस्तुता चैव दत्तात्रेयनुता सदा |
दत्तात्रेयप्रेमरता दत्तात्रेयानुमानिता | ४६ |
दत्तात्रेयसमुद्गीता दत्तात्रेयकुटुम्बिनी |
दत्तात्रेयप्राणतुल्या दत्तात्रेयशरीरिणी | ४७ |
दत्तात्रेयकृतानन्दा दात्तात्रेयांशसम्भवा |
दत्तात्रेयविभूतिस्था दत्तात्रेयानुसारिणी | ४८ |
दत्तात्रेयगीतिरता दत्तात्रेयधनप्रदा |
दत्तात्रेयदुःखहरा दत्तात्रेयवरप्रदा | ४९ |
दत्तात्रेयज्ञानदात्री दत्तात्रेयभयापहा |
देवकन्या देवमान्या देवदुःखविनाशिनी | ५० |
देवसिद्धा देवपुज्या देवेज्या देववन्दिता |
देवमान्या देवधन्या देवविघ्नविनाशिनी | ५१ |
देवरम्या देवरता देवकौतुकतत्परा |
देवक्रीडा देवव्रीडा देववैरिविनाशिनी | ५२ |
देवकामा देवरामा देवद्विष्टविनाशिनी |
देवदेवप्रिया देवी देवदानववन्दिता | ५३ |
देवदेवरतानन्दा देवदेववरोत्सुका |
देवदेवप्रेमरता देवदेवप्रियंवदा | ५४ |
देवदेवप्राणतुल्या देवदेवनितम्बिनी |

देवदेवहृतमना देवदेवसुखावहा | ५५ |
देवदेवक्रोडरता देवदेवसुखप्रदा |
देवदेवमहानन्दा देवदेवप्रचुम्बिता | ५६ |
देवदेवोपभुक्ता च देवदेवानुसेविता |
देवदेवगतप्राणा देवदेवगतात्मिका | ५७ |
देवदेवहर्षदात्री देवदेवसुखप्रदा |
देवदेवमहानन्दा देवदेवविलासिनी | ५८ |
देवदेवधर्मपत्नी देवदेवमनोगता |
देवदेववधूर्देवी देवदेवार्चनप्रिया | ५९ |
देवदेवाङ्गनिलया देवदेवाङ्गशायिनी |
देवदेवाङ्गसुखिनी देवदेवाङ्गवासिनी | ६० |
देवदेवाङ्गभूषा च देवदेवाङ्गभूषणा |
देवदेवप्रियकरी देवदेवाप्रीयान्तकृत | ६१ |
देवदेवप्रियप्राणा देवदेवप्रियात्मिका |
देवदेवार्चकप्राणा देवदेवार्चकप्रिया | ६२ |
देवदेवार्चकोत्साहा देवदेवार्चकाश्रया |
देवदेवार्चकाविघ्ना देवदेवप्रसूरपि | ६३ |
देवदेवस्य जननी देवदेवविधायिनी |
देवदेवस्य रमणी देवदेवहृदाश्रया | ६४ |
देवदेवेष्टदेवी च देवतापसपालिनी |
देवताभावसंतुष्टा देवताभावतोषिता | ६५ |
देवताभाववरदा देवताभावसिद्धिदा |
देवताभावसंसिद्धा देवताभावसम्भवा | ६६ |
देवताभावसुखिनी देवताभाववन्दिता |
देवताभावसुप्रीता देवताभावहर्षदा | ६७ |
देवताविघ्नहन्त्री च देवताद्विष्टनाशिनी |
देवतापूजितपदा देवताप्रेमतोषिता | ६८ |
देवतागारनिलया देवतासौख्यदायिनी |
देवातानिजभावा च देवताहृतमानसा | ६९ |
देवताकृतपादार्चा देवताहृतभक्तिका |

देवतागर्वमध्यस्था देवतादेवतातनु: | ७० |
दुं दुर्गायै नमो नाम्नी दुं फण्मन्त्रस्वरूपिणी |
दुं नमो मन्त्ररूपा च दूं नमो मुर्तिकात्मिका | ७१ |
दूरदर्शिप्रियादुष्टा दुष्टभूतनिषेविता |
दूरदर्शिप्रेमरता दूरदर्शि प्रियंवदा | ७२ |
दूरदर्शिसिद्धिदात्री दूरदर्शिप्रतोषिता |
दूरदर्शिकण्ठसंस्था दूरदर्शिप्रहर्षिता |७३ |
दूरदर्शिगृहीतार्चा दूरदर्शिप्रतर्षिता |
दूरदर्शिप्राणतुल्या दूरदर्शिसुखप्रदा | ७४ |
दूरदर्शिभ्रान्तिहरा दूरदर्शिहृदास्प्रदा |
दुरदर्श्यरिविद्भावा दीर्घदर्शिप्रमोदिनी | ७५ |
दीर्घदर्शिप्राणतुल्या दूरदर्शिवरप्रदा |
दीर्घदर्शिहर्षदात्री दीर्घदर्शिप्रहर्षिता | ७६ |
दीर्घदर्शिमहानन्दा दीर्घदर्शिगृहालया |
दीर्घदर्शिगृहीतार्चा दीर्घदर्शिहृतार्हणा | ७७ |
दया दानवती दात्री दयालुर्दीनवत्सला |
दयार्द्रा च दयाशीला दयाढ्या च दयात्मिका | ७८ |
दयाम्बुधिर्दयासारा दयासागरपारगा |
दयासिंधुर्दयाभारा दयावत्करुणाकरी | ७९ |
दयावद्वत्सला देवी दया दानरता सदा |
दयावद्भक्तिसुखिनी दयावत्परितोषिता | ८० |
दयावत्स्नेहनिरता दयावत्प्रतिपादिका |
दयावत्प्राणकर्त्री च दयावन्मुक्तिदायिनी |८१ |
दयावद्भावसंतुष्टा दयावत्परितोषिता |
दयावत्तारणपरा दयावत्सिद्धिदायिनी | ८२ |
दयावत्पुत्रवद्भावा दयावत्पुत्ररूपिणी |
दयावद्देहनिलया दयाबन्धुर्दयाश्रया | ८३ |
दयालुवात्सल्यकरी दयालुसिद्धिदायिनी |
दयालुशरणाशक्ता दयालुदेहमन्दिरा | ८४ |
दयालुभक्तिभावस्था दयालुप्राणरूपिणी |

दयालुसुखदा दम्भा दयालुप्रेमवर्षिणी | ८५ |
दयालुवशगा दीर्घा दिर्घाङ्गी दीर्घलोचना |
दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षुर्दिर्घबाहुलतात्मिका | ८६ |
दीर्घकेशी दिर्घमुखी दीर्घघोणा च दारुणा |
दारुणासुरहन्त्री च दारुणासुरदारिणी | ८७ |
दारुणाहवकर्त्री च दारुणाहवहर्षिता |
दारुणाहवहोमाढ्या दारुणाचलनाशिनी | ८८ |
दारुणाचारनिरता दारुणोत्सवहर्षिता |
दारुणोद्यतरूपा च दारुणारिनिवारिणी | ८९ |
दारुणेक्षणसंयुक्ता दोश्चतुष्कविराजिता |
दशदोष्का दशभुजा दशबाहूविराजिता | ९० |
दशास्त्रधारिणी देवी दशदिक्ख्यातविक्रमा |
दशरथार्चितपदा दाशरथीप्रिया सदा | ९१ |
दाशरथिप्रेमतुष्टा दाशरथिरतिप्रिया |
दाशरथिप्रियकरी दाशरथिप्रियंवदा | ९२ |
दाशरथीष्टसंदात्री दाशरथीष्टदेवता |
दाशरथिद्वेषिनाशा दाशरथ्यानुकूल्यदा | ९३ |
दाशरथिप्रियतमा दाशरथिप्रपूजिता |
दशाननारिसम्पूज्या दशाननारिदेवता | ९४ |
दशाननारिप्रमदा दशाननारिजन्मभू: |
दशाननारिरतिदा दशाननारिसेविता | ९५ |
दशाननारिसुखदा दशाननारिवैरिहृत् |
दशाननारीष्टदेवी दशग्रीवारिवन्दिता | ९६ |
दशग्रीवारिजननी दशग्रीवारिभाविनी |
दशग्रीवारिसहिता दशग्रीवसभाजिता | ९७ |
दशग्रीवारिरमणी दशग्रीववधुरपि |
दशग्रीवनाशकर्त्री दशग्रीववरप्रदा | ९८ |
दशग्रीवपुरस्था च दशग्रीववधोत्सुका |
दशग्रीवप्रीतिदात्री दशग्रीवविनाशिनी | ९९ |
दशग्रीवाहवकरी दशग्रीवानपायिनी |

दशग्रीवप्रिया वन्द्या दशग्रीवहृता तथा | १०० |
दशग्रीवाहितकरी दशग्रीवेश्वरप्रिया |
दशग्रिवेश्वरप्राणा दशग्रीववरप्रदा | १०१ |
दशग्रीवेश्वररता दशवर्षीयकन्यका |
दशवर्षीयबाला च दशवर्षीयवासिनी | १०२ |
दशपापहरा दम्या दशहस्तविभूषिता |
दशशस्त्रलसद्दोष्का दशदिक्पालवन्दिता | १०३ |
दशावताररूपा च दशावताररूपिणी |
दशविद्याभिन्नदेवी दशप्राणस्वरूपिणी | १०४ |
दशविद्यास्वरुपा च दशविद्यामयी तथा |
दृक्स्वरुपा दृक्प्रदात्री दृग्रूपा दृक्प्रकाशिनी | १०५ |
दिगन्तरा दिगन्त:स्था दिगम्बरविलासिनी |
दिगम्बरसमाजस्था दिगम्बरप्रपुजिता | १०६ |
दिगम्बरसहचरी दिगम्बरकृतास्पदा |
दिगम्बरहृताचित्ता दिगम्बरकथाप्रिया | १०७ |
दिगम्बरगुणरता दिगम्बरस्वरूपिणी |
दिगम्बरशिरोधार्या दिगम्बरहृताश्रया | १०८ |
दिगम्बरप्रेमरता दिगम्बररतातुरा |
दिगम्बरीस्वरूपा च दिगम्बरीगणार्चिता | १०९ |
दिगम्बरीगणप्राणा दिगम्बरीगणप्रिया |
दिगम्बरीगणाराध्या दिगम्बरगणेश्वरा | ११० |
दिगम्बरगणस्पर्शमदिरापानविह्वला |
दिगम्बरकोटिवृता दिगम्बरीगणावृता | १११ |
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा |
दुरन्तदानवद्वेष्ट्री दुरन्तदनुजान्तकृत | ११२ |
दुरंतपापहंत्री च दस्त्रनिस्तारकारिणी |
दस्त्रमानससंस्थाना दस्त्रज्ञानविवर्धिनी |११३ |
दस्त्रसम्भोगजननी दस्त्रसम्भोगदायिनी |
दस्त्रसम्भोगभवना दस्त्रविद्याविधायिनी |११४ |
दस्त्रोद्व्वेगहरा दस्त्रजननी दस्त्रसुन्दरी |

दस्त्रभक्तिविधाग्याना दस्त्रद्विष्टविनाशिनी |११५ |
दस्त्रापकारदमनी दस्त्रसिद्धिविधायिनी |
दस्त्रताराराधिका च दस्त्रमातृप्रपूजिता |११६ |
दस्त्रदैन्यहरा चैव दस्त्रतातनिषेविता |
दस्त्रपितृशतज्योतिर्दस्त्रकौशलदायिनी |११७ |
दशशीर्षारिसहिता दशशीर्षारिकामिनी |
दशशीर्षपुरी देवी दशशीर्षसभाजिता | ११८ |
दशशीर्षारिसुप्रिता दशशीर्षवधुप्रिया |
दशशीर्षशिरश्छेत्री दशशीर्षनितम्बिनी | ११९ |
दशशीर्षहरप्राणा दशशीर्षहरात्मिका |
दशशीर्षहराराध्या दशशीर्षारिवन्दिता | १२० |
दशशीर्षारिसुखदा दशशीर्षकपालिनी |
दशशीर्षज्ञानदात्री दशशीर्षारिगेहिनी | १२१ |
दशशीर्षवधोपात्तश्रीरामचन्द्ररूपता |
दशशीर्षराष्ट्रदेवी दशशीर्षारिसारिणी | १२२ |
दशशीर्षभ्रातृतुष्टा दशशीर्षवधूप्रिया |
दशशीर्षवधुप्राणा दशशीर्षवधुरता | १२३ |
दैत्यगुरुरता साध्वी दैत्यगुरुप्रपुजिता |
दैत्यगुरूपदेष्ट्री च दैत्यगुरुनिषेविता | १२४ |
दैत्यगुरुमतप्राणा दैत्यगुरुतापनाशिनी |
दुरन्तदुःखशमनी दुरन्तदमनी तमी | १२५ |
दुरन्तशोकशमनी दुरन्तरोगनाशिनी |
दुरन्तवैरीदमनी दुरन्तदैत्यनाशिनी | १२६ |
दुरन्तकलुषघ्नी च दुष्कृतिस्तोमनाशिनी |
दुराशया दुराधारा दुर्जया दुष्टकामिनी | १२७ |
दर्शनीया च दृश्या चाऽदृश्या च दृष्टिगोचरा |
दूतीयागप्रिया दूती दूतियागकरप्रिया | १२८ |
दूतीयागकरानन्दा दूतीयागसुखप्रदा |
दूतीयागकरायाता दूतीयागप्रमोदिनी | १२९ |
दुर्वासःपूजिता चैव दुर्वासोमुनिभाविता |

दुर्वासोऽर्चितपादा च दुर्वासोमौनभाविता | १३० |
दुर्वासोमुनिवन्द्या च दुर्वासोमुनिदेवता |
दुर्वासोमुनिमाता च दुर्वासोमुनिसिद्धिदा | १३१ |
दुर्वासोमुनिभावस्था दुर्वासोमुनिसेविता |
दुर्वासोमुनिचित्तस्था दुर्वासोमुनिमण्डिता |१३२ |
दुर्वासोमुनिसंचारा दुर्वासो ह्रदयङ्गमा |
दुर्वासोहृदयाराध्या दुर्वासोहृत्सरोजगा |१३३|
दुर्वसस्तापसाराध्या दुर्वासस्तापसाश्रया |
दुर्वसस्तापसरता दुर्वासस्तापसेश्वरी |१३४ |
दुर्वासोमुनिकन्या च दुर्वासोद्भुतसिद्धिदा |
दररात्रि दरहरा दरयुक्ता दरापहा |१३५ |
दरघ्नी दरहंत्री च दरयुक्ता दराश्रया|
दरस्मेरा दरापाङ्गी दयादात्री दयाश्रया |
दस्रपूज्या दस्रमाता दस्रदेवी दरोन्मदा |१३६ |
दस्रसिद्धा दस्रसंस्था दस्रतापविमोचिनी|
दस्रक्षोभहरा नित्या दस्रलोकगतात्मिका |१३७ |
दैत्यगुर्वङ्गनावन्द्या दैत्यगुर्वङ्गनाप्रिया |
दैत्यगुर्वङ्गनासिद्धा दैत्यदुर्वङ्गनोत्सुका | १३८ |
दैत्यगुरुप्रियतमा देवगुरुनिषेविता |
देवगुरुप्रसूरुपा देवगुरुकृतार्हणा | १३९ |
देवगुरुप्रेमयुता देवगुर्वनुमानिता |
देवगुरुप्रभावज्ञा देवगुरुसुखप्रदा | १४० |
देवगुरुज्ञानदात्री देवगुरुप्रमोदिनी |
दैत्यस्त्रीगणसम्पूज्या दैत्यस्त्रीगणपूजिता | १४१ |
दैत्यस्त्रीगणरूपा च दैत्यस्त्रीचित्तहरिणी |
देवस्त्रीगणपूज्या च देवस्त्रीगणवन्दिता | १४२ |
देवस्त्रीगणचित्तस्था देवस्त्रीगणभूषिता |
देवस्त्रीगणसंसिद्धा देवस्त्रीगणतोषिता | १४३ |
देवस्त्रीगणहस्तस्थचारूचामरवीजिता |
देवस्त्रीगणहस्तस्थचारूगन्धविलेपिता | १४४ |

देवाङ्गनाधृतादर्शदृष्ट्यर्थमुखचन्द्रमा |
देवाङ्गनोत्सृष्टनागवल्लीदलकृतोत्सुका | १४५ |
देवस्त्रीगणहस्तस्थदीपमालाविलोकना |
देवस्त्रीगणहस्तस्थधूपघ्राणविनोदिनी | १४६ |
देवनारीकरगतवासकासवपायिनी |
देवनारीकङ्कतिकाकृतकेशनिमार्जना | १४७ |
देवनारीसेव्यगात्रा देवनारीकृतोत्सुका |
देवनारीविरचितपुष्पमालाविराजिता | १४८ |
देवनारीविचित्राङ्गी देवस्त्रीदत्तभोजना |
देवस्त्रीगणगीता च देवस्त्रीगीतसोत्सुका | १४९ |
देवस्त्रीनृत्यसुखिनी देवस्त्रीनृत्यदर्शिनी |
देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपादपदाम्बुजा | १५० |
देवस्त्रीगणविस्तीर्णचारूतल्पनिषेदुषी |
देवनारीचारूकराकलितांघ्र्यादिदेहिका | १५१ |
देवनारीकरव्यग्रतालवृन्दमरुत्सुका |
देवनारीवेणुवीणानादसोत्कण्ठमानसा | १५२ |
देवकोटिस्तुतिनुता देवकोटिकृतार्हणा |
देवकोटिगीतगुणा देवकोटिकृतस्तुतिः | १५३ |
दन्तदष्ट्योद्वेगफला देवलोकाहलाकुला |
द्वेषरागपरित्यक्ता द्वेषरागविवर्जिता | १५४ |
दामपुज्या दामभूषा दामोदरविलासिनी |
दामोदरप्रेमरता दामोदरभगिन्यपि | १५५ |
दामोदरप्रसूर्दामोदरपत्नीपतिव्रता |
दामोदराऽभिन्नदेहा दामोदररतिप्रिया | १५६ |
दामोदराऽभिन्नतनुर्दामोदरकृतास्पदा |
दामोदरकृतप्राणा दामोदरगतात्मिका | १५७ |
दामोदरकौतुकाढ्या दामोदरकलाकला |
दामोदरलिङ्गीताङ्गी दामोदरकुतूहला | १५८ |
दामोदरकृताह्लादा दामोदरसुचुम्बिता |
दामोदरसुताकृष्टा दामोदरसुखप्रदा | १५९ |

दामोदरसहाढ्या च दामोदरसहायिनी |
दामोदरगुणज्ञा च दामोदरवरप्रदा | १६० |
दामोदरानुकूला च दामोदरनितम्बिनी |
दामोदरबलक्रीडाकुशला दर्शनप्रिया | १६१ |
दामोदरजलक्रीडात्यक्तस्वजनसौहृदा |
दामोदरलसद्रासकेलिकौतुकिनी तथा | १६२ |
दामोदरभ्रातृका च दामोदरपरायणा |
दामोदरधरा दामोदरवैरविनाशिनी | १६३ |
दमोदारोपजाया च दामोदरनिमन्त्रिता |
दामोदरपराभूता दामोदरपराजिता | १६४ |
दामोदरसमाक्रान्ता दामोदरहताशुभा |
दमोदरोत्सवरता दामोदरोत्सवावहा | १६५ |
दामोदरस्तन्यदात्री दामोदरगवेषिता |
दमयन्तीसिद्धिदात्री दमयन्तीप्रसाधिता | १६६ |
दमयन्तीष्टदेवी च दमयन्तीस्वरूपिणी |
दमयन्तीकृतार्चा च दमनर्षिविभाविता | १६७ |
दमनर्षिप्राणतुल्या दमनर्षिस्वरूपिणी |
दमनर्षिस्वरूपा च दम्भपूरितविग्रहा | १६८ |
दम्भहन्त्री दम्भधात्री दम्भलोकविमोहिनी |
दम्भशीला दम्भहरा दम्भवत्परिमर्दिनी | १६९ |
दम्भरूपा दम्भकरी दम्भसंतानदारिणी |
दत्तमोक्षा दत्तधना दत्तारोग्या च दाम्भिका | १७०
दत्तपुत्रा दत्तदारा दत्तहारा च दारिका |
दत्तभोगा दत्तशोका दत्तहस्त्यादिवाहना | १७१ |
दत्तमतिर्दत्तभार्या दत्तशास्त्रावबोधिका |
दत्तपाना दत्तदाना दत्तदारिद्र्यनाशिनी | १७२ |
दत्तसौधावनिवासा दत्तस्वर्गा च दासदा |
दास्यतुष्टा दास्यहरा दासदासीशतप्रदा | १७३ |
दाररूपा दारवासा दारवासीहृदास्पदा |
दारवासिजनाराध्या दारवासिजनप्रिया | १७४ |

दारवासिविनिर्नीता दारवासिसमर्चिता |
दारवास्याहृतप्राणा दारवस्यरिनाशिनी | १७५ |
दारवासिविघ्नकरा दारवासिविमुक्तिदा |
दाराग्निरुपिणी दारा दारकार्यरिनाशिनी |१७६ |
दम्पति दम्पतीष्टा च दम्पतीप्राणरूपिका |
दम्पतीस्नेहनिरता दाम्पत्यसाधनप्रिया |१७७|
दाम्पत्यसुखसेना च दाम्पत्यसुखदायिनी |
दम्पत्याचारनिरता दम्पत्यामोदमोदिता |१७८ |
दम्पत्यामोदसुखिनी दाम्पत्याह्लादकारिणी |
दम्पतीष्टपादपद्मा दाम्पत्यप्रेमरूपिणी | १७९ |
दाम्पत्यभोगभवना दाडिमीफलभोजिनी |
दाडिमीफलसंतुष्टा दाडिमीफलमानसा |१८० |
दाडिमीवृक्षसंस्थाना दाडिमीवृक्षवासिनी |
दाडिमीवृक्षरूपा च दाडिमीवनवासिनी |१८१ |
दाडिमीफलसाम्योरुपयोधरसमन्विता |
दक्षिणा दक्षिणारूपा दक्षिणारूपधारिणी |१८२ |
दक्षकन्या दक्षपुत्री दक्षमाता च दक्षसूः |
दक्षगोत्रा दक्षसुता दक्षयज्ञविनाशिनी |१८३ |
दक्षयज्ञनाशकर्त्री दक्षयज्ञान्तकारिणी |
दक्षप्रसूतिर्दक्षेज्या दक्षवंशैकपावनी |१८४ |
दक्षात्मजा दक्षसूनूर्दक्षजा दक्षजातिका |
दक्षजन्मा दक्षजनुर्दक्षदेहसमुद्भवा |१८५ |
दक्षजनिर्दक्षयागध्वंसिनी दक्षकन्यका |
दक्षिणाचारनिरता दक्षिणाचारतुष्टिदा | १८६ |
दक्षिणाचारसंसिद्धा दक्षिणाचारभाविता |
दक्षिणाचारसुखिनी दक्षिणाचारसाधिता | १८७ |
दक्षिणाचारमोक्षाप्तिर्दक्षिणाचारवन्दिता |
दक्षिणाचारशरणा दक्षिणाचारहर्षिता | १८८ |
द्वारपालप्रिया द्वारवासिनी द्वारसंस्थिता |
द्वाररुपा द्वारसंस्था द्वारदेशनिवासिनी | १८९ |

द्वारकरी द्वारधात्री दोषमात्रविवर्जिता |
दोषाकरा दोषहरा दोषराशिविनासिनी | १९० |
दोषाकरविभूषाढ्या दोषाकरकपालिनी |
दोषाकरसहस्त्राभा दोषाकरसमानना | १९१ |
दोषाकरमुखी दिव्या दोषाकरकराग्रजा |
दोषाकरसमज्योतिर्दोषाकरसुशीतला | १९२ |
दोषाकरश्रेणी दोषसदृशापाङ्गवीक्षणा |
दोषाकरेष्टदेवी च दोषाकरनिषेविता | १९३ |
दोषाकरप्राणरूपा दोषाकरमरीचिका |
दोषाकरोल्लसद्भाला दोषाकरसुहर्षिणी | १९४ |
दोषाकरशिरोभूषा दोषाकरवधूप्रिया |
दोषाकरवधुप्राणा दोषाकरवधूमता | १९५ |
दोषाकरवधुप्रीता दोषाकरवधुरपि |
दोषापूज्या तथा दोषापूजिता दोषहारिणी | १९६ |
दोषाजापमहानन्दा दोषाजापपरायणा |
दोषापुरश्चाररता दोषापूजकपुत्रिणी | १९७ |
दोषापूजकवात्सल्यकारिणी जगदम्बिका |
दोषापूजकवैरिघ्नी दोषापूजकविघ्नहृत् | १९८ |
दोषापूजकसंतुष्टा दोषापूजकमुक्तिदा |
दमप्रसूनसम्पूज्या दमपुष्पप्रिया सदा | १९९ |
दुर्योधनप्रपूज्या च दुःशासनसमर्चिता |
दण्डपाणिप्रिया दण्डपाणिमाता दयानिधिः | २०० |
दण्डपाणिसमाराध्या दण्डपाणिप्रपूजिता |
दण्डपाणिगृहासक्ता दण्डपाणिप्रियंवदा | २०१ |
दण्डपाणिप्रियतमा दण्डपाणिमनोहरा |
दण्डपाणिहृतप्राणा दण्डपाणिसुसिद्धिदा | २०२ |
दण्डपाणिपरामृष्टा दण्डपाणिप्रहर्षिता |
दण्डपाणिविघ्नहरा दण्डपाणिशिरोधृता | २०३ |
दण्डपाणिप्राप्तचर्या दण्डपाण्युन्मुखी सदा |
दण्डपाणिप्राप्तपदा दण्डपाणिवरोन्मुखी | २०४ |

दण्डहस्ता दण्डपाणिर्दण्डबाहुर्दरान्तकृत् |
दण्डदोष्का दण्डकरा दण्डचित्तकृतास्पदा | २०५ |
दण्डिविद्या दण्डिमाता दण्डिखण्डकनाशिनी |
दण्डिप्रिया दण्डिपूज्या दण्डिसंतोषदायिनी | २०६ |
दस्युपूज्या दस्युरता दस्युरतादस्युद्रविणदायिनी |
दस्युवर्गकृतार्हा च दस्युवर्गविनाशिनी |२०७|
दस्युनिर्णाशिनी दस्युकुलनिर्णाशिनी तथा |
दस्युप्रियकरी दस्युनृत्यदर्शनतत्परा |२०८ |
दुष्टदण्डकरी दुष्टवर्गविद्राविणी तथा |
दुष्टवर्गनिग्रहार्हा दूषकप्राणनाशिनी |२०९|
दूषकोत्तापजननी दूषकारिष्टकारिणी |
दूषकद्वेषणकरी दाहिका दहनात्मिका |२१० |
दारुकारिनिहन्त्री च दारुकेश्वरपूजिता |
दारुकेश्वरमाता च दारुकेश्वरवन्दिता |२११
दर्भहस्ता दर्भयुता दर्भकर्मविवर्जिता |
दर्भमयी दर्भतनुर्दर्भसर्वस्वरूपिणी |२१२ |
दर्भकर्माचाररता दर्भहस्तकृतार्हणा |
दर्भानुकूला दाम्भर्या दर्विपात्रानुदामिनी |२१३|
दमघोषप्रपूज्या च दमघोषवरप्रदा |
दमघोषसमाराध्या दावाग्निरूपिणी तथा |२१४ |
दावाग्निरूपा दावाग्निनिर्णाशितमहाबला |
दन्तदंष्ट्रासुरकला दन्तचर्चितहस्तिका |२१५ |
दन्तदंष्ट्रस्यन्दना च दन्तनिर्णाशितासुरा |
दधिपूज्या दधिप्रीता दधीचिवरदायिनी |२१६ |
दधीचीष्टदेवता च दधीचिमोक्षदायिनी |
दधीचिदैन्यहन्त्री च दधीचिदरदारिणी | २१७ |
दधीचिभक्तिसुखिनी दधीचिमुनिसेविता |
दधीचिज्ञानदात्री च दधीचिगुणदायिनी | २१८ |
दधीचिकुलसम्भूषा दधीचिभुक्तिमुक्तिदा |
दधीचिकुलदेवी च दधीचिकुलदेवता | २१९ |

दधीचिकुलगम्या च दधीचिकुलपूजिता |
दधीचिसुखदात्री च दधीचिदैन्यहारिणी | २२० |
दधीचिदुःखहन्त्री च दधीचिकुलसुन्दरी |
दधीचिकुलसम्भूता दधीचिकुलपालिनी | २२१ |
दधीचिदानगम्या च दधीचिदानमानिनी |
दधीचिदानसंतुष्टा दधीचिदानदेवता |२२२ |
दधीचिजयसम्प्रीता दधीचिजपमानसा |
दधीचिजपपूजाढ्या दधीचिजपमालिका | २२३ |
दधीचिजपसंतुष्टा दधीचिजपतोषिणी |
दधीचितपसाराध्या दधीचिशुभदायिनी | २२४ |
दूर्वा दूर्वादलश्यामा दूर्वादलसमद्युतिः | २२५ |

|| फलश्रुतिः ||

नाम्नां सहस्त्रं दुर्गाया दादीनामिति कीर्तितम् |
यः पठेत् साधकाधीशः सर्वसिद्धिर्लभेत्तु सः |
प्रातर्मध्याह्नकाले च संध्यायां नियतः शुचिः | २२६ |
तथाऽर्धरात्रसमये स महेश इवापरः |
शक्तियुक्तो महारात्रौ महावीरः प्रपूजयेत् | २२७ |
महादेवीं मकाराद्यैः पञ्चभिर्द्रव्यसत्तमैः |
यः सम्पठेत् स्तुतिमिमां स च सिद्धिस्वरूपधृक् | २२८ |
देवालये श्मशाने च गङ्गातीरे नीजे गृहे |
वाराङ्गनागृहे चैव श्रीगुरोः संनिधावपि | २२९ |
पर्वते प्रान्तरे घोरे स्तोत्रमेतत् सदा पठेत् |
दुर्गानामसहस्त्रं हि दुर्गां पश्यति चक्षुषा | २३० |
शतावर्तनमेतस्य पुरश्चरणमुच्यते |२३१ |

|| इति कुलार्णवतंत्रोक्तं दकारादि श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ||

अभ्यास प्रश्न – 2

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 – दधीचिकुलसम्भूषा दधीचि............ |

2-दधीचि ---------दधीचिकुलपालिनी |

3-दधीचिजयसम्प्रीता दधीचि......... |

4- दुर्गानामसहस्त्रं हि दुर्गां ....चक्षुषा |

5- दूषकद्वेषणकरी ....दहनात्मिका |

5.4 सारांश

श्रीदुर्गासहस्त्रनाम स्तोत्र श्री दुर्गा माता को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है| भारतीय संस्कृति में श्री दुर्गा माता को विविध नामों से जाना जाता है जिनमें हजार नामों को संस्कृत में सहस्त्र नाम कहा गया है| श्रीदुर्गासहस्त्रनाम स्तोत्र का वर्णन कुलार्णव तन्त्र से प्राप्त होता है| इसमें माता दुर्गा के हजार नाम दिए गये हैं| यह स्तोत्र स्वर्ग को, आरोग्य को, आयुष्य को प्रदान करने वाला है| श्रीदुर्गासहस्त्रनाम स्तोत्र के पाठ करने वाले को सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती है|

5.5 पारिभाषिक शब्दावली

1-दावाग्निरूपा- दावाग्नि रूप वाली |

2-महाबला- महाबलशाली |

3-स्यन्दन- हाथी |

4-दन्त- दांत |

5 – दधीचिवरदायिनी- दधीचि को वर देने वाली |

6 -दैन्यहन्त्री – दीनता को मिटाने वाली |

7 –मुनिसेविता- मुनि के द्वारा सेवित |

8 -दधीचिज्ञानदात्री – दधिची ऋषि को ज्ञान देने वाली |

9 – भुक्तिमुक्तिदा- भोग और मोक्ष देने वाली |

10 – दधीचिकुलदेवी-दधीचि की कुलदेवता |

11 -दुःखहन्त्री – दुःख हरने वाली |

12 -शुभदायिनी – शुभ देने वाली |

13 -दूर्वा – दूब घास |

14 - सहस्त्रं –हजार |

15 - साधकाधीशः- साधक का अधिपति |

16 - प्रातर्मध्याह्नकाले – प्रातः , दोपहर, सायं |

17 - सर्वसिद्धिर्लभेत्तु सः- वह सभी सिद्धियों को प्राप्त करता है |

18- शुचिः – पवित्र |

19 -अर्धरात्रसमये- आधी रात के समय |

20- शक्तियुक्तो- शक्ति से युक्त |

21- पञ्चभिर्द्रव्यसत्तमैः- पांचों द्रव्यों से |

22 - देवालये –मन्दिर में |

23 - श्मशाने – श्मशान में |

24 - गङ्गातीरे – गंगा के तट पर |

25 -नीजे गृहे – अपने घर में |

5.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास 1 –1 –सत्य , 2 - सत्य , 3 - असत्य , 4 - सत्य , 5 - सत्य |

अभ्यास2–

1-भुक्तिमुक्तिदा,2– कुलसम्भूता, 3-जपमानसा ,

5- पश्यति , 6- दाहिका |

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-सहस्त्रनामस्तोत्रसंग्रह – गीताप्रेस ,गोरखपुर| २७३००५

5.8 सहायक पाठ्य सामग्री

1-स्तोत्ररत्नावली गीताप्रेस गोरखपुर, गोविन्दभवन कार्यालय कोलकाता का संस्थान

5.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. श्रीदुर्गासहस्त्रनामस्तोत्र का महत्त्व लिखिए |

1 श्री दुर्गासहस्त्रनाम का परिचय दीजिये |

2 –श्री दुर्गा जी के पचास नाम लिखिए |

3 – श्रीदुर्गासहस्त्रनाम स्तोत्र का मूल पाठ लिखिए |

4 – श्रीदुर्गा जी के बारे में लिखिए |

खण्ड -2

स्तोत्र पाठ

इकाई – 6 सत्यनारायणाष्टक

इकाई की संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 श्रीसत्यनारायणाष्टकम् |

6.3.1. 'श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' का परिचय |

6.3.2. 'श्रीसत्यनारायण कथा का परिचय |

6.3.3. 'श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' का मूल पाठ |

6.4 सारांश

6.5 पारिभाषिक शब्दावली

6.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

6.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

6.8 सहायक पाठ्य सामग्री

6.9 निबंधात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई बी.ए. कर्मकाण्ड पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पंचम सेमेस्टर BAKA(N)-301 से सम्बन्धित है। इस पाठ में 'श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' के बारे में ज्ञान कराया जायेगा| इसके ज्ञान से आप 'श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र के महत्त्व को अच्छी तरह से समझ सकेगें| इस स्तोत्र का ज्ञान न केवल कर्मकाण्ड से सम्बंधित जनों के लिए अपितु सभी के लिए अनिवार्य बतलाया गया है| आप जानते है कि कर्मकाण्ड भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है| इसमें विभिन्न सूक्तों , मन्त्रों , स्तोत्रों आदि का प्रयोग होता रहता है| इस स्तोत्र का प्रयोग श्री सत्यनारायण भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है| हालाकि श्री सत्यनारायण भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए अन्य बहुत सारे स्तोत्र हैं, परन्तु सभी स्तोत्रों में उत्कृष्ट है श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र| भारतीय शास्त्रों की यह मान्यता है कि मानव जीवन का सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी देवता से सम्बंधित है| उन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए एवं प्राच्य ज्ञान को अर्वाचीन तरीके से विकसित करने के लिए किसी न किसी स्तोत्र का पाठ व्यक्ति को करना चाहिए जिसमें एक है श्रीसत्यनारायणाष्टकम्'|

6.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ सकेगें कि –

1 – मानव जीवन में श्रीसत्यनारायनाष्टकम् स्तोत्र का क्या महत्त्व है ?

2 – 'श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र का देव पूजन में क्या स्थान प्राप्त है ?

3- श्रीसत्यनारायण भगवान की प्रसन्नता के लिए क्या करना चाहिए ?

4- श्रीसत्यनारायण भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए 'श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' का क्या कथन है ?

6.3 'श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र –

श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' श्रीसत्यनारायण भगवान को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है| भारतीय संस्कृति में श्रीसत्यनारायण भगवान को श्री विष्णु भगवान के रूप में जाना जाता है| परम्परा में प्रत्येक घरों में श्री सत्यनारायण भगवान की कथा

का श्रवण हम सभी लोग बचपन से करते रहें हैं| भगवान श्री सत्यनारायण भगवान की आरती तो हम सभी लोगों को सुनते- सुनते याद भी हो जाती है | इस स्तोत्र में भगवान श्री सत्यनारायण की महिमा का गुणगान आठ श्लोकों में किया गया है | इसीलिए इसे सत्यनारायण अष्टक कहा जाता है |

6.3.1. श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र परिचय

'श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र भगवान सत्यनारायण की प्रसन्नता के लिए पढ़ा जाने वाला स्तोत्र है | नारायण के सत्यस्वरूप को सत्यनारायण के रूप में जाना जाता है | प्रत्येक श्लोक में 'सत्यनारायणं विष्णुमीशं भजे' का आवर्तन यह बतलाता है कि भगवान का विष्णु स्वरूप ही सत्य नारायण का स्वरूप है | श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र में सत्यनारायण कथा में पाए जाने वाले प्रसंगों का भी पुट मिलता है | श्रीसत्यनारायणकथा में श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र का प्रयोग निश्चित रूप से देखा जाता है | सत्यनारायण भगवान को इस अष्टक में आदि देव कहा गया है | आदि देव का मतलब सबसे पहले के देव अर्थात् उससे पूर्व कोई देव नही थे | सामवेदीयब्राह्मण सामविधान ब्राह्मण के अनुसार 'ब्रह्म ह वा इदमग्र आसीत्' के अनुसार सबसे पहले ब्रह्म हुआ | वही परम ब्रह्म परमात्मा ही नारायण ,विष्णु या सत्यनारायण आदि विविध नामों से जाना जाता है |

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

क – श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र भगवान सत्यनारायण की प्रसन्नता के लिए पढ़ा जाने वाला स्तोत्र है |

ख - श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र में सत्यनारायण कथा में पाए जाने वाले प्रसंगों का भी पुट मिलता है |

ग - नारायण के सत्यस्वरूप को सत्यनारायण के रूप में नही जाना जाता है |

घ - श्रीसत्यनारायण कथा में 'श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र का प्रयोग निश्चित रूप से देखा जाता है |

च - परम ब्रह्म परमात्मा ही नारायण ,विष्णु या सत्यनारायण आदि विविध नामों से जाना जाता है |

6.3.2. श्रीसत्यनारायण कथा का परिचय

श्रीसत्यनारायण कथा में नारदजी ने भगवान श्रीसत्यनारायण जी से पूछा कि कलियुग के प्राणी किस प्रकार से कष्टों से मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं ? लोक सुखावह इस प्रश्न को सुनकर भगवान श्री सत्यनारायण ने कहा कि- सत्यनारायणस्यैव व्रतं सम्यग् विधानतः | कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात् || अर्थात् श्री सत्यनारायण का व्रत सम्यक् प्रकार से करने से तुरंत सुख की प्राप्ति होती है और इस लोक से चले जाने पर दूसरे लोक में मोक्ष की प्राप्ति होती है | श्री सत्यनारायण का व्रत एवं कथा दुःख शोक आदि का शमन करने वाला ,धन धान्य को बढ़ाने वाला , सौभाग्य यानि पति और पत्नी की प्राप्ति कराने वाला , सन्तति को प्रदान करने वाला , सर्वत्र विजय को प्रदान करने वाला है | इस व्रत एवं कथा का आयोजन किसी भी दिन भक्ति एवं श्रद्धा से समन्वित होकर किया जा सकता है | 'सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे' यानि निशामुख के समय सत्यनारायण देव का यजन करना चाहिए | विप्र और बन्धु बान्धव सहित धर्म कार्य में तत्पर होना चाहिए | सवाया नैवेद्य प्रसाद भक्ति से अर्पण करें | केला , फल, घी, दूध और गेहूं का चूर्ण लेना चाहिए | गेहूं के चूर्ण के अभाव में साठी नामक चावल का चूर्ण ,शक्कर तथा गुड़ लेना चाहिए | सम्पूर्ण प्रसाद भक्ति भाव से एकत्रित कर भगवान को भोग लगा दे | जन समुदाय सहित कथा श्रवण कर ब्राह्मण को दक्षिणा दें | तदनन्तर बन्धु बांधवों सहित ब्राह्मण को भोजन करावें | भक्ति पूर्वक स्वयं प्रसाद भक्षण करें और नृत्य गीतादि गाते हुए रात्रि में जागरण करें | उसके उपरांत भगवान का ध्यान करते हुए अपने घर जायं |

सत्य नारायण भगवान की कथा के अध्यायों में जो कथाएं आती हैं उन कथाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सत्यनारायण भगवान का सन्देश लोगों को सत्य बोलने की ओर प्रेरित करना है | आज सत्यनारायण की कथाओं का प्रचलन कम हो रहा है जिसके कारण लोगों में असत्य बोलने की प्रवृत्ति बहुत तेजी से बढती जा रही है | आज सत्य बोलने वालों की संख्या कम होती जा रही है | व्यक्ति अकारण झूठ बोलने लग जा रहा है | उससे पूछ लिया जाय कि क्या असत्य बोलना अपरिहार्य हो गया था ? तो वह कोई कारण नही बतलाता है | आज असत्य बोलना व्यक्ति के स्वभाव में होते

जा रहा है | जो समाज के लिए अत्यंत कष्टकारी हो सकता है | इसका सन्देश सत्य नारायण व्रत की कथाओं में देखने को मिलता है | जैसे दूसरे अध्याय की कथा में सुत जी ने कहा हे ऋषियों, जिसने व्रत किया उसकी कथा मैं कहता हूँ - काशी पुरी नामक सुन्दर नगर में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था| वह ब्राह्मण क्षुधा और तृषा से व्याकुल हो नित्य ही पृथ्वी के ऊपर विचरता था| ब्राह्मणों से अधिक स्नेह करने वाले भगवान उस विप्र को दु:खी देख कर वृद्ध ब्राह्मण का रूप धारण कर आदर पूर्वक पूछे- हे ब्राह्मण तुम भूमि के ऊपर अत्यन्त दु:खित हो क्यों भटकते हो | हे द्विजोत्तम, मैं उसका सारा कारण सुनना चाहता हूँ , कहो | ब्राहमण ने कहा - मै अत्यन्त दरिद्र हूँ , भिक्षा माँगने के लिए पृथ्वी पर भ्रमण करता हूँ | हे प्रभो | यदि मेरी दरिद्रता दूर करने का कोई उपाय जानते हो तो कृपया बतलाइए | बृद्धब्राह्मण ने कहा सत्यनारायण विष्णु मनोरथ सिद्ध करने वाले हैं | हे विप्र आप उन्हीं का पूजन करें , जिसके करने मात्र से मनुष्य समस्त दु:खों से मुक्त हो जाता है | विधिपूर्वक व्रत को बतलाकर वृद्धविप्ररूपधारी सत्यनारायण भगवान वहीं अन्तर्ध्यान हो गये | वृद्ध ब्राह्मण ने जिस व्रत को कहा है उस व्रत को अवश्य करूँगा, यह सोचते हुए रात्रि को निद्रा नही आयी | प्रातः काल ही उठ कर विप्र सत्यनारायण का व्रत करने का संकल्प कर भिक्षा मांगने के लिए चल पड़ा| उस दिन विप्र को बहुत धन की प्राप्ति हुई और उस धन से बन्धु बान्धवों सहित उसने सत्यनारायण का व्रत किया | वह ब्राह्मण उस व्रत के प्रभाव से समस्त दुःखों से मुक्त हो सम्पूर्ण सम्पत्ति से पूर्ण हो गया | उसी दिन से प्रत्येक महीने व्रत करने लगा | ये सत्यनारायण व्रत कर वह द्विजोत्तम समस्त पापों से मुक्त हो मोक्ष को प्राप्त हुआ | सत्यनारायण व्रत को पृथ्वी पर जो कोई भी करता है , उस मनुष्य के सब दुःख विनष्ट हो जाते हैं | इस प्रकार भगवान विष्णु ने नारद जी से कहा - हे ऋषियों मैंने यह व्रत आप लोगों को सुनाया और अब क्या वर्णन करूँ | ये सुनकर ऋषियों ने कहा- हे मुने उस ब्राह्मण से सुनकर इस व्रत को पृथ्वी पर किसने किया | वह हम सुनना चाहते हैं | हमारी विशेष श्रद्धा है | सुत जी ने कहा - जिसने इस व्रत को भूमि पर किया , उसकी कथा सुनो | एक दिन वही श्रेष्ठ ब्राह्मण धन और ऐश्वर्य के अनुसार स्वजन बन्धुओं सहित व्रत करने को उद्यत हुआ, इतने में एक काष्ठ विक्रेता लकड़ी बेचने वाला आया | वह काष्ठ के भार को बाहर रखकर ब्राह्मण के घर गया | प्यास से उसकी आत्मा व्याकुल हो रही थी' परन्तु वहाँ ब्राह्मण को व्रत करते देखकर , उनको प्रणाम कर कहने लगा आप यह क्या करते हैं और इसके करने से किस फल की प्राप्ति होती है | हे प्रभो, यह

विस्तार पूर्वक वर्णन करे| विप्र ने कहा- यह सत्यनारायण का व्रत समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है| उसी व्रत के प्रभाव से मुझे धन धान्य प्राप्त हुआ है | इस व्रत की ऐसी महिमा उस ब्राह्मण से सुन काष्ठ विक्रेता अत्यन्त प्रसन्न हुआ| प्रसाद भक्षण कर और जल पीकर अपने नगर में चला गया| भगवान सत्यनारायण के लिए मन में ऐसा विचार करने लगा कि आज इस नगर में लकड़ियों को बेचने से जो धन प्राप्त होगा| उसी से मैं सत्यनारायण का उत्तम व्रत करूँगा| वह उस दिन लकड़ी को सिर पर रखकर, जहाँ बड़े - बड़े धनी लोग रहते थे, उस नगर में गया| वहाँ उस लकड़ी को बेचने से उसे दूना धन प्राप्त हुआ| प्रसन्न ह्रदय से उसने पके केले, चीनी, घृत, दूध और गेहूं का चूर्ण लिया| सबको सवाया इकठ्ठा कर अपने घर गया| बान्धवों को बुलाकर विधि पूर्वक व्रत किया | इस व्रत के प्रभाव से काष्ठ विक्रेता धन और पुत्र से संपन्न हो इस लोक में सुख भोगकर अन्त में सत्यलोक को चला गया|

तीसरे अध्याय में श्री सूतजी ने कहा हे श्रेष्ठ मुनियों मैं आगे की कथा कहता हूँ , तुम सुनो- पहले उल्कामुख नामक बुद्धिमान , जितेन्द्रिय और सत्यवादी राजा था| वह धर्मात्मा नित्यप्रति देव मंदिर में जाता था और ब्राह्मणों को दान देकर संतुष्ट करता था| उसकी स्त्री लावण्यवती कमलवदना पतिव्रता थी| वे दोनों भद्रशिला नदी के तट पर सत्यनारायण का व्रत करते थे| इतने में ही वहाँ एक साधू नामक वैश्य व्यापर के लिए बहुत प्रकार के धनों से भरी नाव को उस नदी के किनारे पर ठहरा कर राजा के पास गया| वहाँ वैश्य ने राजा को व्रत करते देख - नम्रता से पूछा| वैश्य ने कहा- हे राजन्| आप मन में अधिक भक्तियुक्त हो क्या कर रहे हैं? यह सब आप मुझसे भी कहे| क्योकि मेरी सुनने की इच्छा है| राजा ने कहा - हे साधो , मैं अतुल तेजस्वी भगवान विष्णु का कुटुम्बियों सहित पुत्र आदि की कामना से पूजन तथा व्रत करता हूँ| राजा के वचन सुनकर वैश्य ने सम्मान पूर्वक कहा, हे राजन् इस व्रत का समस्त विधान मुझसे भी कहें| मैं भी आपके कथनानुसार व्रत करूँगा| मुझे भी संतति नहीं है| इस व्रत को करने से निश्चित ही होगी| राजा ने सत्यनारायण व्रत का संतति दायक विधान कहा| वह वैश्य व्यापार से निवृत हो प्रसन्न हो कर अपने घर आया| उसने संतान देने वाले व्रत का वृतान्त अपनी स्त्री से कह कर बोला कि यदि हमारे यहाँ संतान का जन्म होगा, तो मैं भी व्रत करूँगा| इस प्रकार उस श्रेष्ठ वैश्य ने अपनी स्त्री लीलावती से व्रत का सम्पूर्ण माहात्म्य सुनाया| उसकी पतिव्रता स्त्री लीलावती, पति सहित चित्त में आनन्दित होकर सांसारिक धर्म में तत्पर हुई और सत्यनारायण की कृपा से गर्भवती हो गई | दसवें महीने में उसने एक रत्न रूपी श्रेष्ठ कन्या को जन्म दिया| वह कन्या जैसे शुक्लपक्ष में

द्वितीया से पूर्णिमा तक चन्द्रमा बढ़ता है ,उसी तरह बढ़ने लगी| अतः उस कन्या का नाम कलावती रखा| तदनन्तर लीलावती ने अपने स्वामी को मधुर वचन कहा| लीलावती बोली- हे स्वामिन् ,आपने जिस व्रत का संकल्प किया था, उसे क्यों नही करते हैं| वैश्य ने कहा - हे प्रिये, कन्या के विवाह के समय सत्यनारायण का व्रत करूँगा| इस प्रकार स्त्री को समझाकर वैश्य दूसरे नगर में व्यापर करने चला गया| इधर वह कन्या कलावती अपने पिता के घर वृद्धि को प्राप्त होने लगी| तदनन्तर उस वैश्य ने नगर की सखियों के साथ खेलती हुई उस कन्या को विवाह के योग्य देखा तो विवाह करने के मन्त्रणा पर तुरन्त दूत भेज दिया| वैश्य ने कहा- कन्या के विवाह के लिए श्रेष्ठ वर खोजो| ऐसी आज्ञा पाकर वह दूत कांचन नगर में पंहुचा| वहाँ के एक बनिए के पुत्र को लाया| बनिया के पुत्र को सुन्दर गुणवान देखकर, जाति, बन्धुओं सहित वैश्य ने चित्त में संतुष्ट होकर विधि विधान से कन्यादान कर दिया| परन्तु दूर्भाग्यवश उसे वह उत्तम व्रत विस्मरण हो गया| कन्या के विवाह समय व्रत न करने मात्र से भगवान सत्यनारायण रुष्ट हो गए| कुछ दिनों के बाद कार्य में कुशल वैश्य जामाता सहित व्यापर के लिये चल पड़ा| समुद्र के समीप रत्नसारपुर में जाकर अपने श्रीमान् जामाता के साथ व्यापार करने लगा| तत्पश्चात् दोनों राजा चन्द्रकेतु के रमणीय नगर में गए, उसी समय सत्यनारायण भगवान ने साधू को भ्रष्ट प्रतिज्ञ देखकर शाप दे दिया- कि तुम्हे कठिन दुःख होगा| एक दिन राजा के धन को लेकर चोर वहाँ ही आकर प्राप्त हुए जहाँ दोनों वैश्य रहते थे | उसी समय राजा के दूतों को वेग से आते देख मन में भयभीत हो धन को उसी स्थान में छोड़ कर चोर तुरन्त भाग गए| इधर दूत सज्जन वैश्यों के निकट आये| वहाँ राजा के धन को रखा देख, उन बनियों को बांध कर ले आये| प्रसन्नता से दौड़ते हुए राजा के समीप आकर, दूतों ने कहा- हे प्रभो, हम चोरों को पकड़ लाये हैं , देखकर आज्ञा दीजिये| राजा की आज्ञा पाकर दूतों ने बिना बिचारे ही उन दोनों को बांध कर जेल खाने में भेज दिया| सत्यनारायण भगवान कि माया से उनका कहना नही सुना और चन्द्रकेतु ने उनका सब धन ले लिया| इधर भगवान के शाप से वैश्य की स्त्री अति दुखित हो गई और जो कुछ घर में रखा था वह चोरों ने चुरा लिया, भिक्षा मांगने लगी| एक दिन वह कन्या क्षुधा से व्याकुल हो , किसी ब्राह्मण के घर गयी| वहाँ जाकर उसने सत्यनारायण का व्रत देखा| वह बैठकर कथा सुनी , उसने वर माँगा और सत्यनारायण का प्रसाद भक्षण कर रात्रि में घर आयी| उसकी माता कलावती प्रेम सहित पूछने लगी , हे पुत्री - इतनी रात्रि तक तुम कहाँ थी और तेरे मन में क्या है| तुरन्त ही कन्या ने माता से कहा- माते मैंने ब्राह्मण के घर मनोरथ सिद्ध करने वाला व्रत सुना है| कन्या के वचन

सुन कर वैश्य की स्त्री प्रसन्न हो सत्यनारायण व्रत करने को उद्यत हुई| उसने पवित्रता से बन्धु- बान्धवों सहित सत्यनारायण का व्रत किया और वर माँगा, कि मेरे पति और जामाता शीघ्र घर चले आवें| आप मेरे स्वामी और जामाता का अपराध क्षमा करें| इस व्रत के करने से भगवान सत्यनारायण फिर प्रसन्न हो गए| भगवान सत्यनारायण ने नृप श्रेष्ठ राजा चन्द्रकेतु को स्वप्न दिया ,कि हे राजन- बंदीगृह में उपस्थित दोनों वैश्यों को भोर होते ही छोड़ दो| और जो कुछ तुमने धन लिया है, वह भी तुरन्त दे दो, नही तो धन और राज्य सहित तेरा नाश कर दूंगा| यह कहकर भगवान प्रभु अन्तर्धान हो गए| तदनन्तर प्रातः काल होते ही राजा ने स्वजनों सहित सभा के मध्य में लोंगो से अपना रात वाला स्वप्न कहा और आज्ञा दी , कि बन्धन में पड़े दोनों महाजन वैश्यों को छोड़ दो| राजा के वचन सुनकर राजपुरुष महाजन वैश्यों को बन्धन से मुक्त कर नम्रता से राजा के समक्ष लाकर कहने लगे| दोनों वैश्यों को बन्धन से मुक्त कर ले आये हैं| दोनों महाजन वैश्यों ने राजा चन्द्रकेतु को प्रणाम कर| पूर्व वृतान्त का स्मरण कर भय से व्याकुल हो कुछ भी नही कहा| राजा वणिक् पुत्रों से आदर पूर्वक कहने लगे , आप लोगों ने अपने भाग्य से महादुःख प्राप्त किया| अब तुम्हे कुछ भी भय नही है| यह कह कर बेड़िया कटवाकर क्षौरकर्मादि करवाया| राजा ने वस्त्र आभूषण देकर उनको आदर सहित वचनों से अत्यन्त संतुष्ट किया और जो कुछ धन पहले ले लिया था उनका दूना धन दिया| फिर राजा ने उन महाजनों से कहा हे महाजनों अपने घर जाइये| राजा को प्रणाम कर वैश्यों ने कहा अब आपकी कृपा से चले जायेंगे| यह कहकर महावैश्य अपने घर को चले|

चौथे अध्याय में सूत जी बोले- साधू वैश्य ने प्रथम मंगल विधान कर यात्रा की तथा वह ब्राह्मणों को धन देकर अपने नगर को चला| उन वैश्यों के थोड़ी दूर पहुचने पर सत्यनारायण प्रभु ने जिज्ञासा की कि तेरी नाव में क्या भरा है| मदोन्मत्त वैश्यों ने हस कर कहा- हे दण्डिन् आप क्यों पूछते है? क्या आप रुपया लेने की इच्छा करते हैं| हमारी नौका में लता पत्र भरे हैं| भगवान ने ऐसे कठोर वचन सुनकर कहा- तुम्हारा कहना सत्य हो| भगवान दंडी ऐसा कह कर तुरन्त उसके पास से हट गए और थोड़ी दूर जाकर समुद्र के तीर पर बैठ गए| दंडी सन्यासी के चले जाने पर वैश्य ने सन्ध्या आदि कर्म किया| तब नाव को ऊँची देख अत्यन्त विस्मय में पड़ गया| उसमें लता पत्र देखकर वह मुर्च्छित हो भूमि पर गिर पड़ा| जब वैश्य को चेत हुआ तो वह अत्यन्त चिन्ता करने लगा| उस समय उसके जामाता ने कहा आप शोक क्यों करते है ? भगवान दंडी ने शाप दिया है| वहीं सब कुछ करने का समर्थ है| उन्ही के शरण में चलें, तो मनोरथ सिद्ध

होगा| वैश्य जामाता के वचन सुनकर तुरन्त ही भगवान दंडी के निकट गया और उनको देख भक्ति भाव से प्रणाम कर आदर से कहने लगा | मैंने जो कुछ आपके सामने कहा था सो क्षमा करें , यह बारम्बार कहता हुआ शोक से व्याकुल हो गया| उसको रुदन करते देख दंडी स्वामी ने कहा- हे वैश्य रुदन मत करो, मेरे वचन को सुनो| मेरी आज्ञा तथा पूजा से बहिर्मुख हो जाने से , हे दुर्बुद्धे तुझे बारम्बार दुःख हुआ| भगवान के ऐसे वचन सुनकर वैश्य स्तुति करने लगा| हे प्रभो, आपकी माया से ब्रह्मादी देवता भी मोहित होकर आपके गुण और रूप नही जान सके | तो आपकी माया से मोहित मैं कैसे आपको जान सकता हूँ | अब आप प्रसन्न हों , मै आपकी अपने वित्तानुसार पूजा करूँगा| मेरी नाव को पहले की तरह धन से पूर्ण करें और आप मुझ शरणागत की रक्षा भी करें| ऐसी भक्तियुक्त वाणी सुनकर जनार्दन भगवान विष्णु प्रसन्न हो गए | मनोवांच्छित वरदान देकर भगवान तत्काल वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गये | तदनन्तर वैश्य नाव के उपर चढकर नाव को धन से भरी देखा| वैश्य ने कहा सत्यनारायण जी की कृपा से मेरा मनोरथ सफल हो गया| यह कहकर साथियों के सहित विधिवत पूजन करें| सत्यनारायण की कृपा से अति प्रसन्न यत्नपूर्वक नाव को सहेज अपने देश को चल दिया| अपने जामाता से वैश्य कहने लगा हमारी रत्नपुरी नाम वाली नगरी को देखो| अपने धन के रक्षक दूत को अपने घर भेजा| वह दूत नगर में स्त्री को देख प्रणाम कर अभीष्ट वचन कहने लगा | जामाता बान्धव एवं धन सहित सेठ जी नगर के निकट आकर प्राप्त हुए हैं| दूत के मुख से ऐसी वाणी सुनकर वह पतिव्रता अत्यन्त प्रसन्न हुई और वह सत्यनारायण की पूजा से निवृत्त हो अपनी कन्या से बोली| हे पुत्री, मैं सेठजी के दर्शन के लिए जाती हूँ | तुम शीघ्र आना | माता के ऐसे वचन सुनकर चट पट व्रत समाप्त कर, प्रसाद का त्याग कर वह भी पति के दर्शन को चली | इसी से सत्यनारायण भगवान रुष्ट हो पति युक्त नाव को धन सहित जल में डूबा दिया | कलावती कन्या तट पर अपने पति को न देख कर महाशोक से रुदन करती हुई भूमि पर गिर पड़ी | अलक्षित हुई नाव और महादुखी कन्या को देखकर वैश्य मन में अत्यन्त भयभीत होकर कहने लगा- यह क्या आश्चर्य हुआ ? सब मल्लाह भी चिन्ता करने लगे | तदनन्तर लीलावती कन्या को दुखी देखकर अत्यन्त व्याकुल हो दुःख से रुदन करने लगी | फिर पति से कहा -अभी नौका सहित अलक्षित कैसे हो गए ? मैं नही जानती | नौका कौन से देव के प्रकोप से डूब गयी | सत्यनारायणजी के माहात्म्य को जानने की शक्ति किसमें है ? यह कहकर स्वजनों सहित अति विलाप करने लगी | लीलावती कन्या को गोद में उठाकर रुदन करने लगी और कलावती कन्या स्वामी के नष्ट होने पर अत्यन्त दु:खित हो , अपने पति

की खडाऊं ले , सती होने के लिए मन में निश्चय किया | कन्या के ऐसे चरित्र को देख कर धर्मवेत्ता वैश्य अपनी स्त्री सहित अत्यन्त शोक से संतप्त होकर चिंता करने लगा या तो नाव को सत्यनारायण भगवान ने हर लिया है या तो मैं ही सत्यनारायण की महामाया से मोहित हो रहा हूँ | मैं धन और विभव के अनुसार सत्यनारायण की पूजा करूँगा| उसने अपना यह मनोरथ सबको बुलाकर सुनाया | बारम्बार पृथ्वी पर दण्ड के सामान गिरकर सत्यनारायण भगवान को प्रणाम किया तो दीन जनों के पालन करने वाले सत्यनारायण भगवान प्रसन्न हो गये| भक्तों के पालन करने वाले भगवान ने साधू को आकाशवाणी द्वारा कहा तेरी कन्या प्रसाद का परित्याग कर अपने पति को देखने चली आई है| इसी कारण इसका पति अलक्षित हो गया है | यदि यह घर जाकर प्रसाद को भक्षण कर फिर आये तो , हे वैश्य तेरी कन्या का पति मिल जायेगा | कन्या ने आकाश मण्डल से ऐसा वचन सुना| तुरन्त घर पर जा प्रसाद का भक्षण कर फिर लौट कर आई तो उसने पति को देखा | कलावती कन्या ने पिता से कहा- हे पिताजी अब घर चलें| विलम्ब क्यों करते हैं ? कन्या के ऐसे वचन सुनकर- सेठजी विधान पूर्वक सत्यनारायण भगवान का पूजन कर, बन्धुगणों सहित अपने निवास स्थान को गए| वणिक् पुत्र सन्तुष्ट हो पौर्णमासी और संक्रान्ति को सदैव सत्यनारायण का पूजन करने लगा| श्रीसत्यनारायण की कृपा से इस लोक में सुख भोग कर अंत में वैकुण्ठ को चला गया|

पांचवे अध्याय में सूतजी ने कहा - हे मुनिश्रेष्ठ इसके अनन्तर और भी कथा का वर्णन करता हूँ , तुम सुनो प्रजा का पालन पोषण करने में निरत एक तुङ्गध्वज नाम का राजा था | उसने भी सत्यनारायण के प्रसाद का त्याग कर दुःख पाया था | एक समय वह वन में गया और बहुत प्रकार के पशुओं को मारकर, बरगद के नीचे बैठकर देखा कि भक्ति भाव से संतुष्ट भरपूर बान्धवों सहित ग्वाले सत्यनारायण का पूजन कर रहे हैं| उसी समय राजा अपने अहंकार से पूजन देखकर भी समीप नही गया और प्रणाम भी न किया| सब लोग सत्यनारायण के प्रसाद को राजा के निकट रखकर इच्छानुसार प्रसाद भक्षण करने लगे, परन्तु राजा उस प्रसाद का परित्याग कर अपने घर चला गय | उसके सौ पुत्र तथा जो धन धन्यादी था सब नष्ट हो गया| राजा अपने मन में विचार किया कि सत्यदेव ने ही धन और मेरे पुत्रों को नष्ट किया है , यह ठीक निश्चय है| तो अब वही चलना चाहिए, जहाँ सत्यनारायण का पूजन हो रहा था मन में ऐसा निश्चय कर वह ग्वालों के समीप गया| वहाँ भक्ति और श्रद्धा से ग्वालों के साथ उस राजा ने विधिपूर्वक सत्यनारायण देव का पूजन किया| वह सत्यदेव की कृपा से पुन: धन तथा

पुत्रों से युक्त हो गया | इस लोक में सुख भोग कर अंत समय वैकुण्ठ को चला गया | जो परम दुर्लभ सत्यनारायण के व्रत को करता है और भक्ति युक्त हो इस फलदायिनी कथा को सुनता है | उसे सत्यनारायण की कृपा से धन- धान्य की प्राप्ति होती है | दरिद्र को धन की प्राप्ति और बन्धन बंधे प्राणी बन्धन से विमुक्त होते हैं | भयभीत पुरुष भय से छूट जाते हैं | इसमे संदेह नहीं, व्रतकर्ता या श्रोता संसार में मनोऽभिलषित पदार्थों को भोगकर मृत्यु के बाद सत्यलोक चले जाते हैं | हे ब्राह्मणों मैंने तुमसे सत्यनारायण व्रत का वर्णन किया | इसके करने से मनुष्य समस्त दुःखों से मुक्त हो जाते हैं | सत्यनारायण की पूजा कलियुग में विशेष फलदायिनी है | भगवान को कोई काल, कोई सत्य, कोई ईश, कोई सत्यनारायण, कोई सत्यदेव कहेंगे | इस प्रकार अनेक रूपों को धारण कर भगवान सबके मनोरथ पूर्ण करते हैं | कलियुग में सत्यरूपी भगवान का अवतार होगा | जो मनुष्य कथा का पाठ करते हैं या श्रवण करते हैं सत्यनारायण कि कृपा से उनके पाप नष्ट हो जाते हैं | सूतजी ने कहा- हे मुनिश्वरों पहले जिन लोगों ने सत्यनारायण का व्रत किया है, उनके दूसरे जन्मों का वृतान्त कहता हूँ | दूसरे जन्म में शतानंद परम बुद्धिमान सुदामा नाम का ब्राह्मण हुआ | उसने श्री कृष्ण का ध्यान कर मोक्ष पाया | काष्ठ भार वाहक जो भिल्ल था वह गुहराज निषाद हुआ | उस जन्म में श्री रामचंद्र जी का भजन कर वह मोक्ष को प्राप्त हुआ | उल्कामुख राजा दूसरे जन्म में महाराज दशरथ हुए जो रंगनाथ का पूजन कर वैकुण्ठ को गए | साधू नामक वैश्य भी सत्य प्रतिज्ञ मोरध्वज का नाम राजा हुआ | जो आराम से पुत्र के आधे शरीर को चीर कर मोक्ष को प्राप्त हुआ | तुंगध्वज राजा स्वायम्भुव मनु हुए जो भगवान सम्बन्धी कर्म कर वैकुण्ठ को प्राप्त किये | जो मनुष्य सत्यनारायण की कथा कहता अथवा श्रवण करता है | वह सांसारिक बन्धनों से मुक्ति पा जाता है इसमें कुछ सन्देह नही करना चाहिए |

अभ्यास प्रश्न – 2

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

१-दूसरे जन्म में शतानंद परम बुद्धिमान सुदामा नाम का ब्राह्मण हुआ |

1 - काष्ठ भार वाहक जो भिल्ल था वह गुहराज निषाद हुआ |

2 उल्कामुख राजा दूसरे जन्म में महाराज दशरथ नही हुए |

3 - साधू नामक वैश्य सत्य प्रतिज्ञ मोरध्वज का नाम राजा हुआ |

4 - तुंगध्वज राजा स्वायम्भुव मनु हुए |

6.3.3. श्रीसत्यनारायणाष्टकम् का मूल पाठ

|| श्रीसत्यनारायणाष्टकम् ||

आदिदेवं जगत्कारणं श्रीधरं लोकनाथं विभुं व्यापकं शंकरम् |
सर्वभक्तेष्टदं मुक्तिदं माधवं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे | १ |
सर्वदा लोककल्याणपारायणं देवगोविप्ररक्षार्थसद्विग्रहम् |
दीनहिनात्मभक्ताश्रयं सुन्दरं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे |२ |
दक्षिणे यस्य गंगा शुभा शोभते राजते सा रमा यस्य वामे सदा |
यः प्रसन्नाननो भाति भव्यश्च तं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे |३ |
संकटे संगरे यं जनः सर्वदा स्वात्मभीनाशनाय स्मरेत् पीडितः |
पूर्णकृत्यो भवेद् यत्प्रसादाच्च तं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे | ४ |
वन्छितं दुर्लभं यो ददाति प्रभु: साधवे स्वात्मभक्ताय भक्तिप्रियः |
सर्वभूताश्रयं तं ही विश्वम्भरं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे | ५ |
ब्राह्मण: साधूवैश्यश्च तुंगध्वजो येऽभवन विश्रुता यस्य भक्त्यामरा: |
लीलया यस्य विश्वं ततं तं विभुं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे | ६ |
येन चाब्रह्मबालतृणं धार्यते सृज्यते पाल्यते सर्वमेतज्जगत् |
भक्तभावप्रियं श्रीदयासागरं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे | ७ |
सर्वकामप्रदं सर्वदा सत्प्रियं वन्दितं देववृन्दैर्मुनीन्द्रार्चितम् |
पुत्रपौत्रादिसर्वेष्टदं शाश्वतं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे | ८ |
अष्टकं सत्यदेवस्य भक्त्या नरः भावयुक्तो मुदा यस्त्रिसन्ध्यं पठेत् |
तस्य नश्यन्ति पापानि तेनाग्निना इन्धनानीव शुष्काणी सर्वाणि वै | ९ |

|| श्रीसत्यनारायणाष्टकं संपूर्णम् ||

अभ्यास प्रश्न – 3

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1- आदिदेवं जगत्कारणं .... लोकनाथं विभुं व्यापकं शंकरम् |

2- सर्वभक्तेष्टदं मुक्तिदं ....सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे | १ |

3- सर्वदा लोककल्याणपारायणं ......गोविप्ररक्षार्थसद्विग्रहम् |

4- दीनहिनात्मभक्ताश्रयं .... सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे |२ |

5- दक्षिणे यस्य गंगा .... शोभते राजते सा रमा यस्य वामे सदा |

6.4 सारांश

'सत्यनारायणाष्टकम्' भगवान श्री सत्यनारायण को प्रसन्न करने का महत्वपूर्ण अष्टक है | इसमें भगवान श्री सत्यनारायण को प्रसन्न करने के लिए श्लोक दिए गये हैं | 'सत्यनारायणाष्टकम्' में भगवान श्री सत्यनारायण को आदि देव और जगत् का कारण बतलाया गया है | इस स्तोत्र का प्रयोग श्री सत्यनारायण भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है | हालाकि श्री सत्यनारायण भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए अन्य बहुत सारे स्तोत्र हैं परन्तु सभी स्तोत्रों में उत्कृष्ट है श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र | इसमें श्री सत्य नारायण कथा का भी हिन्दी अनुवाद दिया गया है | सत्यनारायण व्रत कथा का प्रचलन सभी हिन्दू भाई - बहनों के घरों में आज भी बहुत ज्यादा देखा जाता है | पूर्णिमा के दिन प्रायः लोग अपने घर सत्य नारायण भगवान की कथा करवाते हैं , हवन भी होता है | इस प्रकार यः प्रकरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है |

6.5 - पारिभाषिक शब्दावली –

दीन – गरीब,

राजते – शोभित,

आश्रय – सहारा,

भक्तभावप्रियं- भक्त का प्रिय हो जिसको,

श्रीदयासागरं- दया का सागर ,

सर्वकामप्रदं – सभी कामनाओं को देने वाला,

सर्वदा- हमेशा,

सत्प्रियं – सत्य प्रिय,

सर्वेष्टदं – सभी इष्ट को देने वाला ,

सर्वदा – हमेशा

लोककल्याण- समाज का कल्याण

देवगोविप्ररक्षार्थसद्विग्रहम्- देव,गौ, विप्र के रक्षार्थ विग्रह धारण करने वाले

दीनहिनात्मभक्ताश्रयं – दीन हिन एवं भक्तों के आश्रय

दक्षिणे –दक्षिण में

यः- जो

प्रसन्नाननो- प्रसन्न मुख वाला दिखता है ,

स्वात्मभीनाशनाय - अपने भय का विनाश करने के लिए

पूर्णकृत्यो – कार्य पूर्ण हो जाता है

वन्छितं दुर्लभं – दुर्लभ मनोकामना

विश्वम्भरं- विश्व का भरण पोषण कर्ण वाला

6.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर –

अभ्यास 1 – क –सत्य ,ख- सत्य ,ग- असत्य ,घ- सत्य ,च- सत्य |

अभ्यास 2 – क –सत्य ,ख- सत्य ,ग- असत्य ,घ- सत्य ,च- सत्य |

अभ्यास 3 - 1- श्रीधरं , 2 – माधवं ,3- देव 4- सुन्दरं 5- शुभा |

6.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क – नित्य कर्म पूजा प्रकाश , गीता प्रेस ,गोरख पुर – २७३००५ |

6.8 सहायक पाठ्य सामग्री

क़ - वृहत् स्तोत्र रत्नाकर – श्री शिव दत्त मिश्र शास्त्री , प्रकाशक – ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार , कचौड़ी गली , वाराणसी |

6.9 निबंधात्मक प्रश्न-

1.श्रीसत्यनारायण भगवान के दस नाम लिखिए |

2.श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र का परिचय दीजिये |

3. श्रीसत्यनारायणाष्टकम्' स्तोत्र लिखिए |

4. श्रीसत्यनारायण कथा के दूसरे अध्याय को लिखिए |

5. श्रीसत्यनारायण कथा के तीसरे अध्याय को लिखिए |

इकाई - 7 श्रीगणेशपंचरत्न

इकाई की संरचना

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 श्रीगणेशपञ्चरत्नम्

7.3.1. श्रीगणेशपञ्चरत्नम् का परिचय |

7.3.2. श्रीगणेशपञ्चरत्नम् का मूल पाठ |

7.3.3. श्रीगणेशपञ्चरत्नम् का हिन्दी अनुवाद |

7.3.4 संकष्टनाशनं गणेशस्तोत्रम् का मूल पाठ |

7.3.5 श्रीगणेशाष्टकम् का मूल पाठ |

7.3.6 'श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्' का मूल पाठ |

7.3.7. श्री गणपतिस्तवः का मूल पाठ |

7.4 सारांश

7.5 पारिभाषिक शब्दावली

7.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

7.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

7.8 सहायक पाठ्य सामग्री

7.9 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

इस पाठ में 'श्रीगणेशपञ्चरत्नम्' के बारे में ज्ञान कराया जायेगा| इसके ज्ञान से आप 'श्रीगणेशपञ्चरत्नम्' स्तोत्र के महत्त्व को अच्छी तरह से समझ सकेगें| इस स्तोत्र का ज्ञान न केवल कर्मकाण्ड से सम्बंधित जनों के लिए अपितु सभी के लिए अनिवार्य बतलाया गया है| आप जानते हैं कि कर्मकाण्ड भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है| इसमें विभिन्न सूक्तों , मन्त्रों , स्तोत्रों आदि का प्रयोग होता रहता है| इस स्तोत्र का प्रयोग श्री गणेश भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है| हालाकि श्री गणेश भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए अन्य बहुत सारे स्तोत्र हैं परन्तु सभी स्तोत्रों में उत्कृष्ट है - 'श्रीगणेशपञ्चरत्नम्'|

भारतीय शास्त्रों की यह मान्यता है कि मानव जीवन का सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी देवता से सम्बंधित है | उन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए एवं प्राच्य ज्ञान को अर्वाचीन तरीके से विकसित करने के लिए किसी न किसी स्तोत्र का पाठ व्यक्ति को करना चाहिए जिसमें एक है - 'श्रीगणेशपञ्चरत्नम् '| इसके अलावा इस इकाई में गणेश पञ्चरत्नम् का हिंदी अनुवाद, संकष्टनाशनं गणेशस्तोत्रम्, श्रीगणेशाष्टकम्, श्री गणपत्यथर्वशीर्षम् एवं गणपतिस्तवः का मूल पाठ भी दिया गया है|

7.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ सकेगें कि –

1 – मानव जीवन में 'श्रीगणेशपञ्चरत्नम्' स्तोत्र का क्या महत्त्व है?

2 – 'संकष्टनाशनं गणेशस्तोत्रम्', को देव पूजन में क्या स्थान प्राप्त है ?

3- 'श्रीगणेशाष्टकम्' में भगवान गणेश की प्रसन्नता के लिए क्या लिखा गया है?

4. गणपतिस्तवः का महत्त्व क्या है?

7.3 श्रीगणेशपञ्चरत्नम्

श्रीगणेशपञ्चरत्नम् स्तोत्र श्री गणेश भगवान को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है| भारतीय संस्कृति में श्री गणेश भगवान को श्री गणपति ,गजानन , गजमुख , विघ्नहर्ता ,विनायक ,लम्बोदर ,वक्रतुण्ड आदि विविध नामों से जाना जाता है|

पौरोहित्य परम्परा के अनुसार गणेश जी का नाम सभी देवी देवताओं में सर्व प्रथम लिया जाता है इसीलिए इन्हें गणपति प्रथम पूज्य के नाम से पुकारते हैं| श्री गणेश जी को श्री शिव जी एवं पार्वती जी का पुत्र बतलाया जाता है | यहाँ यह प्रश्न उठता है कि गणेश जी का शिर हाथी का कैसे हो गया ? इस सम्बन्ध में पौराणिक मान्यता के अनुसार यह कथन है कि माता पार्वती स्नान करने जा रही थी | उन्होंने गणेश जी से कहा कि तुम दरवाजे पर खड़े रहो और जब तक मैं स्नान नही कर लेती तब तक किसी को अंदर न आने देना| संयोगवशात् उसी समय कुछ क्षण के पश्चात् अपनी तपस्या पूर्ण करके भगवान् शंकर वहां आ गये| उन्हें गणेश जी ने अंदर जाने से रोका | न मानने पर युद्ध हुआ जिसमें गणेश जी के शिर का उच्छेद हो गया | भगवती पार्वती ने शंकर जी से गणेश जी को जीवित करने के लिए कहा | भगवान शंकर ने उत्तर मुख सोये हुए किसी प्राणी का शिर एक निश्चित समय सीमा के अंदर लाने के लिए कहा | उसमें हाथी का शिर ही लाया गया| श्री गणेश जी के ऊपर हाथी का शिर लगा दिया गया | तभी से गणेश जी हाथी वाले शिर के देवता के रूप में पूजित हो गये | श्रीगणेशपञ्चरत्नम् में गणपति जी के गुणों का वर्णन सस्वर श्लोकों में किया गया है | यह स्तोत्र प्राचीनतम स्तोत्रों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है | किसी भी मंगल कार्य को करने से पहले इस स्तोत्र का पाठ करना मंगल दायक माना जाता है |

7.3.1. श्रीगणेशपञ्चरत्नम् स्तोत्र परिचय

श्रीगणेशपञ्चरत्नम् स्तोत्र भगवान गणेश की प्रसन्नता के लिए पढ़ा जाने वाला स्तोत्र है | श्री गणेश भगवान के कल्याणात्मक स्वरूप को विघ्न विनायक के रूप में जाना जाता है | श्रीगणेशपञ्चरत्नम् शीर्षक से यह विदित होता है कि श्री गणेश भगवान के लिए इसमें पञ्च रत्न यानी पांच श्लोक रुपी रत्न दिए गये है | श्रीगणेशपञ्चरत्नम् में कुल छः श्लोक पाए जाते हैं जिसमे पांच भगवान के गुणों का वर्णन करते हैं तथा अंत का एक श्लोक इन श्लोकों से क्या -क्या लाभ हैं , इनका

वर्णन करता है |

श्रीगणेशपञ्चरत्नम् के छठवें श्लोक में लिखा गया है कि यह महागणेशपञ्च रत्न आदर पूर्वक जो प्रतिदिन प्रभात काल में पढ़ता है या हृदय में स्मरण करता है वह अरोगी होता है | इसका मतलब रोगी के शरीर का रोग दूर होता है और जो निरोगी होता है उसके शरीर में रोग का प्रवेश नही हो पाता है | दोष से निवृत्ति मिलती है | असद् कार्य की प्रवृत्ति ही दोष के उद्भव का कारण है | इसलिए इसको अधर्म का स्वरूप बतलाया गया

है | अधर्म से ही दोष उत्पन्न होता है जिसके समन हेतु प्रायश्चित्त का विधान पौरोहित्य शास्त्र में वर्णित है | प्रत्येक व्यक्ति अपने दोषों को समाप्त करना चाहता है | जप दा- न पुण्य इत्यादि बहुत सारे उपाय दोषों के शमनार्थ बतलाये गये हैं परन्तु स्तोत्र पाठ में श्रीगणेशपञ्चरत्नम् का भी पाठ बतलाया गया है | केवल पुत्रता नही अपितु सुपुत्रता की भी प्राप्ति इस स्तोत्र से बतलाई गयी है | मानव जीवन में प्रत्येक सद्गृहस्थ व्यक्ति पुत्र प्राप्ति की कामना रखता है उस कामना की पूर्ति में भी इस स्तोत्र का पाठ परम सहायक होता है | जिनकी जन्म कुण्डली में भी संतान भाव कमजोर हो उनको भी श्रीगणेशपञ्चरत्नम् स्तोत्र का पाठ करना चाहिए | आयु की प्राप्ति भी श्रीगणेशपञ्चरत्नम् स्तोत्र से होती है | जिनकी कुंडली में अल्पायु योग हो उन्हें भी इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए | आयु ही जीवन है | आयु का अल्प होना यानी जीवन का अल्प होना है | उस अल्पायु को दीर्घायु बनाने के लिए श्रीगणेशपञ्चरत्नम् स्तोत्र का पाठ किया जाता है |

इस प्रकार शास्त्रों में श्रीगणेशपञ्चरत्नम् स्तोत्र के बहुत सारे लाभ बतलाये गये हैं |

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

क – श्रीगणेशपञ्चरत्नम् स्तोत्र भगवान गणेश की प्रसन्नता के लिए पढ़ा जाने वाला स्तोत्र है |

ख - श्री गणेश भगवान के कल्याणात्मक स्वरूप को विघ्न विनायक के रूप में जाना जाता है |

ग - श्रीगणेशपञ्चरत्नम् में कुल आठ श्लोक पाए जाते हैं |

घ - जिनकी जन्म कुण्डली में भी संतान भाव कमजोर हो उनको भी श्रीगणेशपञ्चरत्नम् स्तोत्र का पाठ करना चाहिए |

च - आयु की प्राप्ति भी श्रीगणेशपञ्चरत्नम् स्तोत्र से होती है |

7.3.2. श्रीगणेशपञ्चरत्नम् का मूल पाठ -

श्रीगणेशपञ्चरत्नम्

मुदा करात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकं
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरञ्जकम् ।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ।१ ।
नतेतरातिभिकरं नवोदितार्कभास्वरं
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरंतरम् । २ ।
समस्तलोकशंङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरं
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम् ।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं
नमस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ।३ ।
अंकिचनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम् ।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणं
कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम् । ४ ।
नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मज-
मचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम् ।
हृदयन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां
तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामी संततम् । ५ ।
महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं
प्रगायती प्रभातके हृदिस्मरन् गणेश्वरम् ।
अरोगतामदोषतां सुसहितीं सुपुत्रतां
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैती सोऽचिरात् ।६ ।

अभ्यास प्रश्न – 2

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1- मुदा करात्तमोदकं .... विमुक्तिसाधकं कलाधरावतंसकं विलासिलोकरञ्जकम् |
2- अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं नताशुभाशुनाशकं .... तं विनायकम्
3- नतेतरातिभिकरं नवोदितार्कभास्वरं नमत्सुरारिनिर्जरं ....पदुद्धरम् |
4- सुरेश्वरं निधिश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं .... तमाश्रये परात्परं निरंतरम् |
5- समस्तलोकशंङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरं दरेतरोदरं ...... वरेभवक्त्रमक्षरम् |

7.3.3. श्रीगणेशपञ्चरत्नम् का हिन्दी अनुवाद |

जो सदा मुक्ति के दाता प्रदाता हैं , जिनके शिर पर चन्द्रमा की कलाएं मुकुट के सामान विराजमान हैं , विलास लोक के रक्षक यानी ऋद्धियों के दाता हैं , जो स्वयं राजाधिराज हैं , जिन्होंने गजासुर नामक दानव के हाथी का वध किया था , जो सभी के पापों का आसानी से विनाश कर देते हैं ,अशुभाशु अर्थात् अशुभ को शीघ्रातिशीघ्र नष्ट कर देते हैं ऐसे श्री गणेश भगवान को बहुत ही विनम्रता से मैं अपने हाथों से मोदक प्रदान करता हूँ |1 |

जो गणेश भगवान हमेशा ऊषा काल की तरह् देदीप्यमान रहते हैं , जिनका सभी राक्षस और देवता सम्मान करते हैं , जो आपत्ति से उद्धार करने वाले हैं , जो देवताओं के भी देवता हैं , निधिओं के स्वामी हैं, गजों के ईश्वर हैं, गणों के ईश्वर हैं , जो महेश्वर हैं मैं उस गणेश भगवान् को सदा अपना मन एवं ध्यान अर्पित करता हूँ |2 |

जो सम्पूर्ण संसार को खुशियाँ प्रदान करता है , जिन्होनें दानव गजासुर का वध किया था , जिनका बड़ा सा पेट है , जिनका चेहरा सदैव चमकता रहता है , जो अविनाशी है , जो खुशियाँ और प्रसिद्धि प्रदान करतें हैं , जो कृपा करने वाले हैं , भक्तों को क्षमा प्रदान करने वाले हैं , अपने भक्तों को प्रसन्नता देने वाले हैं , यश भी प्रदान करने वाले हैं , जो संतुष्टि प्रदान करते हैं , जो बुद्धि के दाता हैं ऐसे चमकते भगवान गणेश के समक्ष मैं अपने मन को झुकाता हूँ |3|

जो ग़रीबों के सभी दुःख को दूर करते हैं , जिनमें ॐ का निवास है ,जो पुरारि अर्थात भगवान् शंकर के प्रथम पुत्र हैं , जो देवताओं के शत्रुओं के गर्व को चूर-चूर करने वाले हैं , जो छलयुक्त समस्त प्रपंचों का विनाश करते हैं , भगवान शंकर के पुत्र के रूप में उनके आभूषण हैं , जो आसुरी शक्तिओं से निवारण करते हैं , मैं उस भगवान गणेश की पूजा अर्चना करता हूँ | 4|

जिनकी दन्तकान्ति चमकदार है , जिनके दन्त बड़े सुन्दर हैं, जो अन्तक का भी अंत कर देने वाले भगवान शंकर के पुत्र हैं ,जिनका स्वरूप अमर एवं अविनाशी है , जो सभी बाधाओं को दूर करते हैं , जो योगियों के ह्रदय में निवाश करते हैं ऐसे भगवान गणेश की मैं सदा वन्दना करता हूँ | 5|

जो भक्त प्रातः काल भगवान गणेश के पंचरत्न स्तोत्र का पाठ करता है , जो भगवान गणेश के पंचरत्न स्तोत्र को अपने शुद्ध ह्रदय में धारण करता है उसके शरीर के दाग धब्बे दूर होते हैं और वह शारीरिक रोगों से मुक्त होकर स्वस्थ्य हो जाता है | वह शिक्षा के शिखर को प्राप्त करता है | अपने जीवन को सुख एवं शांति से अध्यात्मिक एवं भौतिक समृद्धि के साथ संपन्न करता है | 6 |

अभ्यास प्रश्न – 3

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

1 – श्रीगणेश ने गजासुर नामक दानव के हाथी का वध किया था |

2 - गणेश की प्रसन्नता के लिए पढ़ा जाने वाला स्तोत्र श्री गणेश पञ्चरत्नम् है|

3 – श्री गणेश जी ग़रीबों के सभी दुःख को दूर नही करते हैं |

4 – श्री गणेश जी भगवान शंकर के पुत्र के रूप में जाने जाते है |

5 - जो भगवान गणेश के पंचरत्न स्तोत्र को अपने शुद्ध ह्रदय में धारण करता है उसके शरीर के दाग धब्बे दूर होतें हैं और वह शारीरिक रोगों से मुक्त होकर स्वस्थ्य हो जाता है |

7.3.4 संकष्टनाशनं गणेशस्तोत्रम् का मूल पाठ

नारद उवाच

प्रणम्य सिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् |
भक्तावासंस्मरेन्नित्यमायुः कामाऽ र्थसिद्धये |1|
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् |
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् |2|
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च|
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाऽष्टमम् | 3 |
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् |
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् | 4 |
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः |
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् | 5 |
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् |
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् | 6 |
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् |
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नाऽ त्र संशयः | 7 |
अष्टानां ब्राह्मणानां च लिखित्वा यः समर्पयेत् |
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः | 8|
इति श्रीनारदपुराणे संकष्टनाशनं गणेशस्तोत्रं संपूर्णम् |

अभ्यास प्रश्न – 4

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1- तृतीयं कृष्ण ....गजवक्त्रं चतुर्थकम् |
2- सप्तमं विघ्नराजं च तथाऽष्टमम् |
3- एकादशं गणपतिं ....तु गजाननम् |4|
4- विद्यार्थी लभते .....धनार्थी लभते धनम् |
5- जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः ....लभेत् |

7.3.5 श्रीगणेशाष्टकम् का मूल पाठ

सर्वे ऊचुः

यतो ऽ नन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा यतो निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते |
यतो भाति सर्वंत्रिधा भेदभिन्नं सदा तं गणेशं नमामो भजामः | 1|
यतश्चाविरासीज्जगत्सर्वमेतत् तथाऽ ब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता |
तथेन्द्रादयो देवसंघामनुष्याः सदा तं गणेशं नमामो भजामः | 2 |
यतो वह्नि भानु भवो भूर्जलं च यतः सागराश्चन्द्रमा व्योमवायुः |
यतः स्थावरा जङ्गमावृक्षसङ्घाः सदा तं गणेशं नमामो भजामः |3 |
यतो दानवाः किन्नरा यक्षसङ्घाः यतश्चारणा वारणाः श्वापदाश्च |
यतः पक्षकीटा यतो वीरुधश्च सदा तं गणेशं नमामो भजामः | 4 |
यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षोर्यतः सम्पदो भक्तिसंतोषिकाः स्युः |
यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः सदा तं गणेशं नमामो भजामः | 5 |
यतः पुत्रसंपद्यतो वाञ्छितार्थो यतोऽभक्तविघ्नास्तथाऽ नेकरूपाः |
यतः शोकमोहौ यतः काम एव सदा तं गणेशं नमामो भजामः |6 |
यतोऽनन्तशक्तिः स शेषो बभूव धराधारणेऽनेकरूपे च शक्तः |
यतोऽनेकधा स्वर्गलोका हि नाना सदा तं गणेशं नमामो भजामः |7 |
यतो वेदवाचो ऽ तिकुण्ठामनोभिः सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति |
परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं सदा तं गणेशं नमामो भजामः | 8 |
पुनरूचे गणाधीशः स्तोत्रमेतत् पठेन्नरः |
त्रिसन्ध्यं त्रिदिनं तस्य सर्वं कार्यं भविष्यति | 9|
यो जपेदष्टदिवसं श्लोकाष्टकमिदं शुभम् |
अष्टवारं चतुर्थ्यां तु सोऽष्टसिद्धिरवाप्नुयात् |10|
यः पठेन्मासमात्रं तु दशवारं दिने दिने |
स मोचयेत् बन्धगतं राजवंध्यं न संशयः |11 |
विद्याकामो लभेद् विद्यां पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् |
वाञ्छितांल्लभते सर्वमेकविंशतिवारतः|12|
यो जपेत् परया भक्त्या गजाननपरो नरः |
एवमुक्त्वा ततो देवश्चान्तर्धानं गतः प्रभुः | 13|
|इति श्रीगणेशपुराणे गणेशाष्टकं संपूर्णम्|

अभ्यास प्रश्न – 5

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1- यतश्चाविरासीज्जगत्सर्वमेतत् तथाऽ ब्जासनो ....विश्वगोप्ता |
2- यतो दानवाः किन्नरा यक्षसङ्घाः यतश्चारणा ....श्वापदाश्च |
3- यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षोर्यतः ....भक्तिसंतोषिकाः स्युः |
4- यतोऽनन्तशक्तिः स शेषो ....धराधारणेऽनेकरूपे च शक्तः |
5- परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं ......तं गणेशं नमामो भजामः | 8 |

7.3.6 'श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्' का मूल पाठ

ॐ नमस्ते गणपतये| त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि | त्वमेव केवलं कर्तासि | त्वमेव केवलं धर्तासि | त्वमेव केवलं हर्तासि | त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि | त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् | ऋतं वच्मि | सत्यं वच्मि | अव त्वं माम् | अव वक्तारम् | अव श्रोतारम् | अव दातारम् | अव धातारम् | अवानूचानमव शिष्यम् | अव पश्चात्तात् | अव पुरस्तात् | अवोत्तरात्तात्| अव दक्षिणात्तात् | अव चोर्ध्वात्तात् | अवाधरात्तात् | सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् | त्वं वाङ्मयस्तवं चिन्मयः | त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः त्वं सच्चिदानन्दाद्वितियोऽसि| त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि | त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि| सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते| सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति | सर्वं जगदिदं त्वयिलयमेष्यति| सर्वं जगदिदं त्वयिप्रत्येति | त्वं भूमि रापो ऽ नलो ऽ निलो नभः| त्वं चत्वारि वाक्पदानि | त्वं गुणत्रयातीतः| त्वमवस्थात्रयातीतः| त्वं देहत्रयातीतः| त्वं कालत्रयातीतः | त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् | त्वं शक्तित्रयात्मकः | त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् | त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वंग्निस्त्वं वायुस्त्वंसूर्यस्त्वं चन्द्रमाँस्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् | गणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादिस्तदनन्तरम् | अनुश्वारः परतरः | अर्धेन्दुलसितम् | तारेणरुद्धम् | एतत्तव मनुस्वरूपम्| गकारः पूर्वरूपम् | अकारो मध्यमरूपम् | अनुश्वा-

रश्चान्त्यरूपम् |बिन्दुरुत्तररूपम्| नादः संधानम् | संहिता सन्धिः | सैषा गणेशविद्या |गणक् ऋषिः | निचृद्गायत्रीछन्दः| गणपतिर्देवता | ॐ गं गणपतये नमः | एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि| तन्नो दन्ती प्रचोदयात् | एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् | रदं च वरदं ह्स्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम्| रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् | रक्त गन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् | भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारणम-च्युतम् | आविर्भूतं च स्रृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् | एवं ध्यायति यो नित्यम् स योगी योगिनां वरः | नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते ऽ स्तु लंबोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः | एतदथर्वशीर्षं योऽ धीते | स ब्रह्मभूयाय कल्पते |स सर्वविघ्नैर्नबाध्यते| स सर्वतः सुखमेधते | स पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते | सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति | प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति | सायंप्रातः प्रयुञ्जानो ऽअपापो भवति | सर्वत्राधियानो ऽ पविघ्नो भवति | धर्ममर्थं कामं मोक्षं च विन्दति | इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् | यो यदि मोहाद्दास्यति| स पापीयान् भवति | सहस्त्रावर्तनाद् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत् | अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति | चतुर्थ्यामनश्नंजपति स विद्यावान्भवति | इत्यथर्वणवाक्यम् | ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न विभेति कदाचनेति | यो दूर्वान्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति | यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति | स मेधावान् भवति | यो मोदक सहस्त्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति| यः साज्य समिद्भिर्यजति | स सर्वं लभते स सर्वं लभते | अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्य वर्चस्वी भवति | सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमा सन्निधौ वा जप्त्वा सिद्ध् मन्त्रो भवति | महाविघ्नात् प्रमुच्यते | महादोषात्प्रमुच्यते | महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते | स सर्वविद्भवति | स सर्वविद्भवति | य एवं वेद | भद्रङ्कर्णे भिरितिशान्तिः|

अभ्यास प्रश्न – 6

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए

1-बिन्दुरुत्तररूपम्| नादः संधानम् | संहिता ----------| सैषा गणेशविद्या |

2 - गणक् ऋषिः | निचृद्गायत्री..............| गणपतिर्देवता |ॐ गं गणपतये नमः |

3 - एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् | रदं च......... हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम्| रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् |

4 - रक्त गन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः ....| भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् | आविर्भूतं च स्रृष्ट्यादौ प्रक्रतेः पुरुषात्परम् |

5 -नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः ....नमस्ते ऽ स्तु लंबोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः |

7.3.7. श्रीगणपतिस्तवः

ऋषिरुवाच

अजं निर्विकल्पं निराहारमेकं निरानन्दमानन्दमद्वैतपूर्णम् |
परं निर्गुणं निर्विशेषं निरीहं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम | 1|
गुणातीतमानं चिदानन्दरूपं चिदाभासकं सर्वगं ज्ञानगम्यम् |
मुनिध्येयमाकाशरूपं परेशं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम् | 2|
जगत्कारणं कारणज्ञानरूपं सुरादिं सुखादिं गणेशं भजेम |
जगद् व्यापिनं विश्ववन्द्यं सुरेशं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम् | 3|
रजोयोगतो ब्रह्मरूपं श्रुतिज्ञं सदा कार्यसक्तं हृदाचिन्त्यरूपम्|
जगत् कारणं सर्वविद्यानिदानं परब्रह्मरूपं गणेशं नताः स्मः |4 |
सदासत्ययोग्यं मुदाक्रीडमानं सुरारीन् हरन्तं जगत्पालयन्तम् |
अनेकावतारं निजज्ञानहारं सदा विश्वरूपं गणेशं नमामः | 5|
तमोयोगिनं रुद्ररूपं त्रिनेत्रं जगद्धारकं तारकं ज्ञानहेतुम् |
अनेकागमैः स्वं जनं बोधयन्तं सदा सर्वरूपं गणेशं नमामः |6|
नमः स्तोमहारं ऽ जनाज्ञानहारं त्रयी वेदसारं परब्रह्मसारम् |
मुनिज्ञानकारं विदूरे विकारं सदा ब्रहमरूपं गणेशं नमामः | 7|
निजैरोषधीस्तर्पयन्तं कराद्यैः सुरौघान् कलाभिः सुधाश्रावणीभिः |
दिनेशान्शुसंतापहारं द्विजेशं शशाङ्कस्वरूपं गणेशं नमामः | 8|
प्रकाशस्वरूपं नमो वायुरूपं विकारादिहेतुं कलाधारभूतम्|
अनेकक्रिया ऽ नेकशक्तिस्वरूपं सदा शक्तिरूपं गणेशं नमामः | 9|

प्रधानस्वरूपं महत्तत्वरूपं धराचारिरूपं दिगीशादिरूपम् |
असत् - सत्स्वरूपं जगद्धेतुरूपं सदा विश्वरूपं गणेशं नताः स्मः | 10|
त्वदीये मनः स्थापयेदङ्घ्रियुग्मे स नो विघ्नसंघातपीडां लभेत् |
लसत्सूर्यबिम्बे विशाले स्थितो ऽयं जनोध्वान्तपीडा कथं वा लभेत् | 11|
वयं भ्रामिताः सर्वथाऽज्ञानयोगादलब्धस्तवाङ्घ्रिबहून् वर्षपूगान् |
इदानीमवाप्तस्तवैवप्रसादात् प्रपन्नान् सदा पाहि विश्वम्भराद्य|12|
एवं स्तुतो गणेशस्तु संतुष्टोऽभून् महामुने |
कृपया परयोपेतोऽभिधातुमुपचक्रमे || 13|
|इति श्रीमद् गर्गऋषि प्रणीतो गणपतिस्तवः संपूर्णम् |

अभ्यास प्रश्न – 7

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए

1- गुणातीतमानं चिदानन्दरूपं चिदाभासकं सर्वगं ज्ञानगम्यम् |
मुनिध्येयमाकाशरूपं ....परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम् |
2-जगत्कारणं कारणज्ञानरूपं सुरादिं सुखादिं गणेशं भजेम |
जगद् व्यापिनं विश्ववन्द्यं सुरेशं ....गणेशं भजेम् |
3-रजोयोगतो ब्रह्मरूपं श्रुतिज्ञं सदा कार्यसक्तं हृदाचिन्त्यरूपम्|
जगत् ....सर्वविद्यानिदानं परब्रह्मरूपं गणेशं नताः स्मः |
4-सदासत्ययोग्यं मुदाक्रीडमानं सुरारीन् हरन्तं जगत्पालयन्तम् |
अनेकावतारं ....सदा विश्वरूपं गणेशं नमामः |
5-निजैरोषधीस्तर्पयन्तं कराद्यैः सुरौघान् कलाभिः सुधाश्रावणीभिः |
दिनेशान्शुसंतापहारं ....शशाङ्कस्वरूपं गणेशं नमामः |

7.4 सारांश

गणेश शब्द में दो शब्दों की संधि हुई है जिसे गण एवं ईश के रूप में जाना जाता है | गण का अर्थ समूह होता है जिसको सभी लोग जानते हैं परन्तु तात्पर्यार्थ यह है कि यह पूरी सृष्टि परमाणुओं और अलग-अलग ऊर्जाओं का समूह है | इन समूहों को

नियंत्रित करने के लिए एक नियंत्रक की आवश्यकता होती है क्योंकि नियन्त्रक के अभाव में ऊर्जा के सभी तत्व स्वतंत्र न हो जाय | स्वतन्त्र तत्व काम नही कर पायेंगे | उस निन्त्रक शक्ति को उसका स्वामी जिसे ईश की उपाधि दी गयी वह संयुक्त होकर गणेश बन गया | गणेश जी की दिव्यता अलौकिक है | सनातन हिन्दू पौराणिक मान्यताओं के आधार पर उन्हें भगवान शिव एवं पार्वती का पुत्र कहा गया है | आदि शंकराचार्य जी गणेश स्तोत्र में लिखते हैं कि हालाकि गणेश जी की पूजा हठी वाले शिर के भगवान के रूप में होती है लेकिन यह आकार वास्तव में उस निराकार को प्रकट करता है | गणेश जी वही ऊर्जा हैं जो सृष्टि के कारण हैं | यह वही ऊर्जा हैं जिसमे सब कुछ प्रकट होता है और विलीन हो जाता है | भारतीय संस्कृति में श्री गणेश भगवान को श्री गणपति ,गजानन , गजमुख , विघ्नहर्ता ,विनायक ,लम्बोदर ,वक्रतुण्ड आदि विविध रूप में जाना जाता है | पौरोहित्य परम्परा के अनुसार गणेश जी का नाम सभी देवी देवताओं में सर्वप्रथम लिया जाता है इसीलिए इन्हें गणपति प्रथम पूज्य के नाम से पुकारते हैं |

7.5 पारिभाषिक शब्दावली

मुद- प्रसन्न

कर- हाथ

मोदक- लड्डू या मिष्ठान्न

सदा- हमेशा

मुक्ति- मुक्त

कलाधर- कलाओं को धारण करने वाले

लोकरञ्जकम् – लोक को प्रसन्न करने वाले

अनायक- नायक से रहित

नायकं – नायक या सेनापति

इभ- हाथी

नताशुभाशुनाशकं – अशुभ को शीघ्र नष्ट करने वाला

नवोदित- नवीन उदित

अर्कभास्वरं- सूर्य के समान भाषित

नताधिकापदुद्धरम् – आपत्ति से उद्धार करने वाले को नमस्कार है |

सुरेश्वरं – देवताओं के देवता

निधीश्वरं- निधिओं के स्वामी

वह्नि – अग्नि

भानु – सूर्य

व्योम- आकाश

स्थावर- चलायमान

जङ्गम- अचलायमान

कार्यसिद्धिः- कार्य की सिद्धि

धरा- पृथ्वी

शक्तः- समर्थ

गृणन्ति- स्तुति करते हैं

7.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1 – क –सत्य ,ख- सत्य ,ग- असत्य ,घ- सत्य ,च- सत्य |

अभ्यास प्रश्न 2 – 1- सदा , 2 –नमामि , 3- नताधिका 4- महेश्वरं 5- वरं |

अभ्यास प्रश्न 3 – क –सत्य ,ख- सत्य ,ग- असत्य ,घ- सत्य ,च- सत्य |

अभ्यास प्रश्न 4- 1- पिङ्गाक्षं, 2- धूम्रवर्णं, 3- द्वादशं, 4- विद्यां, 5- फलं|

अभ्यास प्रश्न 5- 1 -विश्वगो, 2- वारणाः, 3-सम्पदो,4- बभूव, 5- सदा|

अभ्यास पश्न 6-1- सन्धिः, 2-छन्दः , 3- वरदं,4- सुपूजितम्,5- प्रमथपतये|

अभ्यास प्रश्न 7-1- परेशं, 2- परब्रह्मरूपं,3- कारणं,4- निजज्ञानहारं,5- द्विजेशं|

7.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-स्तोत्ररत्नावली गीताप्रेस गोरखपुर, गोविन्दभवन कार्यालय कोलकाता का संस्थान , गोरखपुर |

2-पूजन –विधानम् ,प्रो. डॉ. रामराज उपाध्याय , प्रकाशक एवं वितरक – अभिषेक प्रकाशन 5 8 1 8 \ 7 ,चंद्रावल प्रथम तल , जवाह्र नगर ,दिल्ली -11007 |

7.8-सहायक पाठ्य सामग्री

1- वृहत् स्तोत्र रत्नाकर – श्री शिव दत्त मिश्र शास्त्री , प्रकाशक – ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार , कचौड़ी गली , वाराणसी |

7.9 निबंधात्मक प्रश्न—

1 -श्रीगणेशाष्टक लिखिए |

2 – संकटनाशनगणेश स्तोत्र लिखिये |

3 - श्री श्रीगणेशपञ्चरत्नम स्तोत्र लिखिए |

4 – श्रीगणेपत्यथर्वशीर्ष लिखिए |

5 - श्रीगणेश जी के जन्म बारे में लिखिए |

इकाई - 8 श्रीशिवमानस पूजा स्तोत्र

इकाई की संरचना

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 श्रीशिवमानसपूजा

8.3.1. श्रीशिवमानसपूजा का परिचय |

8.3.2. ' श्रीशिवमानसपूजास्तोत्र का मूल पाठ |

8.3.3. श्रीशिवमानसपूजास्तोत्र का हिन्दी अनुवाद |

8.3.4 शिव मानस पूजा का मूल पाठ|

8.3.5 शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् का मूल पाठ|

8.3.6 'पशुपत्यष्टकम्' का मूल पाठ

8.3.7 'श्रीरुद्राष्टकम्' का मूल पाठ|

8.3.8 'बिल्वाष्टकम्' का मूल पाठ

8.4 सारांश

8.5 पारिभाषिक शब्दावली

8.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

8.8 सहायक पाठ्य सामग्री

8.9 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना -

इस पाठ में 'श्रीशिवमानसपूजा' के बारे में ज्ञान कराया जायेगा| इसके ज्ञान से आप 'श्रीशिवमानसपूजास्तोत्र' के महत्त्व को अच्छी तरह से समझ सकेगें| इस स्तोत्र का ज्ञान न केवल कर्मकाण्ड से सम्बंधित जनों के लिए अपितु सभी के लिए अनिवार्य बतलाया गया है| आप जानते हैं कि कर्मकाण्ड भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है| इसमें विभिन्न सूक्तों, मन्त्रों, स्तोत्रों आदि का प्रयोग होता रहता है| इस स्तोत्र का प्रयोग श्री शंकर भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है | हालाकि श्री शंकर भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए अन्य बहुत सारे स्तोत्र हैं परन्तु सभी स्तोत्रों में उत्कृष्ट है- श्रीशिवमानसपूजा स्तोत्र| भारतीय शास्त्रों की यह मान्यता है कि मानव जीवन का सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी देवता से सम्बंधित है | उन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए एवं प्राच्य ज्ञान को अर्वाचीन तरीके से विकसित करने के लिए किसी न किसी स्तोत्र का पाठ व्यक्ति को करना चाहिए जिसमें एक है - श्रीशिवमानसपूजास्तोत्र|

8.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ सकेगें कि –

1 – मानव जीवन में श्रीशिवमानसपूजा स्तोत्र का क्या महत्त्व है?

2 – श्रीशिवमानसपूजा स्तोत्र को देव पूजन में क्या स्थान प्राप्त है?

3 - श्रीशिवमानसपूजा में भगवान शिव की प्रसन्नता के लिए क्या करना चाहिए?

4-श्रीशंकर भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए श्रीशिवमानसपूजा का क्या कथन है ?

5-पूजन सामग्री के अभाव में हम कैसे पूजन कर सकते हैं ?

6- श्रीशिवमानसपूजा

श्रीशिवमानसपूजास्तोत्र आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा रचित श्री शंकर भगवान को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है | भारतीय संस्कृति में श्री शंकर भगवान को श्री भोले शंकर भगवान के रूप में जाना जाता है | परम्परा में प्रत्येक घरों में श्री शंकर भगवान की कथा का श्रवण हम सभी लोग बचपन से करते रहें हैं | श्री शंकर भगवान

की आरती तो हम सभी लोगों को सुनते- सुनते याद भी हो जाती है | इस स्तोत्र में भगवान श्री शंकर जी की महिमा का गुणगान पांच श्लोकों में किया गया है |

8.3.1. श्रीशिवमानसपूजा स्तोत्र परिचय

श्रीशिवमानसपूजा स्तोत्र भगवान शंकर की प्रसन्नता के लिए पढ़ा जाने वाला स्तोत्र है| शिव के कल्याणात्मक स्वरूप को शिव शंकर भगवान के रूप में जाना जाता है| इसमें प्रत्येक श्लोक में मन से ही कल्पना द्वारा पूजन किया जाता है| श्रीशिवमानसपूजा स्तोत्र में भगवान शंकर की पूजा में पाए जाने वाले प्रसंगों का पुट मिलता है| पूजा में विविध द्रव्यों की आवश्यकता होती है परन्तु मानस पूजा में उन सभी द्रव्यों का ध्यान मन में करके मन से ही सामग्रियों का अर्पण किया जाता है| भगवान शंकर की पूजा में श्रीशिवमानसपूजा स्तोत्र का प्रयोग निश्चित रूप से देखा जाता है| जो पूजा भी करना चाहता है और उसके पास पूजन सामग्री संग्रह का समय नही है तो वह भी इस मानस पूजा के माध्यम से पूजन का फल प्राप्त कर सकता है| शिव , शम्भू , भोले , शंकर , रूद्र , कपर्दी , गंगाधर , सदा शिव , आदि विविध नामों से श्री शंकर भगवान को जाना जाता है|

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

क – श्रीशिवमानसपूजा स्तोत्र भगवान शंकर की प्रसन्नता के लिए पढ़ा जाने वाला स्तोत्र है|

ख - श्रीशिवमानसपूजा स्तोत्र में भगवान शंकर की पूजा में पाए जाने वाले प्रसंगों का भी पुट मिलता है|

ग - पूजा में विविध द्रव्यों की आवश्यकता होती है|

घ - मानस पूजा में उन सभी द्रव्यों का ध्यान मन में करके मन से ही सामग्रियों का अर्पण किया जाता है|

च - शिव को शम्भू , भोले , शंकर , रूद्र , कपर्दी , गंगाधर , सदा शिव , आदि विविध नामों से जाना जाता है|

8.3.2. श्री शिव मानस पूजा स्तोत्र का मूल पाठ -

|| श्रीशिवमानसपूजास्तोत्रम् ||

रत्नै: कल्पितमानसं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरम् |
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् |
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा |
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् | १ |
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसम् |
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् |
शाकानामयुतं जलं रूचिकरं कर्पुरखंडोज्ज्वलम् |
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु | २ |
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलम् |
विणाभेरीमृदंगकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा |
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया|
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो |३ |
आत्मात्वं गिरिजामतिः सहचरा: प्राणाः शरीरं गृहम् |
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः |
सञ्चार: पदयोः प्रदिक्षणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो|
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् | ४ |
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा |
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् |
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व|
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेवशम्भो | ५ |
|| इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता शिवमानसपूजा समाप्ता ||

अभ्यास प्रश्न – 2

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1- रत्नै: कल्पितमानसं हिमजलैः ....च दिव्याम्बरम् |

2- जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं .... च धूपं तथा |

3- सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते .... घृतं पायसम् |

4- शाकानामयुतं .... रूचिकरं कर्पुरखंडोज्ज्वलम् |

5- छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं .... निर्मलम् |

8 .3.3 श्री शिव मानस पूजा स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद –

हे दयानिधे | हे पशुपते | हे देव | यह रत्नमय सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना प्रकार के रत्नों से विभूषित दिव्य वस्त्र , कस्तूरी गंध से समन्वित चन्दन , जूही, चम्पा और विल्व पत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप यह सब उपहार मानसिक पूजोपचार के रूप में ग्रहण करिये | 1|

मैनें नूतन रत्नखंडों से जडित सुवर्ण पात्र में घृत युक्त खीर, दूध और दधि सहित पांच प्रकार का व्यंजन , कदली फल , शर्बत , अनेकों शाक , कपूर से सुवासित और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल एवं ताम्बूल ये सभी मन के द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत किये हैं | हे प्रभो भगवान शंकर कृपया इन्हें स्वीकार कीजिये | 2|

छत्र , चवर , पंखा , निर्मल दर्पण , वीणा , भेरी, मृदंग, दुन्दुभी के वाद्य , गान और नृत्य , साष्टांग प्रणाम , नाना प्रकार की स्तुतियाँ ये सभी मैं संकल्प से ही आपको समर्पण करता हूँ | प्रभो मेरी पूजा ग्रहण करिए | 3 |

हे शम्भो | मेरी आत्मा तुम हो , बुद्धि पार्वती जी हैं , प्राण आपके गण हैं,शरीर आपका मंदिर है , सम्पूर्ण विषय भोग की रचना आपकी पूजा है , निद्रा समाधि है, मेरा चलना फिरना आपकी परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र हैं | इस प्रकार मैं जो - जो भी कर्म करता हूँ , वह सब आपकी आराधना ही है |4 |

प्रभो | मैनें हाथ ,पैर, वाणी, शरीर ,कर्म ,कर्ण , नेत्र अथवा मन से जो भी अपराध किये हैं , विहित कर्म हो या अविहित कर्म हो , इन सबको आप क्षमा कीजिये | हे करुणा सागर महादेव आपकी जय हो आपकी जय हो | 5|

अभ्यास प्रश्न – 3

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

1- हे देव | यह रत्नमय सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना प्रकार के रत्नों से विभूषित दिव्य वस्त्र , कस्तूरी गंध से समन्वित चन्दन आदि उपहार मानसिक पूजोपचार के रूप में ग्रहण करिये |

2. - मैनें नूतन रत्नखंडों से जडित सुवर्ण पात्र में घृत युक्त खीर, दूध और दधि सहित पांच प्रकार का व्यंजन आदि सभी मन के द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत कियें हैं | हे प्रभो भगवान शंकर कृपया इन्हें स्वीकार कीजिये |

3. -छत्र , चवर , पंखा , निर्मल दर्पण , वीणा , भेरी, मृदंग, दुन्दुभी के वाद्य , गान और नृत्य , साष्टांग प्रणाम आदि सभी मैं असंकल्प से ही आपको समर्पण करता हूँ |

4. हे शम्भो | मेरी आत्मा तुम हो , बुद्धि पार्वती जी हैं , प्राण आपके गण हैं ,शरीर आपका मंदिर है , सम्पूर्ण विषय भोग की रचना आपकी पूजा है , निद्रा समाधि है, मेरा चलना फिरना आपकी परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र हैं | इस प्रकार मैं जो - जो भी कर्म करता हूँ , वह सब आपकी आराधना ही है

5. प्रभो | मैनें हाथ ,पैर, वाणी, शरीर ,कर्म ,कर्ण , नेत्र अथवा मन से जो भी अपराध किये हैं , विहित कर्म हो या अविहित कर्म हो , इन सबको आप क्षमा कीजिये | हे करुणा सागर महादेव आपकी जय हो आपकी जय हो |

8.3.4 - शिव मानस पूजा का मूल पाठ

ॐ प्रत्यक्प्रणवधीवृत्या हृद्गृहान्तः प्रवेशनम् |
मण्डपान्तः प्रवेशो ऽ यम् पूजार्थं तव शङ्कर |1|
गुरुवाक्येषु विश्वासः स्थितिरासनसंस्थितिः |
सर्वसंकल्पसंत्यागः संकल्पस्तव पूजने |2|
सर्वाधारस्त्वमेवेति निश्चयः पीठपूजनम्|
ध्यानध्यातृध्येयबाधो ध्यानमानन्दकारणम्|3|
दृश्यप्रमार्जनं चित्तान्ननिर्माल्यस्य विसर्जनम् |
अहं ब्रह्मेत्य खण्डा या वृत्तिर्धाराभिषेचनम् | 4|

पृथिव्यात्मकता दृष्टिस्तव गन्धसमर्पणम् |
बोधोपशमवैराग्यं त्रिदलं बिल्वमर्पये |5|
आकाशात्मकताबोधः कुसुमार्पणमीश्वरं|
जगदाकाशपुष्पाभीमिति पद्मं समर्पये |6|
वायुतेजोमयत्वं ते धूपदीपावनुत्तमौ |
दृश्यासम्भवबोधेन निजानन्देन तृप्तता |7|
सर्वतः प्रितिजनकं नैवेद्यं विनिवेदये |
जलात्मकत्वबुद्धिस्तु पीयूषं तेऽर्पये पिब |8|
कर्तव्येष्वप्रसक्तिस्तु हस्तप्रक्षालनं तव |9|
दुर्वासनापरित्यागस्ताम्बूलस्य समर्पणम् |
वाचां विसर्जनं देव दक्षिणा श्रुतिसम्मता | 10 |
फ़लाभिसंधिराहित्यं फलार्पणमनुत्तमम् |
अहमेव परं ब्रह्म सच्चिदानन्दलक्षणम् |11 |
एवं निदिध्यासवाक्यं स्तुतिः प्रियकरी तव |
नामरूपाणि न त्वत्तो भिन्नानीति मतिस्तु या |12|
तव पुष्पाञ्जलिः शम्भो सर्वत्रोत्कीर्णपुष्पकः |
स्वप्रकाशात्मबुद्धिस्तु महानीराजनं तव|13|
प्रादक्षिण्यं सर्वतस्ते व्याप्तबुद्धिः स्मृतं शिव |
त्वमेवाऽ हमिति स्थित्या लीनता प्रणतिस्तव |14 |
शुद्धसत्वस्याभिवृद्धिश्छत्रं तापापनोदनम् |
रजस्तमस्तिरस्कारश्चामरान्दोलने तव |15|
निजानन्दपरो धूर्णदोलनान्दोलने तव |
धन्योऽहं कृतकृत्योऽहमितिगानं तव प्रियम् |16|
निरङ्कुशं महातृप्त्या नर्तनं ते मुदे शिव |
नानाविधैः शब्दजालैर्जृम्भणं वाद्यमुत्तमम् |17 |
शब्दातिगत्वबुद्धिस्तु कल्याणमिति डिण्डिमः|
वेगवत्तरगङ्गाऽसौ मनोऽश्वस्ते समर्पितः |18 |
अहं भावमहामत्तगजेन्द्रो भूरिलक्षणः|
तत्र देहाद्यनारोपनिष्ठा दृढतरोऽ ङ्कुशः|19 |
अद्वैतबोधदुर्गो ऽ यं यत्र शत्रुर्नकश्चन |

जनतारामविस्तारो रमस्वात्र यथासुखम्|२०|
कल्पनासंपरित्यागो महाराज्यं समर्पयेत् |
भोक्तृत्वाराध्यासराहित्यं वरं देहि सहस्त्रधा |21|
अखण्डा तव पूजेयं सदा भवतु सर्वतः |
आत्मत्वात्त्व मे सर्वं पूजैवाऽस्ति नचाऽन्यथा |22 |
इमां पूजां प्रतिदिनं यः पठेद्यत्र-कुत्रचित् |
सद्यः शिवमयो भूत्वा मुक्तश्चरति भूतले | 23 |
इति शिवमानसपूजा समाप्ता

अभ्यास प्रश्न – 4

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1- जगदाकाशपुष्पाभीमिति ....समर्पये |
2- सर्वतः प्रितिजनकं ....विनिवेदये |
3- शुद्धसत्वस्याभिवृद्धिश्छत्रं ....पनोदनम् |
4- रजस्तमस्तिरस्कारश्चामरान्दोलने .....|
5- ....धूर्णदोलनान्दोलने तव |

8.3.5 शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् का मूल पाठ

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचानाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय |
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय |१|
मंदाकिनीसलिल- चन्दनचर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय |
मन्दारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय |2 |
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाऽध्वर- नाशकाय |
श्रीनीलकंठाय वृषभध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय |3|
वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चित- शेखराय |
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय | 4 |
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय |
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय |5 |

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ |
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते |६|
| इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् |

अभ्यास प्रश्न – 5

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1- श्रीनीलकंठाय ....तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ||
2- वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चित- ....|
3- चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै ....नमः शिवाय |
4- यक्षस्वरूपाय ....पिनाकहस्ताय सनातनाय |
5- पञ्चाक्षरमिदं ....यः पठेच्छिवसन्निधौ |

8.3.6 'पशुपत्यष्टकम्' का मूल पाठ

पशुपतिं द्युपतिं धरणीपतिं भुजगलोकपतिं च सतीपतिम् |
प्रणतभक्तजनार्ति हरं परं भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् |1|
न जनको जननी न च सोदरो न तनयो न च भूरि बलं कुलम्|
अवति कोऽ पि न कालवशं गतं भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् |2 |
मुरज -डिण्डिम –वाद्यविलक्षणं मधुरपञ्चमनाद - विशारदम् |
प्रमथभूतगणैरपि सेवितं भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् |3 |
शरणदं सुखदं शरणान्वितं शिवशिवेति शिवेति नतं नृणाम् |
अभयदं करुणा वरुणालयं भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् |4 |
नरशिरोरचितं मणिकुण्डलं भुजगहारमुदं वृषभध्वजम् |
चितिरजोधवलीकृतविग्रहं भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् |5 |
मखविनाशकरं शशिशेखरं सततमध्वरभाजिफलप्रदम् |
प्रलयदग्धसुराऽसुरमानवं भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् |6 |
मदमपास्यचिरं हृदिसंस्थितं मरणजन्मजराभयपीडितम् |
जगदुदीक्ष्यसमीपभयाकुलं भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् |7|
हरविरञ्चिसुराधिपपूजितं यमजनेश –धनेश- नमस्कृतम् |

त्रिनयनं भुवनत्रितयाधिपं भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् |8 |
पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतं विरचितं पृथ्वीपतिसूरिणा |
पतति संशृणुते मनुजः सदा शिवपुरीं वसते लभते मुदम् |
| इति पृथ्वीपतिसूरिणा विरचितं पशुपत्यष्टकं संपूर्णम् |

अभ्यास प्रश्न – 6

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1- न जनको जननी न च सोदरो न ....न च भूरि बलं कुलम्|
2- मुरज -............ –वाद्यविलक्षणं मधुरपञ्चमनाद - विशारदम् |
3- अभयदं ....वरुणालयं भजत रे मनुजा गिरिजा पतिम् |
4- मखविनाशकरं ....सततमध्वरभाजिफलप्रदम् |
5- हरविरञ्चिसुराधिपपूजितं यमजनेश –.........- नमस्कृतम् |

8.3.7 'श्रीरुद्राष्टकम्' का मूल पाठ

नमामीशमिशाननिर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् |
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् |1|
निराकारमोङ्कार मूलं तुरीयं गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् |
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागार संसार पारं नतो ऽहम् | 2|
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनो भूतकोटि- प्रभाश्रीशरीरम् |
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा | 3|
चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालुम्|
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि |4|
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशमखण्डम् अजं भानुकोटिप्रकाशम् |
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजे ऽ हम् भवानीपतिं भावगम्यम् |5|
कलातीत – कल्याणकल्पान्तकारी सदा सज्जनान्ददाता पुरारिः |
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारिः |6|
न यावद् उमानाथपादारविन्दं भजन्तीहलोके परे वा नराणाम् |

न तावत् सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् |7|
न जानामि योगं जपं नैव पूजा नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भुतुभ्यम् |
जराजन्मदुखौघतातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीशशम्भो |8|
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये |
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति | 9 |
|इति श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं संपूर्णम्|

अभ्यास प्रश्न – 7

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1- निराकारमोङ्कार मूलं ....गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् |
2- तुषाराद्रि संकाश गौरं ....मनो भूतकोटि- प्रभाश्रीशरीरम् |
3- प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशमखण्डम् ...भानुकोटिप्रकाशम् |
4- कलातीत – कल्याणकल्पान्तकारी ....सज्जनान्ददाता पुरारिः |
5- न तावत् सुखं शान्ति सन्तापनाशं ....प्रभो सर्वभूताधिवासम् |

8.3.8 'बिल्वाष्टकम्' का मूल पाठ

ब्रह्म -मुरारीसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् |
जनमजदुःखविनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदा शिवलिङ्गम् |1|
देवमुनि -प्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम् |
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदा शिवलिङ्गम् |2 |
सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गम् बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् |
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदा शिवलिङ्गम् |3 |
कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपति वेष्टितशोभितलिङ्गम् |
दक्षसुयज्ञविनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदा शिवलिङ्गम् |4 |
कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् |
संचितपापविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदा शिवलिङ्गम् |5 |
देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् |
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत्प्रणमामि सदा शिवलिङ्गम् |6 |

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् |
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदा शिवलिङ्गम् |7 |
सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् |
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदा शिवलिङ्गम् |8 |
लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ |
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ||

अभ्यास प्रश्न – 8

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1- सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत्प्रणमामि ....शिवलिङ्गम् |

2- कनकमहामणि भूषितलिङ्गं ....वेष्टितशोभितलिङ्गम् |

3- देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव ....लिङ्गम् |

4- अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं ....समुद्भवकारणलिङ्गम् |

5-सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं ....पुष्पसदार्चितलिङ्गम् |

8.4 सारांश-

श्री शिव मानस पूजा स्तोत्र एक ऐसा स्तोत्र है जिसमे भगवान शंकर की पूजा मानसिक रूप में की गयी है | यह स्तोत्र आदि शंकराचार्य के द्वारा रचा गया है | यह स्तोत्र भगवान शंकर की प्रसन्नता के लिए पढ़ा जाने वाला स्तोत्र है| षोडशोपचार पूजन के कर्म में आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान, वस्त्र, उपवीत, गंध, माला, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा व पुष्पांजलि आदि उपचार बतलाये गये हैं | शिव मानस पूजा में 'रत्नै: कल्पितमानसं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरम्' के अनुसार सबसे पहले आसन की परिकल्पना की गयी है | आवाहन का प्रयोग वहाँ किया जाता है जहाँ मूर्ति आवाहित नहीं है | यदि आवाहित मूर्ति है तो उसमें आवाहन नहीं किया जाता है | वहां पूजन आसन से प्रारंभ किया जाता है | यह भी आसन से ही प्रारंभ किया गया है | भगवान् को रत्नमय सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना प्रकार के रत्नों से विभूषित दिव्य वस्त्र , कस्तूरी गंध से समन्वित चन्दन , जूही, चम्पा और विल्व पत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप आदि यह सब उपहार मानसिक पूजोपचार से इस स्तोत्र के माध्यम से समर्पित किया गया है |

8. 5. पारिभाषिक शब्दावली

कल्पित – कल्पना किया गया

हिम जल – हिमालय का जल

दिब्याम्बर – दिब्य वस्त्र

नाना रत्न – विविध प्रकार के रत्न

विभूषित – अलंकृत |

अंकित – चिन्हित

जाती – एक प्रकार का पुष्प

गृह्यताम् – ग्रहण करिए

पायस – खीर

पय – दुग्ध

दधि -दही

सिद्धसुरासुर – जो सुर या असुर सिद्धि प्राप्त कर चुके हैं

कनकमहामणि- स्वर्ण की महा मणि से

भूषितलिङ्गं – लिंग आभूषित हो रहा है

फणिपति वेष्टितशोभितलिङ्गम् – नाग राज से आवेष्टित लिंग सुशोभित हो रहा है |

दक्षसुयज्ञविनाशकलिङ्गं – दक्ष के यज्ञ को विनष्ट कर देने वाला लिंग

कुङ्कुम- रोली

लेपित- लेप किया गया

पङ्कज – कमल

हार- माला

संचितपाप- पहले से एकत्रित पाप

देवगणार्चित- देव गणों पूजित

दिनकरकोटि- करोणों सूर्य

अष्टदल- आठ पत्र

सर्वसमुद्भवकारण- सम्पूर्ण सृष्टि के उतपत्ति का कारण |
सुरगुरु- देवताओं के गुरु
सुरवरपूजित- देवताओं में श्रेष्ट

8.6अभ्यास प्रश्नों के उत्तर –

अभ्यास प्रश्न 1 – क –सत्य ,ख- सत्य ,ग- असत्य ,घ- सत्य ,च- सत्य |

अभ्यास प्रश्न 2 – 1- स्नानं , 2 –पुष्पं , 3- पात्रं 4- जलं 5- चादर्शकं |

अभ्यास प्रश्न 3 – 1- सत्य ,2- सत्य ,3-असत्य ,4-सत्य ,5-सत्य |

अभ्यास प्रश्न 4 -1- पद्मं, 2- नैवेद्यं, 3-तापा, 4- तव, 5- निजानन्दपरो|

अभ्यास प्रश्न 5- 1–वृषभध्वजाय,2-शेखराय, 3- वकाराय, 4- जटाधराय, 5- पुण्यं|

अभ्यास प्रश्न 6- 1- तनयो, 2- डिण्डिम,3- करुणा, 4- शशिशेखरं, 5- धनेश|

अभ्यास प्रश्न 7- 1- तुरीयं, 2-गभीरं, 3- अजं, 4- सदा, 5- प्रसीद|

अभ्यास प्रश्न 8- 1- सदा,2- फणिपति, 3- च,4-सर्व,5-सुरवन|

8.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-स्तोत्र रत्नावली गीता प्रेस गोरख पुर गोविन्द भवन कार्यालय कोलकाता का संस्थान

8.8 सहायक पाठ्य सामग्री

क़ - वृहत् स्तोत्र रत्नाकर – श्री शिव दत्त मिश्र शास्त्री , प्रकाशक – ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार , कचौड़ी गली , वाराणसी |

8.9 निबंधात्मक प्रश्न-

1. श्रीशिव मानस पूजा का अर्थ उदहारण सहित लिखिए |

2. श्रीशिव मानस पूजा लिखिये |

3. श्रीशिव मानस पूजा स्तोत्र लिखिए |

4. पशुपत्यष्टक लिखिए |

5. रुद्राष्टक लिखिए |

इकाई – 9 मधुराष्टक

इकाई की संरचना

9.1 प्रस्तावना
9 .2 उद्देश्य
9 .3 श्री मधुराष्टकम्
9 .3.1. श्री मधुराष्टकम् का परिचय |
9.3.2. श्री मधुराष्टकम् का मूल पाठ |
9.3.3 श्री गोविंदाष्टकम् का मूल पाठ |
9.3.4. श्रीकृष्णाष्टकम् 1 का मूल पाठ |
9.3.5 श्रीकृष्णाष्टकम् 2 का मूल पाठ |
9.3.6 श्रीकृष्णाष्टकम् 3 का मूल पाठ |
9.3.7 श्रीमधुराष्टकम् का हिन्दी अनुवाद |
9.4 सारांश
9.5 पारिभाषिक शब्दावली
9.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
9.9 सहायक पाठ्य सामग्री
9.10 निबंधात्मक प्रश्न

9 .1 प्रस्तावना

इस पाठ में श्री मधुराष्टकम् के बारे में ज्ञान कराया जायेगा| इसके ज्ञान से आप श्री मधुराष्टकम् स्तोत्र के महत्त्व को अच्छी तरह से समझ सकेगें| इस स्तोत्र का ज्ञान न केवल कर्मकाण्ड से सम्बंधित जनों के लिए अपितु सभी कृष्ण प्रेमियों के लिए अनिवार्य बतलाया गया है| आप जानते हैं कि कर्मकाण्ड भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है| इसमें विभिन्न सूक्तों,मन्त्रों, स्तोत्रों आदि का प्रयोग होता रहता है| इस स्तोत्र का प्रयोग श्री कृष्ण भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है| हालाकि श्री कृष्ण भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए अन्य बहुत सारे स्तोत्र हैं परन्तु सभी स्तोत्रों में उत्कृष्ट है- श्री मधुराष्टकम्| भारतीय शास्त्रों की यह मान्यता है कि मानव जीवन का सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी देवता से सम्बंधित है| उन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए एवं प्राच्य ज्ञान को अर्वाचीन तरीके से विकसित करने के लिए किसी न किसी स्तोत्र का पाठ व्यक्ति को करना चाहिए जिसमें एक है - श्री मधुराष्टकम्| इसमें गोविन्दाष्टकम् एवं कृष्णाष्टकम् भी दिया गया है|

9.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ सकेगें कि –

1 – मानव जीवन में श्री मधुराष्टकम् स्तोत्र का क्या महत्त्व है ?

2 – श्री मधुराष्टकम् स्तोत्र को देव पूजन में क्या स्थान प्राप्त है ?

3-श्रीमधुराष्टकम् में भगवान कृष्ण की प्रसन्नता के लिए क्या लिखा गया है ?

4-श्री कृष्णाष्टकम् में श्री कृष्ण भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए ?

5-श्री गोविंदाष्टकम् में श्री कृष्ण भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए ?

9.3 मधुराष्टकम्

श्री मधुराष्टकम् स्तोत्र श्री कृष्ण भगवान को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है | भारतीय संस्कृति में श्री कृष्ण भगवान को विविध नामों से जाना जाता है | गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री राम चरित मानस में लिखा है –‘हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता ’

यहाँ हरि शब्द भगवान कृष्ण या भगवान राम के लिए आया है| भगवान कृष्ण यदि प्रसन्न हो जाय तो व्यक्ति के दुर्भाग्य को मिटाकर सौभाग्य में बदल सकते हैं| भगवान कृष्ण को प्रसन्न करने के लिए उनके विविध स्तोत्रों का पाठ किया जाता है| उसी में एक है- मधुराष्टकम्| इसके साथ ही इस प्रकरण में गोविन्दाष्टक,कृष्णाष्टक आदि भी दिया गया है|

9 .3.1. श्री मधुराष्टकम् का परिचय

श्री मधुराष्टकम् श्री वल्लभाचार्य जी द्वारा रचित है| इसमें भगवान कृष्ण के विविध मधुर स्वरूप दिए गये हैं| यह स्तोत्र आरोग्य को व आयुष्य को प्रदान करने वाला है| मधुराष्टकम् के पाठ करने वाले को उसके कार्य में आने वाले विघ्न समाप्त होते हैं| दानव. यक्ष,राक्षस, पिशाचादि भी उसके कार्य में विघ्न उपस्थित नहीं कर सकते हैं| जो व्यक्ति पवित्र होकर जितेन्द्रिय होकर इस मधुराष्टकम् स्तोत्र का पाठ करता है, वह अश्वमेध यज्ञ के सामान फल प्राप्त करता है| इस स्तोत्र से पुष्टि का वर्धन होता है| ऋषि एवं देवता गण भी इस स्तोत्र का पाठ करते हैं| आस्तिक श्रद्धावान व्यक्तियों पर भगवान कृष्ण की शीघ्र कृपा होती है| यह स्तोत्र वर देने वाला है और वरेण्य भी है| इसमें गोविन्दाष्टक भी लिखा गया है जिसका पाठ गोविन्द में प्रीति उत्पन्न करने वाला है|

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

1 – श्री मधुराष्टकम् का वर्णन वल्लभाचार्य से प्राप्त होता है |

2 - इसमें भगवान कृष्ण के विविध मधुर स्वरूप दिए गये हैं |

3 -यह स्तोत्र आरोग्य को व आयुष्य को प्रदान करने वाला नही है |

4 - मधुराष्टकम् के पाठ करने वाले को उसके कार्य में आने वाले विघ्न समाप्त होते हैं |

5 - जो व्यक्ति पवित्र होकर जितेन्द्रिय होकर मधुराष्टकम् स्तोत्र का पाठ करता है वह अश्वमेध यज्ञ के सामान फल प्राप्त करता है |

9.3.2. श्री मधुराष्टकम् का मूल पाठ

|| मधुराष्टकम् ||

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् |
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् |१ |
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम् |
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् |२ |
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुर: पाणीर्मधुर: पादौ मधुरौ |
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् |३ |
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् |
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् |४ |
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरं |
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् |५ |
गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा |
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् |६ |
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरं |
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् |७ |
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा |
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् |८ |

अभ्यास प्रश्न – 2

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 - हृदयं मधुरं ....मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् |
2 -चलितं मधुरं ....मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् |
3 - गीतं मधुरं पीतं मधुरं ......मधुरं सुप्तं मधुरम् |
4 - करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं .....मधुरम् |
5 - गुंजा मधुरा माला मधुरा ......मधुरा वीची मधुरा |

9.3.3 श्री गोविंदाष्टकम् का मूल पाठ |

|| गोविन्दाष्टकम् ||

चिदानन्दाकारं श्रुतिसरससारं समरसं |
निराधाराधारं भवजलधिपारं परगुणम् |
रमाग्रीवाहारं व्रजवनविहारं हरनुतं |
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे | १ |
महाम्भोधिस्थानं स्थिरचरनिदानं दिविजपं |
सुधाधारापानं विहगपतियानं यमरतम् |
मनोज्ञं सुज्ञानं मुनिजननिधानं ध्रुवपदम् |
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे | २ |
धिया धीरैर्ध्येयं श्रवणपुटपेयं यतिवरै- |
र्महावाक्यैर्ज्ञेयं त्रिभुवनविधेयं विधिपरम् |
मनोमानामेयं सपदि हृदि नेयं नवतनुं |
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे | ३ |
महामायाजालं विमलवनमालं मलहरं |
सुभालं गोपालं निहतशिशुपालं शशिमुखम् |
कलातीतं कालं गतिहयमरालं मुररिपुं |
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे | ४ |
नभोबिम्बस्फीतं निगमगणगीतं समगतिं |
सुरौघै: सम्प्रीतं दितिजविपरीतं पुरिशयम् |
गिरां पन्थातीतं स्वदितनवनीतं नयकरं |
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे | ५ |
परेशं पद्मेशं शिवकमलजेशं शिवकरं |
द्विजेशं देवेशं तनुकुटिलकेशं कलिहरम् |
खगेशं नागेशं निखिलभुवनेशं नगधरं |
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे | ६ |
रमाकान्तं कान्तं भवभयमयान्तं भवसुखं |
दुराशान्तं शान्तं निखिलहृदि भान्तं भुवनपम् |
विवादान्तं दान्तं दनुजनिचयान्तं सुचरितं |

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे | ७ |
जगज्जेष्ठं श्रेष्ठं सुरपतिकनिष्ठं क्रतुपतिं |
बलिष्ठं भूयिष्ठं त्रिभुवनवरिष्ठं वरवहम् |
स्वनिष्ठं धर्मिष्ठं गुरुगुणगरिष्ठं गुरुवरं |
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे | ८ |
गदापाणेरेतद् दुरितदलनं दुःखशमनं |
विशुद्धात्मा स्तोत्रं पठति मनुजो यस्तु सततम् |
स भुक्त्वा भोगौघं चिरमिह ततोऽपास्तवृजिनो |
वरं विष्णो: स्थानं व्रजति खलु वैकुण्ठभुवनम् | ९ |
(इति श्रीपरमहंसस्वामी ब्रह्मानन्दविरचितं गोविन्दाष्टकं सम्पूर्णम्)

अभ्यास प्रश्न – 3

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 - मनोमानामेयं .....हृदि नेयं नवतनुं |
2- सुभालं ......निहतशिशुपालं शशिमुखम् |
3- कलातीतं...... गतिहयमरालं मुररिपुं |
4- परेशं ..... शिवकमलजेशं शिवकरं |
5-द्विजेशं ....तनुकुटिलकेशं कलिहरम् |

9.3.4. श्रीकृष्णाष्टकम् 1 का मूल पाठ |

|| कृष्णाष्टकम् ||

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम् |
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं
ह्यनङ्गरङ्गसागरं नमामि कृष्णनागरम् | १ |
मनोजवर्गमोचनं विशाललोललोचनं
विधूतगोपशोचनं नामामि पद्मलोचनं |
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं

महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम् | २ |
कदम्बसूनुकुण्डलं सुचारु गण्डमण्डलं
व्रजाङ्गनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् |
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकं | ३ |
सदैव पादपङ्कजं मदीयमानसे निजं
दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम् |
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि कृष्णलालसम् | ४ |
भुवोभरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम् |
दृगन्तकान्तभङ्गिनं सदासदालसङ्गिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम् | ५ |
गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम् |
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम् | ६ |
समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं
नमामि कुञ्जमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम् |
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुञ्जनायकम् | ७ |
विदग्धगोपिकामनो मनोज्ञतल्पशायिनं
नमामि कुञ्जकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम् |
किशोरकान्तिराञ्जितं दृगञ्जनं सुशोभितं
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम् | ८ |
तदा यदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा
मया सदैव गीयतां तथा कृपाविधीयताम् |
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्
भवेत् स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान् | ९ |

अभ्यास प्रश्न – 4

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 – समस्तगोप........ हृदम्बुजैकमोदनं|

2- रसालवेणुगायकं ....कुञ्जनायकम् |

3.विदग्ध गोपिकामनो ....तल्पशायिनं|

4.किशोर कान्तिराञ्जितं ....सुशोभितं |

5-प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्या ...पुमान् |

9.3.5 श्रीकृष्णाष्टकम् 2 का मूल पाठ |

|| कृष्णाष्टकम् || २

चतुर्मुखादिसंस्तुतं समस्तसात्वतानुतम् |
हलायुधादिसंयुतं नमामि राधिकधिपम् |१ |
बकादिदैत्यकालकं स गोपगोपिपालकं |
मनोहरासितालकं नमामि राधिकाधिपम् |२ |
सुरेन्द्रगर्वगञ्जनं विरञ्चिमोहभञ्जनम् |
व्रजाङ्गनानुरञ्जनं नमामि राधिकाधिपम् |३ |
मयूरपिच्छमण्डनं गजेन्द्रदत्तखण्डनम् |
नृशंसकंसदण्डनं नमामि राधिकधिपम् |४ |
प्रसन्नविप्रदारकं सुदामधामकारकम् |
सुरद्रुमापहराकं नमामि राधिकधिपम् |५ |
धनञ्जयाजयावहं महाचमूक्षयावहम् |
पितामहव्यथापहं नमामि राधिकधिपम् | ६ |
मुनीन्द्रशापकारणं यदुप्रजापहारणम् |
धराभरावतारणं नमामि राधिकधिपम् |७ |

सुवृक्षमूलशायिनं मृगारिमोक्षदायिनम् |
स्वकीयधाममायिनं नमामि राधिकधिपम् |८|
इदं समाहितो हितं वराष्टकं सदामुदा |
जपञ्जनो जनुर्जरादितो द्रुतं प्रमुच्यते |९|

अभ्यास प्रश्न – 5

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 – बकादिदैत्यकालकं स ......गोपिपालकं |

2 - सुरेन्द्रगर्व....... विरञ्चिमोहभञ्जनम् |

3 - मयूरपिच्छमण्डनं ....दत्तखण्डनम् |

4-प्रसन्नविप्रदारकं ....धामकारकम् |

5-मुनीन्द्रशापकारणं .... पहारणम् |

9.3.6 श्रीकृष्णाष्टकम् 3 का मूल पाठ |

|| कृष्णाष्टकम् ||

श्रियाश्लिष्टो विष्णुः स्थिरचरवपुर्वेदविषयो
धियां साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताऽब्जनयनः |
गदी शंखी चक्री विमल वनमाली स्थिररुचिः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः |१|
यतः सर्वं जातः वियदनिलमुख्यं जगदिदं
स्थितो निःशेषं योऽवति निज सुखांशेन मधुहा |
लये सर्वं स्वस्मिन् हरति कलया यस्तु स विभुः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः |२|
असूनायम्यादौ यमनियममुख्यैः सुकरणैः
र्निरूध्येदं चित्तं हृदि विलयमानीयसकलम् |
यमीड्यं पश्यन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ

शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः|३|
पृथिव्यां तिष्ठन् यो यमयति महीं वेद न धरा
यमित्यादौ वेदो वदति जगतमीशममलम् |
नियन्तारं ध्येयं मुनिसुरनृणां मोक्षदमसौ
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः |४|
महेन्द्रादिर्देवो जयति दितिजान् यस्य बलतो
न कस्य स्वातन्त्र्यं क्वचिदपि कृतौ यत्कृतिमृते |
कवित्वत्वादेर्गर्वं परिहरति यो ऽ सौ विजयिनः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः |५|
विना यस्य ध्यानम् व्रजति पशुतां सूकरमुखां
विना यस्य ज्ञानं जनिमृतिभयं याति जनता |
विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभुः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः |६|
निरातङ्कोत्तङ्कः शरणशरणो भ्रान्तिहरणो
घनश्यामो वामो व्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसखः |
स्वयम्भूर्भूतानां जनक उचिताचारसुखदः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः |७|
यदा धर्मग्लानिर्भवति जगतां क्षोभकरणी
तदा लोकस्वामी प्रकटितवपुः सेतुधृगजः |
सतां धाता स्वच्छो निगमगणगीतो व्रजपतिः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः |८|
इति हरिरखिलात्मा ऽऽ राधितः शङ्करेण
श्रुतिविशदगुणौऽसौ मातृमोक्षार्थमाद्यः |
यतिवरनिकटे श्रीयुक्त आविर्बभूव
स्वगुणवृत उदारः शङ्ख चक्राऽब्ज हस्तः | ९ |

| इति श्रीमच्छंकराचार्यकृतं कृष्णाष्टकं सम्पूर्णम्|

अभ्यास प्रश्न – 6

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 – असूनायम्यादौ यम .... मुख्यैः सुकरणै|

2- शरण्यो ....मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः|

3-नियन्तारं ध्येयं .... मोक्षदमसौ |

4-शरण्यो लोकेशो मम...... कृष्णोऽक्षिविषयः |

5-विना यस्य ......जनिमृतिभयं याति जनता |

9.3.7 श्रीमधुराष्टकम् का हिन्दी अनुवाद |

(हे कृष्ण) आपके होंठ मधुर है, आपका मुख मधुर है,

आपकी आँखे मधुर है, आपकी मुस्कान मधुर है,
आपका ह्लदय मधुर है, आपकी चाल मधुर है,
मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण , आपका सब कुछ मधुर है | १ |
आपका बोलना मधुर है ,आपके चरित्र मधुर है,
आपके वस्त्र मधुर हैं , आपका तिरछा खड़ा होना मधुर है,
आपका चलना मधुर है, आपका घूमना मधुर है,
मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण, आपका सब कुछ मधुर है | २ |
आपकी बांसुरी मधुर है, आपके लगाये हुए पुष्प मधुर हैं ,
आपके हाँथ मधुर हैं , आपके चरण मधुर हैं ,
आपका नृत्य मधुर हैं , आपकी मित्रता मधुर है,
मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण, आपका सब कुछ मधुर है | ३ |
आपके गीत मधुर हैं ,आपका पीना मधुर है,
आपका खाना मधुर है, आपका सोना मधुर है,
आपका रूप मधुर है, आपका टीका मधुर है
मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण, आपका सब कुछ मधुर है | ४ |
आपके कार्य मधुर हैं , आपका तैरना मधुर है,
आपका चोरी करना मधुर है, आपका प्यार करना मधुर है,
आपके शब्द मधुर हैं , आपका शांत रहना मधुर है,
मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण, आपका सब कुछ मधुर है | ५ |

आपकी घुंघुची मधुर है, आपकी माला मधुर है,
आपकी यमुना मधुर है, उसकी लहरे मधुर हैं ,
उसका पानी मधुर है, उसके कमल मधुर है,
मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण, आपका सब कुछ मधुर है | ६ |
आपकी गोपियाँ मधुर हैं , आपकी लीला मधुर है,
आप उनके साथ मधुर है, आप उनके बिना मधुर है,
आपका देखना मधुर है, आपकी शिष्टता मधुर है,
मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण, आपका सब कुछ मधुर है | ७ |
आपके गोप मधुर है, आपकी गायें मधुर हैं ,
आपकी छड़ी मधुर है , आपकी सृष्टि मधुर है,
आपका विनाश करना मधुर है, आपका वर देना मधुर है,
मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण, आपका सब कुछ मधुर है | ८ |

अभ्यास प्रश्न – 7

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 – आपके ....मधुर हैं , आपका तैरना मधुर है,
2- आपके शब्द मधुर हैं , आपका ....रहना मधुर है,
3- आपकी .....मधुर है, उसकी लहरे मधुर हैं ,
4-आपकी गोपियाँ मधुर हैं , आपकी ......मधुर है,
5-आपके ....मधुर है, आपकी गायें मधुर हैं ,

9.4 सारांश

श्री मधुराष्टक स्तोत्र श्री कृष्ण भगवान को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है | भगवान कृष्ण को गोविन्दाष्टक भी पसंद है इसलिए यहाँ मधुराष्टक के साथ- साथ गोविन्दाष्टक भी दिया गया है | इसके अलावा भगवान श्री कृष्ण को कृष्णाष्टक भी बहुत पसंद है इसलिए इस प्रकरण में गोविन्दाष्टक के साथ कृष्णाष्टक एक, कृष्णाष्टक 2, एवं

कृष्णाष्टक 3 के साथ साथ मधुराष्टक का हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है | भारतीय संस्कृति में श्रीकृष्ण भगवान को विविध स्तोत्रों से प्रसन्न किया जाता है|

9.5 पारिभाषिक शब्दावली

1 - अधरं- ओठ |

2 - वदनं – मुख |

3 – नयनं- आखें |

4 - हसितं – हसना |

5 - गमनं – जाना |

6 – मधुराधिपतेरखिलं- सम्पूर्ण मधुर के अधिपति |

7 - वचनं - बोलना |

8 – चरितं- चरित |

9 - वसनं - वस्त्र |

10 - नृत्यं – नाचना |

11 - गीतं – गायन |

12 - पीतं – पीना |

13 –रूपं- रूप ,

14 - तिलकं – टीका |

15 - करणं – कार्य |

16 तरणं- तारना |

17 - हरणं – हरना |

18 - श्रुतिसररससारं – श्रुतिओं के रस के सार स्वरूप श्री कृष्ण जी है |

19 - भवजलधिपारं – भव समुद्र को पार करने वाले |

20 - रमाग्रीवाहारं – भगवती लक्ष्मी के गले के हार |

21 - विहगपतियानं- गरुण जी कि सवारी करने वाले |

22 - मनोज्ञं – मन को जानने वाले |

23 – श्रवणपुटपेयं- श्रवण रंध्रों से पीने योग्य |

24 - त्रिभुवनविधेयं – त्रिभुवन का निर्माण करने वाले |

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास 1 – सत्य , 2 - सत्य , 3 - असत्य , 4 - सत्य , 5 - सत्य |

अभ्यास 2 – 1 गमनं, 2- भ्रमितं, 3- भुक्तं, 4- रमणं, 5- यमुना |

अभ्यास 3— 1- सपदि, 2- गोपालं, 3- कालं, 4- पद्मेशं, 5- देवेशं |

अभ्यास 4- – 1 - नन्दनं, 2- नमामि, 3-मनोज्ञ, 4- दृगञ्जनं, 5- यः|

अभ्यास 5 - 1- गोप, 2- गञ्जनं, 3-गजेन्द्र, 4- सुदाम, 5 –यदुप्रजा|

अभ्यास 6 – 1- नियम, 2- लोकेशो, 3- मुनिसुरनृणां, 4- भवतु, 5- ज्ञानं|

अभ्यास 7 -1- कार्य, 2- शांत,3- यमुना,4- लीला, 5- गोप|

9.6 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-स्तोत्ररत्नावली गीताप्रेस गोरखपुर, गोविन्दभवन कार्यालय कोलकाता का संस्थान , गोरखपुर |

9.8 सहायक पाठ्य सामग्री

1-सहस्त्रनामस्तोत्रसंग्रह – गीताप्रेस ,गोरखपुर| २७३००५|

2 -पूजन –विधानम् , प्रो. डॉ. रामराज उपाध्याय , प्रकाशक एवं वितरक – अभिषेक प्रकाशन 5 8 1 8 \ 7 ,चंद्रावल प्रथम तल , जवाहर नगर ,दिल्ली -11007 |

9.8 निबंधात्मक प्रश्न

1– श्री मधुराष्टक का महत्त्व लिखिए |

2-   श्री गोविन्दाष्टक का परिचय दीजिये |

3-–श्री कृष्णाष्टक एक का परिचय दिजीए |

4 – श्री कृष्णाष्टक दो का मूल पाठ लिखिए |

5 – श्री मधुराष्टक का हिन्दी अनुवाद लिखिए |

इकाई – 10 रामरक्षास्तोत्र

इकाई की संरचना

10 .1 प्रस्तावना

10 .2 उद्देश्य

10 .3 श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्

10.3.1. श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम् का परिचय |

10..3.2. श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम् का मूल पाठ |

10 .3.3 . श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम् का मूल पाठ |

10.3.4 श्रीरामस्त्रोत्रम् का मूल पाठ |

10.3.5 श्रीरामस्त्रोत्रम् 2 का मूल पाठ |

10. 4 सारांश

10.5 पारिभाषिक शब्दावली

10.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

10.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

10.8 सहायक पाठ्य सामग्री

10.9 निबंधात्मक प्रश्न

10 .1 प्रस्तावना

इस पाठ में 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' के बारे में ज्ञान कराया जायेगा| इसके ज्ञान से आप 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' के महत्त्व को अच्छी तरह से समझ सकेगें| इस स्तोत्र का ज्ञान न केवल कर्मकाण्ड से सम्बंधित जनों के लिए अपितु सभी भगवान श्री राम के प्रेमियों के लिए अनिवार्य बतलाया गया है| आप जानते हैं कि कर्मकाण्ड भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है| इसमें विभिन्न सूक्तों, मन्त्रों, स्तोत्रों आदि का प्रयोग होता रहता है | इस स्तोत्र का प्रयोग अपनी रक्षा के लिए किया जाता है| इससे भगवान श्री राम प्रसन्न होते हैं| हालाकि भगवान श्री राम की कृपा प्राप्ति के लिए अन्य बहुत सारे स्तोत्र हैं परन्तु सभी स्तोत्रों में उत्कृष्ट है - 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्'| भारतीय शास्त्रों की यह मान्यता है कि मानव जीवन का सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी देवता से सम्बंधित है| उन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए एवं प्राच्य ज्ञान को अर्वाचीन तरीके से विकसित करने के लिए किसी न किसी स्तोत्र का पाठ व्यक्ति को करना चाहिए जिसमें एक है - 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्'|

10 .2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप समझ सकेगें कि –

1 – मानव जीवन में 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' का क्या महत्त्व है ?

2 – 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' को भगवान श्री राम पूजन में क्या स्थान प्राप्त है ?

3- 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' में भगवान राम की प्रसन्नता के लिए क्या लिखा गया है?

4- 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' में भगवान राम की कृपा प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए?

5-'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' से अपनी रक्षा कैसे करनी चाहिए ?

10 .3 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्'

'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' भगवान राम को प्रसन्न करने का एक प्रमुख स्तोत्र है | भारतीय संस्कृति में भगवान राम को विविध नामों से जाना जाता है | गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री राम चरित मानस में लिखा है –'राम ब्रह्म परमारथ रूपा ' यहाँ भगवान राम को ही साक्षात् ब्रह्म बतलाया गया है | भगवान राम परमार्थ के स्वरूप है | भगवान राम को प्रसन्न करने के लिए उनके विविध स्तोत्रों का पाठ किया जाता है | उसी में एक है- 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' |

10 .3.1. 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' का परिचय

'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' बुध कौशिक ऋषि के द्वारा वर्णित है | इसमें भगवान राम की आराधना की गयी है | इसमें कुल अड़तीस श्लोक पाए जाते हैं | यह स्तोत्र समस्त सिद्धिओं को प्रदान करने वाला है | इसके अलावा विश्वामित्र ऋषि के द्वारा पद्म पुराणोक्त 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' भी प्राप्त होता है जिसके पाठ करने वाले को पुण्य लाभ होता है | यह स्तोत्र ग्यारह श्लोकों में वर्णित है | जो व्यक्ति पवित्र होकर जितेन्द्रिय होकर 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' का नियमित रूप से पाठ करता है, उसकी रक्षा भगवान राम करते हैं | इस स्तोत्र से पुष्टि का वर्धन होता है | सायं ,प्रातः, मध्यान्ह, मध्यरात्रि में पाठ करने वाला महान बलशाली होता है | आस्तिक श्रद्धावान व्यक्तियों पर भगवान राम की शीघ्र कृपा होती है |

अभ्यास प्रश्न – 1

निम्नलिखित पश्नों में से सत्य या असत्य का चयन करिए –

1 – 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' बुध कौशिक ऋषि के द्वारा वर्णित है |

2 - इसमें कुल अड़तीस श्लोक पाए जाते हैं |

3 - यह स्तोत्र समस्त सिद्धिओं को प्रदान करने वाला नही है |

4 -इसके अलावा विश्वामित्र ऋषि के द्वारा पद्म पुराणोक्त 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' भी प्राप्त होता है

5 – पद्म पुराणोक्त 'श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम्' ग्यारह श्लोकों में वर्णित है |

10 .3.2. श्रीरामरक्षास्त्रोत्रम् का मूल पाठ

|| रामरक्षास्तोत्रम् || (१)

विनयोगः-अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीताराम चन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्द: सीता शक्तिः श्रीमद्धनुमान् कीलकम् श्रीसीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे पाठे विनियोगः |

|| ध्यानम् ||

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं

पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् |

वामाङ्कारूढसीता मुखकमलमिलल्लोचनं निरदाभं

नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ||

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् |

एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् | १ |

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् |

जानकीं लक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् | २ |

सासितूणधनुर्बाणपाणीं नक्तञ्चरान्तकम् |

स्वलीलया जगत्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् | ३ |

रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् |

शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्माज: | ४ |

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती |

घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रीवत्सलः | ५ |

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः |

स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः | ६ |

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् |

मध्यं पातु खरध्वंशी नाभिं जाम्बवदाश्रय: | ७ |

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभु: |

ऊरू रघूत्तमः पातु रक्ष: कुलविनाशकृत् | ८ |

जानुनी सेतुकृत् पातु जङ्घे दशमुखान्तकः |

पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपु: | ९ |

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृतिं पठेत् |

स चिरायु: सुखी पुत्रो विजयी विनयी भवेत् | १० |

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिण: |

न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः | ११ |

रामेति रामभद्रेती रामचन्द्रेती वा स्मरन् |

नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति | १२ |

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम् |

यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थः सर्वसिद्धयः | १३ |

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् |

अव्याहताज्ञ: सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् | १४ |

आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामीमां हरः |

तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः | १५ |

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् |

अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः | १६ |

तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ |

पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ | १७ |

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ |

पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ | १८ |

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् |

रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ | १९ |

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशा वक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ |

रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् | २० |

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा |

गच्छन् मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः | २१ |

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली |

काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघुत्तमः | २२ |

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः |

जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः | २३ |

इत्येतानि जपन्नित्यं मदभक्तः श्रद्धयाऽन्वितः |

अश्वमेधायुतं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः | २४ |

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् |

स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः | २५ |

रामंलक्ष्मणपुर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं

काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् |

राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमुर्तिं

वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् | २६ |

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे |

रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः | २७ |

श्रीरामरामरघुनन्दनरामराम-

श्रीरामरामभरताग्रजरामराम |

श्रीरामरामरणकर्कशरामराम

श्रीरामरामशरणं भव रामराम | २८ |

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि

श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि |

श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि

श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये | २९ |

माता रामोमत्पिता रामचन्द्रः

स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः |

सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्ना

ऽन्यं जाने नैव जाने न जाने | ३० |

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा |

पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् | ३१ |

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् |

कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये | ३२ |

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् |

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये | ३३ |

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् |

आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् | ३४ |

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् |

लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् | ३५ |

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् |

तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् | ३६ |

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रामेशं भजे

रामेणाऽभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः |

रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं

रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राममामुद्धर | ३७ |

रामरामेति रामेति रमे रामे मनोरमे |

सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने | ३८ |

(इति बुधकौशिकविरचितं रामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्)

अभ्यास प्रश्न – 2

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 – आरामः कल्पवृक्षाणां ....सकलापदाम् |

2- तरुणौ रूपसम्पन्नौ ....महाबलौ |

3-दशरथस्यैतौ ....रामलक्ष्मणौ |

4-रक्षणाय...... रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् |

5-रामो.......... दाशरथिः लक्ष्मणानुचरो बली |

10.3.3 . श्रीरामरक्षास्तोत्रम् का मूल पाठ |

रामरक्षास्तोत्रम् (२)

विनियोगः-ॐ रामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहर्षिविश्वामित्र ऋषिः श्रीरामचन्द्रोदेवता अनुष्टुप् छन्दः श्रीविष्णुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः |

अतसीपुष्पसङ्काशं पीतवाससमच्युतम् |

ध्यात्वा वै पुण्डरीकाक्षं श्रीरामं विष्णुमव्ययम् | १ |

पातु वो हृदयं रामः श्रीकण्ठ : कण्ठमेव च |

नाभिं पातु मखत्राता कटिं मे विश्वरक्षकः | २ |

करौ पातु दाशरथिः पादौ मे विश्वरूपधृक् |

चक्षुषी पातु वै देवः सीतापतिरनुत्तमः | ३ |

शिखां मे पातु विश्वात्मा कर्णौ मे पातु कामदः |

पार्श्वयोस्तु सुरत्राता कालकोटीदुरासदः | ४ |

अनन्तः सर्वदा पातु शरीरं विश्वनायकः |

जिह्वा मे पातु पापघ्नो लोकशिक्षाप्रवर्त्तकः | ५ |

राघवः पातु मे दन्तान् केशान् रक्षतु केशवः |

सक्थिनी पातु मे दत्तविजयो नाम विश्वसृक् | ६ |

एतां रामबलोपेतां रक्षां यो वै पुमान् पठेत् |

स चिरायु: सुखी विद्वान् लभते दिव्यसम्पदम् | ७ |

रक्षां करोति भूतेभ्यः सदा रक्षतु वैष्णवी |

रामेति रामभद्रेती रामचन्द्रेति यः स्मरेत् | ८ |

विमुक्तः स नरः पापान् मुक्तिं प्राप्नोति शाश्वतीम् |

वसिष्ठेन इदं प्रोक्तं गुरवे विष्णुरुपिणे | ९ |

ततो मे ब्रह्मण: प्राप्तं मयोक्तं नारदं प्रति |

नारदेन तु भूर्लोके प्रापितं सूजनेष्विह | १० |

सुप्वा वाऽथ गृहे वाऽपि मार्गे गच्छति एव वा |

ये पठन्ति नरश्रेष्ठास्ते ज्ञेयाः पुण्यभागिनः | ११ |

| इति श्रीपद्मपुराणोक्तं रामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम् |

अभ्यास प्रश्न – 3

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 – शिखां मे पातु विश्वात्मा कर्णौ मे पातु कामदः |

पार्श्वयोस्तु .... कालकोटीदुरासदः |

2- अनन्तः सर्वदा पातु .... विश्वनायकः |

जिह्वा मे पातु पापघ्नो लोकशिक्षाप्रवर्त्तकः |

5 राघवः पातु मे दन्तान् केशान् रक्षतु केशवः |

सक्थिनी .... मे दत्तविजयो नाम विश्वसृक् |

4 - एतां रामबलोपेतां रक्षां यो वै पुमान् पठेत् |

स चिरायु: सुखी विद्वान् लभते ....|

5 -सुप्वा वाऽथ गृहे वाऽपि मार्गे गच्छति एव वा |

ये पठन्ति ------------ज्ञेयाः पुण्यभागिनः | ११ |

10.3.4 श्रीरामस्त्रोत्रम् का मूल पाठ |

जटायुरुवाच

अगणितगुणमप्रमेयमाद्यं सकलजगत्- स्थितिसंयमादिहेतुम् |

उपरमपरमं परात्मभूतं सततमहं प्रणतोऽस्मि रामचंद्रम् ||1 ||

निरवधिसुखमिन्दिराकटाक्षम् क्षपितसुरेन्द्रचतुर्मुखादिदुःखम् |

नरवरमनिशं नतो ऽ स्मि रामं वरदमहं वर- चाप -बाणहस्तम् |2|

त्रिभुवनकमनीयरूपमीड्यं रविशतभासुरमीहितप्रदानम् |

शरणदमनिशं सुरागमूले कृत निलयं रघुनन्दनं प्रपद्ये | 3 |

भवविपिनदवाग्निनामधेयं भवमुखदैवतदैवतं दयालुम् |

दनुजपतिसहस्त्रकोटिनाशं रवितनयासदृशं हरिं प्रपद्ये | 4|

अविरतभवभावनातिदूरं भवविमुखैर्मुनिभिः सदैव दृश्यम् |

भवजलधिसुतारणाङ्घ्रिपोतं शरणमहं रघुनन्दनं प्रपद्ये | 5|

गिरिशगिरिसुतामनोनिवासं गिरिवरधारिणमीहिताभिरामम् |

सुरवरदनुजेन्द्रसेविताङ्घ्रिं सुरवरदं रघुनायकं प्रपद्ये | 6|
परधनपरदारवर्जितानां परगुणभूतिषु पुष्टमानसानाम् |
परहितनिरतात्मनां सुसेव्यं रघुबरमम्बुजलोचनं प्रपद्ये| 8|
हरिकमलजशम्भुरूप- भेदात्वमिह विभासि गुणत्रयानुवृत्तः |
रविरिव जलपूरितोदपात्रेष्वमरपति – स्तुति- पात्रमीशमीडे |9|
रतिपतिशतकोटिसुन्दराङ्गं शतपथगोचरभावनाविदूरम् |
यतिपतिहृदये सदा विभातं रघुपतिमार्तिहरं प्रभुं प्रपद्ये |10|
इत्येवं स्तुवतस्तस्य प्रसन्नो ऽ भूद्रघूत्तमः |
उवाच गच्छ भद्रं ते मम विष्णोः परं पदम् |1 1 |

शृणोति य इदं स्तोत्रं लिखेद् वा नियतः पठेत् |

स याति मम सारूप्यं मरणमत्स्मृतिं लभेद् |12 |

इति राघवभाषितं तदा श्रुतवान् हर्षसमाकुलो द्विजः |

रघुनन्दनसाम्यमास्थितः प्रययौ ब्रह्मसुपूजितं पदम् |१ ३|

इति श्रीमद् अध्यात्मरामायणे ऽ रण्यकाण्डेऽष्टमे सर्गे जटायुकृतं रामस्तोत्रं सम्पूर्णम्

अभ्यास प्रश्न – 4

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 – गिरिशगिरिसुतामनोनिवासं ……..धारिणमीहिताभिरामम् |

2- परधनपरदारवर्जितानां परगुणभूतिषु पुष्टमानसानाम् |

3- हरिकमलजशम्भुरूप- भेदात्वमिह ……. गुणत्रयानुवृत्तः |

4- रविरिव जलपूरितोदपात्रेष्वमरपति –……..पात्रमीशमीडे |9|

5- यतिपतिहृदये ……विभातं रघुपतिमार्तिहरं प्रभुं प्रपद्ये |10|

10.3.5 श्रीरामस्त्रोत्रम् 2 का मूल पाठ |

श्रीमहादेव उवाच

नमो ऽ स्तु रामाय सशक्तिकाय नीलोत्पलश्यामल- कोमलाय|

किरीटहाराङ्गदभूषणाय सिंहासनस्थाय महाप्रभाय |१|

त्वमादिमध्यांतविहीन एकः सृजस्यवस्यत्सि च लोकजातम् |

स्वमायया तेन न लिप्यसे त्वं यत्स्वे सुखेऽजस्त्ररतोऽनवद्यः |२|

लीलां विधत्से गुणसंवृतस्त्वं प्रपन्नभक्तानुविधानहेतोः |

नानावतारैः सुरमानुषाद्यैः प्रतीयसे ज्ञानिभिरेवनित्यम् |३|

स्वांशेन लोकं सकलं विधाय तं विभर्षि च त्वं त्वदधः फणीश्वरः |

उपर्यधो भान्वनि लोडपौषधि- प्रवर्ष –रूपोऽवसि नैकधाजगत्| ४|

त्वमिहदेहभृतां शिखिरूपः पचसिभक्तमशेषमजस्त्रम् |

पवनपंचकरूपसहायो जगदखण्डमनेन बिभर्षि |५|

चन्द्रसूर्यशिखिमध्यगतं यत्तेज ईश चिदशेषतनूनाम् |

प्राभवत्तनुभृतामिहधैर्यं शौर्यमायुरखिलं तव सत्वम् | ६|

त्वं विरंचि शिवविष्णुविभेदात् काल- कर्मशशिसूर्यविभागात् |

वादिनां पृथगिवेश विभासि ब्रह्म निश्चितमनन्यदिहैकम् |७|

कल्कादिरूपेण यथा त्वमेकः श्रुतौ पुराणेषु च लोकसिद्धः |

तथैव सर्वं सदसद्विभागः त्वमेवनान्यद् भवतो विभाति | ८|

यद्यत्समुत्पन्नमनन्तसृष्टावुत्पत्स्यते यद्यभवच्च यच्च |

न दृश्यते स्थावरजन्गमादौ त्वया विनाऽ तः परतः परस्त्वम् |९ |

तत्त्वं न जानन्ति परात्मनस्ते जनाः समस्ताः तव माययातः|

त्वद्भक्तसेवामलमानसानां विभाति तत्त्वं परमेकमेशम् |१०|

ब्रह्मादयस्ते न विदुस्वरूपम् चिदात्मसत्वं बहिरर्थभावाः |

ततो बुधस्त्वामिदमेव रूपम् भक्त्या भजन्मुक्तिमुपेत्य दुखः |११|

अहं भवन्नामगुणैः कृतार्थो वसामि काश्यामनिशं भवान्याः |

मुमूर्षुमाणस्य विमुक्तये ऽहं दिशामि मन्त्रं ऽतव रामनाम |१२|

इमं स्तवं नित्यमनन्यभक्त्या शृण्वन्ति गायन्ति लिखन्ति ये वै |

ते सर्वसौख्यं परमं च लब्ध्वा भवत्पदं यान्तु भवत्प्रसादात् || १३|

|| इति श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकाण्डे पञ्चदशसर्गे श्रीमहादेवकृतं रामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ||

अभ्यास प्रश्न – 5

निम्नलिखित पश्नों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1 – लीलां ....गुणसंवृतस्त्वं प्रपन्नभक्तानुविधानहेतोः |

२- स्वांशेन लोकं सकलं ....तं विभर्षि च त्वं त्वदधः फणीश्वरः |

३- पवनपंचकरूपसहायो जगदखण्डमनेन ....|

४- त्वं ....शिवविष्णुविभेदात् काल- कर्मशशिसूर्यविभागात् |

५- .... दृश्यते स्थावरजन्गमादौ त्वया विनाऽ तः परतः परस्त्वम् |

10.4 सारांश

श्रीरामरक्षास्तोत्र भगवान श्रीराम को प्रसन्न करने का अत्यन्त प्रमुख स्तोत्र है | भारतीय संस्कृति में भगवान श्रीराम को विविध नामों से जाना जाता है | श्रीराम रक्षा स्तोत्र का वर्णन बुध कौशिक ऋषि से प्राप्त होता है | इस स्तोत्र के पाठ से पाठक की सर्व विध रक्षा होती है | भगवान श्रीराम के कल्याणकारी स्वरूप में चित्त को एकाग्र करके इस महान फलदायी स्तोत्र का कम से कम ग्यारह बार और यदि न हो सके तो सात बार नियमित रूप से प्रतिदिन पाठ करना चाहिए | इससे सिद्धियाँ भी प्राप्त होती है | इसमें राम स्तोत्र भी दिया गया है |

10.5 पारिभाषिक शब्दावली

१ - रघुनाथस्य- रघुनाथ के

२ - महापातकनाशनम् – महापातक का नाशक

३ -ध्यात्वा – ध्यान करके |

४ - नीलोत्पलश्यामं रामं – नील कमल दल के सामान सावलें श्री राम जी |

५ - जानकीं लक्ष्मणोपेतं – माता जानकी एवं लक्षमण के सहित |

६ - धनुर्बाणपाणीं – हाथ में धनुष बाण धारण करने वाले |

७ – स्वलीलया- अपनी लीला से |

८ - रामरक्षां पठेत् – रामरक्षा स्तोत्र पढना चाहिए |

९ - शिरो मे राघवः पातु – मेरे शिर की रक्षा राघव करें |

१० - दृशौ – आखें |

११ – मखत्राता- यज्ञ के रक्षक |

१२ -विद्यानिधिः – विद्या के खजाना |

१३ -दिव्यायुधः – दिव्य आयुध |

१४ –सीतापतिः- सीता जी के पति |

१५ – खरध्वंशी- खर का विनाश करने वाले प्रभु श्री राम |

१६ – सुग्रीवेशः- सुग्रीव जी के स्वामी |

१७- रक्ष: कुलविनाशकृत् – राक्षस कुल के विनाश करने वाले |

१८ दशमुखान्तकः – दशमुख का अंत करने वाले |

१९ वपु:- शरीर |

२० रामबलोपेतां – श्रीरामबल के समेत |

२१ चिरायु:- दीर्घ आयु |

२२ व्योमचारिणश्छद्मचारिण:- आकाश में चलने वाले एवं छद्म आचरण वाले |

२३ न द्रष्टुमपि- न देखते हुए भी |

२४ स्मरन् – स्मरण करते हुए |

२५ लिप्यते – लिप्त होता है |

२६ रामनाम्नाऽभिरक्षितम् – राम नाम से अभिरक्षित |

10.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास 1 –1 –सत्य , 2 - सत्य , 3 - असत्य , 4 - सत्य , 5 - सत्य |

अभ्यास 2–1- विरामः, 2- सुकुमारौ, 3- भ्रातरौ, 4- मम, 5- शूरो |

अभ्यास 3 - 1-सुरत्राता, 2- शरीरं, 3- पातु, 4- दिव्यसम्पदम्, 5- नरश्रेष्ठास्ते|

अभ्यास 4 -1-गिरिवर, 2- पुष्टमानसानाम्, 3- विभासि,4- स्तुति-, 5- सदा|

अभ्यास 5 – 1 -विधत्से, २- विधाय,३- बिभर्षि,४- विरंचि,५- न

10.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-पूजन –विधानम् , डॉ. रामराज उपाध्याय , प्रकाशक एवं वितरक – अभिषेक प्रकाशन 5 8 1 8 \ 7 ,चंद्रावल प्रथम तल , जवाहर नगर ,दिल्ली -11007 |

10.8 सहायक पाठ्य सामग्री

1-स्तोत्ररत्नावली गीताप्रेस गोरखपुर, गोविन्दभवन कार्यालय कोलकाता का संस्थान

10.9 निबंधात्मक प्रश्न

1-श्रीरामरक्षास्तोत्र १ का महत्त्व लिखिए |

२-श्रीरामरक्षास्तोत्र २ का परिचय दीजिये |

3- श्रीरामरक्षास्तोत्र लिखिए |

4-श्रीराम स्तोत्र का मूल पाठ लिखिए |

5- श्रीराम जी के बारे में लिखिए |

खण्ड -3
व्रत एवं उद्यापन

इकाई -11 एकादशी व्रत एवं उद्यापन

इकाई की संरचना

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 एकादशी व्रत

11.4 एकादशी व्रत उद्यापन

11.5 सारांश

11.6 पारिभाषिक शब्दावली

11.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.8 सहायक पाठ्यसामग्री

11.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

11.9 निबन्धात्मक प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एकादशी व्रत एवं उद्यापन शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने विविध स्तोत्रादि का अध्ययन कर लिया है। अब आप लोकप्रचलित एकादशी व्रत तथा उसके उद्यापन की विधि को जानेंगे।

एकादशी व्रत का सम्बन्ध भगवान विष्णु से है। प्राय: नारायण के उपासक अथवा वैष्णव एकादशी का व्रत अवश्य ही धारण करते है। गृहस्थ जीवन में भी इसका अत्यधिक प्रचलन दिखलाई पड़ता है। धार्मिक दृष्टि से इस व्रत का माहात्म्य बहुत बड़ा है।

आइए हम सब एकादशी व्रत तथा उसके उद्यापन का अध्ययन करते हैं।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –

- एकादशी व्रत किसे कहते हैं।
- एकादशी व्रत धारण की विधि क्या है।
- एकादशी व्रत का माहात्म्य क्या है।
- लोक में इसका क्या महत्व है।
- एकादशी व्रतोद्यापन विधि क्या है।

11.3 एकादशी व्रत

भारतीय वैदिक सनातन परम्परा में देवर्षि, ब्रह्मर्षि, ऋषि, मुनि, सिद्ध एवं परमाचार्यों द्वारा आदिष्ट प्रसिद्धिप्राप्त विषय के संकल्पविशेष को 'व्रत' कहा जाता हैं। जो ऋषि नहीं है वह व्रत विधान करने का अधिकारी नहीं है। वही व्रत फल देता है जो ऋषिप्रोक्त होता है। यह कामनापूर्ति कारक होता है। यह पूजन, उपवास और पारण से संपुष्ट तीन अंगों वाला होता है। व्रतों के माध्यम से जीवन में अलभ्य का लाभ एवं असाध्य की प्राप्ति होती है –

अभियुक्तप्रसिद्धिविषयो य: संकल्पविशेष: स एव व्रतम्।
तत्पूजनोपवासपारणारूपम्। उपवास एव व्रतम्।।

व्रत में अनिवार्य -

एक साथ दो रात्रि से अधिक उपवास नहीं करना चाहिये - द्विरात्राधिकोपासो न करणीय:। व्रत के दिन दातुन और ब्रश से मुख नहीं धोना चाहिए। पत्ता या बारह कुल्ला से दन्तधावन करना चाहिए। प्रत्येक व्रत के प्रमुख देवता होते हैं। अत: व्रत में संकल्पपूर्वक प्रधानदेवता का मंत्र-जप-ध्यान-कथा पूजन-कीर्तन-चरित्रश्रवण आदि करना चाहिए। क्षमा-सत्य-दया-दान-शौच-इन्द्रियनिग्रह-देवपूजा-हवन-संतोष- अचौर्य ये दस तत्व व्रत के लिए अनिवार्य होते हैं –

क्षमा- सत्यं-दया-दानं शौचमिन्द्रियनिग्रह:।
देवपूजा च हवनं सन्तोष: स्तेयवर्जनम्।।
(धर्मसिन्धु, प्रथमपरिच्छेद, व्रतपरिभाषा।)

दोनों पक्षों में मिलाकर कुला एकादशी व्रतों की संख्या 24 तथा अधिक मास के दोनों पक्षों की एक ही संख्या होने के कारण कुल एकादशीयों की संख्या 25 होती है। इस एकादशी व्रत में चावल त्याज्य होता है। भगवान विष्णु की पूजा इस व्रत में मुख्यत: की जाती है। जहाँ तक एकादशी व्रत धारण का प्रश्न है तो मुख्यतया इसमें दो प्रकार के सम्प्रदायों का नाम आता है – वैष्णव और स्मार्त। वैष्णव एवं स्मार्त सम्प्रदायों के अनुसार एकादशी व्रत की तिथि का निर्णय दो प्रकार से किया जाता है। प्रथम निर्णय के अनुसार जहां एकादशी या द्वादशी का क्षय या वृद्धि न हो। यह निर्णय का सामान्य प्रकार है। इस सामान्य नियम को इन तीन भागों में विभाजित किया हैं –

1 अरुणोदय में दशमीविद्ध एकादशी नियम।
2 सूर्योदय में दशमीविद्धा एकादशी नियम ।
3. शुद्धा (अरुणोदय और सूर्योदय-दोनो कालो में दशमी से अविद्ध) एकादशी नियम।

अरुणोदय में दशमी विद्धा एकादशी नियम यदि दशमी अरुणोदयकाल को स्पर्श कर रही हो (यानी दशमी का समाप्तिकाल 56 घडी से अधिक हो) तो दशमी द्वारा अरुणोदयवेध माना जाता है। इस स्थिति में वैष्णव दूसरे दिन त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन व्रत करते है तथा स्मार्त उसी दिन द्वादशीयुता एकादशी में व्रत करते हैं, अर्थात दशमी द्वारा अरुणोदयवेध स्मात्तों को त्याज्य नहीं है, वैष्णवों को त्याज्य है। जैसा की गरुडपुराण में कहा गया है -

दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः ।
नैवोपोष्यं वैष्णवेन तद्दिनैकादशीव्रतम् ।।

सूर्योदय में दशमी विद्धा एकादशी नियम यदि दशमी सूर्योदयानन्तर कुछ क्षणों के लिए भी विद्यमान हो तो दशमी द्वारा सूर्योदयवेध माना जाता है। इस स्थिति में स्मार्त एव वैष्णव दोनो उस दिन व्रत नहीं करते, अपितु दूसरे दिन द्वादशीयुता एकादशी में व्रत करने का विधान है, अर्थात् दशमी द्वारा सूर्योदयवेध दोनो सम्प्रदायों को अग्राह्य है।

दोनों का वेध एकादशी शुद्ध शुद्ध एकादशी नियम यदि दशमी द्वारा अरुणोदय और सूर्योदय न हो (अर्थात् दशमी का समाप्तिकाल 56 घड़ी से अधिक न हो) तो मानी जाती है। शुद्ध एकादशी की स्थिति में स्मार्तत एवं वैष्णव दोनों उसी दिन (द्वादशीयुता एकादशी वाले दिन ही) व्रत करते है।

दूसरा नियम एक विशेष नियम है जिसका प्रयोग उस स्थिति में किया जाता है जब एकादशी अथवा द्वादशी की क्षय अथवा वृद्धि हो। इस विशेष नियम को इन छः भागों में बाटा गया है -

1 एकादशीवृद्धि द्वादशीक्षय नियम
2 द्वादशीवृद्धि नियम
3 एकादशीवृद्धि नियम।
4 द्वादशीक्षय नियम
5 एकादशीक्षय द्वादशीवृद्धि नियम ।
6. एकादशीक्षय नियम ।

एकादशीवृद्धि द्वादशीक्षय

एकादशी की वृद्धि होने के साथ ही द्वादशी का क्षय भी हो तो स्मात्तों को एकादशी द्वादशी तथा त्रयोदशी इन तिथियों से का क्षय भी हो तो स्मात्तो को एकादशी द्वादशी तथा त्रयोदशी इन तिथियों से युक्त दिन में व्रत नहीं करना चाहिए। अपितु षष्टि घट्यात्मक एकादशी के दिन व्रत करना चाहिए। परन्तु वैष्णवों को एकादशी, द्वादशी तथा त्रयोदशी तिथियों से युक्त दिन में ही व्रत करना चाहिए। यह नियम दशमी द्वारा अरुणोदय के वेध और अवेध दोनों स्थितियों में प्रभावी होता है।
कूर्मपुराण के अनुसार एकादशी द्वादशी तथा त्रयोदशी तिथियों से मिश्रित दिन मे पुत्र-पौत्रों वाले गृहस्थी (स्मात्त) को व्रत नहीं करना चाहिए

एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी। उपवासं न कुर्वीत पुत्र-पौत्रसमन्वितः ।।

मासों के अनुसार एकादशी व्रत का नाम इस प्रकार है –

चैत्र	शुक्लपक्ष कामदा एकादशी	कृष्णपक्ष पापमोचिनी एकादशी

वैशाख	शुक्लपक्ष मोहिनी एकादशी	कृष्णपक्ष वरूथनी एकादशी
ज्येष्ठ	शुक्लपक्ष निर्जला एकादशी	कृष्णपक्ष अपरा एकादशी
आषाढ	शुक्लपक्ष देवशयनी एकादशी	कृष्णपक्ष योगिनी एकादशी
श्रावण	शुक्लपक्ष पवित्रा एकादशी	कृष्णपक्ष कामदा एकादशी
भाद्रपद	शुक्लपक्ष पद्मा एकादशी	कृष्णपक्ष अजा एकादशी
आश्विन	शुक्लपक्ष कुशा ग्रहण एकादशी	कृष्णपक्ष इन्दिरा एकादशी
कार्तिक	शुक्लपक्ष देवप्रबोधिनी एकादशी	कृष्णपक्ष रमा एकादशी
मार्गशीर्ष	शुक्लपक्ष मोक्षदा एकादशी	कृष्णपक्ष उत्पन्ना एकादशी
पौष	शुक्लपक्ष पुत्रदा एकादशी	कृष्णपक्ष सफला एकादशी
माघ	शुक्लपक्ष जया एकादशी	कृष्णपक्ष षट्तिला एकादशी
फाल्गुन	शुक्लपक्ष आमला एकादशी	कृष्णपक्ष विजया एकादशी

अधिक मास के दोनों (शुक्ल तथा कृष्ण) पक्षों की एकादशियो का नाम पुरुषोत्तमा एकादशी होता है।

11.4 एकादशी व्रत उद्यापन विधि

अब शुक्ल और कृष्णपक्ष की एकादशियों का उद्यापन करने की विधि कहते हैं - देवताओं के प्रबोध समय में उद्यापन करना चाहिए। विशेषकर मार्गशीर्ष के महीने में माघ में या भीम तिथि के दिन उद्यापन करना चाहिये। उसकी विधि निम्नलिखित प्रकार से है-

दशमी के दिन एक समय भोजन करके दातुन करे और इस प्रकार एकादशी तिथि को पवित्र होकर आचार्य का संवरण करे। संकल्प-गणेश जी का स्मरण करके संकल्प कर (मास पक्ष आदि को कहकर) यदि किया हो तो किये हुए यदि न किया हो तो किये जाने वाले, शुक्ल हो तो शुक्ल एवं कृष्ण हो तो कृष्णा एकादशी के व्रत की सांगता सिद्धि के लिए एवम् उसके संपूर्ण फल की प्राप्ति के लिए देश काल के अनुसार यथा ज्ञान शुक्ल एकादशी के व्रत के उद्यापन को में करता हूँ उसका भंग होनेके कारण गणपति पूजन, आचार्य वरण और पुण्याहवाचन भी करूं या कराऊँगा। इस संकल्प के पीछे षोडश उपचारों से गणेश पूजन करा पुण्याहवाचन करावे। यजमान-आप पुण्याह कहें, ब्राह्मण-हो पुण्याह, यजमान- आप स्वस्ति कहें, ब्राह्मण-तुम आयुष्यमान की स्वस्ति हो, यजमान- आप ऋद्धि कहें, ब्राह्मण-कर्म ऋद्धि को प्राप्त हो, यजमान-श्री हो ऐसा आप कहें, ब्राह्मण हो श्री, यजमान-पूरे सौ वर्ष हों, ब्राह्मण-हों पूरे सौ, वर्ष, यजमान-शिव कर्म हो, ब्राह्मण हो शिवकर्म, यजमान-गोत्र की अभिवृद्धि हो, ब्राह्मण-हो गोत्र की अभिवृद्धि, यजमान-प्रजापति प्रसन्न हो, ब्राह्मण-हो प्रजापति

प्रसन्न। इसके बाद उद्यापन कर्म में आचार्य का वरण करना चाहिये, रात को नियमपूर्वक उपवास करके आचार्य के साथ व्रती रहकर शक्ति के अनुसार जगद्गुरु विष्णुभगवान् का आराधन करे। गउओं के गोष्ठ में देवालय में अथवा और किसी पवित्र जगह में या घर में चौरस आठ अंगुल ऊँची बेदी बनावे जो दो वितस्ति चौडी हो और उस पर काले तिल फैला दे। उसमें अष्टदल का सुन्दर कमल बनावे। और उसके बीच बहुत सुन्दर नोरन्ध्र नवीन कुम्भको स्थापित करे। काले तिलों से संयुक्त हो उसे काले वस्त्र से शोभित करे! उसमें दो पीपल के पत्ते रखकर पञ्चरत्न भी रखे और चारों तरफ संकर्षणादि नामों को लिख दे। फिर पवित्र होकर षोडशोपचार से पूजन करे। आग्नेयादि चतुष्कोण में गणमातृका आदि की पूजन करे। गणेश, मातृका, दुर्गा, क्षेत्रपाल आदि को चारों कोणों में सावधान होकर रखे। उसी प्रकार शुक्ल एकादशी के दिन भी वेदी को सफेद तिलों से पूरित करे। और सफेद वस्त्र से वेष्टित कर बडी प्रसन्नता के साथ पूजन करे। चारों ओर केशव आदि नामों से बेदी को अङकित करे। सुवर्ण के बने हुए भगवान् को पञ्चामृत से स्नान कराके स्थापित करे। गन्ध, पुष्प, अक्षत आदिसे संयुक्त और पवित्र जल से पूर्ण कुम्भ पर स्थापित कर, चतुर्भुज भगवान् का लक्ष्मीजीके साथ आवाहन करे। पहले वरण किया हुआ आचार्य, सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओंकी पूजा कर स्थापित किये हुए कलशपर देव सान्निध्यके वास्ते अग्नि उत्तारण की हुई विष्णुमूर्ति को स्थापित करके उसमें विष्णु का आवाहन करे, “ओं नमो” यहाँ से लेकर आवाहनके मन्त्र हैं कि -हे विष्णु भगवान् तेरे लिए नमस्कार है हे देवकीपुत्र ! हे उत्तम परमेश्वर ! तू कृष्ण है, तू अज है, अनादि है, विश्वात्मा है, सब लोकोंका पितामह है, क्षेत्रज्ञ है, त्रिकाल रहनेवाला है, विष्णु है, श्रीमान् पर नारायण है, तुम्ही सत्य पुरुष है। हे जगत्पते ! तुम्ही अतीन्द्रिय है जो आपका सबसे प्रशस्त उत्कृष्ट सूक्ष्म तेज है उससे इस बेदीमें प्रविष्ट होजा। 'ओं भूः' यह व्याहृति है, पुरुषका आवाहन करता हूँ, हे विष्णो ! यहाँ आ, यहाँ बैठ, पूजा ग्रहण कर, अच्छी तरह प्रसन्न होकर वरका देनेवाला हो जा।'ओं भुवः ' पुरुषका आवाहन करता हूँ ‘ओं स्वः' पुरुषका आवाहन करता हूँ (इन तीनों व्याहृतियोंका प्रसंग छान्दोग्योपनिषदमें आया है) प्रत्येक पश्चिम और उत्तर आदि दिशाओंके दलमें चार चार हजार स्त्रियों के सहित रुक्मिणी, जाम्बवती, सत्यभामा और कालिन्दीका दक्षिण और पश्चिमोत्तर दलमें बीच में आवाहन कर; ईशानादि दिशाविभागमें शंख, चक, गदा और पद्मका आवाहन करे। उसके बाहर पूर्वपत्रों में अनु क्रमसे-विमला उत्कर्षिणी, ज्ञाना, क्रिया, योगा,

प्रह्वा, सत्या; ईशाना आदि देवियोंको ग्रहोंके साथ पद्मके मध्यमें स्थापित करे। भगवान् के आगे वेदिका पर गरुडकी मूर्तिभी स्थापित करे। एवं उसका आवाहन कर पूर्व आदि दिशाओं में क्रमसे लोकपालोंको स्थापित

करे। इसके बाद पूर्व आदि दिशाओंके क्रमसे नाममन्त्रोंसे केशबादिकों का आवाहन करेकि, केशवके लिए नमस्कार है, केशवका आवाहन करता हूँ। केशव, नारायण, माधव, गोविन्द, विष्णु, मधुसूदन, त्रिविक्रम्, वामन, श्रीघर, हृषीकेश, पद्मनाभ, दामोदर इनबारहोंको शुक्ल एकादशी के बिन तथा संकर्षण, वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, पुरुषोत्तम, अधोक्षज, नारसिंह, अच्युत, जनार्दन, उपेन्द्र, हरि, श्रीकृष्ण इन्हें कृष्ण एका वशीके दिन इसी प्रकार आवाहन करके "तदस्तु" इससे उन्हें प्रतिष्ठित करके "अतो देवा" इस मंत्रसे विष्णुभगवान् तथा और बुलाये हुए देवताओंको नाम मंत्र से सोलहों उपचारों से पूजे आसन, पाद्य, अध्यंआचमनीय, स्नान, वस्त्र, उपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नंवेद्य, आरती और प्रदक्षिणा दे। दोनोंही एकाबशियों का एकही आचार्य्य हो, वो अष्टद्दल पद्मके दलोंमें पूर्वादिक्रम से एक जगह सब देवताओंको स्थापित करके पूजे । विष्णुसूक्तसे स्तुति करते हुए वैष्णव नाम मंत्रोंसे परिचर्य्या करे । अन्तमें नमः शब्द का प्रयोग करके वेदीके अन्दर प्रतिष्ठित भगवान् की मूर्तिकी पूजा करे । षोडशो-पाचारसे पूजन करते हुए मूर्तिको यहीं विराजमान रखे, विसर्जन न करे संगीतसे तथा नृत्यसे वा पुराणोंकी कथासे इतिहासोंसे जागरणकर रात्रिको समाप्त करे । प्रातःकाल स्नानादि कर्म करके शास्त्रवेत्ता चौबीस ब्राह्मणोंको बुलाकर उनकी पूजा करे। आचार्य्य के समान उनका उपचार करे। होम संख्याके अनुसार वेदी बनाकर उपसपर प्रणीता स्थापन करे । अग्निके ध्यान आदि कर अन्वाधान करे। उसके लिये-कि शुक्ला वा कृष्णा एकादशीके व्रतके उद्यापन होममें देवता परिग्रहके लिये अन्यवाधान करूँगा ऐसा संकल्प कर " चक्षुषी आज्येन " यहाँ तक उच्चारण आदि कृत्य करे । अग्नि, इन्द्र, प्रजापति विश्वेदेवा, ब्रह्मा पुरुष और नारायण इनको पुरुषसूक्तसे प्रत्येक ऋचान्तमें घृताहुति पूर्वक यजन करे। ऐसेही वासुदेव-बलदेव, श्री, विष्णु, अग्नि, वायु, सूर्य, प्रजापति इन प्रधान देवताओंको खोरसे, केशववादि द्वादश देवताओंको घीमिश्रित खोरसे, विष्णुको खीरको १०८ आहुति से तथा प्रत्येक चार हजार स्त्री सहित रुक्मिणी, सत्यभामा, जाम्बवती और कालिन्दीको; शंख, चक्र, गदा, पद्म, गरुडको; इन्द्रादि अष्टलोकपालोंको; विमलासे लेकर अनुग्रहा पर्यन्त देवताओंको तथा ब्रह्मादि देवताओंको एक एक आहुति दे। शेषसे स्विष्टकृतसे लेकर प्रणीताके प्रणयनतक कर्म करके अन्वाधानकी समिघोंसे हवन करे । पायस चरुकाश्रपण करके "पवित्रं ते" इस मंत्र से प्रापणका उद्धारण करना चाहिये । (स्विष्ट-कृत् हवनादिक पहिले कह चुके हैं। इस कारण विस्तार के साथ नहीं लिखते ।) "ओं पवित्र ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतःअतप्ततनूं तदानो अश्नुते श्रुताश इद्वहन्तस्तत्समासत ॥" सायण हे मंत्रके स्वामी सोम ! आपका शोषक अंग सर्वत्र विस्तृत है तुम पीनेवालेके अंगोंको प्राप्त होते हो। पयोव्रत आदिसे जिनका शरीर सन्तप्त नहीं हुआ वे नहीं प्राप्त होते, परिपक्वही यागोंको करते हुए पवित्रको व्याप्त होते हैं। यह मंत्र तप्तमुद्राधारणमें

प्रमाण माना गया है। मनासाका शास्त्रार्थ" इस नामके छोटे ट्राक्टमें हमने इसका अर्थ तप्तमुद्राके विषय में किया है। हे जगत् के अधिपति पुरुषोत्तम ! आपका सुर्दशन अङफन द्वारा सब जगह फैला हुआ है आप सबके शरीरमें व्यापक हैं। शंखचक्रोंसे जिसका शरीर नहीं तपाया गया वो अपरिपक्व उसको नहीं पाते । जो तपायेगये हैं एवम् धारण करते हैं वे भगवान् के शरण होकर उत्तम पदको पाते हैं ।। पायससे कुछ उद्धृत कर लिया जाय तो उसे प्रापण कहेंगे । आज्य संस्कार आदिक आज्य भाग्यके अन्ततक करके यह उपकल्पित हवनीय द्रव्य देवताओंके अनुसार उपकल्पित हो, पांच अनादेशको आहुतियोंको घीसे हवन करके नारायण पुरुषको पुरुषसूक्तकी एक एक ऋचासे घीकी आहुति देनी चाहिये । ओं वासुदेवके लिये "स्वाहा" यह आहुति है, बलदेवके लिये यह आहुति है,, श्री के लिये यह आहुति है, विष्णुके लिये यह आहुति है। (विष्णोनुंक यह १०२ पेजमें कह चुके हैं)" ओं तदस्य प्रियमभिपाथो अस्याम् नरो यत्र देवयवो मदन्ति । उरुंक्रमस्य सहि बन्धुरित्या विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ।।" हम उसके प्यारे अन्नको चारों ओरसे प्राप्त होते हैं जहाँ देवताओं से योग रखनेवाले मनुष्य आनन्दको प्राप्त होते हैं उसका सत्यही बन्धु है उसके परम पदमें आनन्दका मेघ बरसता रहता है। "ओम् प्रतद् विष्णुःस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः, यस्योरुषु विक्रमेषु अधिक्षियन्ति भवनानि विश्वा ।" हे जगदीश। आप सिंहभी नहीं कहे जा सकते किन्तु आपका कुछ अंग सिंह जैसा होनेके कारण सिंहकी तरह भयंकर हो रहे हो मुष्टि लगतेही आप खंभसे निकल पडे सो क्या उसमें बैठे थे। आपने नाखूनों से हो उसे मार दिया आपने बुरीतरह उसे मारा, जिस तीनों बडे पालती आदिमें आज मैं मरे हुए असुर राजको देख रहा हूँ इसने मुझे बडा सताया था अथवा जब आप वामन अवतार लेकर तीन पँड़से सब कुछ नापलेंगे तब फिर में आपको मनानेका यत्न करूंगा। "ओम् परो मात्रया तन्वा वृधान परमस्य वित्से सबसे उत्कृष्ट आप शरीरकी मात्रा से बढे तुम्हारी महिमाको कोई नहीं पासकता आपके हम दोनों लोकों को जानते हैं। हे विष्णु ! हे देव ! आप इसका पर जानते हैं। 'ओम् विचक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन् । ध्रुवासो अस्य कीरयो जानास उरुक्षिति सुजनिमाचाकार।" यह विष्णु इस पृथिवीको निवासके लिये वा आसनके लिये नाप गये। मैं ऐसा मानता हूँ कि, यह वामनका कार्य्य देवता और मनुष्यके कल्याणका था इसके स्तुति करनेवाले जन नित्य हो जाते हैं यानी दिव्य सूरियोंमें स्थान पाते हैं । इसने असुरोंका संहार करके अवतारादिक लेकर भूमिको दिव्य बनादिया। "ओम् त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां विचक्रमे शतर्च संमहित्वा, "प्रविष्णुरस्तु तवसस्तबीयान् त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य ना ।" इस देवने इस पृथिवीको तीनवार पदाक्रान्त किया। वो महामहान् है। उनकी प्रार्थना करनेवाली अनेको ऋचाएँ हैं। वो बलवानों का भी बलवान है। इस स्थविरका नामही बडा तेजस्वी है। इन मंत्रोंसे और व्याहृतियोंसे खीरसे हवन करके, यदि शुक्ला एका

दशी हो तो केशव आदि द्वादश नामोंसे, एवं कृष्णा हो तो संकर्षण आदि द्वादश नामोंसे, यदि दोनोंका एक आचार्य और एकही स्थण्डिल हो इस पक्षमें २४ कोही ये नाममंत्रोंसे घी मिली हुई खीरसे हवन करना चाहिये पीछे विष्णु भगवान् को १०८ खीर की आहुतियाँ देकर फिर चार चार हजार स्त्रियों की टोलियों की अधिपाओं रुक्मिणी आदियों को एवम् शंख आदि को लोकपालों को तथा विमला आदि के देवताओं एवम् ब्रह्मादिक देवताओं को एक एक आहुति देनी चाहिये। इसके बाद प्रापण के लिये प्रार्थना करनी चाहिये-सृष्टिके रचनेवाले सबके पहिले पुराण पुरुष एक तुझ नारायणका यजन करते हैं, करनेके योग्य मैंने एक भाग किया है, हे जगत् के अधीश्वर! हव्यको ग्रहण कर | इससे प्रापणका निवेदन करके उपस्थान करे! पीछे तीनवार या चार वार प्रदक्षिणक्रमसे अग्निकी और वेदिकाकी प्रदक्षिणा करके "ओम् भिन्धि विश्वा अपद्विषः परिबाधो जही मृधः वसुस्पार्हं तदा भर" हमारे सारे वैरियों और बरोंको बुरी तरह भेदिये, आप हमारी बाधाओंके बाधनेवाले हैं इस कारण युद्ध या युद्धको बाघाओंको मिटा दीजिये जिस घनकी लोग चाह किया करते हैं उस धनको हमारे घरमें खूब भर दीजिये, इससे घोटू टेककर ध्रु वसूक्त या पुरुषसूक्तका जप करना चाहिये । पुरुषसूक्त तो हम पहिलेही कहचुके हैं। अब हम ध्रुवसूक्तको भी कहते हैं। ऋग्वेद अध्याय ८ का इकत्तीसवाँ सूक्त ध्रुवसूक्त है। श्रीमान् चतुर्थीलालजीने भी इसे ही ध्रुव सूक्त करके माना है। इसमें छ: मंत्र हैं। हम उनको यहां ही लिखते हैं। "ओम् आत्वा हार्षमन्तरेऽघि ध्रुव स्तिष्ठा विचाचलिः विशस्त्वासर्वा वाञ्छन्तु मात्वद्रराष्ट्रमधि भ्रशत्॥१॥ मैं तुझे सबके बीचमें प्राप्त करता हूं जो न चलायमान ही ऐसा ध्रुव बनकर विराजमानही तुझ सब प्रजा चाहे तेरे प्रकाशशील लोकका कभी पतन न हो। ओम् इहैवेधि मापच्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः। इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठह राष्ट्र मुधारय ॥२॥ तुम यही बढो इससे नीचे ऊपर मत जाना जैसे कि अचलपर्वत होता है ऐसेही अचल बनो. इंद्रियोंके अधिपति तया- "इन्द्रमित्याचक्षते परोक्षप्रिया इव हि देवाः" उसे परोक्षसे प्यार करनेवाले देव इन्द्र कहते हैं यानी परमात्माकी तरह ध्रुव तू ठहर यहाँ ही प्रकाश शील तारोंको धारण कर । ओम इममिन्द्रोऽमदोधरद् ध्रुवं ध्रुवेण हविषा, तस्मै सोमोऽअधिब्रवत्तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः ॥ ३ ॥ जिसका फल कभी न मिटे ऐसी जो हवि दी थी उसीसे परमात्माने ध्रुबको उतने ऊँचे स्थानपर पहुंचाया। सीमने भी उससे प्रेममयी बातें कीं। प्रसङ्गसे यहां नारदका बोध होता है। भगवान्ने भी उससे बातें कीं। यानी वेदके अधिपति भगवान्ने उसके मुखसे शंख लगाकर खूब स्तुति कराई | ओं ध्रुवा द्यौर्ध्रुवापृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे, ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम् ॥ ४॥ द्यौ ध्रुवा है। पृथिवी ध्रुवा है। ये पर्वत ध्रुव हैं। यह सब संसारभी सदा ऐसाही चला आ रहा है इसलिए यह भी ध्रुवही है। बहुत समयतक राज्य करनेवाला राजा ध्रुव भी प्रजाका ध्रुवराजा है। ओं ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पति; ध्रुवंत इन्द्रश्चाग्निश्च

राष्ट्रधारयतां ध्रुवम् ॥ ५ ॥ आपका राजा ध्रुव वरुण है । देव बृहस्पति ध्रुव हैं आपके इन्द्रदेव अग्नि देवभी ध्रुव है। आप अपने राष्ट्रको नित्य धारण करिये ॥ओं ध्रुवं ध्रुवेण हविषाऽभिसोनं मृशामसि, अथोत इन्द्रः केवलीविंशोबलिहत स्करत्॥ ६ ॥ हम ध्रुव हविसे ध्रुव सोमका अभिमर्षण करते हैं। इन्द्रने केवल प्रजाको बलि हरनेवाली बनाया।।" पीछे प्रत्येक दिशामें इन मन्त्रोंसे आठ आठ पॅड चले कि-कृष्ण, वासुदेव, हरि, परमात्मा, शरण्य, अप्रमेय और गोविन्दके लिए बारबार नमस्कार है। स्थूल, सूक्ष्म, व्यापक, अव्यय, अनन्त, जगत्के घाता, ब्रह्म, अनन्तमूर्ति अव्यक्त अखिलेश, चिद्रूप, और गुणात्माके लिए नमस्कार है। मूर्त, सिद्ध, पर, परमात्मा, देवदेव, वन्द्य, पर, परमेष्ठी विश्वके कर्ता, गोप्ता उसके संहर्ता जो आपहें आपके लिए नमस्कार है। पीछे निवेदित किये हुए प्रापणको शिरपर रखकर घोषणा करे कि, वैष्णव कौन हैं यह ऊंचे स्वरसे कहना चाहिये। वहां जो दूसरे वैष्णव बैठे हों उन्हें कहना चाहिये कि, हम वैष्णव हैं हम वैष्णव हैं। उन सबोंको हवि बांटकर, "ओं नमो भगवते वासुदेवाय भगवान् वासुदेवके लिए नमस्कार" इस मन्त्रसे इस अमृतका में प्राशन करता हूं ऐसा कहकर प्राशन और आचमन करके या तो आचार्य्य या यजमान-'सिद्धिके लिये स्वाहा (यह आहुति है) इससे आज्य हवन करना चाहिये । "ओं यत इन्द्र भयामहे ततो नोऽअभयं कृषि, मघवन् छग्धि तव तन्न ऊतिभिविद्विषो विमृघो जहि । हे इन्द्र ! जिस ओरसे हम डरते हैं उसी ओरसे हमें अभय कर दीजिये। हे मघवन् ! हमें अपनी रक्षाओं से बलवान् बना दो, एवम् वैरियोंके युद्ध द्वेष एवम् उनसे होनेवाले अनिष्टोंको हमारे समीप भी मत आने दीजिये, उन्हें नष्ट कर दीजिये। इस मंत्रसे अपनेको अभिमंत्रित करके स्विष्टकृत् आदिका होम शेष जो हो उसे पूरा करदे । उत्तर पूजा कर-होमान्तमें, दूध देनेवाली निरोगी वच्चेसहित-कालेरंगकी गौ कालेवस्त्रके साथ तथा कांसीके वर्त्तनकीदोहनी सहित दक्षिणापूर्वक व्रतकी समाप्तिके लिये आचार्यको दे । अनेक प्रकारके भूषण अनेक प्रकारके वस्त्र चौबीस प्रकार के पक्वान्नभी बडी दक्षिणाके साथ दे । यदि अपना भला करना हो तो व्रतका उद्यापन करे । बारह ब्राह्मणोंको निमन्त्रितकर प्रत्येक ब्राह्मणको नामलेकर पूजे तथा उन्हें यज्ञोपवीत बक्षिणासहित कलश, मिठाई फल और वस्त्र दे। फिर बडी भक्तिसे उन्हें पक्वान्नसे भोजन करावे । सायही दूसरोंको भी यथाशक्ति भोजन करावे। पीछे ब्राह्मणोंसे कहे कि, मेरा व्रत संपूर्ण हो। तब ब्राह्मण कहें कि, आपका व्रत पूरा हो जाय, पीछे आचार्यसहित व्रती वैष्णवसूक्तोंका जपकर तथा वारवार प्रणाम करके ओं भूः पुरुषमुद्वासयामि भूः यह तो व्याहृति है में पुरुषका उद्वासन (विसर्जन) करके "इदं विष्णुः" इससे पीठ आचार्य को देकर पीछे बन्धुजनोंके साथ स्वयं भोजन करे । यह बौघायनकी कही हुई शुक्ला और कृष्णा दोनों एका बशियोंकोके व्रतकी विधि पूरी हुई। पूजाविधि-बह्मपुराणमें लिखी हुई है कि, दोनोंपक्षोंकी एकादशीको

एकाग्रचित्त हो निराहार रहे। विधिसे स्नान करे तथा उपवासपूर्वक जितेंद्रिय रहे श्रद्धा भक्तिके साथ सावधान हो विधिपूर्वक विष्णुका पूजन करे। भक्तिके साथ सावधान हो विधिपूर्वक विष्णुका पूजन करे। पूजा में गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि षोडशोपचारोंके प्रयोग करे। तथा जप होम प्रदक्षिणा, नानाप्रकारके स्तोत्र, सुंदर मनोहर सङ्गीत आदि दण्डवत् प्रणाम और उत्तम जय शब्दोंसे इस प्रकार वैध पूजनकर रात्रिमें जागरण करे तो मनुष्य निःसन्देह विष्णुलोकका अधिकारी होता है । अथोद्यापनविधिः-अर्जुन बोले; हे कृपानिधे ! व्रतका उद्यापन कैसा होना चाहिये और उसकी क्या विधि है ? उसको आप कृपाकरके मुझे उपदेश दें। श्रीकृष्ण बोले कि, हे अर्जुन ! मैं तुम्हें उसकी विधि बतलाता हूं। शक्तिमान् मनुष्य हजार सुवर्ण मुद्रा और असमर्थ एक कौडीभी यदि श्रद्धासे दें तो वे उन दोनोंका फल एक समान है, यदि शक्ति हो तो दुगुना दे जैसा मध्यमविधिमें (कहा है) जितना बतलाया है यदि उससे आघाभी अशक्त मनुष्य दे दे तो दानका पूरा फल पाता है। उसकी विधिको में कहता हूं। हे कौरवश्रेष्ठ ! उद्यापनके बिना, कष्टसे किये हुए व्रत भी निष्फल हैं। जब देवताओंके जागरणका समयहो उस समय उद्यापन विधि करे। मार्गशीर्ष में अथवा भीमतिथि पर दशमीतिथिके कुछ दिन शेष रहनेपर रातमें गुरुके घर जाय और एकादशीके दिन शक्तिपूर्वक गुरुकी पूजाकरे। एवं उसके चरणोंको शिरसे लगाकर प्रार्थना करे। गुरु पुण्यवेशमें उत्पन्न होनेवाला, शान्त; सर्वगुणसम्पन्न, सदाचारी, वेदवेदांगोंका जाननेवाला हो। उससे कहे कि, गुरु महाराज ! मेरा यह हरिवासरसे सम्बन्ध रखनेवाला व्रत जिस तरह संपूर्ण हो ऐसा उपाय कीजिये । दन्तधावनपूर्वक उसके आगे नियम करे कि; में एकादशीको निराहार रहकर द्वादशीको भोजन करूंगा। हे पुण्डरीकाल ! भगवान् ! मेरे आप शरणहों, हे प्रार्थ ! प्रातःकाल सावधानमनसे स्नान कर पाखंडी और पतित लोगोंका संगमदूरकरे। नदी आदिके शुद्ध जलमें मन्त्रपूर्वक स्नान कर पितरोंका सर्पण करे और विष्णु भगवानकी पूजाकरे। कोडे या बालअस्थि आबिसे वर्जित जगहपर गोवरसे लीप कर हे भूप ! अनेक रंगोंसे सर्वतोभद्र बनावे जो कि सब कर्मोमें पूजित है आठ अंगुल ऊँची चौरस और दो वितस्ति चौडी वेदी करे, उसे अक्षतोंसे परिपूर्णकर अष्टदलकमल लिखे। उसपर नवीन, सुन्दर कलश स्थापित करे अथवा चावलोंकाही अष्टदल कमल बनावे । चांदी या ताम्बेका उसपर भरा हुआ कलश रखे । उसपर भगवान्‌की सुवर्णसे बनी हुई मूर्तिको लक्ष्मीजी सहित विराजमान करे । चावल यज्ञोपवीत सुवर्ण और वस्त्रसे संयुक्त तथा रुद्राक्षमाला, शंख, चक्र, गदा आदिसे विभूषितकर भगवान्‌की यथाशक्ति सुवर्ण पुष्पोंसे तया ऋतुके पुष्पोंसे पूजा करे हे परंतप ! चौवीसों तिथियोंमें भक्तिपूर्वक क्रम क्रमसे २४ नैवेद्योंको अर्पण करे । हे परंतप ! चौवीसों तिथियोंमें भक्तिके साथ क्रमसे चौवीस नैवेद्य दे अथवा जब उद्यापन हो तवही इच्छानुसार मोदक, गुडक, चूर्ण, घृतके पूरे, मांडे, सोहालिकादिक, सारसेवा, सक्तु, बडे, पायस, दुग्ध,

शालि, दध्योदन, इंडरीक, पूरी, अपूप, गुडके लड्ड, शर्करा सहित तिलपिष्ट, कर्णवेष्ट, शालिपिष्ट, रंभाफल, घृतसहित मूंगका सार, गुडभात इस नैवेद्यको क्रमसे दे अथवा अन्तिम दिनसबको बनावे। पूजाके नाम-चरणोंमें दामोदर गोडोंमें माघव, गुह्यस्थानमें कामपति, कटिमें वामन, मूत्ति, नाभिमें पद्मनाभ, उदर में विश्वमूत्ति, हृदयमें ज्ञानगम्य, कंठमें श्रीकण्ठसङ्गी, बाहुमें सहलबाहु, नेत्रोंमें योगयोगी, ललाटमें उरुगाय, नाकमें नाकसुरेश्वर, कानमें श्रवणेश, चोटीमें सर्व कामद, शिरमें सहस्रशीर्ष, सर्वाङ्गमें सर्वरूपी भगवान्, हृदयमें जगन्नायका ध्यान करके, नारियलसे या बिजौरसे विधिपूर्वक चावल, फूल, जल, चन्दन आदिसे व्रतपूत्ति करनेवाले पूर्वोक्त मन्त्रोंद्वारा अर्घ्य दे । रातमें जागरण करे और अनेक प्रकारके गायन वाद्यका आयोजन करे। उसने पृथ्वीका दान, गयामें पिण्डदान एवं कुरुक्षेत्रमें दानकर दिया जिसने हरिके आगे जागरण किया नाच, गाना वीणा आदि बाजोंको बजाते या पुराणश्रवण जो लोग करते हैं वे सब विष्णुके प्यारे हैं। शास्त्रसे अथवा भक्तिसे पवित्र या अपवित्र ही रहकर जो विष्णुका जागरण करनेवाले हैं वे सब करोडों पापोंसे मुक्त होते हैं। भोजन किए हुए या न किए हुए जो मनुष्य भगवान्के जागरणमें उपस्थित होता है वह सब पापोंसे मुक्त होकर विष्णुलोकको प्राप्त होता है। भगवान्के मन्दिरमें जागरण करनेके लिए जो मनुष्य जितने कदम चलता है वह उतने ही अश्वेमेष यज्ञ करता है। पैरों की धूलकी कण जागरण करने वाले मनुष्य की जो पृथ्वी में गिरती हैं उतनेही वर्ष तक वह मनुष्य स्वर्ग में निवास करता है। कोटि कोटि युगोंसे किए हुए सुमेरु पर्वतके समान पापोंको भी हरिभगवान्का जागरण नष्ट कर देता है। उस रात में हरिभगवान् को आवाहन करके मन से स्मरण करे और प्रातःकाल होते ही स्नान करके ब्राह्मणों को बुलावे। जो संख्या में २४ और शास्त्रपारङ्गत हों, उनके द्वारा जप, होम, पूजा आदि विधिपूर्वक करे। "इदं विष्णु" इस मन्त्रकी १०८ आहुति से होम करना द्विजातियों के लिए प्रशस्त माना गया है। तथा शूद्रों के लिए अष्टाक्षर मन्त्र का विधान है। हे अर्जून ! अनिमन्त्रित ब्राह्मणोंको अलग अलग अनेक प्रकारके वस्त्र, वर्त्तन, आसन, जूती आदि नवांग वस्तुओं को दे। अथवा यथा शक्ति द्वादश चीजोंको दे । उन सपत्नीक ब्राह्मणोंको पुष्पमाला आदिसे पूजकर पक्वान्न और जलसे संयुक्त १२ कलशोंको देकर भोजन करा भक्तिसे विचरे। सब इच्छाओं की पूर्ण करनेवाली एक कपिला गौको स्वर्ग मोक्षकी सम्पूर्णताके लिए दे। जिसको देते समय "नमस्ते कपिले देवि" इस श्लोकका उच्चारण करे । इसका अर्थ यह है कि है कपिले देवि ! तेरे लिए नमस्कार है। तू संसारसागरसे पार करनेवाली है। मैंने तुझे ब्राह्मणके लिए दे दिया है, इससे भगवान् मुझपर प्रसन्न होजायँ, सर्वतो भद्रमण्डलके और विष्णुभगवानके निकट सपत्नीक गुरुकी पूजा करे और उसको वस्त्र, भूषण, भोजन, प्रणाम आदिसे प्रसन्न और सन्तुष्ट करे। और भी उद्यापनको समाप्त करते हुए हे अर्जुन! कृपणताको त्याग कर अनेक

प्रकारको इष्ट वस्तुओं को यथाशक्ति प्रदान करे। जलदान और भूमिका दान करे। फिर पुरुषोत्तम भगवान्के आगे हाथ जोडकर मयाद्यास्मिन्व्रतों" आदि इलोकोंको "सर्व सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाद्रमापते" इस श्लोकतक उच्चारण करे। इन वलोकोंका अर्थ यह है कि, हे विभो ! मैंने जो अपने व्रतमें अपूर्णता की वो अब आपको कृपासे हे जनार्दन! परिपूर्ण होजाय, मेरी भक्ति तेंरेमें ही सेवा रहे। हे नामोदर ! हे प्रभो ! मेरी पुण्यमें बुद्धि रहे, मैं सज्जनोंको सेवा करता रहूं, यही धर्मफल हो, मेरे व्रतमें जो जप तपमें त्रुटि हो हे रमापते! वो सब आपकी कृपासे संपूर्ण होजाय, पीछे प्रदक्षिणा करके प्रणाम करे। इसके बाद विष्णु भगवान् मुझ पर प्रसन्न हो जायें ऐसे बोलकर मूत्तिसहित मण्डल, भेंट और दक्षिणा आचार्यको दे। एवं सब लोगों को भोजन करा के सन्तुष्ट कर विसर्जित करे। और उनकी आज्ञा से अपने बन्धुओं के साथ पारण करे। इस एकादशीव्रत को यौवना श्वनाम के राजा ने जैसा पहिले किया था उसको मैंने यथाविधि तुमसे कह दिया है। हे अर्जुन ! यह तुम्हारी प्रीति है, एवं भक्ति तया तुझ पर कृपा है जिससे मैंने तुमको यह प्रकट किया। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक इस भयनाशक व्रत को करता है वह दाह प्रलयर्वाजित विष्णुलोक को प्राप्त होता है । हे अर्जुन ! तुमको मैंने दोनों एकादशीके उद्यापन को विधि बतला दी। इसकी अधिक प्रशंसा करके मैं तुम्हें क्या बताऊं ? समझलो कि, इस त्रिलोकी में इससे अधिक और कोई उत्तम वस्तु नहीं है। इस उद्यापनके उपलक्ष्यमें गोदान या भूमिदान दिया जाय तो उसका फल गोरोमकी संख्याके बरावरके युगोंतक बना रहता है और दाता लोग तबतक विष्णुलोकमें एकादशीकी कथाका श्रवण करें वे भी निःसन्देह स्वर्गको जाते हैं। इस प्रकार निवास करते हैं जो लोग इस अर्जुन श्रीकृष्ण भगवान्के परम अतभु वचनोंको सुनकर बडा सुखी और आनन्दित हुआ। इस प्रकार उद्यापन की विधि समाप्त हुई।

बोध प्रश्न –

1. एकादशी व्रत में किस देवता का पूजन किया जाता है?
   क. विष्णु ख. शिव ग. दुर्गा घ. गणेश
2. देवर्षि, ब्रह्मर्षि, ऋषि, मुनि तथा सिद्ध परमाचार्यों द्वारा आदिष्ट प्रसिद्धिप्राप्त विषय के संकल्पविशेष को क्या कहते हैं?
   क. व्रत ख. कथा ग. त्योहार घ. कोई नहीं
3. निम्न में कौन सा व्रत फल को देता है?
   क. देवताप्रोक्त ख. ऋषिप्रोक्त ग. शास्त्रप्रोक्त घ. गन्धर्वप्रोक्त
4. एकादशी तिथि को किन दो सम्प्रदाय के लोग प्राय: करते है?

क. वैष्णव एवं स्मार्त ख. वैष्णव एवं शैव ग. शाक्त एवं शैव घ. वैष्णव एवं शाक्त

5. एक साथ कितने से अधिक रात्रि पर्यन्त व्रत धारण नहीं करने चाहिये।

क. दो ख. तीन ग. एक घ. चार

6. दशमी द्वारा अरुणोदयवेध एकादशी व्रत किसे त्याज्य नहीं है?

क. वैष्णव ख. स्मार्त ग. गृहस्थ घ. कोई नहीं

7. दशमी द्वारा अरूणोदयवेध एकादशी का व्रत त्याज्य है?

क. स्मार्त ख. गृहस्थ ग. वैष्णव घ. देवताओं को

8. माघ मास के कृष्णपक्ष की एकादशी को क्या कहते है?

क. कामदा एकादशी ख. परमा एकादशी ग. षट्तिला एकादशी घ. मोहिनी एकादशी

9. पौष मास के शुक्लपक्ष की एकादशी का नाम है?

क. कामदा एकादशी ख. षट्तिला ग.पुत्रदा एकादशी घ. पद्मिनी

10. एकादशीयों की कुल संख्या है?

क. 25 ख. 24 ग. 26 घ. 27

11.5 सारांश

प्रस्तुत अध्ययन के बाद आपने जान लिया है कि भारतीय वैदिक सनातन परम्परा में देवर्षि, ब्रह्मर्षि, ऋषि, मुनि, सिद्ध एवं परमाचार्यों द्वारा आदिष्ट प्रसिद्धिप्राप्त विषय के संकल्पविशेष को 'व्रत' कहा जाता हैं। जो ऋषि नहीं है वह व्रत विधान करने का अधिकारी नहीं है। वही व्रत फल देता है जो ऋषिप्रोक्त होता है। यह कामनापूर्ति कारक होता है। यह पूजन, उपवास और पारण से संपुष्ट तीन अंगों वाला होता है। व्रतों के माध्यम से जीवन में अलभ्य का लाभ एवं असाध्य की प्राप्ति होती है।

11.6 पारिभाषिक शब्दावली

आदिष्ट – आदेशित

ऋषिप्रोक्त – ऋषि द्वारा कहा गया

कामनापूर्ति – कामना या इच्छा का पूरा होना

सम्प्रदाय – एक ऐसा समूह जो किसी धर्म विशेष या ईश्वर विशेष को ही मानता हो

कामदा एकादशी – चैत्र शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम

पुत्रदा एकादशी – पौष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम

11.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. क
3. ख
4. क
5. क
6. ख
7. ग
8. षट्तिला एकादशी
9. पुत्रदा एकादशी
10. 26

11.8 सहायक पाठ्यसामग्री

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरिज

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

11.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरीज, वाराणसी

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन, वाराणसी

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

11.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. एकादशी व्रत का परिचय दीजिये।
2. एकादशी व्रत धारण विधि का शास्त्रीय उल्लेख कीजिये।
3. एकादशी व्रत उद्यापन का वर्णन कीजिये।
4. एकादशीयों का नाम लिखते हुए माहात्म्य बतलाइये।
5. धार्मिक दृष्टि से एकादशी का क्या महत्व है।

इकाई - 12 प्रदोष व्रत एवं उद्यापन

इकाई की संरचना

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 प्रदोष व्रत

12.4 प्रदोष व्रत उद्यापन

12.5 सारांश

12.6 पारिभाषिक शब्दावली

12.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.8 सहायक पाठ्यसामग्री

12.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

12.9 निबन्धात्मक प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई प्रदोष व्रत एवं उद्यापन शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने एकादशी व्रत एवं उद्यापन विधि का अध्ययन कर लिया है। अब आप गृहस्थ जीवन में उपयोगी प्रदोष व्रत तथा उसके उद्यापन की विधि को जानेंगे।

प्रदोष व्रत का धारण प्राय: सन्तान प्राप्ति के लिए किया जाता है। जो स्त्री गर्भ धारण नहीं कर पाती अथवा पुत्र की कामना करती है वैसे लोगों के लिए प्रदोष व्रत बतलाया गया है।

आइए हम सब प्रदोष व्रत तथा उसके उद्यापन का अध्ययन करते हैं।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –

- प्रदोष व्रत किसे कहते हैं।
- प्रदोष व्रत धारण की विधि क्या है।
- प्रदोष व्रत का माहात्म्य क्या है।
- लोक में इसका क्या महत्व है।
- प्रदोष व्रतोद्यापन विधि क्या है।

12.3 प्रदोष व्रत

भारतीय वैदिक सनातन परम्परा में प्रत्येक व्रत का अपना विशेष महत्व होता है तथा मनुष्य कई प्रकार के कामनाओं को ध्यान में रखते हुए व्रत को धारण करता है। प्रस्तुत इकाई में 'प्रदोष व्रत' से सम्बन्धित व्रत कथा तथा उसके माहात्म्य का उल्लेख किया जा रहा है। प्रदोष व्रत वस्तुत: सन्तान प्राप्ति के लिए किया जाता है। जिन दम्पत्ति का कोई पुत्र नहीं होता वह भी इस व्रत को धारण करते हैं। इस व्रत में मुख्यत: महिलायें दिन भर उपवास रहकर भगवान साम्ब शिव की उपासना करती है। पुराणों में भी इस व्रत का उल्लेख मिलता है। आइए हम सभी 'प्रदोष व्रत' को ध्यान से समझने की कोशिश करते हैं। यहाँ व्रत का उल्लेख संस्कृत (मूल) और हिन्दी दोनों भाषाओं में उल्लेख किया जा रहा है।

प्रदोष व्रत – मूल (संस्कृत भाषा में)

सूत उवाच - ये प्राप्य दुर्लभमिदं मनुजाः शरीरं कुर्वन्त्योऽत्रपरमेश्वरपादपूजाम्। धन्यास्त एव निजपुण्यजितत्रिलोकास्तेषां पदाम्बुजरजो भुवनं पुनाति।। न भवेत्तस्यदारिद्रयं जन्मान्तरं शतेष्वपि। ज्ञानेश्वर्य समायुक्तः सोऽन्ते शिवपुरं व्रजेत्। एतन्महाव्रतं पुण्यं प्रदोषे शङ्करार्चनम्। धर्मार्थकाममोक्षाणां यदेतत्साधनं परम्।। प्रदोषव्रतं पक्षद्वयस्य पूर्वविद्धायां त्रयोदश्यां वर्षपर्यन्तं यावज्जीवं वा कार्यम्। शनिवारयोगे शनिप्रदोषस्तत्र महाफलम्। भौमयोगे ऋणमोचनम्। शुक्रवारयोगे सौभाग्यस्रीसमृद्धिः। आदित्यवारसंयोगे आरोग्यप्राप्तिः। सोमवारसंयोगे पुत्राप्तिश्च भवति। व्रतकर्ता व्रतस्य पूर्वदिने सायंकाले नित्यकर्मादिकं समाप्य व्रतग्रहणं कुर्यात्। व्रतदिने प्रातः काले नित्यकर्मादिकं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्— देशकालौसंङ्कीर्त्य ममात्मनः समस्तपापक्षयपूर्वकाऽऽयुरारोग्यैश्वर्यपुत्रपौत्राद्य भिवृद्धिशत्रुपराजयद्वारा श्रीमदुमामहेश्वरप्रीत्यर्थं प्रदोषव्रतं करिष्ये। दिवसे उपवासं कृत्वा सूर्यास्तात्पूर्वमेव (प्रदोषकाले) उमामहेश्वरस्य पूजनं कुर्यात्। यदि पार्श्वे देवालयमस्ति चेत् देवालयं गत्वा मृत्तिकाद्वारा पार्थिवनिर्माणं कृत्वा गृहे एव, अथवा उमामहेश्वरस्य मूर्ति सिंहासने संस्थाप्य पूजनं कुर्यात्। यदि मूर्ति पूर्वप्रतिष्ठितमस्ति तदा प्रतिष्ठा न कार्यम्। प्रतिष्ठामन्त्रः- ॐ देवेशभक्तसुलभ सर्वावरण संयुत। यावत्वां पूजयिष्यामि तावत्वं सुस्थिरो भव।। इति मन्त्रेण पार्थिवादिमूर्तीनां प्रतिष्ठां कृत्वा पुरुषसूक्तेन, रुद्रसूक्तेन, भवानीशंकराभ्यां वा षोडशोपचारैः पूजयेत्। पुष्पपूजांते आवरणपूजा कार्या- आवरणपूजायां अक्षतान् पुष्पाण्यादाय ‘‘“नमः” उच्चारणोपरि अक्षतपुष्पाणि प्रक्षेपयेत्। परितः ईशानपूर्वादिक्रमेण। ॐ ईशानाय नमः। ॐ तत्पुरुषाय नमः। ॐ अघोराय नमः। ॐ वामदेवाय नमः। ॐ सद्योजाताय नमः। इति पंचमूर्तिः पूजयेत्। पुनः ईशानादिपूर्वक्रमेण ॐनिवृत्यै नमः। ॐ प्रतिष्ठायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ शान्त्यतीतायै नमः इति कलाः पूजयेत्। पुनः पूर्वादिदिक्षु-- ॐ सूर्याय नमः। ॐ इन्दवे नमः। ॐ क्षित्यै नमः। ॐ तोयाय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐआकाशाय नमः। ॐ यज्वने नमः इत्यष्टमूर्तीः पूजयेत्। पूर्वादिदिक्षु ॐ अनन्ताय नमः । ॐ सूक्ष्माय नमः। ॐ शिवोत्तमाय नमः। ॐ एकनेत्राय नमः । ॐ एकरुद्राय नमः । ॐ श्रीकण्ठाय पवनाय नमः ।

ॐकरें। नमः, श्रीशिखण्डिने नमः, इति विघ्नेशान् पूजयेत्। उत्तरादिक्रमेण। ॐ उमायै नमः । ॐ चण्डेश्वराय नमः । ॐ नंदिने नमः । ॐ महाकालाय नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ वृषभाय नमः । ॐ भृंगरिषये नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। इति गणेशं पूजयेत्। तद्वाह्ये भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ इंद्राय नमः । ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः । ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ईशानाय नमः । ईशानपूर्वयोर्मध्ये ब्रह्मणे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये अनन्ताय नमः ।इतिदिक्पालान्पूजयेत् तद्वाह्ये पूर्वादिदिक्षुतत्तसमीपे ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्त्यै नमः । ॐदण्डाय नमः। ॐ खड्गायनमः। ॐ पाशाय नमः। ॐअंकुशाय नमः । ॐगदायै नमः। ॐ त्रिशूलायनमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः। इत्यायुधानि संपूजयेत्। एवं सगणं शिवं सम्पूज्य अर्घ्यं दद्यात्। अर्घ्यपात्रे क्षीरविल्वपत्रकुशदूर्वा दधिघृततंडुलसर्षपगंध- पुष्पफलादिक्षिप्त्वा जलेनापूर्य जानुभ्यामवनीं कृत्वा ॐ भयरोगादिद्रारिद्रयपापक्षुदपमृत्यवः। ऋणशोकमनस्तापा नश्यंतु मम सर्वदा ।। इत्यनेनमन्त्रेण त्रिबारमर्घ्यंदत्वा हस्ते पुष्पाण्यादाय प्रार्थयेत् । प्रसीद देवदेवेश प्रसीद परमेश्वर। प्रसीद सोम सर्वज्ञ प्रसीद करुणाकर। जय देव जगन्नाथ जयशंकर शाश्वत । जयसर्वसुराध्यक्ष जय सर्वसुरार्चित।। जय सर्वगुणातीत जय सर्ववरप्रद। जय नित्य निराधार जय विश्वंभराव्यय।। जय विश्वैकबंद्येश जय नागेन्द्रभूषण। जय गौरीपते शंभो जय नित्य निरंजन ।। जय नाथ कृपासिंधो जय भक्तार्तिभंजन। जय दुस्तरसंसारसागरोत्तारण प्रभो।। प्रसीद मे महादेव संसारादद्यखिद्यतः। सर्वपापचयं कृत्वा रक्ष मां परमेश्वर ।। प्रार्थनार्थे इमानि सुपुष्पाणि समर्पयामि इति प्रार्थ्यं देवं प्रणम्य गीतवादित्रनृत्यकथाश्रवणाद्यैर्गृहे देवालये वा रात्रौ जागरणं कुर्यात्। प्रातस्नानादिकं कृत्वा पुनः संक्षिप्त रुपेण श्रीउमामहेश्वरं पूजयित्वा पारणं कुर्यात्। पुनः यावत्कालपर्यन्तं व्रताचरणं कृत्वा अन्ते उद्यापनं कुर्यात्।

यहाँ संस्कृत के साथ-साथ विद्यार्थियों को समझने के लिए हिन्दी भाषा में भी लिखा जा रहा है-

प्रदोष व्रत (हिन्दी रूपान्तर) - सूत जी ने कहा- जो दुर्लभ मनुष्य शरीर को प्राप्त कर श्रीपरमेश्वर का पूजन करतें है, वे धन्य हैं क्योंकि अपने पुण्य के प्रभाव से अपने चरणों की धूलि से तीनों लोकों को पवित्र करते हैं। जन्मों तक भी वे दरिद्रता को प्राप्त नहीं होते हैं तथा ज्ञान एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर अन्त में शिवपुर में वास करते है। धर्म अर्थ काम मोक्ष का यह प्रदोष व्रत भगवान् शंकर पूजा के साथ महान पुण्य को प्रदान करने वाला उत्कृष्ट साधन है। दोनो पक्षों का प्रदोष व्रत पूर्व विद्धा त्रयोदशी को मनाया जाता है। यह वर्ष पर्यन्त

या जीवन पर्यन्त किया जाता है। शनिवार के संयोग से शनि प्रदोष व्रत महाफल को देता है। मंगलवार के संयोग से भौमप्रदोष व्रत किसी भी प्रकार के ऋणों से मुक्ति दिलाता है। शुक्रवार के संयोग से यह व्रत सौभाग्य यानि पति एवं स्त्री को समृद्ध बनाता है। रविवार के संयोग से आरोग्य की प्राप्ति कराता है। सोमवार के संयोग से पुत्र की प्राप्ति कराता है। व्रत कर्ता व्रत के पूर्व दिन सायंकाल नित्यकर्मादि को समाप्त कर व्रत ग्रहण करें। व्रत के दिन प्रात:काल नित्यकर्मादि सम्पन्न कर संकल्प करें। उसके बाद दिन में उपवास करके सूर्यास्त से पहले (प्रदोषकाल में) उमामहेश्वर का पूजन करें। यदि समीप में देवालय है तो देवालय में जाकर। यदि नहीं तो घर में मिट्टी का पार्थिव बनाकर अथवा सिंहासन पर उमामहेश्वर की मूर्ति रखकर पूजन यदि मूर्ति पूर्वप्रतिष्ठित है तो उसकी प्रतिष्ठा न करें अन्यथा प्रतिष्ठा आवाहन करके पूजन करें। प्रतिष्ठामन्त्र "ॐ देवेश० से सुस्थिरोभव" यहाँ तक है। इस मन्त्र से पार्थिवादि मूर्त्तियों की प्रतिष्ठा करके पुरुषसूक्त, रुद्रसूक्त से अथवा भवानीशंकराभ्यां नमः इसी मन्त्र से षोडशोपचार पूजन करें। पूष्पपूजा आवरण पूजा करें। आवरणपूजा में अक्षत पुष्प या पुष्पदलों को लेकर 'नमः' बोलकर छोड़ते जाएं। ईशान दिशा से पूर्व की ओर बढ़ते हुए भगवान के चारो ओर छोड़ें। "ईशानाय नमः" से शुरु कर "ॐ सद्योजाताय नमः" तक पाँच मूर्तियोंकी पूजा करें। पुनः ईशान कोण से ही "ॐ निवृत्यै नमः" से "ॐ शान्त्यतीतायै नमः" तक कला का पूजन करें। पुनः पूर्वादिकोण से "सूर्याय नमः" से "यज्वने नमः" तक आठो मूर्तियों को पूजें। पुनः पूर्वादि दिशा से "अनन्ताय नमः" से लेकर "स्कन्दाय नमः" तक गणेश को पूजें। उसके बाहर पूर्वादिक्रम से "इंद्राय नमः" से "अनन्ताय नमः" तक दिक्पालों को पूजें। उसके बाहर पूर्वादि दिशाओं में "वज्राय नमः" से लेकर "चक्राय नमः' तक आयुधों का पूजन करें। इस प्रकार से गणों के सहित भगवान शंकर का पूजन कर अर्घ्य प्रदान करें। अर्घ्य पात्र में दूध, कुशा, दूर्वा, दधि, घृत, चावल, सरसो, गंध, पुष्प, सुपाड़ी आदि डालकर जल से पूर्ण करके घुटनों को पृथ्वी पर टिकाकर ॐ "भयरोगादि० से नश्यंतु मम सर्वदा" तक मन्त्र पढ़कर अर्घ्य दें। ऐसा तीन बार करें। हाथ में पुष्पों को लेकर "प्रसीद देवदेवेश" से "रक्ष मां परमेश्वर" तक श्लोक पढ़कर "प्रार्थनार्थे इमानि सुपुष्पाणि समर्पयामि"

बोलकर भगवान पर अर्पित करें। इस प्रकार प्रार्थना करके देवताओं को प्रणाम करते हुए गाना बजाना पूर्वक कथा पुराण सुनते हुए घर अथवा देवालय में

रात्रिजागरण करें। प्रातः स्नानादि करके पुनः संक्षिप्त रुप से श्री उमामहेश्वर का पूजन कर पारण करें तथा यथा समय व्रत का पालन करें और अन्त में उद्यापन करें।

अब आगे यहाँ प्रदोष व्रत का उद्यापन बतलाया जा रहा है-

12.4 प्रदोष व्रत उद्यापन

उद्यापनप्रयोग-

सर्वप्रथम संकल्प करें। उसके बाद गणेशपूजन से आरम्भ कर आचार्यवरण पर्यन्त पूजन करें। लिङ्गतोभद्रमण्डल का निर्माण करके देवताओं को पूजकर यथाविधि ताम्रकलश को स्थापित करके उसके ऊपर चाँदी का पूर्णपात्र (यदि संभव हो तो) रखकर चावलों से भरकर उमामहेश्वर की प्रतिमा स्थापित करें। उनके आगे चाँदी के ही वृषभ को स्थापित करें। वस्त्रमाल्यविभूषण से भूषित करके प्रतिष्ठामन्त्र से प्रतिष्ठा करके पुरुष सूक्त, रुद्रसूक्त से षोडशोपचार पूजन कर विधिवत् आरती कर तीन प्रदक्षिणा करके साष्टाङ्ग प्रणाम करें। पुष्प पूजा के मध्य में पूर्वोक्त रीति से आवरणपूजा एवं अर्घ्य प्रदान कर प्रार्थना करें। रात्रि जागरण करके प्रात:काल अग्नि स्थापित कर कुशकण्डिका करके हवनीय द्रव्यों से "गौरीर्मि० " मन्त्र से गौरीजी को एवं " त्र्यम्बकं यजा०' मन्त्र से शंकर जी को १०८-१०८ आहुति दें। उसके बाद आवरणदेवताओं, लिङ्गतोभद्रदेवताओं को एक- एक बार हवन करके होमशेष को समाप्त कर सपत्नीक आचार्य को वस्त्रालंकार चन्दनों से पूजकर गौ एवं प्रतिमा को दान कर दें। यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा इत्यादि से सन्तुष्ट करके प्रार्थना करके ब्राह्मणों की आज्ञा से बन्धुओं के साथ भोजन करें। यह प्रदोषव्रत का वर्णन स्कन्दपुराण के अनुसार किया गया है।

संस्कृत भाषा में उद्यापन विधि -

उद्यापनप्रयोगः संकल्पं कुर्यात् - देशकालौ सङ्कीर्त्य ममात्मनः समस्तपापक्षयपूर्वकं आयुरारोग्यैश्वर्यपुत्रपौत्राद्यभिवृद्ध्यर्थं शत्रुपराजयद्वारा श्रीमदुमामहेश्वरप्रीत्यर्थं आचरितपक्षप्रदोषव्रतोद्यापनं करिष्ये। इति संकल्प्य गणेशपूजनादारभ्य आचार्यवरणपर्यन्तं कर्म कृत्वा लिङ्गतोभद्रमण्डलं निर्माय देवान्सम्पूज्य मध्ये यथाविधिः ताम्रकलशं संस्थाप्य तदुपरिरौप्यपात्रं धृत्वा तण्डुलैः परिपूर्य तत्र उमामहेश्वरप्रतिमां पुरतः राजतं वृषभं च संस्थाप्य वस्त्रमाल्यविभूषणैर्भूषयित्वा "ॐ देवेश भक्त सुलभ सर्वावरण संयुतम्। यावत्वां पूजयिष्यामि तावत्वं सुस्थिरो भव"।। इति प्रतिष्ठां कृत्वा पुरुषसूक्तेन, रुद्रसूक्तेन इति मन्त्रेण षोडशोपचारैः सम्पूज्य कर्पूरगर्भितवहुवर्त्तिभिर्नीराजनं कृत्वा प्रदक्षिणात्रयं विधाय साष्टाङ्गं प्रणम्य पुष्पपूजान्ते आवरणपूजा – पूर्वोक्तविधिनाकार्यार्घ्यं प्रार्थनाञ्च पूर्वोक्तविधिना रात्रिजागरणं कृत्वा प्रातः नित्यकर्मादिकं सम्पाद्य श्रीउमामहेश्वरं सम्पूज्य स्थण्डिले अग्निं प्रतिष्ठापयेत्। कुशकण्डिकां कृत्वा आज्यभागान्ते गौर्य्यै महेश्वराय च पलाशसमिद्बिल्वपत्रतिलपायसाज्यद्रव्यैः प्रत्येकमष्टोत्तर-शतसंख्यया ॐ गौरीर्मिमायसलिलानितक्षत्येकपदीद्विपदीसाचतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरापरमेव्योमन् स्वाहा।। इदं गौर्यै अष्टोत्तरशतं तथा ॐ त्र्यम्बकंयजामहे० इदं शिवाय अष्टोत्तरशतं हुत्वा आवरणदेवताभ्यः लिङ्गतोभद्रदेवताभ्यश्चैकैकयाज्याहुत्वा होमशेषं समाप्य सपत्नीकमाचार्य वस्त्रालंकारचन्दनैः सम्पूज्य पयस्विनी गां सोपस्करां प्रतिमां च दद्यात्। यथाशक्ति ब्राह्मणान् सम्भोज्य दक्षिणाभिः प्रतोष्य दीनानाथांश्च संतर्प्य अच्छिद्रं वाचयित्वा विप्राज्ञया बन्धुभिः सह भुञ्जीत्। इति स्कन्दपुराणोक्तप्रदोषव्रतानुवर्णनम्।।

अन्य मतानुसार प्रदोष व्रतोद्यापन प्रयोग -

अथ प्रदोष व्रतोद्यापन प्रयोगः-

उद्यापनकर्ता अब्दान्ते शुक्लत्रयोदश्यां प्रातर्नित्यकृत्यं विधाय चतुर्द्वारं मण्डपं निर्माय तन्मध्ये पञ्चवर्णैर्लिङ्गतोभद्रं लिखित्वा तदुपरि श्वेतवस्त्रयुगान्विततताम्रमयं कलशं संस्थाप्य रजतवृषभसंस्थितौ सुवर्णनिर्मितौ श्रीउमामहेश्वरौ संस्थाप्य आसने उपविश्य दीप प्रज्वलय्य आचम्य

स्वस्तिवाचनं पठित्वा गणेशपूजनं कुर्यात्। तत्र संकल्पः- ॐ विष्णुः ३ अद्येहेत्यादि अमुकोऽहं करिष्यमाणप्रदोषव्रतोद्यापनकर्मणि निर्विघ्नतया कार्यसिद्धये श्रीभगवतो गणेशस्य यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये। इति संकल्प्य यथाविधि गणेशं संपूज्य सामान्यार्थ्यादि विशेषार्ध्यस्थापनान्तं कृत्वा प्रधानसंकल्पं कुर्यात् ॐ विष्णुः ३ अद्येहेत्यादि अमुकोऽहं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अमुककामनया वा अब्दपर्यन्तमाचरितस्य प्रदोषव्रतस्य साद्गुण्यार्थं साङ्गफलप्राप्तये उद्यापनं करिष्ये। तत्पूर्वाङ्गत्वेनेत्यादि ततस्त्रयोदशघटप्रतिग्रहार्थं आचार्यब्रह्मवरणान्तम् अनुतिष्ठेत्। तयैव रीत्या त्रयोदश ब्राह्मणान् वृणुयात्। अथाचार्यः लिङ्गतोभद्रमण्डलदेवतास्थापनपूजने कृत्वा कलशं संस्थापयेत्। ततो यजमानः कलशोपरि रजतवृषभस्थितौ सुवर्णनिर्मितप्रतिमायामुमामहेश्वरौ शिवरात्रिव्रतपूजाविधानेन पूजयेत् । तत्र प्रार्थनायां विशेषः-

भवाय भवनाथाय महादेवाय शूलिने ।
उग्राय चोग्रनाथाय शर्वाय शशिमौलिने ॥

होमकर्मणा यक्ष्ये। तत्र प्रजापतिमिन्द्रमनि सोमं चाज्येन, कश्यपात्रिभरद्वाजविश्वामित्रगौतमजमदग्निवसिष्ठा रुन्धतीः तिलाज्येनतत्तन्मन्त्रैः अष्टोत्तरसहस्रा हुतिभिः अष्टोत्तरशताहुतिभिर्वा, मण्डलदेवतास्थापनपूजनपक्षे ब्रह्मादिमण्डलदेवताः प्रत्येकमेकैकयाऽऽ-हुत्या नाममन्त्रेण आज्येन, ब्रह्मवरुणसहितादित्यादिनवग्रहान् तत्तन्मन्त्रेणाज्येन, अग्निं स्विष्टकृतं च हुतशेषेण, अग्निं, वायुं, सूर्य, अग्नीवरुणौ, अग्नीवरुणौ, अग्नि, वरुणं सवितारं विष्णुं मरुतः स्वर्कान्, वरुणं, प्रजापतिं चाज्येन यक्ष्ये। एतद्धोमद्रव्यं तत्तद्देवताभ्यो मया परित्यक्तम्। ॐ तत्सद्यथा दैवतमस्तु न मम।

अथाचार्यो ब्रह्मणान्वारब्ध आघाराज्यभागादि नवाहुत्यन्तं सर्वं होमं विधाय संस्रवप्राशनादि पूर्णाहुत्यन्तं कर्म कुर्यात् । तत उद्यापनकर्त्री होमसाङ्गतां सङ्कल्प्य आचार्यादिभ्यो यथांशं विभज्य दद्यात् । तत उत्तराङ्गत्वेन सप्तर्षीन् ग्रहांश्च सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

एते सप्तर्षयः सर्वे भक्तया सम्पूजिता मया ।
सर्वं पापं व्यपोहन्तु ज्ञानतोऽज्ञानतः कृतम्।
इमे ते ऋषयः सप्त सर्वपापप्रणाशनाः।।
अस्माकं सन्तु सततं समीहितफलप्रदाः।।

ब्रह्मा मुरारिरित्यादि च। ततो व्रतोद्यापनसाङ्गतासिद्धये गोदान विधिना गोदानं विधाय सत्नीकमाचार्य गन्धाक्षतपुष्पमालाङ्गुलीयकवासोभिः सम्पूज्य गां दत्त्वा प्रणमेत् ।

अथ क्षमापनम् -

न्यूनातिरिक्त कर्माणि मया यानि कृतानि च।

क्षमध्वं तानि सर्वाणि यतो यूयं क्षमाधनाः॥

अथ विसर्जनम् -

न्यूनातिरिक्तानि परिस्फुटानि यानीह कर्माणि मया कृतानि ।

क्षम्याणि चैतानि मम क्षमध्वं प्रयात तुष्टाः पुनरागमाय ॥

तोरणकदलीस्तम्भफलपुष्पमालापञ्चवर्णवितानशोभितं मण्डपं निमय तदुपरि पञ्चवर्ण वितानं बद्ध्वा तन्मध्ये सर्वतोभद्रमण्डलं बिलिरुप तदुपरि सप्तधान्यं संस्थाप्य पूर्वोक्तविधिना गणेशपूजनं कुर्यात्।

इस प्रकार से प्रदोष व्रत धारण विधि, पूजन एवं उद्यापन का वर्णन स्पष्ट है।

बोध प्रश्न –

1. प्रदोष व्रत में किस देवता का पूजन किया जाता है?

   क. विष्णु ख. साम्ब शिव ग. दुर्गा घ. गणेश
2. प्रदोष व्रत किस तिथि को धारण किया जाता है?

   क. पंचमी ख. दशमी ग. त्रयोदशी घ. पूर्णिमा
3. भौमवार का प्रदोष व्रत धारण का फल क्या है?

   क. स्त्री प्राप्ति ख. पुत्र प्राप्ति ग. आरोग्य प्राप्ति घ. ऋणमोचन
4. रवि वार को यदि प्रदोष पड़े तो क्या फल होता है?

   क. पुत्र प्राप्ति ख. सुख प्राप्ति ग. आरोक्य प्राप्ति घ. ऋणमोचन
5. शुक्रवार के प्रदोष व्रत का क्या सिद्धि है।

   क. स्त्री प्राप्ति ख. धन ग. मोक्ष घ. आरोग्य
6. दोनो पक्षों की त्रयोदशी कौन सी ग्रहण करनी चाहिये?

   क. पूर्वविद्धा ख. परविद्धा ग. दोनों घ. कोई नहीं

12.5 सारांश

प्रस्तुत अध्ययन के बाद आपने जान लिया है कि भारतीय वैदिक सनातन परम्परा में प्रत्येक व्रत का अपना विशेष महत्व होता है तथा मनुष्य कई प्रकार के कामनाओं को ध्यान में रखते हुए व्रत को धारण करता है। प्रस्तुत इकाई में 'प्रदोष व्रत' से सम्बन्धित व्रत कथा तथा उसके माहात्म्य का उल्लेख किया जा रहा है। प्रदोष व्रत वस्तुत: सन्तान प्राप्ति के लिए किया जाता है। जिन दम्पत्ति का कोई पुत्र नहीं होता वह भी इस व्रत को धारण करते हैं। इस व्रत में मुख्यत: महिलायें दिन भर उपवास रहकर भगवान साम्ब शिव की उपासना करती है। पुराणों में भी इस व्रत का उल्लेख मिलता है।

12.6 पारिभाषिक शब्दावली

दम्पत्ति – पति/पत्नी
ऋणमोचन – कर्ज से छूटकारा
कामनापूर्ति – कामना या इच्छा का पूरा होना
प्रदोष व्रत – त्रयोदशी तिथि को किया जाने वाला व्रत
आरोग्य – निरोगी

12.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. घ
4. ग
5. क
6. क

12.8 सहायक पाठ्यसामग्री

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरिज
निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन
व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

12.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

स्कन्दपुराण - गीता प्रेस

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरीज, वाराणसी

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन, वाराणसी

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

12.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. प्रदोष व्रत का परिचय दीजिये।
2. प्रदोष व्रत धारण विधि का शास्त्रीय उल्लेख कीजिये।
3. प्रदोष व्रत उद्यापन का वर्णन कीजिये।
4. धार्मिक दृष्टि से प्रदोष का क्या महत्व है।

इकाई -13 वटसावित्री व्रत एवं उद्यापन

इकाई की संरचना

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 वटसावित्री व्रत

13.4 वटसावित्री व्रत उद्यापन

13.5 सारांश

13.6 पारिभाषिक शब्दावली

13.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.8 सहायक पाठ्यसामग्री

13.9 निबन्धात्मक प्रश्न

13.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-301 के 'वटसावित्री व्रत एवं उद्यापन शीर्षक' से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने विविध स्तोत्रादि तथा एकादशी एवं प्रदोष व्रतोद्यापन का अध्ययन कर लिया है। अब आप लोकप्रचलित वटसावित्री व्रत तथा उसके उद्यापन की विधि को जानेंगे।

वटसावित्री व्रत का विधान पति के लम्बी आयु के लिए बतलायी गयी है। विवाहित स्त्री इस व्रत को धारण करती है। पौराणिक कथाओं के आधार पर सावित्री ने अपने पतिव्रता धर्म के बल पर यमराज से अपने पति के प्राणों को वापस ले आती है। तभी से इस व्रत का नाम 'वटसावित्री' पड़ा।

आइए हम सब वटसावित्री व्रत तथा उसके उद्यापन का अध्ययन करते हैं।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –

- वटसावित्री व्रत किसे कहते हैं।
- वटसावित्री व्रत धारण की विधि क्या है।
- वटसावित्री व्रत का माहात्म्य क्या है।
- लोक में इसका क्या महत्व है।
- वटसावित्री व्रतोद्यापन विधि क्या है।

13.3 वटसावित्री व्रत

वटसावित्री व्रत ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा या अमावस्या के दिन होता है। इस व्रत को धारण करने से स्त्री सौभाग्यवती होकर जीवनयापन करती है। पुराणों के अनुसार माता सावित्री ने अपनी पति के प्राण की रक्षा करते हुए यमराज से पति के प्राण को वापस लाने का कार्य करती है। तभी से इस व्रत का विधान बना। स्कन्दपुराण और भवष्यि पुराण में इस व्रत कथा का व्यापक उल्लेख मिलता है। आज के समय में भी जो सुहागिन स्त्री अपनी पति की रक्षा चाहती है, उसके चिरायु की कामना करती है, अथवा उसका सर्वविध उन्नति चाहिती है तो वह इस वटसावित्री व्रत को धारण करती है। यह व्रत मुख्यत: पत्नीयॉं अपने पतियों के लिए धारण करती है।

ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा या अमावस्या के दिन होता है इसमें पूर्णिमा और अमावस्या पूर्वविद्धा ग्रहण करनी चाहिये, क्योंकि, ब्रह्मवैवर्त में लिखा हुआ है कि, अमा और पूर्णिमा ये दोनों एक उत्तम सावित्री व्रतको छोडकर, हे मुने ! पूर्वविद्धा न करनी चाहिए। स्कंद और भविष्य पुराण में लिखा है कि, ज्येष्ठशुक्ल पूर्णिमा के दिन यह व्रत भक्तिपूर्वक पूरा किया जाना चाहिये। हे निष्पाप ! यह मैंने तुम्हें सुना भी दिया है। दक्षिण देश के वासी तो ऐसा करते भी हैं किन्तु पश्चिम आदि देश के वासी जन अमावस्या में इस व्रत को करते हैं। यही निर्णयामृतम भविष्य पुराण को लेकर कहा भी है कि, ज्येष्ठ अमावस के मूल में महासती सावित्री को तीन रात उपवास करके इस विधि से पूजे । यदि तीन-दिन उपवास करने की शक्ति न हो तो जितेन्द्रिय होकर त्रयोदशी को नक्त, चतुर्दशी को अयाचित तथा अमा में उपवास कर ले। हेमाद्रि आदि ने तो इसे भाद्रपद पूर्णिमा के दिन कहा है। उसका इस समय प्रचार नहीं है जब अठारह घटिका चतुर्दशी हो तब पराही ली जाती है, क्योंकि माधव ने कहा है कि सावित्री के व्रतमें पञ्चदशी तिथि पूर्व विद्धा लेनी चाहिये, यदि अठारह घडी चतुर्दशी हो तो पर दिन व्रत करे । वास्तव में देखो तो चतुर्दशी विद्धा का निषेध ही है, क्योंकि "चतुर्दशी अठारह घटिकाओं से अगिली तिथि को दूषित कर देती है" यह वाक्य लाघव से विधि रूप से ही प्रवृत्त होता है । यदि ऐसा न मानोगे तो सावित्री के व्रतमें अठारह नाडी के वेधदोष की कल्पना करने में दूसरे निषेधों की कल्पना करने का गौरव ही होगा ।

व्रटसावित्री व्रत विधि – भविष्यपुराण में लिखी है कि, ज्येष्ठ की त्रयोदशी के दिन दांतुन के समय दांतुन करे वह सीधा सफेद चार अंगुल का जाती का होना चाहिए इसके किये से व्रत के विघ्न दूर हो जाते हैं, इससे सदा महानदी झरना वा तडाग में स्नान करना चाहिए, विशेष करके पूर्णिमा में सरसों मृत्तिका और जल से स्नान करे, तिल और आंवलों की पानी मिली चूरी से सावधानी के साथ बालों को साफ करे, स्नान शौचपूर्वक बहुत से पानी से वट को सींचें, भक्तिपूर्वक सूत्र से वेष्टित करे, शुभ गन्ध पुष्प और अक्षतों से पूजे "वैवस्वत के लिए नमस्कार" इनसे प्रदक्षिणा करे, वृद्धि में, क्षय में, रोग में, ऋतुमती होने में, ब्राह्मण के हाथ से कराने में ही अच्छा होता है। इस व्रत को त्रयोदशी से आरंभ करके पूर्णिमा पर्य्यन्त करना चाहिए । यही स्कन्द और भविष्य पुराणमें लिखा हुआ है कि, ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी के प्रदोषकाल में तीन रात के व्रत के उद्देश्य से उस रात में स्थिर हो जाय, यहां से प्रारंभ करके अन्त में उपसंहार किया है कि, ज्येष्ठशुक्ला पूर्णिमा के दिन यह व्रत भक्तिपूर्वक पूरा किया, हे निष्पाप ! यह मैंने तुम्हें सुना दिया है। सधवा विधवा अपुत्रा अथवा सपुत्रा कोई भी हो, भर्ता की आयु की वृद्धि के लिये इस पवित्र व्रत को करे, ज्येष्ठपूर्णिमा के दिन पतिव्रता को चाहिये कि स्नान करके पवित्र होकर पीछे नियम करे । पूजा विधि-वट के समीप जा आचमन करे मास पक्ष आदि को कहे

पीछे बोले कि मेरे पति और पुत्रों की आयु आरोग्य प्राप्ति के लिये एवं जन्मजन्म में सौभाग्य की प्राप्ति के लिये सावित्रीव्रत में करती हूं। ऐसा संकल्प करना चाहिये । वट के मूल में ब्रह्मा, मध्य में जनार्दन, अग्रभाग पर शिवदेव तथा सावित्री वट के आश्रित है। हे वट ! मैं तेरी जड में सुधा के समान पानी लगाती हूं, भक्तिपूर्वक सूत्र से वेष्टित तथा गंध पुष्प और अक्षतों से पूजेंगी। वट और सांवित्री के लिये नमस्कार, इससे प्रदक्षिणा करनी चाहिये । इन मंत्रों से वट और सावित्री दोनों का भली-भांति पूजन कर दे। इस प्रकार बाहिर विधि करके घर आ जाय, घर में हलदी और चन्दन से वट लिखे वहां बैठकर सावधानी से पूजा करे, बट को पूजकर सावित्री की पूजा करे । तिथि आदि क कहकर मेरे प्रत्येक जन्म में अवैधव्य प्राप्ति के लिये एवं भर्ता की आयु आरोग्य और संपत्ति आदि कामना के लिये में सावित्रीव्रत करती हू ऐसा संकल्प करके नियम करे। नियम मंत्र-तीन रात लंघन करके चौथे दिन चन्द्रमाको अर्घ दे एवं तुझ सतीको पूजकर मिष्टान्नसे उत्तम ब्राह्मणोंको भोजन करा पीछे भोजन करूंगी । हे जगत् की धात्री ! इस मेरे कार्य्यको निविघ्न कर । पूजा-विधिपूर्वक भूमिका स्पर्श कर कलश स्थापित करे। पंच पल्लव, सात मृत्तिकाएँ सोना और यह कुंभमें डाले, उसके ऊपर वांसका पात्र रखे। उसके ऊपर पृथक् पृथक् सात घान रखे, उसके ऊपर वस्त्र बिछावे, उसपर तीस ढब्बूक भर बालूकी प्रतिमा ब्रह्माके साथ स्थापित करके पूजे, ब्रह्मा कमलके आसनपर बैठा हुआ चार मुँहका होना चाहिये। उसके बाँयें अंगमें गोदीमें बैठी हुई सावित्री बनानी चाहिये । सूर्य्यकी चमकती, धर्मको जाननेवाली एवं रुद्राक्ष हाथमें लियेहुए है, इससे ध्यान समर्पण करे, ब्रह्मा सहित लोकमाता सावित्री देवी तथा सत्यव्रत और यमसहित राजकुमारी सावित्री इनका आवाहन करती हूं, इससे आवाहन; हे ब्रह्मासहित लोक माता सावित्री तथा यम और सत्यवान् सहित राजकुमारी सावित्री ! पधारिये आसन ग्रहण करिये, इससे आसन; हे ब्रह्माकी प्यारी । हे धर्मराज ! हे सावित्रि ! में गंगाजीसे आपके पाद्यके लिये पानी लाई हूं तथा भक्तिसे देरही हू आप ग्रहण करिये, इससे पाद्य; मैं भक्तिसे लाई हू इस पानीमें फल पुष्प मिले हुए हैं, हे सत्यव्रतकी प्यारी सावित्री ! इस अर्घ्यको ग्रहण करिये, इससे अर्घ्य; चित्तको प्रसन्न करदेनेवाली सुगन्धि इसमें मिलीहुई है तथा स्वभावसेभी शीतल और सुगन्धित है । हे सावित्री ! ब्रह्माके साथ आचमन करिये, इससे आचमन; "पयो दधि घृतम्" इससे पंचामृत स्नान; मैं पानी लायी हूं । हे ब्रह्माकी प्यारी सावित्री ! तथा हे सत्यवान् और यमके साथ विराजती हुई राजकुमारी सावित्री ! मैं मन्दाकिनीका पानी लाई हूं इसे स्नान के लिये ग्रहण कलिये, इससे स्नान; कपासके बने हुए दो महीन कपडे हैं। हे सत्यवान्की प्यारी सावित्री ! मैं भक्तिके साथ दे रहीं हूं आप ग्रहण कलिये, इससे वस्त्र; हे सत्यव्रतकी पत्नि सावित्री ! हे साथ विराजी हुई ब्रह्मपत्नी सावित्री ! हे सुरेश्वर धर्मराज ! आप उपवीत ग्रहण करें, इससे उपवीत; मुक्ताहार सहित दिव्य भूषण आपके लिये,

हे शुभ लोचने ! आपके लिये तयार किये हैं, इससे भूषण; 'कुंकुमागरु' इससे सावित्रीके नाम पूर्वक चन्दन; 'अक्षताश्च' इससे अक्षत; हरिद्राकुकुंमम्' इससे सौभाग्य द्रव्य; 'माल्यादीनि सुगन्भीनि' इससे पुष्प समर्पण करना चाहिये | अंगपूजा-सावित्री के लिये नमस्कार चरणों को पूजती हूं ; प्रसावित्रीके, जंघोंकोपू०; कमल के पत्ते जैसे नेत्रवाली के० कटीको १०, भूतधारिणीके० उदरको पू० ; गायत्रीके कंठगो पू०; ब्रह्मा की प्यारी के० मुखको पू०; सौभाग्यके देनेवालीके० शिरको पूजती हूं ॥ ब्रह्मा और सत्यवान् की पूजा-धाता के लिये नमस्कार चरणों को पूजती हूं; विधाताके० जंघों को पू०; स्रष्टा के० ऊरू को पू०: प्रजापति के० मेढ़को पू०, परमेष्ठी के० कटीको पू०, अग्नि रूप के० नाभि को पू०; पद्मनाभके० हृदयको पू० ; वेधाके० बाहुओंको पू०; विधिके० कंठोंको पू०; हिरण्यगर्भके ० मुखको पू०; ब्रह्माके० शिरको पू० ; विष्णुके० सर्वांगको पूजती हूं; 'देवद्रुम' इससे धूप; 'चक्षुर्ते सर्वलोकनाम्' इससे दीप; 'अन्नं चतुविधम्' इससे नैवेद्य; मध्यमें पानीय, उत्तरापोशन; मुखप्रक्षालन; 'इदंफलम्' इससे फल; 'पूगीफलम्' इससे ताम्बूल; 'हिरण्यगर्भ' इससे दक्षिणा; हे ब्रह्माजीकी सदाही प्रियरहनेवाली प्रसावित्री सावित्री ! सभी द्विज मुनिगण तथा स्त्रियोंने आपको पूजा है, हे सुशोभने देवि ! तू तीनों सन्ध्याओंमें सभी प्राणियोंकी वन्दनीय है, मैंने आपकी यह पूजा की है इसे ग्रहण करें, आपके लिये नमस्कार हो, इससे पुष्पांजलि समर्पण करे। दे देवि ! आपके पहिले ओंकार रहता है आप सब दुखोंके मिटाने वाली हैं, हे वेदमातः ! तेरे लिये नमस्कार है। मुझे सौभाग्य दें, एक अर्घ्य इस मंत्रसे दे, हे शुचिव्रते पतिव्रते महाभागे ब्रह्माणि ! हे पतिकी मधुर बोलनेवाली ! हे दृढव्रते ! हे दृढमते ! अर्घ्य ग्रहणकर, इससे दूसरा अर्घ्य दे । हे सुव्रते ! मुझे सुहाग, पुत्र, पौत्र और सौख्य दे, इसे अर्घ्यको ग्रहण कर तेरे लिये नमस्कार है, इससे तीसरा अर्घ्य दे । आप सदा प्रियभाषिणी ब्रह्मगायत्री सावित्री हैं। इस कारण सत्यद्वारा दुखरूपी संसारसागरमें मेरी रक्षा करें। आप गौरी लक्ष्मी और शचीरूप हैं, चन्द्र मंडलमें प्रभाभी आपही बनी हुई हैं । जगत्को माताभी आपही हैं आप सुन्दर मुखवाली हैं मेरा उद्धार करें। जो मैंने सौ जन्ममें दुष्कृत किये थे वे सब भस्म होजायं मुझे सुहाग दीजिये। जैसे आप और सावित्रीका पतिके साथ वियोग नहीं होता इसी- तरह मेराभी किसी जन्ममें पतिसे वियोग न हो, यह प्रार्थना पूरीहुई । दिवसके बीत जानेपर सुवासिनियों कोपूजे, सिन्दूर, कुंकुम, ताम्बूल, पवित्र, सूर्प, भक्ष्य और भोज्य दे, हे मुनिसत्तम ! सावित्रीका माहात्म्य सुनना चाहिये सतियोंके प्राचीन पवित्र चरित्र सुनने चाहियें। इसके पीछे व्रत को पूजा सिद्धि के लिये ब्राह्मण को वायने का दान मैं करूंगा ऐसा संकल्प करके, फल वस्त्र और सौभाग्य द्रव्य बांसके पात्रमें रखकर ब्राह्मणके लिये देदे, कि, मैं तुझ श्रेष्ठ ब्राह्मण को व्रतपूर्ति के लिये सोने सहित यह वायना देता हूं इससेवायना दे । यह वटसावित्रीका पूजन समाप्त हुआ || कथा --सनत्कुमार बोले कि, हे शिव ! कोई कुलस्त्रियोंके करने

लायक व्रत जो सुहाग, महाभाग्य तथा पुत्रपौत्रोंका देनेवाला हो सो बताइये ? ॥ १॥ शिव बोले कि, मद्रदेशमें ज्ञानी धर्मा त्मावीर एवं वेद-वेदाङ्गोंका जाननेवाला एक अश्वपतिनामका राजा था ॥२॥ वह परम बलवान् सर्वैश्वर्य्यवाला होकरभी सन्तान रहित था। इस कारण सपत्नीक तप आराधना करने लगा ॥३॥ वह परम मनस्वी प्रसावित्री सावित्रीका जप करता था। एवं परम भक्तिके साथ सावित्रीकोही आहुति देता था ॥४॥ हे द्विजसत्तम ! इससे सावित्री देवी प्रसन्न हो, रूपधारण कर उसके दृष्टिगोचर हुई ॥५॥ भूः भुवः और स्वः के तेजवाली अक्ष सूत्र और कमण्डलु लियेहुए अथवा इन तीनों चीजें महाव्याहृतियों की उक्त तीनों लेकर तीनोंको दिखानेवाली थीं, राजाने उस जगद्वन्द्य सावित्रीको देखकर ॥ ६॥ प्रसन्न चित्तके साथ भक्तिभावसे प्रणाम किया, राजाको दण्डकी तरह भूमिपर पडा देखकर देवी प्रसन्न होकर बोली ॥७॥ कि, हे राजेन्द्र ! मैं परम प्रसन्न हूं वर मांगिये यह सुन राजा प्रसन्न हो बोला ॥ ८॥ कि, हे देवि ! मेरे कोई सन्तति नहीं है अच्छा पुत्र चाहता हूं। हे जगन्मये सावित्री ! मैं सिवा पुत्रके और कुछ नहीं माँगता ॥९॥ जो भूमिपर दुर्लभ पदार्थ है वह सब मेरे घरमें हैं। हे देवेशि ! आपकी कृपासे मेरे घरमें सब मौजूद है ॥ १०॥ राजाके इस प्रकार कहनेपर देवी राजासे बोली कि, हे राजन् ! तुम्हारे पुत्र नहीं है एक कन्या होजायगी ॥११॥ वह अपने और अपने पति दोनों के कुलोंका उद्धार करदेगी। जो मैरा नाम है हे राजशार्दूल ! उसकाभी वही नाम होगा ॥ १२ ॥ हे मनिश्रेष्ठ तना कहकर देवी अन्तर्धान होगई। राजा परम प्रसन्न होगया ॥१३॥ कुछ दिन बीतनेपर रानी गर्भवती होगई पूरे दिन बीत जानेपर प्रसव किया ॥ १४॥ सावित्री जपी थी, प्रसन्न हो सावित्रीने वर दिया था। इस कारण नवजात कन्याका नाम सावित्री ही रखागया ॥ १५॥ वह कमलनयनी देवी जैसी चमकती थी। जैसे अम्बरमें प्रतिदिन चाँदकी कलाएँ बढती हैं, उसी तरह बढती थी ॥१६॥ वह ब्रह्माकी सावित्री थी, बडे बडे नयनोंवाली लक्ष्मी होथी, हेमगर्भकीसी उसकी चमक देखकर राजाको बडी चिन्ता हुई ||१७|| उसके समान कोई सुन्दर नहीं था। उसके तेजके आगे उसके मांगनेका कोई साहस नहीं करता था। उसके रूप और तेजके मारे सब राजा रुकगये थे ||१८|| एक दिन राजाने बुलाकर उस कमलनयनी लडकीसे कहा कि, हे पुत्रिके ! तेरे विवाहका समय आगया, पर तुझे कोई माँग नहीं रहा है ॥१९॥ जो तुझे अच्छा गुणी वर दीखे उसे तू आप व्याह ले, जिसके परिवार और शोलसे तुझे आनन्द मिले ||२०|| ऐसा कहकर बूढे मंत्रियोंके साथ वस्त्र अलंकार और धनके साथ भेजदिया। एकदिन आप एक क्षणमात्रही बैठा था कि, इतनेमें वहां अपने आप नारदजी आ उपस्थित हुए ॥२१-२२॥ राजाने अर्घ्यपाद्यसे मुनिराजका पूजन करके आसनपर विराजमान किया ||२३|| पूजा कृत्य समाप्त करके

मुनिराजसे राजा बोला कि, हे नारद आपके दर्शनसे में पवित्र होगया हूं। आपने मुझे पवित्र कर दिया ॥ २४ ॥ राजा यह कह ही रहे थे कि, उनही बुड्ढे मंत्रियोंके साथ आश्रमसे कमलनयनी सावित्री आ उपस्थित हुई ॥२५॥ पहिले उसने पिताकीचरण वन्दना की, पीछे मुनिराजको प्रणाम किया, नारदजी उसे देखकर बोले ॥२६॥ कि, हे राजन् ! देवगर्भकोसी चमकवाली सुन्दरी विवाह योग्य कन्याको किसी योग्य वरके लिए क्यों नहीं दे रहे हो ? ||२७|| मुनिराजके कहतेही राजाने उत्तर दिया कि, हे मुनिसत्तम ! कि, मैंने इसे इसी लिए भेजा था ||२८|| अब यह वापिस आगई है। इसने अपना पति आपही चुन लिया है, इससे पूछ लीजिए ॥२९॥ मुनिके पूछनेपर सावित्रीने उत्तर दिया कि, हे मुनिराज ! आश्रम में द्युमत्सेनका पुत्र सत्यवान् है ॥ ३०॥ हे विप्र ! मैंने उसे पतिके लिए चुना है, नारद बोले कि, हे सुव्रत महाराज ! आपकी पुत्रीने बडी बुरी बात की ॥३१॥ इसने बिना जाने वर लिया यद्यपि वह गुणवान् है, प्रसिद्ध है, उसके मां बाप सत्य बोलते हैं ॥ ३२॥ वह आप भी सत्यही बोलता है, इस कारण उसे सत्यवान् कहते हैं, उसे घोडे प्यारे लगते हैं वह मिट्टीके घोडोंसे ही खेल करता है ||३३|| चित्र भी घोडेके ही काढता है। इस कारण उसे चित्राश्व भी कहते हैं, वह रूपवान है, गुणवान् है, सभी शास्त्रोंका ज्ञाता है ||३४|| उसके बराबर कोई मनुष्य नहीं है, वह सब गुणोंसे संपन्न है। जैसे कि, रत्नोंसे महासमुद्र रहा करता है ॥ ३५॥ पर एकही उसका दोष सब गुणोंको ढक देता है कि, एक सालमें उसकी आयु नष्ट होजायगी। जिससे वह देहत्याग कर देगा ॥३६॥ यह सुन, अश्वपति बोला कि, हे सावित्री ! तेरा कल्याण हो किसी दूसरे वरको वर ले जा, हे शुभलोचने ! यही तेरे विवाहका समय है ॥ ३७॥ हे तात ! में मनसे भी किंसीको नहीं चाहती जो मैंने वरा है, वही मेरा पति होगा ॥३८॥ पहिले मनसे विचारकर पीछे कहे, चाहे शुभ हो, वा अशुभ हो, पीछे करता है। इस कारण मैं मनसे भी किसी दूसरे पुरुषको नहीं वर सकती ॥३९॥ राजा और पंडित एक बारही कहा करते हैं, एकही बार कन्या दी जाती है, सज्जनोंकी ये तोनों बातें एक बारही होती हैं ॥४०॥ यह जानकर मेरी बुद्धि किसी तरह भी विचलित नहीं होगी। सगुण, निर्गुण, मूर्ख, पंडित ॥४१॥ दीर्घायु अथवा अल्पायु चाहे कुछ भी हो पर वही मेरा पति होगा। चाहे इन्द्रही क्यों न मिले पर मैं दूसरेको न वरूंगी ॥४२॥ यह जानकर आप जो करना चाहो, सो कीजिए कहिए। नारदजी बोले कि, हे राजेन्द्र ! सत्यवान्के प्रति सावित्रीकी स्थिरमति है ॥४३॥ आप इसका विवाह करके इसे शीघ्रही पतिके साथ कर दें शिवजी बोले कि, स्थिर निश्चल बुद्धि वाली अचल उसे जानकर ॥४४॥ राजा धन और सावित्रीको साथ लेकर वनमें द्युमत्सेनके पास पहुंचा एवं मिला साथ कुछ अनुयायी और बुड्ढे मंत्री थे नारद् तो वहीं अन्तर्धान होगये वह वृद्ध एवं अंधा था पेडकी जडमें बैठा हुआ था ॥४५-४७॥ सावित्री और अश्वपतिने उसका चरण स्पर्श किया, वे अपना नाम बोलकर समीप खडे होगये ॥४८॥ द्युमत्सेनने आने का कारण पूछा,

एवं वनके मूल फलोंसे अर्घ्यदान दिया ॥४९॥ जब अश्वपतिसे कुशल समाचार पूछे तब अश्वपतिने कहा कि, आपके दर्शनमात्रसे मेरा कुशल होगया है ॥५०॥ मेरी सावित्री नमाकी पुत्री आपके पुत्रको चाहती है, यह निष्पाप आपके पुत्रको अपना पति बनाले ॥५१॥ इसने अपनेसे आपके पुत्रको अपना पति बनाया है। मेरा आपका संबन्ध हो, यह में चाहता हूं ॥५२॥ द्युमत्सेन बोला कि, मैं बूढा और नेत्र हीन हूँ, हे राजन् ! मेरा भोजन फल मूल है, राज्यसे च्युत हूं, मेरा पुत्रभी बनकी वस्तुओंसे ही निर्वाह करता है ॥ ५३॥ आपकी पुत्री वनके कष्टों को कैसे उठावेगी ? यह दुःखोंको क्या जाने ? इस कारण में नहीं चाहता ॥५४॥ अश्वपति बोले कि, मेरी पुत्रीने यह सब जान इसे वरा है, हे मानके देनेवाले ! आपके पुत्रका सहवास ॥५५॥ इसे स्वर्गके समान होगा, इसमें सन्देह नहीं है। राजाके ऐसा कहनेपर उस राजर्षिने ॥५६॥ कहा कि, अच्छी बात है, पोछे उन दोनोंका विवाह करा दिया एवं अनेक प्रकारका धन दिया, पीछे ॥५७|| अश्वपति द्युमत्सेनका अभिवादनकरके अपनी राजधानी चला आया । सत्यवान को पा सावित्री उसी तरह प्रसन्न हुई, जैसे कि, इन्द्रको पाकर शची प्रसन्न होती है ॥५८॥ हे ब्रह्मर्षे ! सत्यवान् भी उसे पत्नीके रूपमें पा परम प्रसन्न हुआ, वह वनमें इस प्रकार विहार करता था, जैसे नन्दनवनमें शचीके साथ इन्द्र विहार किया करता है ॥ ५९॥ सावित्रीके मनमें नारद के वचन समाये हुए थे, इस कारण उसने इस वटसावित्री व्रतका नियम लिया ॥६०॥ वह दिनोंको गिनती हुई सत्यवान्का समय समीप जानकर आनन्द न ले सकी ॥६१॥ भर्ता के मरनेका दिन जानकर इस तीन दिनके व्रतमें दिनरात स्थिर होगई ||६२|| तीन रात पूरी करके पितर देवताओंका तर्पण किया, सास श्वशुरोंके चरणोंमें वन्दना की । सुव्रत सत्यवान् एक मजबूत कुठार हाथ में लेकर ॥६३॥ वन जाने के लिये तयार हुआ, उससे सावित्री बोली कि, ॥६४। आप इस समय वन न जायँ, यदि जाना ही चाहते हैं, तो मुझे साथ लेकर चलें ॥६५॥ इस आश्रममें आज एक वर्ष होगया मैंने आजतक वन नहीं देखा, मैं वन देखना चाहती हूं। हे स्वामिन् ! कृपा करिये ॥६६॥ सत्यवान् बोला कि, हे सुश्रोणि ! मैं स्वतंत्र नहीं हूं, मेंरे माबापोंसे पूछ, यदि ये भेजदें तो हे सुन्दर मन्द हास करनेवाली ! मेंरे साथ चली आ ॥६७॥ पतिके ऐसा कहनेपर सासु श्वशुरोंके चरणोंमें प्रणाम करके बोली ॥६८॥ कि, मैं वन देखना चाहती हूं, मुझे आज्ञा मिलनी चाहिये, मेरा मन भर्ताके साथ वन देखनेको जल्दी कर रहा है ॥६९। यह सुन द्युमत्सेन बोला कि, हे कल्याणि ! आपने व्रत किया है, उसको पारणा करिये ॥७०। इसके पीछे वन चली जाना । सावित्री बोली कि, मैंने यह नियमकर लिया है कि, चन्द्रोदयके पीछे भोजन करूंगी इस समय तो मेरी पतिके साथ बन देखनेकी इच्छा है ॥७१॥ ॥७२॥ मुझे हे राजन् ! पतिके साथ कोई कष्ट न होगा, यह सुन द्युमत्सेनने॥ उत्तर दिया कि ॥७३॥ जो आपको अच्छा लगे उसे प्रसन्नताके साथ करें। सावित्री सासु ससुरकी चरण बन्दना कर ॥७४॥ सत्यव्रतके साथ वन चलीगई पतिके

कालका वक्त था। वे उसेही देखती ॥७५॥ वनमें फूल खिलेहुए थे, सुन्दर हिरण इधर उधर भगे फिरते थे, वह सत्यवान्से मृगों और वृक्षकों नाम पूछती मृग समूहोंको देखती हुई जाती थीं पर हृदय काँप रहा था सत्यवान्ने शीघ्रताके साथ फल तोडे, काठ इकट्ठा करके उसकी मजबूत गाँठ बाँधी, वृक्षका अवलंब लेकर कठिनको पूरा किया ॥७६-७८॥ साध्वी महासती सावित्री वटवृक्षके मूलमें बैठी हुई थी, काठका बोझ उठाते समय सत्यवान्के सिर दर्द होगया ॥७९॥ उससे बड़ी भारी ग्लानि उत्पन्न हुई। शरीर कांपने लगा, वृक्षके पास आकर सावित्रीसे बोला ॥८०॥ कि, मेरा शरीर कांप रहा है, मेरे शिरमें दर्द है। हे कल्याणि ! मेरे शिरमें शूलकेसे कांटे चुभ रहे हैं ॥८१॥ हे सुव्रते सुश्रोणि ! मैं तेरी गोदमें सोना चाहता हूं, वह अपने पर भरोसा रखनेवाली उसके मौतके समयको जानती थी ॥८२॥ जान गई कि, मौत आ पहुंची, वहीं बैठगई। सत्यवान् भी उसकी गोदीमें शिर रखकर सोगया ||८३|| उस समय वहां एक कृष्ण पिंगल पुरुष आ उपस्थित हुआ, उसका शरीर तेजसे प्रकाशमान हो रहा था। सावित्रीसे कहने लगा कि, इसे छोड दे ॥८४॥ वाक्यका मतलब समझनेवाली सावित्री उससे बोली कि, आप दुनियांको डरा देनेवाले कौन है ? मुझे कोई भी पुरुष नहीं डरा सकता ||८५|| यह सुन लोकभयंकर यम बोला कि, हे वरारोहे ! तेरे पतिकी आयु समाप्त होगई ॥८६॥ में इसे बांधकर लेजाऊँ, यह मेरी इच्छा है। यह सुन सावित्री बोली कि, मैंने तो यह सुना है कि, आपके दूत लेनेको आते हैं ॥८७॥ हे प्रभो ! आप इसे लेनेके लिये कैसे आये ? यम अपनी चेष्टा कहनेलगा ॥८८॥ कि, यह सत्यवान् धर्मात्मा रूपवान और गुणोंका खजाना है ॥८९॥ वह मेरे पुरूषोंका लेजाने लायक नहीं है। इस कारण मैं स्वयम् ही आगया हूं। इसके पीछे सत्यवान्के शरीरसे पाशोंसे बँधे इस कारणवशमें आये हुए अंगुष्टमात्र पुरुषको यमने बलपूर्वक खींच लिया । ९०॥ ॥९१। इसके पीछे निष्प्राण निःश्वास, प्रभारहित, बुरा चेष्टा रहित शरीर होगया, यम उसे बाँधकर दक्षिण दिशाको चला दिया ||९२|| दुखी सावित्रीभी यमके पीछे चली, क्यों कि, वह नियम और व्रतोंसे सिद्ध पदवी पाचुकी थी दूसरे महाभाग पतिव्रता थी ॥९३॥ यम उसे पीछे आतीहुई देखकर बोला कि, जा इसका अन्त्येष्टि संस्कार कर, तूने पतिके प्रति जो अपना कर्तव्य या वह पूरा किया, जहांतक जाया जासकता है तहांतक गई ॥९४॥ सावित्री बोली कि, जहां जो मेरे पतिको लेजाय वा जहां मेरा पति स्वयं जाय, में भी वहां जाऊं यह सनातन धर्म है ॥९५॥ तप, गुरुभक्ति पतिप्रेम और आपकी कृपासे में कहीं रुक नहीं सकती ॥९६॥ तत्वके जाननेवाले विद्वानोंने सात पॅडपर मित्रता कही है। मैं उस मैत्रीको दृष्टिमें रख कर कुछ कहती हूं सुन ॥ ९७॥ लोलुप वनमें रहकर धर्मका आचरण नहीं करसकते, न ब्रह्मचारी और संन्यासीही हो सकते हैं, विज्ञानके लिये धर्मको कारण कहा करते हैं, इस कारण सज्जन धर्मकोही प्रधान मानते हैं ॥ ९८॥ सज्जनोंके माने हुए एकही धर्मसे हम दोनों उस मार्गको पागये हैं इस कारण में

गुरुकुल वास और सन्यास नहीं चाहती, इस गार्हस्थ्य धर्मकोही सज्जन प्रधान कहा करते हैं ॥ ९९ ॥ मैं यम बोले कि, आपके इन वाक्योंके एक एक वर्ण तथा स्वरोंमें व्यंग्य पदार्थ भराहुआ है, मैं इससे परम प्रसन्न हुआ हूं, बिना इसके जीवनदानके जो तेरी राजी हो सो वर माँग ले, के अनिन्दिते ! जो मांगेगी सोई दूंगा॥ १०० ॥ सावित्री बोली कि, मेरा श्वशुर स्वराज्यसे च्युत होकर वनवासी हुआ आश्रम में रहरहा है, उसके नेत्र रहे नहीं हैं, वह आपकी कृपासे नेत्र पाकर बलवान् होजाय एवं सूर्य्यके समान तेजस्वी हो ॥ १॥ यम बोला कि, हे अनिन्दिते ! जो तू माँगती है वही मैं देता हूं, जो तू चाहती है वही होगा, आपको मार्गका श्रम देख रहा हूं, आप अपने आश्रम पधारें ॥२॥ सावित्री बोली कि, पतिके समीप मुझे परिश्रमही क्या है, जहाँ मेरा पति है वहीं में हूं, आप जहां मेरे पतिको ले चलेंगे वहीं में चलूंगी इसमें मुझे कुछभी परिश्रम नहीं होगा, आप मेरी बात जान लें ||३|| सज्जनोंके साथकी सबही इच्छा किया करते हैं, इससे अगाडी मित्र ऐसा कहते हैं, सज्जनोंका साथ निष्फल नहीं होता, इस कारण सदाही सज्जनोंका साथ करना चाहिये ॥४॥ यम बोला कि, मेरे मनके अनुकूल बुद्धि और बलका बढानेवाला हितकारी आपका वचन है, हे भामिनि ! विना सत्यवान्के जीवनके दूसरा जो चाहे सो वर मांगले ॥५॥ सावित्री बोली कि, मेरे श्वशुरका छोना हुआ राज्य फिर उन्हें मिलजाय तथा मेरा श्वशुर, अपने धर्मकाभीत्याग न करे, यह मेरा दूसरा वरदान है ||६|| यम बोला कि, आपका श्वशुर थोडेही समयमें अपना राज्य पाजायगा वह न कभी धर्मही छोडेगा जो चाहती थी वह तुझे मिलगया, अब अपने घर जा, व्यर्थ श्रम क्यों करती है ॥ ७॥ सावित्री बोली आपने प्रजाको नियममें बाँध रखा, है, इस कारण आपको यम कहते हैं यह में जानती हूं, जो मैं कहती हूं उस बातको आप सुनें ॥८॥ मन बाणी अन्तःकरणसे किसीके साथ वैर न करना, दान देना, आग्रहका परित्याग करना यह सज्जनोंका सनातन धर्म है ॥९॥ ऐसाही यह लोक है, इसमें शक्तिशाली सज्जन मनुष्य वैरियों पर भी दया करते देखे जाते हैं ॥ ११० ॥ यम बोला—जैसे प्यासेको पानी, उसी तरह आपके वचन मुझे लगते हैं, सत्यवान्को जीवनके विना जो अच्छा लगे सो माँग ले ॥११॥ सावित्री बोली कि, मेरे निपुत्री पिताके सौ औरस कुलवर्धक पुत्र हों, यह मेरा तीसरा वर है ॥ १२ ॥ यह सुन यम बोले कि, तुम्हारे पिताके कुल वर्षक शुभ लक्षणवाले सौ पुत्र हों, हे नृपनन्दिनि ! जो चाहती थी वह मिलगया अब वापिस जा, क्योंकि, बहुत दूर आगई हैं ॥१३। सावित्री बोली कि, पतिके सामने तो मुझे कुछभी दूर नहीं है, क्योंकि, मेरा मन तो पतिके पास बहुत दूरतक पहुंचता है चलते चलते मुझे कुछ बात याद आगई है उसेभी सुन लीजिये ॥१४॥ आप आदित्यके प्रतापी पुत्र हैं, इस कारण आपको विद्वान् पुरुष वैवस्वत कहते हैं, आपका वर्त्ताव प्रजाके साथ समान भावसे है, इस कारण आपको धर्मराज कहते हैं ॥१५॥ जैसा अपनेपरभी विश्वास नहीं होता जैसा कि, सज्जनोंमें हुआ करता है, इस कारण सज्जनोंपर सबका

प्रेम होता है ||१६|| सब प्राणी प्रेमसे विश्वास करते हैं इस कारण सज्जनोंमें विश्वास होजाता है ॥ १७॥ यम बोला कि, हे अंगने ! जो तुमने सुनाया है ऐसा मैंने कभी नहीं सुना, मैं इस तेरे वचनसे प्रसन्न हुआ हूं विना इसके जीवनके जो चाहे सो माँग ले ॥१८॥ सावित्री बोली कि, मेरे पुत्र सत्यवान्सेही औरस पुत्र हो, दोनोंसे बलवीर्य्यशाली सौ सुतोंका परिवार हो यह में चौथा वर मांगती हुं ॥१९॥ यम बोला कि, हे अबले ! तुझसे और सत्यवान्से सौ औरस पुत्रोंका प्रीति र कुल होगा, आप दूर आगई हैं वापिस जायं, क्यों परिश्रम करती है ? ॥१२०॥ सावित्री बोली कि, सज्जनोंकी सदा धर्ममें ही वृद्धि रहती है; न तो उसमें सज्जन दुखी होते हैं एवं न सीदते ही हैं, सज्जनोंका सज्जनोंसे साथ कभी व्यर्थ नहीं होता न उन्हें उनसे भय ही होता है॥ २१॥ सन्तही सत्यसे सूर्यको चला रहे है, तपसे पृथ्वीको धारण कर रहे हैं, हे राजन् ! सत्यही भूत भव्यकी गति हैं, सज्जनोंकेबीच सज्जन दुखी नहीं होते ||२२|| सज्जनोंका यह सदाकाही व्यवहार है, सज्जन दूसरेका प्रयोजन करते हुए परस्परकी अपेक्षा नहीं रखते ||२३|| सज्जनोंकी कृपा कभी व्यर्थ नहीं जाती, न उनके सायमें धनही नष्ट होता है न मानही जाता है, ये बात सज्जनोंमें सदा रहती हैं इस कारण सज्जन रक्षक होते हैं ॥ २४ ॥ यम बोला कि, ज्यों ज्यों तू मेरे मनको अच्छे लगनेवाले अर्थयुक्त सुन्दर धर्मानुकूल वचन बोलती है त्यों त्यों मेरी तुझमें अधिकाधिक भक्ति होती जाती है, अतः हे पतिव्रते ! और वर मांग ||२५|| सावित्री बोली कि, मैंने आपसे पुत्र दाम्पत्य योगके विनाके नहीं मांगे हैं, न मैंने यही मांगा है कि, किसी दूसरी रीतिसे पुत्र होजाँय इस कारण आप मुझे यही वरदान दें कि, मेरा पतिजी जाय, क्योंकि, पतिके विना मैं मरी हुई हूं ॥ २६ ॥ पतिके विना की गई सुख, स्वर्ग, श्री और जीवन कुछभी नहीं चाहती ||२७|| आपने मुझे सौ पुत्रोंका वर दिया है, आपही मेरे पतिका हरण करते हैं तब कैसे आपके वाक्य सत्य होंगे ? मैं वर मांगती हूंकि, सत्यवान्जी जायँ, इसके जीनेपर आपकेही वचन सत्य होंगे ॥२८॥ मार्कण्डेयजी बोले कि, यमने ऐसाही हो, यह कहकर उसे पाशसे छोड दिया, पीछे प्रसन्न होकर बोला कि, हे कुलनन्दिनि ! मैंने आपके पतिको छोड़ दिया है। यह निरोग और सिद्धार्थ होगा आप इसे लेजायें ॥ २९॥ ॥१३०|| यह आपके साथ चार सौ वर्षको आयुको प्राप्त होगा, सावित्री वटके पास चली आई सत्यवान्का शिर गोदीमें रखकर बैठ गई ॥३१॥ हे ब्रह्मन् ! सत्यवान् चैतन्य होकर बोला कि, हे वरारोहे ! हे भामिनि ! मैंने अभी एक स्वप्न देखा ॥३२॥ इसके बाद जो हुआ था वह सब सत्यवान्ने कह सुनाया, सावित्रीनेभी जो यमसे बात हुई थीं वे सब कह सुनाई || ३३|| सायंकाल होतेही पुत्रके आगमनकी प्रतीक्षा करनेवाला राजा द्युमत्सेन इधर उधर भागने लगा ॥३४॥ पुत्रके देखनेको इच्छासे एक आश्रमसे दूसरे आश्रममें जानेलगा और रो रो कर कहने लगा कि, हम दोनों अन्धोंकी लकडी चित्राश्व कहाँ चला गया ? एवं पुत्रपुत्र वारंवार कहकर दुःखी होनेलगा॥१३६॥ राजाको अचानक

आँखें खुल गई, इस आश्चर्य्यको देखकर आश्रमवासी द्विजवर्य्य ॥३७॥ कि, हे राजन् ! आपके तपसे आपको नेत्र मिलगये हैं, हे राजन् ! नेत्र प्राप्तिने बता दिया है कि ॥३८॥ अभी आपको पुत्र मिल जाता है। शिव बोले कि, जबतक वे तपस्वी द्विजवर्थ्य आपसमें ये बातें बतला रहे थे ॥३९॥ तबतक सावित्रीके साथ सत्यवान् आ उपस्थित हुआ, सभी ब्राह्मणों और मा बापोंके लिए नमस्कार की ॥१४०॥ सावित्रीने सास ससुर दोनोंकी चरणवन्दना की, उस समयमुनिगण पूछनेलगे ॥४१॥ कि हे वरवणनि ! हे शुभानने सावित्री ! आप अपने वृद्ध ससुरके नेत्रोंकी प्राप्तिका कारण जानती हो ? ॥१३५॥ कहने लगे॥४२॥ सावित्री बोली कि, हे श्रेष्ठ मुनियो ! में चक्षुप्राप्ति के वास्तविक कारणको नहीं जानती, मेरे पति चिरकालके लिए सोगये थे इस कारण देर होगई ॥४३॥ सत्यवान् बोला कि, हे विप्रो ! इस सावित्रीके प्रभावसे सब होगया और कोई कारण नहीं दीखता, यह सब सावित्रीके तपकाही फल है ॥४४॥ मैंने सावित्रीके व्रतकाही यह माहात्म्य देखा है। शिवजी कहने लगे कि, सत्यवान् यह कहही रहा था कि, इतनेंमें उसकी राजधानीके प्रधान पुरुष आकर बोले कि, जिस दुष्ट मंत्रीने आपका राज्य बल पूर्वक छीन लिया था ॥१४५-१४६॥ वह भी अपने मंत्रीके हाथसे मारागया इसकारण हम आपके पासआये हैं कि, हे राज शार्दूल ! अपने राज्यकी पालन करें चलें ॥४७॥ हे राजेन्द्र ! आप मंत्री और पुरोहितोंके द्वारा राज्याभिषेक करायें, राजा यह सुन उन लोगोंके साथ अपने नगरमें पहुंचा ॥४८॥ अपने कुलक्रमानुगत राज्यको पाकर परम प्रसन्न हुआ, सावित्री सत्यवान भी परम प्रसन्न हुए ॥४९॥ इसी व्रतके माहात्म्यसे उसने सौ बलवान् पुत्र पैदा किये एवं उसके पिताके ही परम बलशाली सौपुत्र उत्पन्न हुए, जैसा कि उसने यमराजसे वरपाया था। हे ब्रह्मन् ! यह हमने इस व्रतका उत्तम माहात्म्य सुना दिया ||१५०-१५१। इस व्रतके प्रभाव से बीती आयुका पति भी जीवित रहा आता है, इस सौभाग्य देनेवाले व्रतको सभी स्त्रियोंको करना चाहिये॥५२॥ यह सुन सनत्कुमार बोले कि, हे देवेश त्र्यंबक ! इस व्रतका विधान बताइये कि, हे पुरसूदन ! स्त्रियोंको यह व्रत किस विधिसे करना चाहिये ? ॥ ५३॥ ईश्वर बोले कि, हे मानद ! एक भक्तसे वा नक्ताहारसे या मुक्तिके त्यागसे एक साल नियम करके ॥५४॥ तीन दिन लंघन करे पवित्र चौथे दिनमें चन्द्रको अर्घ्यदे, सुवासिनियोंको पूजे ॥५५॥ सावित्री प्रसावित्रीको गन्ध पुष्पोंसे पूजे, मिथुनोंको शक्तिके अनुसार भोजन कराकर ॥५६॥ सुखपूर्वक भोजन करे। व्रत करतीवार ऐसा संकल्प करे कि, हे जगत्को धात्रि ! कथित कामोंको करके मैं भोजन करूंगी। हे शुभे ! मेरे उन कामोंको निर्विघ्न पूरे करिये। प्रतिदिन न्यग्रोधमें पानी लगावे ॥५७॥ एक वांसका पात्र बना उसमें एक प्रस्थ वालू भर दे, हे द्विजोत्तम ! सप्त धान्याका पात्र भी एक प्रस्थका होना चाहिये ॥५८॥ उसे फिर दो वस्त्रोंसे वेष्टित करदे ॥५९॥ बत्तीस ढब्बूक भरका एक प्रस्थ होता है। उसपर ब्रह्माके साथ सावित्री देवीको विराजमान करे, सोनेके

सावित्री सत्यवान् बनावे ॥१६०॥ पिटक और कुठार चाँदीके हो, ब्रह्माकी प्यारी सावित्री देवीको ऋतुफलोंसे पूजे ॥ ६१ ॥ हरिद्रासे रंगे हुए कंठसूत्रोंसे पूजे, सतियोंके कंठसूत्र तीन दिनतक देता रहे ॥६२॥ प्रति दिन पक्कान्न देना चाहिये, हे मुनिसत्तम । सावित्रीका माहात्म्य सुनना चाहिये, पुराण और सतियोंके चरित्र सुनने चाहियें, हे सुव्रत ! हमेशा इस मंत्रसे पूजना चाहिये ||६३|| || ६४|| हे सदा ब्रह्माजीकी प्यारी रहनेवाली प्रसावित्री सावित्री ! आप द्विजों और मुनिगणोंसे पूजी जाती है आपके लियेही हवन होता है ॥६५॥ हे जगन्मयेदेवि ! तीनों सन्ध्याओंमें तुझे सब प्राणी पूजते हैं, मेरी इस पूजाको ग्रहण कर, तेरे लिये नमस्कार है ॥६६॥ हे शोभने ! आपके 'सावित्री और प्रसावित्री ' ये दो रूप हैं। हे देवि ! आप तीनों सन्ध्याओं तथा तीनों जगतोंमें स्थित हैं ॥६७। तीनों लोकोंमें तुही श्रेष्ठ है ! हे महेश्वरी ! तू त्रेता अग्निमें भी है, तू सब लोकमें व्याप्त है। इस कारण मेरी सदा सर्वत्र रक्षा कर ॥६८॥ हे शुभे ! मुझे रूप, यश और सौभाग्य दे, तथा प्रत्येक जन्ममें धन और पुत्र दे ||६९|| हे सुरश्वेरी ! जैसे आपका आपके पति के साथ कभी वियोग नहीं होता, उसी तरह हे महाभागे ! मेरा भी किसी जन्ममें पति से वियोग न हो ॥ १७०॥ कमल के आसन पर बैठी हुई देवी को इस प्रकार पूजकर तीन दिन पूरे करके चौथे दिन ॥७१॥ हे द्विजोत्तम ! सोलह मिथुनों को वस्त्रदान और भूषणों से पूजे ॥७२॥ सुयोग्य सपत्नीक आचार्य्य का पूजन करके उसके लिये सोने को सावित्री के साथ संकल्प किये हुए सब वस्तु जात को ||७३|| इस मन्त्र से देना चाहिये, वह सावित्री कल्प का ज्ञाता हो उसे प्रणाम करके दे ॥७४॥ सावित्री ही जगत की माता पिता है। हे ब्राह्मण ! मेरी दी हुई सावित्री को ग्रहण कर ॥७५॥ मैं किसी जन्म में विधवा न होऊँ वह मरकर ब्रह्म के लोकमें पति के साथ रहती है, चिर काल तक उत्तम भोगों को भोगती है ॥७६॥ यह वटसावित्री को कथा पूरी हुई।

साल भ रमें होने वाला व्रत-हेमाद्रि ने भविष्य पुराण को लेकर लिखा है। धर्मराज से वर लेने के पीछे सावित्री बोली कि, हे देव ! जो स्त्री मेरे व्रत को भक्ति से करे, वह साध्वी पति के साथ स्वर्ग भोगे। धर्मराज बोले कि, गौरी, मुग्धा, प्रमुग्धा, अपुत्रा और पतिरहिता, सधवा, सपुत्रा जो भी कोई स्त्री ही इस पवित्र व्रत को करे, ज्येष्ठ की पूर्णिमा के दिन जो पतिव्रता स्नान कर पवित्र हो बहुत से पानी से वट को सींचे भक्तिपूर्वक अच्छे गन्ध पुष्प और अक्षतोंसे पूज सूत्र लपेटे, तथा "वैवस्वत यम के लिये नमस्कार" इससे प्रदक्षिणा करे, रात में नक्त करे, एक वर्ष तक एकाग्र होकर करे, प्रतिपक्ष वट की पूजा करे। इसी विधान से इस उत्तम व्रत को करना चाहिये। इससे सब मनोरथो की प्राप्ति होकर अन्त में रुद्र के साथ प्रसन्न होती है। यह श्रीस्कन्दपुराण का कहा हुआ वटसावित्री का व्रत पूरा हुआ।

13.4 वटसावित्री व्रत उद्यापन —

फिर ज्येष्ठ मास में द्वादशी के दिन नक्त भोजन करे, दाँतुन करके स्नान करे, पीछे नियम करे कि, तीन रात पूरीकर चौथी रातको चन्द्रमाको अर्घ्य देकर सावित्री की पूजा करके यथाशक्ति मिष्टान्न से ब्राह्मणोंको भोजन करा भोजन करूंगा, हे शुभे ! संसारके धारण करनेवाली ! उस मेरे व्रतको निर्विघ्न पूरा कर दीजिये, यह नियम का मंत्र है। बांस के पात्र में एक प्रस्थ वालू भरे। एक प्रस्थ का सप्तधान्यमय वंशपात्र होना चाहिये। दो वस्त्रों के ऊपर ब्रह्मा के साथ सावित्री को विराजमान करे, उन दोनों की सुवर्ण की मूर्ति बनवाये । तीन रात व्रत करे। जब तक तीन दिन पूरे न हों न्यग्रोध के नीचे रहना चाहिये । सोने की सावित्री सत्यवान्के साथ बनावे, सोने के पलंग पर आरोपित करके रथ पर बिठावे। वह रथ अपनी शक्ति के अनुसार एक पल चांदी का होना चाहिये । काठ का भार, कुठार, एक बडी पिट, धर्मराज और नारद वहाँही बनावे, वटके मूलमें एक मंडल गोमय का बनावे । चौक पर सुन्दर सावित्री को विराजमान करे। इस प्रकार उन दोनों को साथ करके मत्सररहित होकर पूजे। पंचामृत से स्नान करावे । गन्ध, पुष्प, उदक, चन्दन, अगरु, कर्पूर, माल्य, वस्त्र, विभूषण इनसे पूजे । पीले पिष्ट अथवा चन्वनसे पद्म, लिखे, इन मंत्रोंसे विधिपूर्वक देवीको पूजे । सावित्रीके लिये नमस्कार, चरणोंको पूजती हूं; प्रसावित्रीके० जानुओंको पू०; कमलपत्राक्षीके० कटिको पू०; भूतघारिणीके० उदरको पू०; गायत्रीके० उदरको०; गायत्रीके कंठका पू०; ब्रह्माकी प्यारीके० शिरको पूजती हूं । ब्रह्मा और सन्यवान्का पूजन-धाताके लिये नमस्कार, चरणोंको पूजती हूं; ज्येष्ठके लिये नमस्कार, उरुओंको पूजती हूं; परमेष्ठीके० मेढको पू०; अग्निरूपके० कटिको १०; वेघाके० उदरको १०; पद्मनाभके० हृदयको पू०; विधिके० कंठको पू०; हेमगर्भके० मुखको १०; ब्रह्माके० शिरकोप्पू०; विष्णुके लिये नमस्कार, सर्वांगको पूजती हूं। इस प्रकार शास्त्रकी कहीहुई विधिसे पूजे। इसके पीछे दोनोंको चाँदीके पात्रसे अर्घ्य दे। सावित्रीको अर्घ्य देनेका मन्त्र-जिसके सबसे पहिले ओंकार है, जो वीणा और पुस्तक धारण कर रही है, ऐसी हे वेदमातः ! तेरे लिये नमस्कार है; मुझे अवैधव्य दे । हे अग्निसे पैदा हुई पवित्रव्रतवाली ! हे महाभागे ! हे पतिव्रते ! दृढ व्रत और मतिवाली ! हे पतिकी प्रियवादिनी ! हे सुव्रते ! मुझे सुहाग और सौभाग्य दे, एवं पुत्र, पौत्र और सौख्य दे, अर्घ्य ग्रहण कर, तेरे लिये नमस्कार है। ब्रह्मा और सत्यवान् दोनोंके अर्घ्यदानका मन्त्र-आपने देव असुर मानुष सभी संसारको रचा है। हे ब्रह्मरूप सत्यव्रतधारी देव । आपके लिये नमस्कार है। यमके अर्घ्यका मन्त्र-- शुभ और अशुभका विवेचन करनेवाले आप लोकोंके कर्मके साक्षी हैं, हे वैवस्वत धर्मराज ! अर्घ्य ग्रहण कर, तेरे लिये नमस्कार है। आप धर्मराज हैं, पितरोंके पति तथा सबके साक्षी हैं, हे कालरूप ! इस अर्घ्यको ग्रहणकर मुझे सुहाग दे मत्सरका त्याग करके गन्ध, पुष्प, नैवेद्य; फल, कपूर,

दीपक रक्तवस्त्र और अलंकारोंसे पूजे । सावित्रीको प्रार्थना – सावित्री आप ब्रह्मगायत्री सदा प्यारा भाषण करनेवाली हैं इस कारण सत्यद्वारा मेरी दुखरूपी संसार सागरमें रक्षा करें। आप गौरी, शची, लक्ष्मी और चन्द्रमण्डलकी प्रभा है जगत्की माता आप हैं, हे वरानने मेरा उद्धार कर। हे सुव्रते ! मुझे सौभाग्य और कुलकी वृद्धि दे, जो मेरे सौ जन्मका भी पाप हो वह सम भस्म होजाय, मुझे अवैधव्यका दान कर ब्रह्मा और सत्यवान्की प्रार्थना--हे देव ! जैसे आपका सावित्रीक साथ कभी वियोग नहीं होता, ऐसेही मेरा भी जन्मजन्ममें मेरे पतिके साथ अवियोग हो। यम प्रार्थना-हे यम ! कर्मके साक्षी एवं संसारके पूज्य और वन्द्य हैं, सालभरका कियाहुआ मेरा व्रत परिपूर्ण होजाय, सावित्रीकी-हे प्रार्थना देवि सावित्री ! जैसे आप चार सौ वर्षकी आयेवाले गुणी पतिको प्राप्त हुई हैं, उसी तरह मुझे भी मेरे पतिको कर दें। (सावित्री इन दोनों श्लोकोंका अर्थ करचुके)। मंगलीक गानों बजानोंके साथ वहां जागरण करना चाहिये प्रतिदिन पवित्र सुवासिनियोंका पूजन होना चाहिये। सिन्दूर, कुंकुम, पान, सुपारी, सूप, भक्ष्य और सौभाग्याष्टक वे । रातदिन कामक्रोधका त्याग करके रही आवे, तीनों दिन इसी प्रकार अर्घ्यं पूजा आदिक करनी चाहिए। इसके बाद चौथे दिनका जो भी कुछ कृत्य है, उसे सुनिये, चौवीस, सोलह वा बारह अथवा आठ मिथुनोंका पूजन करे। अथवा व्रतकी विधि करनेवाले, सर्व लक्षण संपन्न, सब शास्त्रोंके जाननेवाले, विधि पूर्वकावेद पढे हुए, जितेन्द्रिय, शान्त, सपत्नीक आचार्यको वस्त्र अलंकार और शिरोवेष्टनसे पूजे। उपकरण सहित शय्या और सुन्दरघर दे, यदि सामर्थ्य न हो तो जैसा बन सके वैसा करलेः सोनेकी प्रतिमाका दान पतिके साथ करे । प्रतिमा के दान का मन्त्र – हे सावित्री ! जैसे आप चार सौ वर्ष की आयु वाले सत्यवान् को प्राप्त हुई है, उसी तरह आप मुझे भी कर दे । जगत की माँ बाप तुम्ही सावित्री है, हे ब्राह्मण मेरी दी हुई सावित्री को ग्रहण कर । प्रतिग्रह का मन्त्र--सुशोभने ! आपने सावित्री दी और मैंने सावित्री ले ली जबतक ये चाँद सूरज हैं तबतक पतिके साथ सुखी हो । इसके पीछे गुरुपत्नी तथा गुरुका क्षमापन करना चाहिय कि, जो इस व्रतमें मुझसे कोई त्रुटि होगई हो वह आपके पूजनसे पूरी होजाय । वटसेचन मन्त्र– घर्मराज, यम, धाता,नील, कालान्तक, अव्यय, वैवस्वत, चित्रगुप्त, दध्न, मृत्यु, क्षय, वट इन बारह नामों में से प्रतिमास एक एकसे वट सींचना चाहिये, मैं न्यग्रोधरपर रहता हूं । इस कारण उसे प्रयत्नसे सींचे, न्यग्रोधके समीप अथवा घरपर स्थण्डिलमें सावित्रीके मन्त्रसे घृत होम करे । हे भामिनि ! घृतके साथभक्तिपूर्वक पायसका मन्त्रोंसे तिल, ब्रोही और यवोंका हवन होना चाहिये, होमके अन्तमें दक्षिणा दे ऋत्विजों से क्षमापन करावे व्रत करनेवाली तपस्विनी शान्तिपूर्वक वासरके बीत जानेपर नक्तभोजन करे, अरुन्धतीको देखकर अध्यदे, प्रणाम करे कि, हे वसिष्ठजीकी प्यारी शुभ अरुन्धति ! तेरे लिये नमस्कार है, सब देवों के नमस्कार करने योग्य पतिव्रते ! तेरे लिये वारं वार नमस्कार है, यह

मैंने फल पुष्प के साथ तुझ अर्घ्य दिया है। इसे ग्रहण करिये, मुझे पुत्र दीजिये, आपके लिये वारं वार नमस्कार है। पीछे अपनी सखियों और ब्राह्मणों के साथ मौन हो जितेन्द्रयता पूर्वक भोजन करे। जो इस प्रकार इस उत्तम व्रत को करती है, उसके मां बाप, सास ससुर, भाई बहिन, स्वजन सभी चिरायु होते हैं, किसी को भी बीमारी नहीं होती, वह साध्वी पति के साथ ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठित होती है। इस प्रकार यह श्रीस्कन्दपुराण का कहा हुआ सावित्रीव्रत का उद्यापन पूरा।

बोध प्रश्न –

1. वटसावित्री व्रत किस मास में किया जाता है?

   क. पौष ख. माघ ग. ज्येष्ठ घ. श्रावण

2. वटसावित्री व्रत का उल्लेख किस पुराण में मिलता है?

   क. स्कन्द ख. वामन ग. मत्स्य घ. गणेश पुराण

3. निम्न में विवस्वत किसकी संज्ञा है?

   क. व्रत ख. सूर्य ग. चन्द्रमा घ. पूर्णिमा

4. वटसावित्री व्रत का विधान कितने दिनों तक का कहा गया है?

   क. 1 ख. 2 ग. 3 घ. 4

5. वटसावित्री व्रत का सम्बन्ध किससे है।

   क. सावित्री ख. यमराज ग. दोनों से घ. कोई नहीं

13.5 सारांश

प्रस्तुत अध्ययन के बाद आपने जान लिया है कि वटसावित्री व्रत ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा या अमावस्या के दिन होता है। इस व्रत को धारण करने से स्त्री सौभाग्यवती होकर जीवनयापन करती है। पुराणों के अनुसार माता सावित्री ने अपनी पति के प्राण की रक्षा करते हुए यमराज से पति के प्राण को वापस लाने का कार्य करती है। तभी से इस व्रत का विधान बना। स्कन्दपुराण में इस व्रत कथा का व्यापक उल्लेख मिलता है। आज के समय में भी जो सुहागिन स्त्री अपनी पति की रक्षा चाहती है, उसके

चिरायु की कामना करती है, अथवा उसका सर्वविध उन्नति चाहिती है तो वह इस वटसावित्री व्रत को धारण करती है। यह व्रत मुख्यत: पत्नीयॉं अपने पतियों के लिए धारण करती है।

13.6 पारिभाषिक शब्दावली

सर्वविध – सभी प्रकार से

चिरायु – लम्बी आयु

स्कन्द – अठारह पुराणों में एक पुराण

भविष्य – अठारह पुराणों में एक पुराण

ऋत्विज – ब्राह्मण

पर्यन्त – तक

13.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ग
2. क
3. ख
4. ग
5. क

13.8 सहायक पाठ्यसामग्री

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरिज

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

13.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरीज, वाराणसी

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन, वाराणसी

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

13.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. वटसावित्री व्रत का परिचय दीजिये।
2. वटसावित्री व्रत धारण विधि का शास्त्रीय उल्लेख कीजिये।
3. वटसावित्री व्रत उद्यापन का वर्णन कीजिये।
4. वटसावित्री का माहात्म्य बतलाइये।
5. धार्मिक दृष्टि से वटसावित्री व्रत का क्या महत्व है।

इकाई -14 ऋषि पंचमी व्रत एवं उद्यापन

इकाई की संरचना

14.1 प्रस्तावना
14.2 उद्देश्य
14.3 ऋषिपंचमी व्रत
14.4 ऋषिपंचमी व्रत उद्यापन
14.5 सारांश
14.6 पारिभाषिक शब्दावली
14.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
14.8 सहायक पाठ्यसामग्री
14.9 निबन्धात्मक प्रश्न

14.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई ऋषिपंचमी व्रत एवं उद्यापन शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने विविध स्तोत्रादि का अध्ययन कर लिया है। अब आप लोकप्रचलित ऋषिपंचमी व्रत तथा उसके उद्यापन की विधि को जानेंगे।

ऋषिपंचमी व्रत का सम्बन्ध भगवान विष्णु से है। गृहस्थ जीवन में भी इसका अत्यधिक प्रचलन दिखलाई पड़ता है। इस व्रत का माहात्म्य बहुत उत्तम है।

आइए हम सब एकादशी व्रत तथा उसके उद्यापन का अध्ययन करते हैं।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –

- ऋषिपंचमी व्रत किसे कहते हैं।
- ऋषिपंचमी व्रत धारण की विधि क्या है।
- ऋषिपंचमी व्रत का माहात्म्य क्या है।
- लोक में इसका क्या महत्व है।
- ऋषिपंचमी व्रतोद्यापन विधि क्या है।

14.3 ऋषिपंचमी व्रत

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष पंचमी को यह व्रत होता है। इसी दिन ऋषि पञ्चमी होती है। मध्यान्हव्यापिनी ही ग्रहण करना चाहिए। माधवीया और हारीत के अनुसार सभी पूजाव्रतों में मध्यान्हव्यापिनी तिथि का ही ग्रहण करना। यदि दो दिन मध्यान्हव्यापिनी तिथि हो तो पहली वाली ही ग्रहण करें। सात वर्ष तक इस व्रत को करना चाहिए और अन्त में उद्यापन करना चाहिए। हे राजेन्द्र ! इस व्रत का आचरण करने से नरक का दर्शन नहीं होता है। रजस्वला समय में स्पर्शस्पर्शादिदोषों के निवारणार्थ यह व्रत होता है। स्त्रियों के लिए तो परमावश्यक है परन्तु सपत्नीक व्रत की महत्ता अधिक बताई गई है। **व्रतविधान–** कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, वसिष्ठ ये

सात सप्तऋषि है। चतुर्थी तिथि को सायंकाल नित्यकर्म को समाप्त करके संकल्प करें कि कल मैं जान अथवा अनजान में रजस्वलावस्था में स्पर्शादि दोष के निवारणार्थ ऋषिपञ्चमी व्रत करूँगा । व्रत के दिन कर्ता प्रातः काल उठकर नित्यकर्मादि को समाप्त करके संकल्प द्वारा व्रत ग्रहण करें। मध्याह्न में नदी या जलाशय के समीप जाकर समन्त्रक पंचगव्य प्राशन करें। (कहीं पर ब्रह्मकूर्च होम पूर्वक पञ्चगव्य प्राशन का विधान मिलता है) चिचिरी के पौधे से अरुन्धती सहित सप्तऋषियों का निर्माण किया जाय। सात चिचिड़ी पौधों के समूह को इकट्ठा कर एक बण्डल बनावें इसी प्रकार आठ बनावें । जहां अपामार्ग (चिचिड़ी) का अभाव हो वहां मिट्टी के कसोरे में चावल भरकर अष्टदल कमल बनाकर उसके ऊपर सुपारी की स्थापना करें। उपर सप्तऋषियों को स्थापित कर उक्त वैदिक मन्त्र "शुद्धासन के सप्तऽऋषय: "का पाठ करके एक एक नाम से आवाहन करें। ''मनोजूति०'' इस मन्त्र से प्रतिष्ठा करके नाम मन्त्र से तथा पुरुष सूक्त से षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करें। उक्त श्लोक ''नमोऽस्तु ऋषिवृंदेभ्यो०'' से ''ज्ञानतोऽज्ञानतः कृतम्'' तक प्रार्थना करें। उपवास करके अग्रिम दिन पारण करें।

14.4 ऋषि पंचमी व्रत का व्रतोद्यापन —

निर्धारित अवधि पर्यन्त व्रताचरण करके उद्यापन के दिन पूर्ववत् संकल्प करें। अन्त में ''आचरित ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापनमहं करिष्ये '' इसको जोड़ दें। संकल्प के बाद गणेश पूजन से आचार्य वरण पर्यन्त कर्म करके सर्वतोभद्रमण्डल के बीच सात ताम्र अथवा एक ताम्र कलश को विध्यानुसार संस्थापित करके सामर्थ्यानुसार स्वर्ण की सातो ऋषियों की अरुन्धती सहित प्रतिमा स्थापित करें। पूर्व में वर्णित जो विधि है, उस विधि से स्थापन, आवाहन, प्रतिष्ठा, पूजन इत्यादि करके ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित घृतनिर्मित पदार्थ को फलसहित वायन के रूप में दें। दान के समय ''वायनं फल संयुक्तं'' से ''वायनस्य प्रसादतः'' तक पाठ करें। प्रार्थना करें। उसके बाद कथा श्रवण करते हुए रात्रि जागरण करके प्रातःकाल अग्नि को प्रतिष्ठापित करके आज्यभागान्त ग्रहहोम करके अरुन्धती सहित सप्त ऋषियों को उनके नाममन्त्रों से आहुति देकर सर्वतोभद्रदेवताओं को आहुति देकर होम शेष को समाप्त कर उत्तर पूजन करें। सात सपत्नीक ब्राह्मणों का पूजन करके वस्त्रादि कलशादि देवें। मन्त्रपाठ ऊपर दिया गया है। यदि एक कलश हो तो केवल आचार्य को दें

बाकी सभी लोगों का पूजन करके आचार्य के लिए सामर्थ्यानुसार गौ इत्यादि भी देना चाहिए। इसके बाद विसर्जनादि प्रक्रिया पूर्ण करके ब्राह्मणों को भोजन कराकर इष्टबन्धुजन के साथ स्वयं भोजन करें। यह ऋषिपञ्चमी व्रत का वर्णन हुआ।

संस्कृत भाषा में ऋषीपंचमी व्रत का वर्णन -

प्राप्य भाद्रपदे मासे शुक्लपक्षस्य पञ्चमीम्।। भाद्रपदशुक्लपञ्चमयां ऋषिपञ्चमी भवति। तच्च मध्याह्नव्यापिन्यां ग्राह्यम्। तथाच माधवीयहारीत: - पूजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्नव्यापिनी तिथिः।। दिनद्वये तद्व्याप्तौ वा पूर्वविद्धायां कार्यं युग्मवाक्यात्।। सप्तवर्षपर्यन्तं व्रतं कृत्वा अन्ते उद्यापनं कुर्यात्। येन चीर्णेन राजेन्द्रनरकं नैव पश्यति। रजस्वलासमये स्पर्शस्पर्शादिदोषाणां निवारणार्थं भवतीदं व्रतम्। स्त्रीणां कृते तु परमावश्यकं परन्तु सपत्नीकस्य व्रतस्य महत्वमपि प्रभूतमस्ति।।।

ऋषिपञ्चमी-व्रतविधानम् — कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रस्तु गौतमः। जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः।। एते सप्तऋषयः सन्ति। चतुर्थ्यां तिथौ सायंकाले नित्यकर्म कृत्वा संकल्पं कुर्यात् । श्वः ज्ञानतोऽज्ञानतो वा रजस्वलावस्थायां कृतसंपर्कजनितदुर्योनित्वदोषपरिहार द्वाराशुभफलप्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं ऋषिपञ्चमीव्रतं करिष्ये। व्रतदिने कर्ता प्रातरुत्थाय नित्यकर्मादिकं समाप्य संकल्पं कुर्यात्। मध्याह्ने नदीं जलाशयं वा गत्वा समन्त्रकं पञ्चगव्यस्य प्राशनं कृत्वा (कुत्रापि लिखितमस्ति ब्रह्मकूर्चहोमपूर्वकं पञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात्) अपामार्गद्वारा अरुन्धती सहित सप्तऋषीणां निर्माणं कुर्यात्। सप्तपामार्गसमूहस्य एकैकं कृत्वाऽष्टी निर्मातव्या। यत्रपामार्गस्याभावोऽस्ति तत्र तण्डुलपूरितमृण्मये पात्रे अष्टदलं पां कृत्वा तस्योपरि पूंगीफलं संस्थाप्य ऋषीणां स्थापनं कुर्यात् । शुद्धासनोपरि सप्तऋषीणां स्थापनं कृत्वा मन्त्रस्य पाठः- ॐ सप्तऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रति सदमप्प्रमदम्। सप्तापः स्वपतोलोकमायुस्तत्र जाग्रतोऽअस्वप्नजौसत्रसदी च देवौ।"

ॐ कश्यपाय नमः कश्यपमावाहयामि स्थापयामि ।। १ ।।
ॐ अत्रये नमः अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।। २।।

ॐ भरद्वाजाय नमः भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।। ३।।

ॐ विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।।४।।

ॐ गौतमाय नमः गौतममावाहयामि स्थापयामि।। ५।।

ॐ जमदग्नये नमः जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।। ६।।

ॐ वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।। ७।।

ॐ अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।। ८।।

मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य पुरुषसूक्तेन स्त्रीचेन्नाममन्त्रेण षोडशोपचारै: सम्पूज्य।

प्रार्थनां कुर्यात् नमोस्तु ऋषिवृन्देभ्यो देवर्षिभ्यो नमो नमः। सर्वपापहरेभ्यो हि वेदविद्भयो नमो नमः।। एते सप्तर्षयः सर्वे भक्त्या सम्पूजिता मया। सर्वपापं व्यपोहंतु ज्ञानतोऽज्ञानतः कृतम्।। अनेन प्रकारेण पूजनं कृत्वा उपवासं कृत्वा अग्रिमे दिवसे पारायणं कुर्यात्। व्रतोद्यापनम् निर्धारितावधिपर्यन्तं व्रताचरणं कृत्वा उद्यापनदिने पूर्ववत् संकल्पं कुर्यात् अन्ते " आचरितऋषिपंचमीव्रतोद्यापनमहं करिष्ये" इति योजनं कृत्वा। संकल्पानन्तरं गणेशपूजाद्याचार्यवरणांतं कर्म कृत्वा सर्वतोभद्रमण्डलमध्ये सप्तताम्रकलशान् एकं वा यथाविधिना संस्थाप्य तेषु शक्त्या सम्पादिता हैमी: सप्तर्षिप्रतिमाः अरुन्धती सहिता अष्टौ संख्याका प्रतिष्ठापयेत्। पूर्वोक्तविधिना स्थापनावाहनप्रतिष्ठापूजन प्रार्थनाञ्च कृत्वा वायनं व्रतसंपूर्तिहेतवे।। भवंतः प्रतिगृह्णन्तु ज्योतीरुपास्तपोधनाः। उभयोस्तारकाः सन्तु दद्यात्। तत्र मन्त्रः। वायनं फलसंयुक्तं सघृतं दक्षिणान्वितम्। द्विजवर्याय दास्यामि वायनस्य प्रसादतः।।

प्रार्थना— न्यूनातिरिक्तकर्माणि मया यानि कृतानि च। क्षमध्वं तानि सर्वाणि यूयं सर्वे तपोधनाः ।।

इति प्रार्थनां कृत्वा कथाश्रवणपुरस्सरं रात्रिजागरणं कुर्यात्। प्रातरग्निं प्रतिष्ठाप्य आज्यभागान्तग्रहहोमञ्च कृत्वा अरुन्धतीसहितसप्तऋषिभ्यस्तत्तन्मन्त्रेण प्रत्येकं तिलव्रीहियवसर्पि हुत्वा सर्वतोभद्रदेवताभ्यश्च एकैकयाज्याहुत्वावशिष्टहोमं समाप्य उत्तरपूजनं कृत्वा सप्तसपत्नीकान् ब्राह्मणान् वस्त्रादिना सम्पूज्य तेभ्यः दक्षिणाप्रतिमायुतान् कलशान् दद्यात्। मन्त्रपाठ: प्रतिगृह्ण द्विजश्रेष्ठ प्रतिमादिसमन्वितम्। कलशं चर्षिशं प्रीत्यै व्रतसंपूर्ति हेतवे।। यदैककुम्भस्तदा सर्वं प्रतिमापूजनादिद्रव्यसहितं

कलशमाचार्याय दद्यात्। अन्येभ्यो दक्षिणावस्त्रयज्ञोपवीतयुतान् पक्वान्नपूरितान् कलशान् दद्यात्। ततो आचार्याय सुवर्णागुंलीयक कुण्डलाभूषणानि सवत्सां सोपस्करां पयस्विनीं दत्वा प्रार्थयेत् (स्वसामर्थ्यानुसारं कर्तव्यम्) सप्तर्षयः शुभाः श्रेष्ठाः सर्वेषां च शुभप्रदाः। सर्वपापं च मे घ्नंतु ज्ञानतोऽज्ञानतः कृतम्। ततो ब्राह्मणान् भोजयित्वा दीनानाथान् संतर्प्य इष्टबंधुकैः सह भुञ्जीत्॥

भविष्योत्तर पुराण में वर्णित ऋषिपंचमी कथा संस्कृत में -

युधिष्ठिर उवाच॥ श्रुतानि देवदेवेश व्रतानि सुबहूनि च॥ सांप्रत मेऽन्यदाचक्ष्व व्रतं पापप्रणाशनम् ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ अथान्यदपि राजेन्द्र पञ्चमीमृषिसंज्ञिताम् ॥ कथयिष्यामि यत्कृत्वा नारी पापा त्प्रमुच्यते ॥ २ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कीदृशी पञ्चमी कृष्ण कथं च ऋषिसंज्ञिता ॥ पातकान्मुच्यते कस्मानारी यदुकुलोद्भव ॥ ३ ॥ पापानि च बहून्यत्र विद्यन्ते किल केशव ॥ कथं वा ऋषिपञ्चम्यां नारी कस्मात्प्रमुच्यते ॥ ४ ॥ कृष्ण उवाच ॥ अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि या स्त्री जाता रजस्वला ॥ दुष्टा स्पृशति भाण्डानि गृहकर्मणि संस्थिता ॥ ५ ॥ प्राप्नोति सा महापापं सत्यं सा नरकं व्रजेत् ॥ श्रृणु तत्कारणं यस्माद्वर्जनीया रजस्वला ॥ ६ ॥ प्रोत्सार्या गृहतो दूरं चातुर्वर्ण्ष्णेन भारत ॥ ब्रह्महत्यां पुरा शक्रो वृत्रं हत्वा ह्यवाप च ॥७॥ तया वं राजशार्दूल वीडितो वृत्रसूदनः ॥ ब्रह्माणं समुपागच्छदात्मनः शुद्धिकारणात् ॥ ८ ॥ ततो देवैः समं ब्रह्मा क्षणं ध्यात्वा चकार वे ॥ शुद्धि शकस्य राजेन्द्र प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥ ९ । विभज्य ब्रह्महत्यां तु चतुर्था च चतुर्मुखः ॥ प्राक्षिपद्राजशार्दूल चतुःस्थानेषु वं तदा ॥ १० ॥ वह नो प्रथमज्वालासु नदीषु प्रथमोदके पर्वतेषु च राजेन्द्र नारीरजसि पार्थिव ॥ ११ ॥ अतो रजस्वला नारी प्रोत्सार्या च प्रयत्नतः ॥ ब्रह्मणः शासनात्पार्थ चातुर्वण्यन सर्वदा ॥ १२ ॥ प्रथमेऽहनि चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मघातकी ॥ तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थोऽहनि शुद्ध्यति ॥ १३ ॥ अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि जातं संपर्कपातकम् ॥ तत्पापसंक्षयार्थं वै कार्येयमृषिपञ्चमी ॥ १४ ॥ सर्वपापप्रशमनी सर्वोपद्रवनाशिनी ॥ ब्रह्मक्षत्रियविटशूद्रःस्त्रीभिः कार्या विशेषतः ॥ १५ ॥ अत्रार्थे यत्पुरावृत्तं प्रवक्ष्यामि कथानकम् ॥ पुरा कृतयुगे राजा विदर्भायां बभूव ह ॥ १६॥ श्येनजिन्नाम राजर्षिश्चातुर्वर्ण्यानु पालकः । तस्य देशेऽवसद्विप्रो वेदवेदाङ्गपारगः ॥ १७ ॥ सुमित्रो नाम राजेन्द्र सर्वभूतहिते रतः ॥ कृषिवृत्त्या सदा युक्तः कुटुम्बपरिपालकः ॥ १८ ॥ तस्य भार्या सुसाध्वी च पतिशुश्रूषणे रता ॥ जयश्रीर्नामविख्याता बहुभृत्यसुहृज्जना ॥ १९ ॥ अतिचिन्तान्विता सा च प्रावृट्काले सुमध्यमा || क्षेत्राविषु रता साध्वी व्याकुली कृतमानसा ॥ २० ॥ एकदा सात्मनः

प्राप्तमृतुकालं व्यलोकयत् ॥ रजस्वलापि सा राजन् गृहकर्म चकार ह ॥ २१ ॥ भाण्डादीन्यस्पृशद्राजनृतौ प्राप्तेऽपि भामिनी ॥ कालेन बहुना साध्वी पञ्चत्वमगमत्तदा ॥ ॥ २२ ॥ तस्या भर्तापि विप्रोऽसौ कालधर्ममुपेयिवान् ॥ एवं तौ दम्पती राजनस्वकर्मवशगौ तदा ॥ २३ ॥ भार्या तस्य जयश्रीः सा ऋतुसंपर्कदोषतः ॥ शुनीयोनिमनुप्राप्ता सुमित्रोऽपि नरेश्वर॥ २४ ॥ तस्याः संपर्कदोषेण बलीवर्दो बभूव ह ॥ एवं तौ दम्पती राजन् स्वकर्म-वशगौ तदा ॥ २५ ॥ ऋतुसंपर्कदोषेण तिर्यग्योनिमुपागतौ || स्वधर्माचरणाज्जातावुभौ जातिस्मरौ तथा ॥ २६ ॥ सुतस्यैव गृहे राजन्स्मरन्तौ पूर्वपातकम् ॥ सुमित्रस्य च पुत्रोऽभूद्गुरुशुश्रूषणे रतः ॥ २७ ॥ सुमतिर्नाम धर्मज्ञो देवतातिथिपूजकः ॥ अथ क्षयाहे संप्राप्ते पितुस्तु सुमतिस्तदा ॥ २८ ॥ भार्या चन्द्रवतीं प्राह सुमतिः श्रद्धयान्वितः ।। अद्य सांवत्सरदिनं पितुर्मे चारुहासिनि ॥२९॥ भोजनीया द्विजा भीरु पाकसिद्धिविधीयताम् ॥ तया कृता पाकसिद्धिः सुमतेर्भर्तुराज्ञया ॥ ३० ॥ मुक्तं पायसभाण्डे वै सर्पेण गरलं ततः ॥ दृष्ट्वा ब्रह्मवधानीता शुनी भाण्डानि सास्पृशत् ॥ ३१ ॥ द्विजभार्या च तां दृष्ट्वा उल्मुकेन जघान ह ॥ भाण्डादीनि च प्रक्षाल्य त्यक्त्वा पाकं सुमध्यमा ॥ ३२ ॥ पुनः पाकं च कृत्वा तु श्राद्धं कृत्वाविधानतः ॥ ततो भुक्तेषु विप्रेषु नोच्छिष्टं च ददौ बहिः ॥ ३३ ॥ भूमौ क्षिप्तं तया शुन्या उपवासस्तदाभवत् ॥ ततो रात्र्यां प्रवृत्तायां सा शुनी क्षुधिता भृशम् ॥ ३४ ॥ बलीवर्दमुपागत्य भर्तारमिदमब्रवीत् ॥ बुभुक्षिताद्य हे भर्तर्न दत्तं भोजनादिकम् ॥ ३५ ॥ ग्रासादिकं च न प्राप्तं क्षुधा मां बाधते भृशम् ॥ अन्यस्मिन्दिवसे पुत्रो मम लेह्यं ददात्यसौ ॥ ३६ ॥ अद्यं मह्यं किमप्येष उच्छिष्टमपि नो ददौ ॥ पायसान्ने पपाताद्य गरलं सर्पसंभवम् ॥ ३७ ॥ मया विचिन्त्य मनसा मरिष्यन्ति द्विजोत्तमाः ॥ संस्पृष्टं पायसं गत्वा बद्धाहं ताडिता भृशम्॥ ३८ ॥ दुःखितं तेन मे गात्रं कटिर्भग्ना करोमि किम् ॥ ततः प्राह च सोऽनड्वान् भद्रे ते पापसंग्रहात् ॥ ३९ ॥ किं करोमि ह्यशक्तोऽहं भारवाहत्वमागतः ॥ अद्याहमात्मनः क्षेत्रे वाहितः सकलं दिनम् ॥ ४० ॥ मारितश्चात्मजेनाहं मुखं बद्धा बुभुक्षितः ॥ वृथा श्राद्धं कृतं तेन जाताद्य मम कष्टता ॥ ४१ ॥ कृष्ण उवाच ॥ तयोः संवदतोरेवं मातापित्रोच भारत ॥ श्रुत्वा पुत्रस्तथा वाक्यं यदुक्तं च तदोभयोः ॥ ४२ ॥ पितरौ तौ विदित्वा तु दत्तवान् सुमतिस्तदा ॥ तस्यां रजन्यां तत्कालं ददौ तस्यै च भोजनम् ॥ ४३ ॥ तदासी दुःखित पुत्रो ज्ञात्वावस्थां तथा तयोः ॥ मातापित्रोस्तु राजेन्द्र द्रुतं संप्रस्थितो वनम् ॥ ४४ ॥ ज्ञातुमिच्छामि वै कष्टमिति निश्चित्य भारत ॥ तत्र गत्वा ज्ञानवृद्धानृषीन् परमधार्मिकान् । ४५ ॥ प्रणिपत्याब्रवीद्वाक्यं हित चैव तदा तयोः ॥ सुमतिरुवाच ॥ कथयध्वं विप्रवर्याः प्रश्नमेकं समाहिताः ॥ ४६ । केन कर्मविपाकेन पितरी मे तपोधनाः ॥ इमामवस्थां संप्राप्तौ मोक्ष्येते पातकात्कथम् ॥ ४७ ॥ कृष्ण उवाच ॥ तदाकर्ण्य वचस्तस्य सुमतेर्दुःखितस्य च || ऋषिः सर्वतपा नाम सर्वज्ञः करुणान्वितः ॥ ४८ ॥

सुर्मात प्रत्युवाचेदं तत्पित्रोर्मुक्तये तदा || ऋषिरुवाच ॥ तव माता पुरा विप्र स्वगृहे बालभावतः ॥ ४९ ॥ प्राप्तमृतुं विदित्वा तु संपर्कमकरोद्द्विज ॥ तेन कर्मविपाकेन शुनीयोनिमुपागता ॥ ५० ॥ पितापि स्पर्शदोषेण बलीवर्दो बभूवह ॥ एतयोर्मुक्तिकामार्थं कुरु त्वमृषिपञ्चमीम् ॥ ५१ || भार्यया सह विप्रेन्द्र ऋषीन्संपूज्य यत्नतः ॥ आचरस्व व्रतं तत्र सप्तवर्ष द्विजोत्तम ॥ ५२ ॥ अन्ते चोद्यापनं कुर्याद्वित्तशाठ्यविवर्जितः ॥ शाकाहारस्तु कर्तव्यो नीबारैः श्यामकंस्तथा ॥ ५३ ॥ कन्दैर्वाथ फलैर्मूलैर्हलकृष्टं न भक्षयेत् || प्राप्य भाद्रपदे मासि शुक्लपक्षस्य पञ्चमीम् ॥ ५४ ॥ तस्यां मध्याह्नसमये नद्यादौ विमले जले ॥ कृत्वापामार्गसमिधा दन्तधावनमादितः ॥ ५५ ॥ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च ॥ ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ ५६ ॥ संप्रायनेन मंत्रेण कुर्याद्वै दन्तधावनम् ॥ मुखदुर्गन्धिनाशाय दन्तानां च विशुद्धये ॥ ५७ ॥ ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम् ॥ अनेन दन्तान्संशोध्य स्नायान्मृत्स्नान पूर्वकम् ॥ ५८ ॥ तिलामलककल्केन केशान्संशोध्य यत्नतः ॥ परिधाय नवे शुद्धेवाससी च समाहितः ॥ ५९ ॥ पूजयस्व ऋषीन्दिव्यानरुन्धत्या समन्वितान् ॥ कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः ॥ ६० ॥ जमदग्निर्वसिष्ठश्च साध्वी चैवाप्यरुन्धती ॥ मन्त्रेणानेन सप्तर्षीन् पूजयेत्सुसमाहितः || ६१ ॥ व्रतेन ऋषिपञ्चम्याः कृतेनैव द्विजोत्तम ॥ ऋतुसंपर्कज दोषः क्षयं याति न संशयः ॥ ६२ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ तच्छुत्वा सुमतिर्वाक्यं परममृषिभाषितम् ॥ गृहमेत्य व्रतं चक्रे सभार्यः श्रद्धयान्वितः ॥ ६३ ॥ व्रतं तु ऋषिपञ्चम्याः सर्वपापप्रणाशनम् ॥ कृत्वा सर्वं यथोक्तं च माता पित्रोः फलं ददौ ॥ ६४|| व्रतपुण्यप्रभावेण माता तस्य श्वयोनितः ॥ मुक्ता नृपतिशार्दूल विमानवरसंस्थिता || ६५ || दिव्याम्बरधरा भूत्वा गता स्वर्ग च भारत ॥ पितापि स मृतो मुक्तः सुमतेः पशुयोनितः ॥ ६६ ॥ स्वर्ग प्राप्तो महाराज व्रतस्यास्य प्रभावतः ॥ कायिकं वाचिकं वापि मानसं यच्च दुष्कृतम् ॥ ६७ ॥ तत्सर्वं विलयं याति व्रतस्यास्य प्रभावतः ॥ तस्य यज्जायते पुण्यं तच्छृणुष्व नृपोत्तम ॥ ६८ ॥ सर्वव्रतेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम् ॥ सर्वदानेषु दत्तेषु तदेतद्व्रतचारणात् ॥६९॥ कुरुते या व्रतं नारी सा भवेत्सुखभागिनी ॥ रूपलावण्ययुक्ता च पुत्रपौत्रादिसंयुता ॥ ७० ॥ इह लोके सदैव स्यात्परत्र च परांगतिम् ॥ एतत्ते कथितं राजन् व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ ७१ ॥ सर्वसंपत्प्रदं चैवनारीणां पापनाशनम् ॥ धन्यं यशस्यं स्वर्ग्यं च पुत्रदं च युधिष्ठिर ॥ पठतां शृण्वतां चापि सर्वपापप्रणाशनम्॥७२॥

इति श्रीभविष्यपुराणे ऋषिपञ्चमीव्रतकथा संपूर्णा ॥

ऋषि पंचमी कथा- हिन्दी में –

अब भविष्यपुराणोक्त ऋषि पंचमी के व्रतका निरूपण करते हैं-राजा युधिष्ठिर बोले कि, हे देवदेवेश ! आपके कहे बहुत से व्रत सुने, अब आप पापविध्वंसक किसी दूसरे व्रत को सुनाओ ॥१॥ श्री कृष्ण बोले कि, हे राजेंद्र ! में अब और भी एक ऋषिपंचमी के व्रतको कहता हूँ जिसके करने से स्त्रियोंके सब पाप नष्ट होते हैं ॥ २ ॥ राजा युधिष्ठिरने पूछा कि, वह पंचमी कौन सी है, उसका नाम ऋषिपञ्चमी क्यों है? हे यदुनन्दन ! इस व्रत का ऐसा प्रभाव कैसे है, जिसके करने से स्त्रियों के सब पातक छूट जाते हैं। ३ ॥ हे प्रभो ! पाप तो बहुत प्रकार के होते हैं, उन पापों से स्त्री ऋषिपञ्चमी के दिन व्रत करने से ही कैसे छूट जाती है ! इसमें क्या रहस्य है ? कहिये ॥ ४ ॥ श्रीकृष्णचन्द्र बोले-हे राजन् ! जान वा अनजान से रजस्वला हुयी दुष्टा स्त्री घर के कामों को परतन्त्रता से घरके पात्रों को छूती है ॥ ५ ॥ इससे उसको महान् पाप लगता है, मरने पर नरक की प्राप्ति होती है। इसका जो कारण है उसे सुनो जिससे रजस्वला स्त्री ऐसी दूषित होती है ॥ ६ ॥ हे भारत ! ब्राह्मण, क्षत्रित्र, वैश्य और शूद्र को चाहिये कि, ये रजस्वला स्त्री को घर से अलग करें। पहिले देवराज इन्द्र वृत्रासुर को मारकर ब्रह्महत्या करने के दोष का भागी हो गया था ॥ ७ ॥ हे राजशार्दूल ! इससे वृत्रसूदन लज्जित हो पवित्र होने के उपाय को पूछने के लिये देवताओं के साथ ब्रह्माजी के समीप गया ॥ ८ ॥ ब्रह्माजी ने क्षणभर समाधि लगा के हे राजेन्द्र ! उसको प्रसन्न चित्त से पवित्र कर दिया ॥ ९ ॥ हे राजशार्दूल ! चतुर्मुख ब्रह्माजी ने इन्द्र की ब्रह्महत्या के चार विभाग किये और उन पापों को चार जगह फेंक दिया ॥ १० । एक भाग तो अग्नि में गिरा, जो अग्नि को जलाने के समय पहिले धूवाँ सहित ज्वाला उठती है वह उस अग्नि में इन्द्र की ब्रह्महत्या का एक भाग है, वर्षान्त में नदियों के प्राथमिक आगे के जल में जो मैलापन दीखता है वह ब्रह्महत्या का दूसरा हिस्सा है। पर्वतों के ऊपर वृक्षों में जो गोंद है वह ब्रह्महत्या का तीसरा भाग है, हे पार्थिव ! ऐसे ही स्त्रियां जो तीन दिन रजस्वला होती हैं वह चौथा हिस्सा ब्रह्महत्या का है ॥ ११ ॥ अतः रजस्वला स्त्री को घर से अवश्य अलग रखे, क्योंकि ब्रह्माजी ने चारों वर्णवालों के लिये यही आज्ञा दी है ॥ १२ ॥ पहिले दिन चाण्डाली, दूसरे दिन ब्रह्महत्यारी और तीसरे दिन धोबिन सी रहती है। ऐसे तीन दिन तक ब्रह्महत्या के चतुर्थ भाग को महिने महिने भोगती है फिर चौथे दिन शुद्ध होती है ॥ १३ ॥ इससे जान में या अनजान में जो उसका किसी के भी साथ सपर्क होता है उसको पात की समझना चाहिये। उस पाप के नाश के लिये ऋषिपञ्चमी का व्रत करना चाहिये ॥ १४ ॥ यह ऋषिपञ्चमी सब पाप और उपद्रवों को शान्त करती है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्ण वाले सभी इस व्रत को कर सकते हैं, विशेष करके स्त्रियों को चाहिये कि, अवश्य करें ॥ १५ । इस प्रसंग में जो पहिले एक घटना हो चुकी है, उसे सुनाता हूं। पूर्वकाल में

सत्ययुगके समय विदर्भा नाम राजधानीमें एक राजा हुआ था ।। १६ ।। यह श्येनजित् राजर्षि चारों वर्ण की पालना करता था। उसके देश में वेद और वेदों के अङ्गों का पारदर्शी ॥ १७ ॥ सब प्राणियों पर दया दृष्टि रखनेवाला, सुमित्र नामक ब्राह्मण वसता था। हे राजन् ! वह खेतीकरके अपने कुटुम्ब का निर्वाह करता या ॥ १८ ॥ उसकी जयश्री नाम की स्त्री अत्यन्त साध्वी तथा पति की शुश्रूषा करनेवाली थी, उसके बहुत से नौकर तथा प्यारे बान्धब लोग थे ॥ १९ ॥ वर्षाऋतु में खेती के कामों से उसे विधा नहीं मिलता था; इससे वह सुन्दरी मन में घबरा गई ॥ २० ॥ एक दिन उसने अपने ऋतुषर्म को प्राप्त हुआ बेला, पर रजस्वला होकर भी वह अपने घर के कामों को करती रही ॥ २१ ॥ हे राजन् ! रजस्वला होने पर भी वो भामिनी पात्रों को छूती रही, बहुत काल के बाद जब वह मरी तब ॥ २२ ॥ उसका पति भी मृत्यु को प्राप्त हो गया। हे राजन् ! ऐसे वे दोनों स्त्री पुरुष अपने किये कर्मों के अनुसार लोकान्तर के पथिक हो गये ॥ २३ ॥ उस ब्राह्मण की जयश्री नाम की स्त्री ने रजस्वला होने पर भी जो पात्रों का स्पर्श किया था उस दोष से वो कुतिया बनी, हे राजन् ! उसका पति सुमित्र भी ॥ २४ ॥ उसके संपर्क के दोष से बैल हो गया, हे राजन् ! इस प्रकार वे (दोनों) दम्पती अपने कम्मों कि वश होकर ॥ २५ ॥ ऋतु के संपर्क के दोष से तिर्य्यग्योनि में उत्पन्न हुए, किंतु उन्होंने और बहुत से धम्मों का आचरण पालन किया था, इससे पूर्वजन्म वृत्तान्त याद रहा ॥ २६ ॥ इससे वे ऐसी नीच योनि में पडकर भी जाति स्मर हो पूर्वपातक को याद करते हुए अपने पुत्र के यहां ही निवास करने लगे। सुमित्र का पुत्र अपने बडों की शुश्रूषा में लग गया ॥ २७ ॥ यह सुमति बडा ही धर्म्मज्ञ एवम् देवता और अतिथियों का पूजक था। जब पिताकी मरण तिथि आई उस दिन वह पिता का श्राद्ध करने के लिए तयार होकर॥ २८ ॥ चन्द्रवती भाय सि श्रद्धा के साथ बोला कि, हे चारुहासिनि ! आज मेरे पिता का सांवत्सरिक श्राद्ध दिन है ॥ २९ ॥ हे

भीरु ! ब्राह्मणों को भोजन कराना है, तुम रसोई तैयार करो, पतिकी आज्ञासे उसने पाक तैयार किया ॥ ३० ॥ सर्पने खीर में जहर डाल दिया। (सुमति की जो माता कुत्ती होकर वहां रहती थी, उसने विचार किया कि, पूर्वजन्म में मैंने रजस्वला होकर भी भाण्डों से हाथ लगाया था इसी से मैं कुत्ती बनी,) इस खीर को यदि ब्राह्मण लायेंगे तो मेरा पुत्र ब्रह्महत्या का पातकी होगा, इस कारण उस कुत्ती ने खोर के पात्रों से मुख लगा दिया॥३१॥ चन्द्रवती ने यह बेख, जलती लकडी उसके शिर में मार दी, फिर उस सुमध्यमा ने अन्न को दूर गेर पात्रों को घो दिया ॥ ३२ ॥ पीछे दूसरी बार फिर रसोई तयार करके विधिवत् श्राद्ध किया, ब्राह्मणों को भोजन करा के उनका उच्छिष्ट अन्न बाहर नहीं गेरा ॥ ३३ ॥ किंतु घरती में गड्ढा खुवाकर उसमें डाल दिया। इससे उस कुत्तीका उस दिन अपने आप उपवास सा हो गया, फिर रात को वह कुत्ती भूख से अति पीडित हो अपने पति बल के पास जाकर बोली कि, मैं

भूखी मरती हूँ, आज मुझे खाने पीने को ही कुछ न मिला है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ पत्रावलि में जो ग्रास दिया जाता है वह भी नहीं मिला इससे भूख मुझे अत्यन्त पीडित कर रही है, और दिन तो यह मेरा पुत्र लेह्य पेय दिया करता था ॥ ३६ ॥ आज तो कुछ झूठा मुझे नहीं दिया है, खीर में साँप ने जहर डाल दिया था ॥ ३७ ॥ मैंने सोचा कि, यदि द्विजोत्तमों ने यह खा लिया तो अवश्य मरेंगे, इससे उसे छू लिया, मैं बांधकर बहुत पीटी गई हूँ ॥ ३८ ॥ उससे मेरा शरीर बहुत पीडित हो गया, कटि टूट गयी है, अब क्या करूं ? यह सुन वो बैल कहने लगा कि, हे भद्रे ! तेरे पाप के दोष से ॥ ३९ ॥ मैं इस भारवाह की योनि में पडा हुबा हूं, मैं क्या करूं ? मेरी चलनेकी शक्ति नहीं थी तो भी आज मुझ को दिन भर अपना खेत जोतना पडा है ॥ ४० ॥ मेरा मुंह बांध दिया, मुझे बहुत पीटा, इसने मेरा, जो श्राद्ध किया है वह सब निष्फल हो गया क्योंकि में तो इतने कष्ट में पडा हुआ हूं ॥ ४१ ॥ श्रीकृष्णचन्द्र बोले-हे भारत ऐसे वे दोनों माता-पिता कुत्ती और बैल बनकर रात में अपना-अपना दुःख कह रहे थे, उसको सुनकर ॥ ४२ ॥ सुमति ने जान लिया कि, ये दोनों मेरे माता पिता हैं, उसी रात को उसने दोनों को भोजन दिया ॥ ४३ ॥ वो पुत्र अपने माँ-बाप की ऐसी अवस्था देखकर हे राजेन्द्र ! वन को चल दिया ॥ ४४ ॥ मेरे मॉं-बाप की ऐसी दशा क्यों हुई ? इस बात को जानने के लिये हो वो बन में गया था. वहीं उसने परम धार्मिक ऋषियों को ॥ ४५ ॥ प्रणाम करके उनके सामने माता-पिता के कल्याणकारी वचन कहे कि, हे श्रेष्ठ बुद्धिमान् ब्राह्मणों ! मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं एकाग्र होकर कहें ॥ ४६ ॥ हे तपोधनो ! किस कर्मविपाक से मेरे माता पिता इस दशा को प्राप्त हुए हैं कैसे उन्हें छुटाऊं ? सो कहिये ॥ ४७ ॥ भगवान् कृष्ण बोले कि, उस दुखित सुमति के ऐसे वचनों को सुनकर दयालु सर्वज्ञ सर्वतपा नामक ऋषि ने उसके ॥ ४८॥ माता-पिता की मुक्ति का उपाय बताया कि हे वित्र ! पहिले जन्म में अपने घर में तेरी माता ने बालभाव के कारण ही ॥ ४९ ॥ प्राप्त हुए ऋतुकाल को " जानकर भी हे तिज | सम्पर्क कर लिया था, उसी कर्मविपाक से वह कुतिया बनी है ॥ ५० ॥ आपका पिता भी स्पर्श के दोष से बैल होगया है. इन दोनोंको इससे छुटाने के लिये तू ऋषिपंचमी कर ॥ ५१ ॥ है विन्द्र ! स्त्रीके साथ ऋऋषियों का पूजन करके प्रयत्न के साथ सात वर्षतक इस व्रतको करना ॥ ५२ ॥ व नके लोभको छोड़कर अन्तमें उद्यापन और शाकाहार करना चाहिये। नीवार या श्यामाक भी काममें ले लेने चाहिये ॥ ५३ ॥ अथवा कन्च, मूल, फल इनसे आहार कर ले, पर हल जोतकर पैदा की हुई किसीभी वस्तुको न ले ॥ ५४ । इसमें मध्याह्न के समय नदी आदि निर्मल जल के किनारे अपामार्ग की समिष से पहिले दन्तधावन करे ॥५५॥ दन्त धावन करनेसे पहिले " आयुर्बलं इस मन्त्रको पढता हुआ उस अपामार्ग के काष्टका स्पर्श करे कि. हे वनस्पते ! तुम आयु बल, यश. वर्च, बसु (धन) ब्रह्म ज्ञान और मेषा (स्मरणशक्ति) को मुझे दो ॥५६॥ दन्तधावन के समय मन में यह भावना रखे कि, मैं

मुख की दुर्गन्धी के दूर होने के लिये एवम् दॉतो के साफ होने के लिये और गात्रों के ष्ठीवन (कफ पातन द्वारा शुद्धि) के लिये दन्तधावन करता हूं। इस प्रकार अपामार्ग के काष्ठ से दाँतों को मलकर कुल्ले करे, फिर मृत्तिका लगा के स्नान करे ॥ ५७ ॥ ॥५८॥पीछे तिलोंकी और आंवलोंकी पीठी लगाकर केशोंके मैलको अच्छी तरह दूरकरे, पीछे समाहित हो दो शुद्ध नूतन वस्त्र धारण करे ॥ ५९ ॥ फिर अरुन्धती सहित विव्य सप्त ऋषियोंकी पूजा करे।

वे सात ऋषि ये हैं-१ कश्यप, २ अत्रि ३ भरद्वाज, ४ विश्वामित्र, ५ गौतम ॥ ६० ॥ ६ जमदग्नि, ७ भगवान् वसिष्ठ और आठवीं पतिव्रता महाभागा अरुन्धती ।

इनका पूजन इनके ही नामों से मन्त्र कल्पना करके समाहित हो करे कि, "ओं भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः कश्यपमावाहयामि, कश्यपके लिये नमस्कार है कश्यप को बुलाता हूं, भो कश्यप इहागच्छ हे कश्यप यहां आ, इह तिष्ठ यहां बैठ, पूजां गृहाण पूजा ग्रहणकर, ओं भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहिताय वसिष्ठाय नमः अरुन्धती सहित वसिष्ठ के लिये नमस्कार है, अरुन्धती सहित वसिष्ठमावाहयामि अरुन्घती सहित वसिष्ठ को बुलाता हूं' इत्यादि रूप से नाम मन्त्रों की कल्पना करके अरुन्धती सहित सप्तऋषियों का पूजन करना चाहिये ॥ ६१॥ ऋषिपञ्चमी के व्रत के करने से ऋतुकाल के सम्पर्क का पातक अवश्य नष्ट होगा इसमें संशय मत करो ॥ ६२॥ श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि, सर्वतपा ऋषिके उत्तम वचनों को सुनकर सुमति अपने घर पर आया। फिर श्रद्धान्वित हो उसने अपनी भायके साथ उसी विधि से समस्त पातकों का अन्त करने वाला ऋषिपञ्चमी का व्रत किया || ६३ ॥ जैसे सर्वतपा मुनि ने व्रत करना बताया था ठीक उसी रीति से उस सुमति ब्राह्मण ने ऋषिपञ्चमी के व्रत को (सात वर्षतक) करके (उद्यापनके बाद) उसका पुष्यफल अपने माता-पिताओं के लिये दे दिया || ६४ । इसके मिलने से उसकी माता जयश्री कुतिया की योनि से छूटकर हे नृपतिशार्दूल ! उत्तम विमान पर चढ गई वह दिव्य वस्त्राविकों से भूषित हुई विमान पर चढ स्वर्ग में चली गई, हे भारत ! हे महाराज !! वह सुमति का पिता भी बैल की योनि से छूटकर स्वर्ग पहुंच गया। कायिक, वाचिक और मानसिक जो जो पाप हों।। ६५-६७। वे सब ऋषिपञ्चमी के व्रत करने से विलीन हो जाते हैं। हे नृपोत्तम ! इस व्रत का जो पुण्य फल होता है उसे में सुनाता हूं, आप सुनें ॥ ६८॥ दूसरे दूसरे जो व्रत हैं उन सबके करने से तथा सब तीयों के सेवन एवं सब दानों के करने से जो पुण्य होता है वह सब इस एक ऋषिपञ्चमी के व्रतानुष्ठान से मिलता है।। ६९ । जो स्त्री इस व्रत को करती है वह सदा सुख भोगनेवाली और रूप लावण्य से सम्पन्न एवं पुत्र पौत्रादि शालिनी होती है ॥ ७० ॥ इस लोक में सदा सुख भोग, परलोक में सद्गति को प्राप्त होती है हे राजन् ! मैंने व्रतों में उत्तम बस तुम्हारे लिये कहा है ॥

७१।। हे युधिष्ठिर ! यह व्रत सब सम्पत्तियों का देनेवाला स्त्रियों के पापों का नाशक, धन, यश, स्वर्ग और पुत्रसुखका देनेवाला है। इस व्रतकी कथाको जो पढ़ते या सुनते हैं। उनके सब पाप नष्ट होते हैं ॥ ७२ ॥

इस प्रकार से भविष्य पुराण में कही हुई ऋषिपंचमी व्रत कथा पूरी हुई।

बोध प्रश्न –

1. ऋषि पंचमी व्रत किस मास में मनाया जाता है?
   क. भाद्रपद मास ख. आषाढ़ ग. श्रावण घ. कार्तिक
2. ऋषि पंचमी व्रत किस तिथि को धारण करते है?
   क. प्रतिपदा ख. पंचमी ग. सप्तमी घ. दशमी
3. ऋषि पंचमी व्रत कब ग्रहण करना चाहिये?
   क. सूर्योदयकालीन ख. मध्याह्नव्यापिनी ग. प्रदोषकाल घ. कोई नहीं
4. रजस्वला स्त्री की शुद्धि कितने दिनों में होती है?
   क. 3 ख. 4 ग. 5 घ. 6
5. स्त्रियों को विशुद्ध करने वाला व्रत है।
   क. करवा चौथ ख. ऋषि पंचमी ग. हरितालिका तीज घ. कोई नहीं

14.5 सारांश

प्रस्तुत अध्ययन के बाद आपने जान लिया है कि भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि को ऋषि पंचमी व्रत होता है। इस व्रत को मध्यान्हव्यापिनी ही ग्रहण करना चाहिए। माधवीया और हारीत के अनुसार सभी पूजाव्रतों में मध्यान्हव्यापिनी तिथि का ही ग्रहण करना। यदि दो दिन मध्यान्हव्यापिनी तिथि हो तो पहली वाली ही ग्रहण करें। सात वर्ष तक इस व्रत को करना चाहिए और अन्त में उद्यापन करना चाहिए। हे राजेन्द्र ! इस व्रत का आचरण करने से नरक का दर्शन नहीं होता है। रजस्वला समय में स्पर्शस्पर्शादिदोषों के निवारणार्थ यह व्रत होता है। स्त्रियों के

लिए तो परमावश्यक है परन्तु सपत्नीक व्रत की महत्ता अधिक बताई गई है।

14.6 पारिभाषिक शब्दावली

मध्याह्नव्यापिनी – दोपहर के समय में

स्पर्शदोष – छूने से लगने वाला दोष

कामनापूर्ति – कामना या इच्छा का पूरा होना

ऋषिपंचमी – भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष पंचमी को किया जाने वाला व्रत

व्रताचरण – व्रत का आचरण

14.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. ख
3. ख
4. ग
5. ख

14.8 सहायक पाठ्यसामग्री

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरिज

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

14.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरीज, वाराणसी

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन, वाराणसी

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

14.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. ऋषि पंचमी व्रत का परिचय दीजिये।
2. ऋषि पंचमी व्रत धारण विधि का शास्त्रीय उल्लेख कीजिये।
3. ऋषि पंचमी व्रत उद्यापन का वर्णन कीजिये।
4. ऋषि पंचमी व्रत की कथा लिखिये।
5. धार्मिक दृष्टि से ऋषि पंचमी का क्या महत्व है।

इकाई – 15 श्रीगणेश चतुर्थी व्रत एवं उद्यापन

इकाई की संरचना

15.1 प्रस्तावना

15.2 उद्देश्य

15.3 श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

15.4 श्रीगणेश चतुर्थी व्रत उद्यापन

15.5 सारांश

15.6 पारिभाषिक शब्दावली

15.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.8 सहायक पाठ्यसामग्री

15.9 निबन्धात्मक प्रश्न

15.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई श्रीगणेश चतुर्थी व्रत एवं उद्यापन शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने विविध स्तोत्रादि का अध्ययन कर लिया है। अब आप लोकप्रचलित श्रीगणेशचतुर्थी व्रत तथा उसके उद्यापन की विधि को जानेंगे।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत का सम्बन्ध भगवान गणेश से है। यह व्रत उत्तर भारत के राज्यों में तथा प्राय: महाराष्ट्र में विधिवत और अत्यधिक रूप से मनाई जाती है। सामान्य रूप से सभी लोग इस व्रत को धारण करते हैं। इस व्रत का माहात्म्य बहुत उत्तम है।

आइए हम सब श्रीगणेशचतुर्थी व्रत तथा उसके उद्यापन का अध्ययन करते हैं।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –

- श्रीगणेशचतुर्थी व्रत किसे कहते हैं।
- श्रीगणेशचतुर्थी व्रत धारण की विधि क्या है।
- श्रीगणेशचतुर्थी व्रत का माहात्म्य क्या है।
- लोक में इसका क्या महत्व है।
- श्रीगणेशचतुर्थी व्रतोद्यापन विधि क्या है।

15.3 श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

गणेश शब्द का अर्थ होता है – गणानां ईश: अर्थात् जो समस्त जीव जाति के ईश अर्थात् स्वामी हो। गणेश जी को ‘विनायक’ भी कहते हैं। विनायक शब्द का अर्थ है- विशिष्ट नायक। वैदिक मत में सभी कार्य के आरम्भ जिस देवता का पूजन से होता है, वही विनायक हैं। गणेश चतुर्थी के पर्व का आध्यात्मिक एवं धार्मिक महत्त्व है। गणेश गजवदन, विनायक, लम्बोदर आदि अनेक नामों से विख्यात हैं। गणेश हमारे राष्ट्रीय आदर्श तो है ही, देवकार्य या मांगलिक और धार्मिक कार्यों में सर्वदा और सर्वत्र अग्रपूज्य भी हैं और यदि इस अग्रपूज्यता को हम प्रकारान्तर से नेतृत्वकर्ता या गणों का स्वामी मानें तो हमारे सामने श्रीगणेश के गणपति होने का रहस्य भी प्रकट होता है। अर्थात् गणपति का नाम गणेश का पर्याय क्यों है? इसलिए कि वे गणों के स्वामी हैं।

आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥

अर्थात् जो इस सृष्टि के आदि में प्रकट है, प्रकृति पुरुष से परे है, ऐसे गणपति का ध्यान करने वाले योगी तो समस्त योगियों में भी श्रेष्ठ हैं। गणों को यदि हम सत्. चित् और आनन्द के तीन वर्षों में विभक्त करते हैं तो इनका संयुक्त सच्चिदानन्द ही गणपति है। तीनों गणों के पति या रक्षक से विभूषित तत्त्व ही गणपति है। इस प्रकार के गणपति सत्ता, ज्ञान और सुख के अधिष्ठाता है। जाग्रत, स्वप्न या सुषुप्तावस्था जैसी परिस्थिति से परे पुरुष जो समस्त परिस्थतियों में है भी और नहीं भी है, अर्थात् निर्विकार समाधिस्थ है, वही गणों का पति या गणपति है। कुर्यावस्था में स्थित ब्रह्म जो परा, पश्यन्ती और मध्यमा का दृष्टा है, त्रिभुवन अर्थात् पृथ्वी, अन्तरिक्ष और अनन्त स्वर्ग का पति है, वही गणेश या गणपति है। भागवतकार का कथन 'ब्रह्माद्वयं शिष्यते' (10/4/18) अर्थात् ब्रह्मा ही उपक्रम और पर्यावसान है। इसी के लिये तुलसीदास ने मंगलाचरण में लिखा है-

वर्णानामर्थसंधानां रसानां छन्दसामपि ।
मंगलानां च कर्तारी वन्दे वाणी विनायकौ ॥

छन्द शास्त्र के आठ गणों मगंण, जगण, सगण, यगण, रगण, तगण, भगण और नगण इनके आठ विनायक ही **'अष्टौ विनायकाः'** वास्तव में गणपति हैं। एकमात्र अधिपति होने के कारण यही गणपति तथा महागणपति है। कठश्रुति का कथन **'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति'** भी तभी सम्भव है जब समस्त वेद उसी ऊँकार स्वरूप का बारम्बार स्मरण करते हों, तीनों गण-देवगण, मनुष्यगण और राक्षसगण का स्वामी भी गणेश है। ऐसी हमारे ज्योतिषशास्त्र की स्वीकारोक्ति है। ऋग्वेद में वर्णन है कि सत्ता एक ही है और उसी का वर्णन प्रकारान्तर से भिन्न-भिन्न रूपों में है, अर्थात् एकता का सर्वोत्तम प्रदर्शन अनेकता का एकता में दर्शन, वही हमारे शास्त्रों-पुराणों का परम लक्ष्य भी है।

इन्द्र मित्रं वरुणमग्निमाहूरयोदिव्यः स सुवर्णा गरुत्मान् ।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्यग्नि यमं मातारिश्वानमाहुः ॥

गणेश जी के गजतुण्ड, एकदन्त, गणमुख, वक्रतुण्ड आदि होने के भी दिलचस्प कथानक हमारे पुराणों में वर्णित हैं। तैत्तिरीय आरण्यक के 10वें प्रपाठ के प्रथम अनुवाक में प्रयुक्त मन्त्र जिसे गणेश गायत्री का सम्बोधन भी प्राप्त है, उपरोक्त विश्लेषण से युक्त है-

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, वक्रतुण्डायचीमहि । तन्नोदन्ती प्रचोदयात् ॥

महाकवि कालिदास ने गणेश जी के आविर्भाव के सम्बन्ध में वर्णन 'चिद्गगन चन्द्रिका' में इस प्रकार किया है-

क्षीरोद पौर्णमासीशशवर इव यः प्रस्फुरनिस्तरंग ।

चिद्धयोम स्कारनादं रुचि विसरलप्साद्विन्दुः वक्रोर्मिलमालम् ।
आद्यस्पन्दस्वरूपः प्रपयति सकृदोंकार शुण्डः क्रियादृग ।
दन्त्यास्यो यं हठाद्रवः शमयतु दुरितं शक्तिजनमा गणेशः ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार गणेश जी के जन्म के पश्चात् गणेश जी पर शनिश्चर का दृष्टिपात होने से उनका सर धड़ से अलग हो गया और विष्णु ने तत्काल उपलब्ध हाथी का सर काटकर उनके धड़ भाग से संयोजित कर दिया। इसी कारण उनका नाम 'गजानन' हो गया। इसी पुराण कथा के अनुसार एक बार जब परशुराम जी शिव-पार्वती के दर्शन के लिये कैलाश गये तब गणेश जी निदित माता-पिता के सुरक्षार्थ रक्षक तथा पहरेदार रूप में कार्यरत थे और प्रवेश से उन्होंने परशुराम जी को रोका, जिस पर हुए संघर्ष में परशुराम के फरसे से गणेश जी का दाँत टूट गया और गणेश जी एकदन्त हो गये। गणेश जी के जन्म की एक अन्य कथा के अनुसार पार्वती ने स्नान करते समय उबटन व मृत्तिका से एक मूर्ति का निर्माण किया और प्राण फूंकने पर वह बालक गणेश हो गये । इसी समय शिव वहाँ आये, किन्तु बालक गणेश ने उन्हें रोक दिया। जिस पर शिव ने बालक का सर काट दिया किन्तु पार्वती के द्वारा सत्य जानने के पश्चात् दक्षिण की ओर निद्रित उपलब्ध गज का सिर धड़ से जोड़कर उसमें प्राणों की प्रतिष्ठापना करने के फलस्वरूप गजमुख बालक गणेश का गजानन में रूपान्तरण हो गया। बौद्ध मतावलम्बी श्वेत-गज की धार्मिक सत्ता को स्वीकार करते हैं। गिरनारवाली धर्मलिपि में तेरहवें प्रज्ञापन के नीचे **'श्वेतो हस्ती सर्वलोकखुखाहरोनाम'** उत्कीर्ण है, क्या यह गजानन या गणेश के लिये नहीं है ?

समाधि से योगी जिस तत्त्व को प्राप्त करते हैं, वह 'ग' है और जिस प्रकार से बिम्ब के द्वारा प्रतिबिम्ब का निर्माण होता है, वैसे ही कार्यकरण- स्वरूप प्रणवात्मक प्रपंच है, जिससे 'ज' होता है और **'समाधिनो योगिनो यत्र गच्छन्ति इति 'ग' तथा यस्माद् बिम्ब प्रतिबिम्बवत्तया प्रणवात्मक जगउजायते इति 'द' तथा जन्माद्यस्थ यतः यस्मादोंकार सम्भूर्तिर्यतो वेदो यतोजगत् इत्यादि वचन इनके पोषक हैं। श्रीमद्भगवद् गीता के कथन 'प्रकृति यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति'** (3/33) के अनुसार समस्त जीवन अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार ही कार्य प्रवृत्त होते हैं और गणेश की प्रकृति के सम्बन्ध में कथन है कि विष्णु, देवी, दुर्गा, सूर्य, शिव और गणेश पंचतत्त्व अधिष्ठाता है जिसमें गणेश को जल तत्त्व का अधिष्ठाता बताया है

आकाशस्याधियो विष्णुरानेश्चैव महेश्वरी
वायोः सूर्यः क्षितेरीशो जीवनस्य गणाधिपः ॥

गणेश जी का पादादि कण्ठपर्यन्तदेह 'नरदेह' है और कण्ठादि- मस्तकपर्यन्त 'गजस्वरूप' है। गणेश जी 'एकदन्त हैं, जिसमें 'एक' शब्द 'माया' और दन्त शब्द 'मयिक' बोधक है ।

एकशब्दात्मिका माया तस्याः सर्व समुद्भवम् ।
दन्तः सत्तावरस्तत्र मायाचालक उच्यते ।

सन्त ज्ञानेश्वर ने गणेश जी का निरूपण वेदों से वर्णनयीय आदिरूप, बुद्धि प्रकाशक, वेदाक्षर, पुरागमणि भूषण, भुजाओं का षड्दर्शन रूप, तर्कशास्त्री, परशुरूपा, न्यायशास्त्री, अंकुशरूपा, धर्मप्रतिष्ठापक आदि करते हुए कहा है कि आप विघ्नशमक, सूक्ष्मदर्शी हैं। इसी प्रकार पद्मपुराण के अनुसार गणेशजी को समस्त विघ्नों को शान्त करने वाले, परमबुद्धिमान, ज्ञान-विज्ञान के प्रदाता दैत्यसंहारक, प्रसन्नता-धन-यश कीर्ति के उत्थापक, यज्ञ रक्षक और मनोरथों को पूर्ण करने वाले बताया गया है। यजुर्वेद (3/57) के अनुसार गणेश का वाहन 'मूषक' प्राणियों के समस्त भोग्यपदार्थों को हरण करके भी पाप-पुण्यरहित है। वैसे ही माया भी सर्वान्तर्यामी और सर्वभोग्य भोग्या होने के बाद भी पुण्य-पाप अर्जित है।

15.4 श्रीगणेशचतुर्थी व्रत कथा संस्कृत में –

श्रीगणेश उवाच।। भद्रे भाद्रपदे मासि सङ्कष्टी या चतुर्थिका।

अनेकफलदा प्रोक्ता सर्वसिद्धिप्रदायिनी।।२।।

पूजा पूर्वविधानेन तस्यां कार्य्या समन्ततः । विशेषस्तु प्रवक्ष्यामि भोजनादिषु पार्वति ।।३।।

श्रीकृष्ण उवाच एवं निगदिते पुत्रे पुनः पप्रच्छ पार्वती । को विशेषः प्रकर्त्तव्यः पूजने भोजनेषु च ।।४।।

श्रीगणेश उवाच ।।५रर्चयेत् ।। -नामभिगुरूपदिष्टमार्गेण भक्त्या तव्रतमाचरेत् । द्वादशेष्वपि मासेषु पृथा -

विनायकश्चैकदन्तः कृष्णपिङ्गो गजाननः । लम्बोदरो भालचन्द्रो हेरम्बो विकटस्तथा ।।६।।

वक्रतुण्डश्चाखुरथो विघ्नराजो गणाधिपः । द्वादशैर्नामभिश्चैतैर्गणेशं पूजयेद् व्रती ।।७।।

द्वादशेष्वपि मासेषु पूज्यते नामभिः पृथक् ।। चतुर्थ्यां प्रातरुत्थाय नित्यकृत्यं यथोदितम् ।।८।।

नलो ह्यासीत्कृतयुगे पुण्यश्लोको नराधिपः । तस्य रूपवती भार्य्या दमयन्तीति विश्रुता ।।९।।

तस्य देववशाच्छापः स्त्रीवियोगविषादकृत् । तदा देव्या कृतं हौतद् व्रतानामुत्तमं व्रतम् ।।१०।।

पार्वत्युवाच केन वै विधिना पुत्र दमयन्ती व्रतोत्तमम् । चकार भूपतिं लेभे तृतीये मासि शोभना ।।११।।

श्रीकृष्ण उवाच एवं निगदितः पार्थ पार्वत्या गणनायकः। प्रोवाच वचनं श्रीमान् विस्तरेण शृणुष्व तत् -
।।१२।।

श्रीगणेश उवाच मातर्नलस्य भूपस्य विपत्तिर्विपुलाभवत् ॥ गजाश्च गजशालायां मन्दुरायां तथा हयाः ॥१३॥

कोशस्तु तस्करैर्नीतो गृहं दग्धं कृशानुना। मन्त्रिणोऽपि गतास्तस्य राजकार्यविनाशकाः ॥१४॥

अक्षक्रीडनकेनैव राजा सर्वहृतोऽभवत्॥ भग्नदेशस्ततो राजा स्वपुरान्निर्गतो वनम् ॥१५॥

दमयन्त्या समं तत्र नानाक्लेशैश्च पीडितः ॥ तत्रापि दमयन्ती च वियोगं प्राप दैवतः ॥१६॥

कस्मिंश्चिन्नगरे राजा भृत्यभावं समागतः ॥ कस्मिंश्चिद्विषये भार्या कस्मिंश्चिद्विषये सुतः ॥१७॥

भिक्षाशिनस्तु ते सर्वे नानाव्याधिप्रपीडिताः । स्वकर्मभोगान् भुञ्जानः परस्परं वियोगिनः ॥१८॥

एकदा दमयन्ती सा शरभंङ्ग महामुनिम् । प्रणम्य पादयोर्मूर्ध्वा बद्धाञ्जलिरभाषत ॥११॥

दमयन्त्युवाच कथं भो मत्पतिप्राप्तिः पुत्रप्राप्तिः कथं भवेत् । कथं गजहयान् राज्यं नगरं नृभिराकुलम् ॥२०॥

कथमेतादृशं भाग्यं मुने तद्वद निश्चितम्। गणेश उवाच इति तस्या वचः श्रुत्वा शरभङ्गोऽब्रवीद्वचः ॥२१॥

शरभङ्ग उवाच तकारकम्दमयन्ती शृणु वचो वक्ष्यामि हि-। महासङ्कष्टशमनं सर्वकामप्रदं शुभम् ॥२२॥

भाद्रमासस्य या कृष्णाचतुर्थी सङ्कटा तु सा। तस्यां पूज्यो नरैः स्त्रीभिरेकदन्तो गजाननः ॥ २३ ॥

पूर्वोक्तेन विधानेन भक्त्या प्रीत्या च श्रद्धया। व्रतेनानेन भो देवि लब्धकामा भविष्यति ॥ २४॥

मुनिमासैर्महाराजमिति मे निश्चला मतिः । गणेश उवाच दमयन्ती तदा चक्रे सङ्कष्टव्रतमुत्तमम् । भाद्रे -
॥२५मासि कृतारम्भा गणनाथार्चने रतिः ॥

सप्तमासैः पतिं प्राप्यं राज्यं पुत्रं तथैव च । तथैव सुपदं राजा कृत्वा चैव व्रतोत्तमम् ॥२६॥

श्रीकृष्ण उवाच तथा पार्थ व्रतादस्माद्राज्यं प्राप्स्यसि निश्चितम् । वैरिणस्ते पराभूता भविष्यन्ति विशेषतः ॥२७॥

हिंदी व्याख्या -

गणेश व्रत की संक्षिप्त कथा भाद्रपद कृष्ण गणेशचतुर्थी व्रत की कथा प्रारम्भ करते हुए गणेश जी अपनी माता पार्वती जी से कहते हैं कि हे भद्रे। भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी संकष्ट चतुर्थी के नाम से प्रसिद्ध है। सर्वसिद्धि- प्रदायिनी इस चतुर्थी तिथि में विधानपूर्वक गणेशपूजन तथा व्रत करने के अनेक शुभफल प्राप्त होते हैं। माता पार्वती ने इस व्रत की विशेषता के सम्बन्ध में पुनः प्रश्न किया। गणेशजी ने कहा कि गुरु परम्परा से बताये हुए कर्म द्वारा भक्तिपूर्वक इस व्रत का आचरण करना चाहिए और हर महीने पृथक् पृथक् नामों से मेरी अर्चना करनी चाहिए। वे नाम क्रमशः १ विनायक २ एकदन्त ३कृष्णपिंग ४ गजानन ५ लम्बोदर ६ भालचन्द्र ७ हेरम्ब ८ विकट ९ वक्रतुण्ड १० आखुरथ ११ विघ्नराज १२ गणाधिप हैं। प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्थी के दिन प्रातःकाल नित्य क्रिया सम्पादित करने के अनन्तर पूजन तथा व्रत आरम्भ करना चाहिए।

दृष्टान्त रूप में गणेशजी ने कहा कि सतयुग में नल नाम के प्रतापी राजा थे और उनकी परम रूपवती पत्नी दमयन्ती थी। भाग्यवश किसी के शाप से स्त्री से वियोग हो गया और उनकी पत्नी ने इस व्रत के प्रभाव से अपने पति को पुनः प्राप्त किया।

जगदम्बा पार्वती ने पुनः प्रश्न किया कि हे पुत्र। दमयन्ती ने किस विधि से उत्तम व्रत का सम्पादन किया और ७वें महीने में अपने पति को प्राप्त किया। अपनी माता के प्रश्न को सुन कर गणेश जी ने कहा कि हे माता। राजा नल दैवयोग से घोर विपत्ति में पड़ गये। हाथी-घोड़े, धन-सम्पत्ति आदि चल-अचल सभी वस्तुओं का नाश हो गया। मन्त्री लोग छोड़कर चले गये। द्यूत क्रीड़ा में हारे हुए व्यक्ति के समान राजा भी सब कुछ खो चुके थे और अपने राज्य को नष्ट हुआ जानकर समय व्यतीत करने हेतु दमयन्ती के साथ वन को चले गये। जंगल में राजा अनेक प्रकार की यातनायें भोगते रहे और अन्त में अपनी पत्नी दमयन्ती से भी उनका वियोग हुआ। राजा किसी नगर में जीविकार्थ भृत्यभाव को प्राप्त हुए और पत्नी तथा पुत्र भी किन्हीं अन्य नगरों में भिखारी बनकर नाना प्रकार के कष्ट उठाने लगे। परस्पर वियोगी होकर वे अपने कर्मों का फल भोगने लगे। संयोगवश सहसा दमयन्ती का शरभंग ऋषि से साक्षात्कार हुआ। दमयन्ती ने उन्हें प्रणाम कर नम्रता पूर्वक पूछा कि ऋषिराज कृपाकर बताइए कि मेरे पति तथा पुत्र किस उपाय से प्राप्त होंगे। साथ ही राज्यधन-सम्पत्ति की किस उपाय से प्राप्ति सम्भव है। इसके अतिरिक्त यह भी बताइये कि क्यों भाग्य ने मुझको इस गति में पहुँचाया।

गणेशजी कहते हैं कि हे माता! दमयन्ती के वचनों के सुनकर शरभङ्ग ऋषि ने कहा कि हे दमयन्ती! सुनो मैं तुम्हारे हित की दृष्टि से कहता हूँ। भाद्रपद मास की कृष्ण चतुर्थी जो संकष्ट चतुर्थी के नाम के व्रत से विख्यात है। यह व्रत महासंकट को मिटाने वाला और सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है। इस दिन पुरुष या स्त्री भक्ति पूर्वक श्रद्धा से एकदन्त गजानन का पूजन करने से सात माह के अन्दर ही इच्छानुसार फल प्राप्त करते हैं। गणेशजी ने पुनः कहा कि दमयन्ती ने इस संकष्ट व्रत को भाद्रपद मास से आरम्भ किया और सात माह में अपने पति पुत्र तथा राज्य को प्राप्त कर लिया।

संकष्टगणेशचतुर्थी व्रतम् -

दारिद्रयशोककष्टाद्यैः पीडितानां च बैरिभिः । राजभ्रष्टैर्नृपैः सर्वैः क्रियते किं शुभार्थिभिः।। धनहीनैर्नरैः स्कन्दसर्वोपद्रवपीडितैः। विद्यापुत्रगृहभ्रष्टैः रोगयुक्तैः शुभार्थिभिः । कर्तव्यं किं वदोपायं पुनः क्षेमार्थसिद्धये । स्कन्दोवाच- शृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतानामुत्तमं व्रतम् । संकटतरणं नामामुत्रेह सुखदायकम्। श्रावणकृष्णचतुर्थ्यां संकष्टचतुर्थीव्रतं लिखितमस्ति परन्तु एवमपि लिखितमस्ति यत भाद्रकार्त्तिकमाघादिषु संकटनाशनचतुर्थीव्रतं कार्यम् । अस्य व्रतस्य प्रधानदेवता विघ्नविनायकभगवान् गणेशोऽस्ति ।

-

व्रतविधिः – व्रतस्य पूर्वदिने सायंकाले मनसि एवं प्रतिज्ञाविधाय यत् भगवतः श्रीगणेशस्य प्रसन्नतार्थं तथा सर्वेषां संकटानां निवारणार्थं श्रीसंकष्टचतुर्थीव्रतं करिष्ये। ततो व्रतदिने प्रात:काले उत्थाय नित्यनियमादिकं सर्वं सम्पन्नं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्। देशकालौ सङ्कीर्त्य ममात्मनः विद्याधनपुत्रपौत्रादिशरीरारोग्यादिप्राप्त्यर्थं समस्तसंकष्टनिवृत्यर्थं श्रीगणेशप्रीत्यर्थमद्य संकष्टचतुर्थीव्रतं करिष्ये। सायंकाले सङ्कल्पादिकं कृत्वा सौवर्णरौप्यताम्रमृन्मयाद्यन्यतमां गणपतिं मुर्त्तिं कृत्वा जलपूर्णं पूर्णपात्रं वस्त्रयुतकुम्भोपरि स्थापयित्वा षोडशोपचारैः पूजयेत्। ध्यानम् – लम्बोदरं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं रक्तवर्णकम्। नानारत्नैः सुवेषाढ्यं प्रसन्नास्यं विचिन्तयेत् । ध्यायेद्गजाननं देवं तप्तकाञ्चन सुप्रभम्। चतुर्बाहुं महाकाय सूर्यकोटि समप्रभम्।। एवं प्रकारेण ध्यानावाहनानन्तरं पुरुषसूक्तैः वैदिकमन्त्रैर्वा सम्पूज्य मध्ये अङ्गपूजां कुर्यात् ।

अथाङ्गपूजा—

ॐ गणेश्वराय नमः पादौ पूजयामि। विघ्नराजाय नमः जानुनी पूजयामि। आखुवाहनाय नमः उरुं पूजयामि। हेरम्बाय नमः कटिं पूजयामि। कामारिसूनवे नमः नाभिं पूजयामि। स्थूलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। स्कन्दाग्रजाय नमः स्कन्धौ पूजयामि। गणनायकाय नमः हृदयं पूजयामि। पाशहस्ताय नमः शिरः पूजयामि । श्रीगणाधिपाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि। ततो धूपदीपादिकं सर्वविधं सम्पूज्य– मोदकान्कारयेन्मातस्तिलजान्दशपार्वती। देवाग्रेस्थापयेत्पञ्चपञ्चविप्राय कल्पयेत्।।

एवं प्रकारेण दक्षिणासहितपञ्चमोदकान् विप्राय निवेद्य रात्रौ अर्घ्यदानम्। रात्रिकाले यदा चन्द्रोदयो भवेत् तदा गन्धाक्षतपुष्पैः देवान् सम्पूज्य अर्घ्यदानं कुर्यात्।

अर्घ्यमन्त्राऽङ्किताः । प्रतिमन्त्रेणार्घ्यं दद्यात्–

१. क्षीरसागरसंभूत सुधारूपनिशाकर। गृहाणार्घ्यं मया दत्त गणेशप्रीति वर्द्धनम्।। रोहिणीसहितचन्द्रमसे नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि।।
२. क्षीरोदार्णवसंभूत सुधारुप निशाकर। गृहाणार्घ्यं मयादत्तं रोहिण्या सहितः शशिन्।। रोहिणीसहितचन्द्राय नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि।।
३. गणेशाय नमस्तुभ्यं सर्वसिद्धिप्रदायक। संकष्टं हर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते।। कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु पूजितोसि विधूदये । क्षिप्रं प्रसादितो देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते।। संकष्टहरगणेशाय नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि।।
४. तिथीनामुत्तमे देवि गणेश प्रिय वल्लभे । सर्वसंकष्टनाशाय चतुर्थ्यर्घ्यं नमोस्तु ते।। चतुर्थै नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि ।। एवं प्रकारेणार्घ्यं दत्वा

ब्राह्मणान् भोजयित्वा स्वयं भुञ्जीत्। स्वयं भुञ्जीत पञ्चैव मोदकान्फलसंयुतान्। अशक्तश्चैकमन्नं वा भुञ्जीत दधिसंयुतम्। अथवा भोजनमेकबारं कुर्यात्। ततो मूलमन्त्रमेकविंशतिबारं जपेत्-

"नमो हेरम्ब मदमोहितसंकष्टान्निवारय निवारय" ।।

विसर्जन मन्त्रः गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने त्वं गणेश्वर । व्रतेनानेन देवेश यथोक्त फलदो भव।। प्रतिमां गुरवे दद्यादाचार्याय सदक्षिणाम्।।

व्रतोद्यापन विधिः -

एवं व्रतं प्रकर्तव्यं प्रतिमासं त्वयाद्रिजे।
यावज्जीवं तु वा वर्षाण्येकविंशतिमेव वा ।।
अशक्तोऽप्येकवर्षं वा प्रतिवर्षमथापि वा
उद्यापनं तु कर्तव्यं चतुर्थ्यां श्रावणेऽसिते।

ततोद्यापनदिवसात्पूर्वे दिवसे सायं मनसि प्रतिज्ञां विधाय श्वोऽहम् श्रीसंकटचतुर्थीव्रतोद्यापनं करिष्ये । प्रातः काले नित्यकर्मादिक विधाय संकल्प कुर्यात्— देशकालौ सङ्कीर्त्य विद्याधनपुत्रपौत्रशरीरारोग्यादिप्राप्त्यर्थं समस्त संकष्टनिवृत्यर्थं श्रीगणेशप्रीत्यर्थं पूर्वाचरितसंकष्टचतुर्थीव्रतोद्यापनं करिष्ये । ततो गणपत्यादिपूजनपूर्वकं वरणान्तं कार्यं करणीयम्। सर्वतोभद्रमण्डलं निर्माय ताम्रकलशं संस्थाप्य कलशोपरि गणपतिं प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः पूजयेत्। पूर्ववत् अङ्गपूजादिकं सर्वं कृत्वा रात्रौ अर्घ्यादि निवेदनं कृत्वा फलादिग्रहणं कृत्वा पंचम्यां हवनं कुर्यात्। प्रधानदेवस्य होमः " गणानान्त्वा०" इति मन्त्रेण कर्तव्या। प्रधानहोमसामग्री द्रव्याष्टकं भवति (इक्षवः सक्तवो रम्भा फलानि चिपटास्तिलाः।। मोदका नारिकेलानिलाजा द्रव्याष्टकं स्मृतम्) अष्टद्रव्यैर्वादूर्वारक्ताक्षताज्यमोदक– पायसद्रव्यैरष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिर्वाहुतिर्हुत्वा सर्वतोभद्रदेवताभ्यश्च केवलमाज्यं मोदकं वा एकैकाहुतिं च हुत्वा होमशेषं समापयेत्। एकविंशतिर्ब्राह्मणान्

वक्ष्माणैकविंशतिर्नामभिः वस्त्रादीन् सम्पूज्य एकविंशतिपक्वान्नैर्मोदकैर्वा संतर्पयेत्। एकविंशतिनामानि – ॐ गणंजयाय नमः । ॐ गणपतये नमः । ॐ हेरम्बाय नमः । ॐ धरणीधराय नमः। ॐ महागणपतये नमः । ॐ यक्षेश्वराय नमः । ॐ क्षिप्रप्रसादनाय नमः । ॐ अमोघसिद्धये नमः । ॐ अमृताय नमः । ॐ मंत्राय नमः। ॐ चिन्तामणये नमः। ॐ निधये नमः । ॐ सुमङ्गलाय नमः। ॐ बीजाय नमः । ॐ आशापूरकाय नमः । ॐ वरदाय नमः । ॐ शिवाय नमः। ॐ काश्यपाय नमः। ॐ नन्दनाय नमः । ॐ वाचासिद्धये नमः । ॐ ठौढ़ीनायकाय नमः। ततो मोदकवायनं दद्यात्। तत्र मन्त्रः विप्रवर्य नमस्तुभ्यं मोदकान्वै ददाम्यहम्। आपदुद्धारणार्थाय गृहाण द्विजसत्तम्। ततो गणेशं प्रार्थयेत् – अबुद्धमतिरिक्तं वा द्रव्यहीनं मया कृतम्। तत्सर्वं पूर्णतां यातु विघ्नराजन नमोऽस्तुते। ततो गां सोपस्करपीठं शय्यांच आचार्याय दत्वा आशीषो गृहीत्वा बांधवैःसह भंजीत्।

संकष्ट गणेश चतुर्थी व्रत —

ऋषियों ने भगवान् स्वामिकार्तिकेय जी से पूछा कि दारिद्र्य, शोक, कष्टों से पीड़ित एवं शत्रुओं द्वारा राज्य से च्युत कर दिए गए राजाओं को क्या करना चाहिए? सभी उपद्रवों से पीड़ित विद्या, पुत्र, गृह एवं धन से हीन तथा रोगों से युक्त लोगों को क्या करना चाहिए? उनकी कुशलता एवं अर्थ की सिद्धि हेतु उपाय का वर्णन करें। भगवान स्कन्द ने कहा सुख को प्रदान करने वाला सभी संकटों से उबारने वाला एवं सभी व्रतों में उत्तम व्रत आप लोग सुनें। इस प्रकार से भगवान् स्कन्द के अनुसार संकष्ट चतुर्थी व्रत का वर्णन किया गया। श्रावणकृष्णचतुर्थी को संकष्ट चतुर्थी का व्रत लिखा गया है परन्तु बहुत से ग्रन्थों में भाद्रपदमास, कार्त्तिक मास, माघमासों में भी इस व्रत को करने को कहा गया है। इस व्रत के प्रधानदेवता विघ्नों का विनाश करने वाले भगवान गणेश जी स्वयं है।

व्रतविधि –

व्रत के पूर्व दिन कर्ता सायंकाल मन में इस प्रकार प्रतिज्ञा करें कि कल भगवान गणेश की प्रसन्नता के लिए तथा समस्त प्रकार के संकटों के निवारण के लिए श्रीसंकष्टचतुर्थीव्रत करुँगा/करुँगी। उसके बाद व्रत दिवस में प्रातः काल उठकर नित्यकर्मादि संपन्न करके संकल्प करें। संकल्प में

देशकालादि का वर्णन करके मैं अपने विद्या, धन, पुत्र, पौत्रादि धन तथा शरीर की आरोग्यता एवं समस्त प्रकार के संकटों की निवृत्ति एवं श्रीगणेशजी की प्रसन्नता के लिए आज संकष्टचतुर्थी का व्रत करूँगा / करुँगी। उसके बाद दिन भर उपवास रहते हुए पूजन करने के लिए संकल्पादि करके स्वर्ण या चाँदी या ताम्र या मिट्टी की गणेश जी की प्रतिमा को जलपूर्ण कलश के उपर स्थापित करें। षोडशोपचार से पूजन प्रारम्भ करने से पूर्व "लम्बोदरं०''' श्लोक से ध्यान अवश्य करें। उसके बाद पुरुष सूक्त से या वैदिक मन्त्रों से पूजन करके मध्य में (धूप, दीप से पूर्व) अङ्ग पूजा करें। **अङ्गपूजा**— चन्दन, पुष्प, अक्षत द्वारा अङ्ग पूजा करें। जो जो अङ्ग बतलाये गए हैं उन उन अङ्गों पर पूजयामि कहकर गन्धाक्षतपुष्प को छोड़तें जाय। ॐ गणेश्वराय नमः कहकर पैर की पूजा करें। उसी प्रकार सभी अङ्गों की पूजा करके धूप दीप इत्यादि से विधिवत् पूजन करें। इस व्रत में तिलचूर्ण घी मिश्रित दस मोदक (लड्डू) बनाने का बिधान है। जिसमें पांच तो नैवेद्य के रुप में भगवान् गणेश को चढ़ाया जाय। पाँच मोदक दक्षिणा सहित ब्राह्मण या आचार्य को दिया जाय। रात्रि काल में अर्घ्य देने का विधान हैं। रात्रि में जब चन्द्रमा का उदय हो जाय तब गन्ध अक्षत पुष्पों से प्रधान देवता को पूजित करके (लोकाचार के अनुसार स्त्रियां गीत इत्यादि भी गाती हैं) अर्घ्य दान करें। अर्घ्य मन्त्र नीचे दिये गए हैं। प्रत्येक मन्त्र से अर्घ्य दें।

१. हे क्षीर समुद्र से उत्पन्न ! हे सुधा रुप ! हे निशाकर ! आप रोहिणी सहित मेरे दिये हुए गणेश के प्रेम बढ़ाने वाले अर्घ्य को ग्रहण करें। रोहिणी सहित चन्द्रमा के लिए नमस्कार है। यह अर्घ्य चन्द्रमा को समर्पित करता हूँ/करती हूँ। इस मन्त्र से चन्द्रमा को अर्घ्य दें।

२. हे क्षीरसमुद्र से उत्पन्न होने वाले, हे सुधारुप निशाकर ! मैं अर्घ्य देता हूँ/देती हूँ। हे शशिन् रोहिणी सहित आप इसे ग्रहण करिये। रोहिणी सहित चन्द्रमा के लिए इस अर्घ्य को देता हूँ/देती हूँ।

३. सभी प्रकार की सिद्धियों को देने वाले गणेश जी महाराज आपके लिए नमस्कार है, हे देव! सब संकटो का हरण करिये तथा मेरे अर्घ्यदान को अङ्गीकृत करिये आपके लिए बारंबार नमस्कार है। कृष्णपक्ष की चौथ के दिन चन्द्रमा के उदय हो जाने पर पूजन करके शिघ्र ही प्रसन्न कर लिया है। हे देव अर्घ्य ग्रहण करिये आपको मस्कार है।

४. हे चतुर्थी तिथि आप तिथिओं में श्रेष्ठ है। गणेश जी की अत्यन्त प्यारी हो। इस प्रकार से अर्घ्य देकर ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं भोजन करें। स्वयं के लिए गणेश जी को चढ़ाया लड्डू एवं फल को ग्रहण करें। असमर्थ होने पर एक अन्न का ग्रहण दधि के समेत कर सकते हैं। मूल मन्त्र का ''ॐ नमो हेरम्ब मदमोहितसंकष्टान्निवारय निवारय'' यथाशक्ति जप करें। विसर्जन मन्त्र से विसर्जन कर दें और प्रसाद ग्रहण करें।

व्रतोद्यापन विधि -

इस प्रकार से इस व्रत को करना चाहिए। जीवन भर करें या इक्कीस वर्ष अशक्तावस्था में वर्ष में एक बार अवश्य करें। अन्त में उद्यापन करें। उद्यापन के पूर्व सायंकाल मन में संकल्प करें कि मैं कल संकष्टचतुर्थीव्रत का उद्यापन करूँगा / करुँगी । प्रात: काल नित्यक्रिया को सम्पादित कर संकल्प करें कि पूर्व किए गए इस व्रत का सम्पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए इसका उद्यापन कर रहा हूँ/रही हूँ। उसके बाद गणपति पूजन से लेकर आचार्य वरण तक का कार्य सम्पन्न करें। उसके बाद सर्वतोभद्र की स्थापना करके कलशस्थापनाविधि से कलशस्थापन करके उसके ऊपर गणेश जी की प्रतिमा को स्थापित करके विधिवत् पूजन एवं अङ्गपूजन करें। जिस प्रकार पूर्व में कहा गया है । अर्घ्यादि प्रदान कर फलादि ग्रहण करें। पंचमी तिथि में हवन का कार्य प्रारम्भ करें। " गणानान्त्वा०" इस मन्त्र से प्रधान हवन करें। प्रधान हवन की सामग्री—(ईख का टुकड़ा, सत्तू, केला, चिउड़ा, तिल, मोदक, नारियल,लावा) से या (दूर्वा, लाल चावल, घी, मोदक,पायस) से १०८ बार या २८ बार हवन करके सर्वतोभद्र देवताओं को केवल घी या मोदक से आहुति प्रदान कर होमशेष को विधान से समाप्त करें। इक्कीस ब्राह्मणों को गणेश जी के इक्कीस नामों से पूजन करके वस्त्र इत्यादि से पूजन करके इक्कीस पक्वान्नों या मोदकों को समर्पित करें। इक्कीस ब्राह्मणों का गणेश जी के इक्कीस नामों से पूजन (इक्कीस नाम ऊपर दिये गए है)करके मोदक का वायन दें। वायन देने का श्लोक " विप्रवर्य० " दिया गया है उसका पाठ करें। उसके बाद गणेश जी की प्रार्थना करें- प्रार्थना का श्लोक अबुद्ध दिया गया है। उसके बाद गौ तथा शैय्या एवं पीठ को मूर्ति सहित

आचार्य को देकर बान्ध्वों के साथ स्वयं भोजन करना चाहिये।

बोध प्रश्न –

1. गणेश किस तिथि के स्वामी है?
   क. प्रतिपदा ख. द्वितीया ग. तृतीया घ. चतुर्थी
2. लम्बोदर किसे सम्बोधित किया जाता है?
   क. कार्तिक ख. गणेश ग. नन्दी घ. शिव
3. विनायक किसका उपनाम है?
   क. सुरेश ख. महेश ग. गणेश घ. दिनेश
4. निम्न में से अग्र पूजन किसका किया जाता है?
   क. गणेश ख. विष्णु ग. लक्ष्मी घ. शिव
5. गणेश चतुर्थी का वर्णन किस पुराण में मिलता है।
   क. शिव ख. विष्णु ग. स्कन्द घ. पद्म

15.5 सारांश

प्रस्तुत अध्ययन के बाद आपने जान लिया है कि गणेश शब्द का अर्थ होता है – गणानां ईश: अर्थात् जो समस्त जीव जाति के ईश अर्थात् स्वामी हो। गणेश जी को 'विनायक' भी कहते हैं। विनायक शब्द का अर्थ है- विशिष्ट नायक। वैदिक मत में सभी कार्य के आरम्भ जिस देवता का पूजन से होता है, वही विनायक हैं। गणेश चतुर्थी के पर्व का आध्यात्मिक एवं धार्मिक महत्त्व है। गणेश गजवदन, विनायक, लम्बोदर आदि अनेक नामों से विख्यात हैं। गणेश हमारे राष्ट्रीय आदर्श तो है ही, देवकार्य या मांगलिक और धार्मिक कार्यों में सर्वदा और सर्वत्र अग्रपूज्य भी हैं और यदि इस अग्रपूज्यता को हम प्रकारान्तर से नेतृत्वकर्ता या गणों का स्वामी मानें तो हमारे सामने श्रीगणेश के गणपति होने का रहस्य भी प्रकट होता है। चतुर्थी तिथि के स्वामी भगवान गणेश है। इसलिए गणेश चतुर्थी का अपना विशेष महत्व होता है।

15.6 पारिभाषिक शब्दावली

गणेश – गणानां ईश: अर्थात् गणों के स्वामी को गणेश कहते हैं।
विनायक – विशिष्टौ नायक: इति विनायक:। विशिष्ट नायक को विनायक कहते है।
चतुर्थी – चौथी तिथि
अग्रपूज्य – सबसे पहले पूजा जाने वाला

लम्बोदर – लम्बा हो उदर जिसका उदर मतलब पेट

निर्विघ्न – बिना विघ्न के

15.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. घ
2. ख
3. ग
4. क
5. ग

15.8 सहायक पाठ्यसामग्री

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरिज

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

15.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरीज, वाराणसी

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन, वाराणसी

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

15.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गणेश चतुर्थी व्रत का परिचय दीजिये।
2. गणेश चतुर्थी व्रत धारण विधि का शास्त्रीय उल्लेख कीजिये।
3. संकष्टी गणेशचतुर्थी के उद्यापन का वर्णन कीजिये।
4. गणेश चतुर्थी का माहात्म्य बतलाइये।

खण्ड - 4
दान विधान

इकाई - 16 गोदान विधान

इकाई की संरचना

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 गोदान विधान

16.4 सारांश

16.5 पारिभाषिक शब्दावली

16.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.7 सहायक पाठ्यसामग्री

16.8 निबन्धात्मक प्रश्न

16.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई 'गोदान विधान' शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने विविध स्तोत्रादि का अध्ययन कर लिया है। अब गोदान विधि को जानेंगे।

गोदान से तात्पर्य गाय को दान करने से है। प्राय: गृहस्थ के लोग इस कार्य को धर्मकृत्य मानकर करते हैं। इसका माहात्म्य बहुत उत्तम है।

आइए हम सब गोदान का अध्ययन करते हैं।

16.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –

- गोदान किसे कहते हैं।
- गोदान की विधि क्या है।
- गोदान का माहात्म्य क्या है।
- लोक में इसका क्या महत्व है।

16.3 गोदान विधि

व्रतोद्यापन में कौन से मुख्य दान है एवं उसकी शास्त्रोक्त विधि क्या है? इसके विषय में विचार करते हुए ऋषियों के मतानुसार यज्ञ के अन्त में 'गोदान' आवश्यक है। श्री कात्यायन ऋषि के विचार से यज्ञकर्ता को चाहिए कि वह यज्ञान्त में गौ और वस्त्र का दान ब्राह्मण को करें। याज्ञवल्क्य संहिता के अनुसार यज्ञादि कर्म के अन्त में पृथक् रूप से ब्राह्मण को दूध देने वाली गाय का दान करना चाहिए। विश्वप्रकाश का मत है कि स्वर्णयुक्त सवत्सा गाय का दान देना चाहिए। इस प्रकार से गोदान के बहुत से प्रमाण है जिससे यह स्पष्ट होता जाता है कि गोदान आवश्यक है। इसके महत्व को ऋषियों ने अपने-अपने विचार से व्यक्त किया है। श्री अंगिरा ऋषि का विचार है कि गौ केवल एक ही ब्राह्मण को देनी चाहिए। श्रोत्रिय ब्राह्मण को देना विशेष उत्तम है। क्योंकि दान की हुई गौ इक्कीस पीढ़ी के पूर्वजों का निस्तारण करती है। श्री वसिष्ठ के विचार के अनुसार गोदान सात पीढ़ी के आगे होने वाले वंशजों का निस्तारण करती है। याज्ञवल्क्य स्मृति के आचाराध्याय के दान प्रकरण में दिए

गए महर्षि याज्ञवल्क्य जी के विचार भी अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है जिसको व्यक्त करते हुए कहते है कि सोने से सीग और चाँदी के खुर मढ़ाकर, वस्त्र ओढ़ाकर दूध देने वाली सीधी गाय, कांसे के दुग्धपात्र एवं दक्षिणा के साथ दान देना चाहिए।

जितने रोएं होते हैं उतने वर्ष तक उस गौ का दाता स्वर्ग प्राप्त करता है और यदि वह गाय कपिला हो तो वह न केवल दाता को अपितु उसकी सात पीढ़ी तक को तार देती है।

पूर्वोक्त विधि से उभयतो मुखी गाय का दान करने वाला व्यक्ति उतने युग तक स्वर्ग प्राप्त करता है। जितने रोएं गौ और बछड़े के शरीर में मिलाकर होते है। जाबाल ऋषि का मत है कि जो दाता अग्नि होत्र होम के लिए बिना मांगे गौ अग्निहोत्री को देता है उसे तीन बार धनधान्यपूर्ण पृथ्वी के दान के समान पुण्य होता है। इसमें कुछ सन्देह नहीं है। इस प्रकार गोदान वास्तव में एक महादान है जो आवश्यक है। परन्तु दान के उपरोक्त फल को प्राप्त करने के लिए नियमत: कार्य करना जरूरी है। अर्थात् जिस प्रकार से गौ का दान करने के लिए शास्त्र का आदेश है उसी प्रकार उसी नियम से दान किया जाय तो उसका सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है। इसलिए गोदान की सांगोपांग विधि यहाँ दी जा रही है –

सर्वप्रथम यजमान गोबर से लेपन की हुई या गंगाजल से शोधित पवित्र भूमि पर 'गोदान' करने के लिए तत्पर हो। सपत्नीक ग्रन्थिबन्धन से संयुक्त होकर यजमान पूर्वाभिमुख होकर गोदान के निमित्त आसन पर बैठे आचमन, प्राणायाम करके पवित्री को हाथों में (चाहे कुश की हो या स्वर्ण की) धारण करके गणपति स्मरण या पूजन करें। अपने कुलदेवता, गुरु, ईष्टदेवता को नमस्कार करके अपने दाहिने तरफ उत्तर मुख करके ब्राह्मण देवता को आसन पर बैठावें, और संकल्प करें। सभी संकल्प बोलने के बाद गोत्र और नाम के समय अपने गोत्र और नाम का उच्चारण करके श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त फल की प्राप्ति हेतु ..... व्रतोद्यापन की पूर्ति कामना से भगवान श्री नारायण की प्रीति के लिए 'गोदानं करष्यि' ऐसा बोलना चाहिये। पुन: संकल्प लेकर तदंगत्वेन देव ब्राह्मण का पूजन करूंगा। हाथ में जल लेकर कर्ता कहे – 'गां ददामि' उसके बाद गाय देता हूँ या दूँगा और ब्राह्मण के हाथ में जल दे दे ब्राह्मण उच्चारण करें- 'ऊँ ददस्व'।

उसके पश्चात् वरण सामग्री विधिवत् उपस्थित करके ब्राह्मण का वरण करें। संकल्प में आये अमुक के स्थान पर वहाँ नाम ले और त्वामहं वृणें तक यजमान कहे। ब्राह्मण वृतोऽस्मि ऐसा वाक्य कहें।

तदनन्तर पाद्य, अर्घ्य गन्धपुष्पादि से विधिवत् ब्राह्मण की पूजा करें। पूजन करने के बाद प्रार्थना करे कि हे ब्राह्मण देवता हम आपको भगवान विष्णु का स्वरूप मानकर आपकी पूजा अर्चना और वन्दना करते हैं। प्रार्थना के बाद गौ का पूजन करें।

प्रार्थना मन्त्र –

ऊँ यदर्चनं कृतं विप्रं तव विष्णुस्वरुपिण:। तत्सर्वं मम दानं च विष्णवे त्वं समर्पय।।

अपने आगे पूर्वमुख करके गौ माता को तथा उनके उत्तर में बछड़े को करके हाथ में पुष्प लेकर आवाहन के मन्त्र पढ़कर समर्पित करें। तदनन्तर पाद्य हेतु जल लेकर मन्त्र पढ़कर पाद्य समर्पित करें। तदनन्तर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़कर अर्घ्य दें -

'सर्वदेवमये देवि सर्वतीर्थमये शुभे। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सौरभेयी नमोऽस्तुते। ऊँ भूर्भुव: स्व: गवे नम:। अर्घ्यं समर्पयामि।

पुन: निम्न मन्त्र से बोल कर आचमन दें –

देहे स्थितासि रुद्राणि शंकरस्य सदाप्रिये। धेनुरुपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु। ऊँ भूर्भुव: स्व: धेनवे नम:।। आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनीयम्)

तदनन्तर निम्न मन्त्र से स्नान करायें -

या लक्ष्मी सर्वलोकेषु या च देवेष्ववस्थिता। धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु। ऊँ भूर्भुव: स्व:धेनवे नम:। स्नानीयं जलं समर्पयामि। (स्नानम्)

वस्त्र चढ़ायें - आच्छादनं च कौशेयं शुद्धं चैव सुनिर्मलम्। सुरम्यै दीपमानं तु प्रीयतां केशव: सव। ऊँ भूर्भुव: सव: धेनवे नम: वस्रं समर्पयामि। (वस्रम्)

गन्ध चढ़ाये –

आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (गन्धम्) सर्वदेवप्रियं देवि चंदनं मलयोद्भवम् कस्तूरीकुंकुमाढ्यं च गौ गंधं प्रतिगृह्यताम्। ऊँ भूर्भुव: स्व: धेनवे नम:। गन्धं समर्पयामि।

पुष्प चढ़ाये –

एरावत कुले जाता शतक्रतु प्रिया सदा। धेनुरुपेण सा देवि पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्। ऊँ भूर्भुव: स्व: धेनवे नम:। पुष्पाणि समर्पयामि।

पुष्प के बाद अलंकार समर्पित करें - ततो अलंकारान् समर्पणम्।

श्रृंगभूषार्थं सुवर्णम् – गाय की सींगों को सोने से,

चरणभूषार्थं रजतम् – खुरों को चाँदी से,

भालभूषार्थं आदर्शं – ललाट को दर्पण युक्त वस्त्र सेऊ

नेत्रभूषार्थं रत्नद्वयम् – नेत्रों को दो रत्नों से

कंठभूषार्थं घंटाम् – कण्ठ को घण्टी या घण्टा से

पुष्पस्रजंच – पुष्पमाला से

सर्वाऽअवयव भूषार्थं पट्टदूकुलम् – सभी अवयवों को वस्त्र से

पृष्ठभूषार्थं ताम्रम् – पृष्ठभाग को ताम्र से

पुच्छभूषार्थं मुक्ताफलस्रजम् – पुच्छ के भूषण के लिए मोतियों की माला

दोहनार्थं पित्तलपात्रं – दोहनार्थ पीतल के पात्र से

दुग्धपानार्थं कास्यपात्रम् च सम्पादयेत् – दुग्धपानार्थ कांस्य पात्र से अलंकृत करें।

तदनन्तर गाय का निम्नलिखितानुसार अंगपूजन प्रारम्भ करना चाहिये –

ऊँ आस्याय नम:। ऊँ श्रृंगाभ्यां नम:। ऊँ पृष्ठाभ्यां नम:। ऊँ पुच्छाय नम:। ऊँ पूर्वपद्भ्यां नम:। ऊँ पश्चिम पद्भ्यां नम:। पृथक्- पृथक् पूजनम् – ब्रह्मविष्णुभ्यां नम:। श्रृंगमूलयो: ।१। ऊँ महादेवाय नम:

ललाटे। २॥ ॐ षण्मुखाय नम:। नासावंशे ।३॥ ॐ अश्विभ्यां नम:। कर्णयो:॥ ४॥ ॐशशिभाष्कराभ्यां नम:। चक्षुषो।। ५।। ॐ मरूद्भ्यो नम:॥ दन्तेषु॥ ६॥ ॐ वरूणाय नम:॥ जिह्वाया् । ७॥ ॐ सरस्वत्यै नम:॥ हुंकारे ॥ ८॥ ॐ यमजाभ्यां नम:॥ गण्डयो:। ९॥ ॐ सन्ध्याद्वयाभ्यां नम:॥ ओष्ठयो:॥ १०॥ ॐ इन्द्राय नम:।। ग्रीवायाम्।। ११।। ॐ रक्षोभ्यो नम:।। कुक्षिदेशे।। १२।। ॐ साध्येभ्यो नम:॥ उरसि॥ १३॥ ॐ धर्माय नम:। चतुष्पादेषु॥ १४। ॐ गन्धर्वेभ्यो नम:॥ खुरमध्ये॥ १५॥ ॐ अप्सरोभ्यो नम:॥ खुरपार्श्वे॥ १६॥ ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नम:॥ पृष्ठे॥ १७॥ ॐ वसुभ्यो नम:।। सर्वसन्धिषु।। १८।। ॐ पितृभ्यो नम:॥ श्रोणीतटे॥ १९॥ ॐ सोमाय नम:।। लांगूले।। २०।।

ॐ आदित्यरश्मेभ्यो नमः॥ वलेषु॥ २१ ॥ ॐ गंगायै नमः॥ गोमूत्रे ॥ २२॥ ॐ सरस्वत्यै नमः। क्षीरे ॥ २३॥ ॐ नर्मदाय नमः॥ दध्नि || २४|| ॐ हुताशनाय नमः ॥ सर्पिषि ॥ २५ ॥ ॐ देवानामष्टाविंशतिकोटिभ्यो नमः ॥ रोमसु॥ २६ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः॥ उदरे ॥ २७॥ ॐ चतुः सागरेभ्यो नमः॥ पयोधरेषु॥ २८॥ इति अङ्गदेवतान् सम्पूज्य- धूपं दीपं दर्शयामि॥ (नैवेद्यम्) वैष्णवी सुरभे मातर्नित्यं विष्णुपदे स्थिते । सर्वदेवमये ग्रासं मया दत्तमिमं ग्रस॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धेनवे नमः। ग्रासार्थे नैवेद्यं निवेदयामि ॥ यत्ते मयार्पितं शुद्धं घण्टाचामरसंयुतम् । ग्रैवेयं तद्गृहाणेदं मुनित्रिदश वन्दिते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धेनवे नमः। घण्टाचामरं समर्पयामि ॥ (नमस्कारः) पंचगावः समुत्पन्ना मध्यमाने महार्णवे । तासां मध्ये तु या नन्दा तस्यै देव्यै नमो नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः धेनवे नमः। नमस्कारं समर्पयामि॥ (प्रदक्षिणा) ॐ इरावतीधेनुमतीहिभूत सूयवसिनीमनवेदशस्या। व्यस्कम्भनारोदसीविष्णवेतेदाधर्त्यपृथिवीमतितो मयूखैः स्वाहा॥ १ ॥ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्। इति प्रदक्षिणां कृत्वा यजमानः प्राङ्गमुखोदङ्गमुखो वा गोपुच्छं गृहीत्वा कुशत्रयाक्षतयवतिलजलैः देवर्षि पितृ तर्पणं कुर्यात्॥ सव्येन कार्यम्-

(१) ॐ गणपतिश्च तथा ब्रह्मा केशवोरुद्रदेवता। लक्ष्मी: सरस्वती चैव ये चान्ये च नवग्रहाः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः॥ २) ॐ देवाधिदेवताः सर्वास्तथा प्रत्यधिदेवता। नक्षत्रवसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः ॥

(३) ॐ किन्नराश्च पिशाचाश्च यक्ष गन्धर्व राक्षसाः । दैत्याश्च दानवाश्चैव ये चान्ये ऽप्सरसां गणाः।। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः।।

(४) ॐ पुलस्त्य पुलहश्चैव दत्तात्रेयोथभार्गवः। वसिष्ठां गिरसावापीकश्यपश्चैव कश्यपाः।। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः।।

(५) ऋषयो मानवा देवा अधस्था भूमि देवताः। वाप्याधारा जलधाराः साध्यायक्षांस्तथैव च।। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०

(६) सरितः सागराश्चैव पर्वता वनमेव च। लता औषधयश्चैवमृगा आरण्यवासिनः।। ते सर्वे तृप्ति।।

(७) स्वाहा स्वधा तथा वृद्धिः लक्ष्मीश्रद्धा सरस्वती। मेधाप्रीतिस्तथा लज्जाकीर्तिश्च दशमी तथा। ताः सर्वास्तृप्तिमायान्तु गो० ।। विश्वाद्याश्चैव ये देवा ये च वैकुण्ठवासिनः। गरुणासनमारुढ़ा आगता पुच्छगोचरैः ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०Il

(९) रुद्राद्या देवताः सर्वे ये च कैलाशवासिनः। वृषभासनमारुढ़ा योगिनः पीठसंस्थिता।। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०।।

(१०) आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे ऋक्षास्वास्विनिकादयः। मेषाद्या राशयश्चैव योविष्कंभकादयः।। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०।।

(ततःकंठी कृत्वा उदङ्गमुखः कायतीर्थेन यवोदकैस्तर्पयेत्)

(११) सनकः सनन्दनश्चैव तृतीयश्च सनातनः । कपिलश्चासुरिश्चैव वोढुः पञ्चशिखस्तथा। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०.......

(ततो अपसव्यं दक्षिणामुखं पातितवामजानुर्द्विगुणभुग्नकुशत्रयतिलजलैः पितृतीर्थेनतर्पयेत्)

(१२) कव्यवाडनलः सोमो यमो ऽर्यमा तथैव च। अग्निष्वात्ताः पितृगणा वर्हिषदश्वसोमपाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०||

(१३) पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः। मातामहः प्रमाता च वृद्धमातामहस्तथा।। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०.||

(१४) मातापितामही चैव तथैव प्रपितामही । मतामह्यादयः सर्वास्तथैवान्याश्चगोत्रजाः ॥ ताः सर्वाः तृप्तिमायान्तु गो०

(१५) पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च । गुरुश्वसुरवंधूनां ये चान्ये बान्धवामताः॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०.Il

(१६) ये मे कुले लुप्तपिंडाः पुत्रदारविवर्जिताः । क्रिया लोपगता ये च ये चांधा पंगवस्तथा॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०.11

(१७) विरुपा आमगर्भाश्च ज्ञाता ऽज्ञाताः कुले मम। वृक्षयोनिगतां ये च ये च कीटपतंगकाः ॥ ते सर्वे तृन्तिमायान्तु गो०

|(१८) नरके रौरवे सर्वे महारौरव संस्थिताः । असिपत्रवने घोरे कुंभीपाके च ये स्थिताः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०. ..Il

(१९) स्वार्थ वंधमृता ये च शास्त्रादि विषमोहिताः । ब्रह्महस्तमृता ये च सिंह सर्पैश्च श्रृंगिभिः॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो०||

(२०) चाण्डालेन मृता ये च पथिलोपगताश्च ये । जलमध्ये मृता ये च ह्यल्पमृत्युगताश्च ये॥ ते सर्वेतृप्तिमायान्तु गो० ॥

(२१) वंदिमध्ये मृता ये च स्त्रीहस्तेनैव ये मृताः । ये च ब्रह्माण्डखण्डे च वसंतिपितृदेवता। सर्वे च मानवा नागा आगताः पुच्छगोचरे । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो० ॥

(२२) आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवामदीयाः ॥ वंश द्वये स्मिन् मम दाशभूता भृत्यातथैवाश्रित सेवकाश्च ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो पुच्छोदक तर्पणैः ॥

एवं तर्पण कृत्वा सव्येन आचम्य । ब्राह्मणं गंधादिभिः सम्पूज्य । गोदानं कुर्यात् ॥ हस्ते तिलजलकुशाक्षतं गोपुच्छं च गृहीत्वा - देशकालौ सङ्कीर्त्य अद्य कृतैतद् अमुक व्रतोद्यापन कर्मणः सम्पूर्णतासिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं इमां गां

सवत्सां सुशीलां सुपूजितां पयस्विनीं सुवर्णशृङ्गी रौप्यखुरां तामृपृष्ठीं घण्टाचामरभूषितां मुक्तादामलांगुलां वस्त्रयुगच्छन्नां कांस्यपानीयपात्रां पैतिलदोहां यथा शक्त्यलङ्कृतां रुद्रदैवतां मुकगोत्राणामुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । इति उक्त्वा ब्राह्मणहस्ते तिल,जल, कुश, गोपुच्छं दद्यात्। ततः प्रतिग्रहीता ॐ स्वस्ति इत्युक्त्वा। ॐ कोदात्कामोदादिति कामस्तुतिं पठेत् । यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघौघनाशिनी। विश्वरुपधरो देवः प्रीयतामनया गवा।। इति प्रार्थ्य।। गोदान साङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यं दद्यात् ॥ संकल्पः- कृतैतद्गोदान कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं इदं हिरण्यमग्निदैवतं अमुक गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणा त्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे । इति दत्वा । ॐ स्वस्तीतिप्रतिवचनान्तरम्। या देवी सर्वभूतानां या च विष्णुपदे स्थिता। धेनु रुपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ अनेन गोदानेन श्री परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥

अङ्गपूजन के लिये जिस प्रकार सङ्केत है पढ़कर पूजन करते जाय। धूप दीपदिखाकर गौग्रास अर्पित करें । घण्टा चामर नमस्कार के बाद मन्त्र जो प्रदक्षिणादी गई है उसको पढ़ते हुए गौ माता की प्रदक्षिणा करें । प्रदक्षिणा करने केबाद पुन: पश्चिम दिशा में आकर नमस्कार करके खड़े हो जाय और पूर्वमुखहोकर या उत्तर मुख होकर गोपुच्छ को हाथ में तथा त्रिकुश, अक्षत, तिल, यवजल को लेकर देव, ऋषि और पितरों का तर्पण करें।१० श्लोक का तर्पण सव्य होकर करें उसके बाद कंठी जनेऊ करके यव और जल से काय तीर्थ से पुनः तर्पण करें। उसक बाद बारहवें से अपसव्य होकर दक्षिण मुख करके त्रिकुश, तिल, यव लेकर पितृ तीर्थ से तर्पण करें।

तर्पण के बाद सव्य होकर आचमन करें और ब्राह्मण का गंधादि से पूजन करें। हाथ में तिल, जल, कुशाक्षत, गोपुच्छ लेकर संकल्प पढ़कर ‘‘सम्प्रददे’’ तक कहकर ब्राह्मण के हाथ में दें दे। उसके बाद ब्राह्मण ॐ स्वस्ति कहें तथा ‘कामस्तुति’ का पाठ करें। फिर यजमान ‘यज्ञसाधन भूता’ से प्रार्थना करें। तथा गोदान सांगता हेतु स्वर्ण दें। उसका संकल्प करें और सम्प्रददे तक पढ़े और दें। उसके बाद ब्राह्मण ॐ स्वस्ति कहें। उसके बाद प्रार्थना करके हाथ में जल लेकर अनेन गोदानेन श्री परमेश्वरं प्रीयतां न मम कहकर जल गिरा दें।

अथ प्रकारान्तरेण सामान्यगोः पूजनं दानं च। अद्येत्यादि 'गृहसमुद्रशैलवनो पेत पृथ्वीदान सम फलैत द्वे नुवत्सरोमस वययुगदेवलोकमहि तत्वपितृपितामह प्रपितामहनरकोद्धरणघृतक्षीरबहबहुकुल्याकद विपायस कर्दमदेशाधिकरणेप्सितकामगत्यात्मलोक सुलभत्वब्रह्मलोकसुलभत्वा जत्रचन्द्रसमानव कसुतप्तजाम्बूनदस मानवर्णमहा नितम्बस्तनवृत्तमव्यनलिनाभनेत्रा नेक स्त्री सेव्यमानत्वकामो मम समस्तपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थ देशकाला धनुसारतो गोदानमहं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य तवङ्गश्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनं गोः पूजनं च करिष्ये।

ब्राह्मणपूजनम्-

तव पादोदकं तीर्थ मुखे वेदाः प्रतिष्ठिताः।
पाद्यं गृहाण विप्राम्य भूमिदेव नमोऽस्तु ते॥ पाद्यम्।
भूमिदेवाप्रजन्माऽसि त्वं विष्णुः पुरुषोत्तमः।
प्रत्यक्षो ह्यग्निपुरुष अर्घोयं प्रतिगृह्यताम्॥ अर्धम्।
आचमनगन्धपुष्पवस्त्रादिना पूजयेत्। ततो घेनोरङ्गषु देवता न्यसेत्।

अथ प्रयोगः । अद्येत्यादिगोमात्रदाने स्वर्गकामः सवत्सधेनुदाने वत्सधेनुरोममितवर्षावधिस्वर्गकाम: । अग्निहोत्राय दानं तु वित्तपूर्णात्रिवारपृथ्वीदानफल तुल्यफलकामः सर्वत्रापि कृत्स्नकुलतारणकामः सर्वपापक्षयकाम ईश्वरप्रीतिकामो वा गोदानं करिष्ये, इतिसङ्कल्यप्राङ्मुख सवत्सां गां विप्रं च संपूज्य ससुवर्णमाज्यपालं हस्ते गृहीत्वातब पुच्छं घृताक्तं कृत्वा विप्रहस्ते कुशतिलजलान्यादाय उक्तफलेष्वभि-लषितं फलमुक्त्वा-

यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघप्रणाशिनी।
विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा॥

इति मन्त्रं,

घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यो घृतोद्भवाः।
घृतावर्तास्ता मे सन्तु सदा गृहे॥
घृतं मे हृदये नित्यं घृतं नाभ्यां प्रतिष्ठितम्।
घृतं मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

इतिपौराणमन्त्रं च पठित्वा जलमुत्सृजेत्। दानप्रतिष्ठार्य दक्षिणां दत्रा ब्राह्मणधेनू अनुव्रज्य-

गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगन्धिकाः।
गाव: प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्॥

अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम् ।

पावनं सर्वभूतानां क्षरन्ति च वहन्ति च ॥

हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान्दिवि ।

ऋषीणामपि होतॄणां गावो होमे प्रतिष्ठिताः ॥

सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम् ।

गाव: पवित्रं परमं गावो मङ्गलमुत्तमम् ॥

गावः सर्वस्य लोकस्य गावो धन्याः सवाहनाः ।

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ॥

नमो ब्रह्मसुताभ्यञ्च पवित्राभ्यो नमो नमः ।

ब्राह्मणाश्चैव गवश्च कुलमेकं द्विधा कृतम् ॥.

एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति ।

यो वे द्यूते धं जिवा गाः क्रीत्वा संप्रयच्छति ।

स दिव्यमयुतं शक्र वर्षाणां फलमश्नुते ||

भारते –

न गोदानात्परं दानं किञ्चिदस्तीति मे मतिः ।

सा गौर्न्यायार्जिता दत्ता कृत्सं तारयते कुलम् ||

तथा-

अकुलीनाय मूर्खाय लुब्धाय पिशुनाय च ।

हव्यकव्यव्यपेताय गौर्न देया कथञ्चन ॥

तृणानि खादन्ति वसन्त्यरण्ये पित्रन्ति तोयान्यपरिग्रहाय ||

दुझन्ति वाह्यन्ति पुनन्ति पापं गवां रसैजनति जीवलोकः ॥

इति प्रशंसा ।

अथ विधिः ।

याज्ञवल्क्यः --

हेमशृङ्गीशकै रौप्यैः सुशीला वस्त्रसंयुता ।

सकांस्यपात्रा दातव्या क्षीरिणी गौः सदक्षिणा ॥

विश्वामित्रः--

प्राङ्मुख गामवस्थाप्य सवत्सां गां सुपूजिताम् ।

पुच्छदेशे तु दाता वै ततो बद्धशिखो भवेत् ॥
उदङ्मुखस्तु विप्रः स्यात्पावलक्षणलक्षितः ।
आज्यपात्रं करे कृत्वा कनकेन समन्वितम् ॥
निक्षिप्य पुच्छे तस्मिंस्तु घृतदिग्धं प्रगृह्य च ।
सतिलं विप्रपाणि च प्रागमं तु निधापयेत् ॥
सतिलं सकुशं चापि गृहीत्वा दानमाचरेत् ।
अनेनैव तु मन्त्रेण पात्रहस्ते जलं क्षिपेत् ॥
मन्त्रो वक्ष्यते ।
अनुव्रज्य च तां धेनुं ब्राह्मणेन समन्विताम् ।
गौतम तु ततो विद्यां जपेत प्रयतः शुचिः ॥
उद्दिश्य वासुदेवं च प्रीयतामिति चानघ ।
पात्रं मनसि सञ्चिन्त्य तोयमप्सु विनिक्षिपेत् ॥
मन्त्रेणानेन विधिवत्पुच्छे हस्तं निधाय च ॥
धेनुर्याऽङ्गिरसः सत्रे वसिष्ठे सुरभी च या ।
दुहिता च तथा भानोरमेश्च वरुणस्य च ।
याच गावः प्रवर्तन्ते वनेषूपवनेषु च ।
प्रीणन्तु ता गम सदा पुत्रपौत्रप्रवर्द्धनाः ॥
प्रयच्छन्तु दिवांरात्रमविच्छेदं च सन्ततेः ।
वन्ध्यात्वं काकवन्ध्यात्वं कन्याप्रसव एव च ॥
तथैव मृतवत्सात्वं दोषं मम चतुर्विधम् ।
दानेनानेन हरतु या सा कामदुधाऽनघा | इति ॥
अथ स्वरूपतो गोदानम् ।
त याज्ञवल्क्यः -

यथाकथच्चिदत्त्वा गां धेनुं वाऽधेनुमेव वा ।
अरोगामपरिक्लिष्टां दाता स्वर्गे महीयते ॥

जाबालः -

होमार्थमग्निहोत्रस्य यो गां दद्याद्दयान्वितः ।
त्रिर्वित्तपूर्णा पृथिवी तेन दत्ता न संशयः ॥

अङ्गिराः—

गौरेकस्यैव दातव्या श्रोत्रियस्य विशेषतः ।
सा हि तारयते पूर्वान्सप्त सप्त च सप्त च ॥

आत्रेयः -

सीदते बहुभृत्याय श्रोत्रियायाऽऽहिताग्नये ।
अतिथिप्रियाय दान्ताय देया घेनुर्गुणान्विता ॥

देवलः -

सुशीलां लक्षणवर्ती युवत वत्ससंयुताम् ।
बहुदुग्धवतीं स्निग्धां धेनुं दद्याद्विचक्षणः ॥

व्यासः-

सङ्ग्रामेष्वर्जयित्वा तु यो वै गाः संप्रयच्छति ।
यादृशी: स्पर्शयेद्गावः स तावत्फलमश्नुते ॥
तावत्तद्गोरोममितवत्सरं स्वर्गफलम् ।

बोध प्रश्न –

1. व्रतोद्यापन का मुख्य दान कौन सा होता है?
   क. स्वर्ण ख. गौ ग. तुला घ. वस्त्र
2. किस ऋषि के मतानुसार यज्ञान्त में 'गौ' दान करना चाहिये?
   क. अंगिरा ख. याज्ञवल्क्य ग. कात्यायन घ. गोभिल
3. यज्ञादि कर्म के अन्त में पृथक् रूप से दूध देने वाली गाय दान करना चाहिये – यह किसका मत है ?
   क. सनत संहिता ख. याज्ञवल्क्य संहिता ग. विश्वप्रकाश घ. कोई नहीं
4. विश्वप्रकाश मतानुसार कौन सी गौ दान करनी चाहिये?
   क. दूध देने वाली ख. सवत्सा ग. स्वर्णयुक्त सवत्सा घ. केवल गौ
5. दान की हुई गौ कितने पीढ़ीयों का उद्धार करती है।
   ख. दो ख. तीन ग. इक्कीस घ. पच्चीस

16.5 सारांश

प्रस्तुत अध्ययन के बाद आपने जान लिया है कि व्रतोद्यापन में कौन से मुख्य दान है एवं उसकी शास्त्रोक्त विधि क्या है? इसके विषय में विचार करते हुए ऋषियों के मतानुसार यज्ञ के अन्त में 'गोदान' आवश्यक है। श्री कात्यायन ऋषि के विचार से यज्ञकर्ता को चाहिए कि वह यज्ञान्त में गौ और वस्त्र का दान ब्राह्मण को करें। याज्ञवल्क्य संहिता के अनुसार यज्ञादि कर्म के अन्त में पृथक् रूप से ब्राह्मण को दूध देने वाली गाय का दान करना चाहिए। विश्वप्रकाश का मत है कि स्वर्णयुक्त सवत्सा गाय का दान देना चाहिए। इस प्रकार से गोदान के बहुत से प्रमाण है जिससे यह स्पष्ट होता जाता है कि गोदान आवश्यक है। इसके महत्व को ऋषियों ने अपने-अपने विचार से व्यक्त किया है। श्री अंगिरा ऋषि का विचार है कि गौ केवल एक ही ब्राह्मण को देनी चाहिए। श्रोत्रिय ब्राह्मण को देना विशेष उत्तम है। क्योंकि दान की हुई गौ इक्कीस पीढ़ी के पूर्वजों का निस्तारण करती है। श्री वसिष्ठ के विचार के अनुसार गोदान सात पीढ़ी के आगे होने वाले वंशजों का निस्तारण करती है।

16.6 पारिभाषिक शब्दावली

व्रतोद्यापन – व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला कार्य
शास्त्रोक्त – शास्त्र में कहा गया
यज्ञान्त – यज्ञ का अन्त
गोदान – गाय का दान
स्वर्णयुक्त – सोने से जुड़ा
सवत्सा – बछड़ा सहित

16.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. ख
4. ग
5. ग

16.8 सहायक पाठ्यसामग्री

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरिज

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

16.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरीज, वाराणसी

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन, वाराणसी

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

16.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गोदान का परिचय दीजिये।
2. गोदान विधि का शास्त्रीय उल्लेख कीजिये।
3. गोदान के मन्त्र का विधिसहित वर्णन कीजिये।
4. गोदान का माहात्म्य बतलाइये।

इकाई - 17 शैय्या विधान

इकाई की संरचना

17.1 प्रस्तावना

17.2 उद्देश्य

17.3 शैय्या दान विधान

17.4 सारांश

17.5 पारिभाषिक शब्दावली

17.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

17.7 सहायक पाठ्यसामग्री

17.8 निबन्धात्मक प्रश्न

17.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई 'शैय्या दान' विधान शीर्षक से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने विविध स्तोत्रादि का अध्ययन कर लिया है। अब आप लोकप्रचलित शैय्या दान की विधि को जानेंगे।

'शैय्या दान' का सम्बन्ध मृतकोपरान्त व्यक्ति के कर्मकाण्ड जनित क्रिया से है। शैय्या दान के माध्यम से वस्तुओं को ईच्छानुरूप दान किया जाता है।

आइए हम सब शैय्या दान विधि का अध्ययन करते हैं।

17.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –

- शैय्या दान किसे कहते हैं।
- शैय्या दान की विधि क्या है।
- शैय्या दान का माहात्म्य क्या है।
- लोक में इसका क्या महत्व है।
- शैय्या दान की विधि क्या है।

17.3 शैय्या दान विधान

शय्यादान- शयन करने के लिए जितनी सामग्रियों की आवश्यकता होती है सबको एकत्रित करके गंध, पुष्प, धूप, वस्त्र, तांबूल, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, दीप, उपानह, छत्र, चामर, व्यजन, आसन, सप्तधान्य और घी से भरा हुआ एक घड़ा तथा इसके ऊपर स्वर्ण की लक्ष्मीनारायण की मूर्ति को रखें। यजमान पूर्वमुख या उदङ्मुख होकर आचमन प्राणायाम करके संकल्प करें कि इस व्रत के उद्यापन हेतु मैं शय्यादान कर रहा हूँ। उसके लिए दिये जाने वाले ब्राह्मण का एवं लक्ष्मीनारायण तथा शय्या का पूजन कर रहा हूँ।

सर्वप्रथम ब्राह्मण के पैर का प्रक्षालन करें। उसके बाद सुगन्धित चन्दन का मस्तक में लेंप करें पुन: अक्षतादिक से सुशोभित करके माला पहना दें। वरण का संकल्प करें। ब्राह्मण 'वृत्तोऽस्मि' कहे।

ब्राह्मण देवता को शय्या पर बैठाकर शय्या का पूजन करें।

ऊँ सोपकरण शय्यायै नमः कहकर गंधपुष्पादि से पूजन करें। उसके बाद नमस्कार करें। ऊँ लक्ष्मीनारायणाय नमः कहते हुए षोडशोपचार से लक्ष्मीनारायण प्रतिमा का पूजन करें। उसके बाद हाथ में तिल अक्षत लेकर कृतैतत् से सम्प्रददे तक संकल्प पढ़कर ब्राह्मण के हाथ में दे दें। ब्राह्मण ऊँ स्वस्ति ऐसा प्रतिवचन कहे। दान प्रतिष्ठार्थ स्वर्ण का संकल्प हाथ में जल, अक्षत, स्वर्ण लेकर कृतैतत्सो0 से सम्प्रददे तक ब्राह्मण के हाथ में दे दें। प्रतिगृहीता ब्राह्मण ऊँ स्वस्ति कहकर शय्या का स्पर्श करें। उसके बाद यजमान प्रार्थना करें और प्रणाम करके ब्राह्मण देवता को विदा करें।

इस प्रकार शैय्या दान का यही शास्त्रोक्त विधान बतलाया गया है।

आगे आप संस्कृत में मन्त्रों के साथ शय्यादान के प्रयोग को समझेंगे।

शय्यादानप्रयोगः -

शय्यायां सर्वाणि वस्तूनि संस्थाप्य अन्धपुष्पधूपाधिवासतां पुष्पतांबूल कुंकुमकर्पूरागुरुचंदनदीपोपानच्छत्रचामरव्यजनासनसप्तधान्यघृतपूर्णकुम्भसहितमासाद्य स्वर्णमयीं लक्ष्मीनारायणप्रतिमां स्थापयेत् । ततो यजमानः प्राङ्मुखो उदडमुखो वा उपविश्य। आचम्यप्राणानायम्य।। गणपति इत्यादिदेवान् स्मृत्वा संकल्प कुर्यात्। देशकालौ सङ्कीर्त्य कृतैतदमुकव्रतोद्यापनसांगतासिद्धये श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शय्यादानमहं करिष्ये । तदङ्गत्वेन देव ब्राह्मणपूजनं लक्ष्मीनारायणपूजनं शय्यापूजनञ्च करिष्ये। प्रथमं ब्राह्मणपादप्रक्षालनम्।। सुवासित चन्दननानुलेप्य मस्तके अक्षतादिकेन सम्पूज्य तथा सुगंधितपुष्पमालां समर्प्य वरणसंकल्पः । देशकालौ सङ्कीर्त्य शय्यादानार्थममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं एभिः गन्धाक्षतपुष्पताम्बूल वासोभिः त्वामहं वृणे। इति वृणुयात्।। ततो वृतोस्मीति प्रतिवचनेन विप्रं शय्यायामुपवेश्य शय्यापूजनं कुर्यात् ।। ऊॅ सोपकरण शय्यायै नमः इति मन्त्रेण गन्धादिभिः सम्पूज्य ।। ऊॅ प्रमाण्यदेव्यै शय्यायै नमः इति मंत्रेण नमस्कृत्य।। सुवर्णप्रतिमायाः पूजनं ऊॅ लक्ष्मीनारायणाय नमः इति मन्त्रेण षोडशोपचारैः सम्पूज्य। नमस्कुर्यात्। ततो संकल्पः कृतैतदमुकव्रतोद्यापनकर्मणः सांगतासिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं इमां शय्यां सोपस्करां लक्ष्मीनारायणप्रति-मायुतांगिरोदैवताममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय सुखशयनार्थं तुभ्यमहं सम्प्रददे।। इतिसतिलाचतोदकं विप्रहस्ते दद्यात्।।शय्यादानविधि ऊॅ स्वस्ति ।।इति प्रतिवचनम्।।

महाभारते शय्यादानम् --

शय्यामास्तरणोपेतां सुप्रच्छादन संस्कृताम् ।
प्रदद्याद्यस्तु विप्राय शृणु तस्यापि यत्फलम् ॥
सुरूपः सुभगः श्रीमान्त्रीसहस्रैस्तु संवृतः ।
दशवर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥

विष्णुसंहितायाम्-

दर्पणैः पादत्राणैश्च नानाद्रव्यैर्विभूषणैः ।
चतुष्कोणेषु संस्थाप्य यथाशक्त्या युधिष्ठिर ॥
घृतकुङ्कुमगोधूमपूर्णपात्रं जलस्य च ।
शय्यां संपूजयित्वा तु मद्भक्तो मत्परायणः ||
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा कुर्याच्छय्यां प्रदक्षिणाम् ।
नमः प्रमाण्यै देव्यैति प्रणम्य च चतुर्दिशम् ||
ब्राह्मणाय दरिद्राय श्रुताध्ययनशीलिने ।
तथाऽऽत्मज्ञानविदुषे शय्यां दद्याद्विचक्षणः ||

फलं च-

तस्मादिन्द्रपुरं गच्छेत्सेव्यमानोऽप्सरोगणैः ।
षष्टिवर्षसहस्राणि क्रीडित्वा च यथासुखम् ॥

इत्यादि पठेत् । प्रतिमहीता 'सुवर्ण दक्षिणात्वेन पतिगृहामि' 'राजा त्वा वरुणो नयतु देवि दक्षिणेऽग्नये हिरण्यं तेनामृतत्वमश्यां वयो दात्रे भयो महामस्तु प्रतिग्रहीत्रे क इदं करमा अदात्' ।

सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम् ।
गाव: पवित्रं परमं गोष्ठे मङ्गलमुत्तमम् ॥
गाव: सर्वस्य लोकस्य गावो धन्याः सवाहनाः ।
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ॥
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ।
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम् ||
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति ।
इति यमोक्तां गोमती विद्यां जपेत् । यजमानः-
गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृङ्गयः पयोमुचः ।

सुरभ्यः सौरमेयाश्च सरितः सागरं यथा ||
गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम् ॥
गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः !
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् । इति ॥
गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिहलोके परत्र च ॥
इतिप्रार्थ्य'यस्य स्मृत्या ' इति कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्।

इति प्रकारान्तरेण स्वरूपतः सामान्यगोदानविधिः।

अथ हेमशृङ्गीदानम्।

अथ मात्स्ये हेमशृङ्गी-
दश सौवर्णिके शृङ्गे खुराः पञ्चपलान्विताः।
पञ्चाशत्पलिकं कांस्यं ताम्रं चापि तथैव च ॥
दाताऽस्याः सर्वमाप्नोति यावदाभूतसंप्लवम्।

सुवर्णमंत्र दक्षिणा।
इति हेमशृङ्गीदानम्।
शिवाय विष्णवे वाऽपि यस्तु दद्यात्पयस्विनीम्।
धेनुं म्नानोपहागर्थे म परं ब्रह्म गच्छति | इति ॥
मातृपक्षाच ये केचिये फेचित्पितृपक्षकाः।
गुरुश्वशुरबन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः ||
ये चान्ये लुप्तपिण्डा वै पुत्रदारविवर्जिताः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥
क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा।
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम ॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।
ततः सविप्रां सवत्सां गां त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य 'आ गावो अग्मन् '
इतिसूक्तं पठेत् ' वरुणस्योत्तम्भनमसि' इति जलं पिबेताम्।

अथ दानम्।

कांस्यपात्रे घृतं निधाय तिलदर्भपुष्पफलतुलसीसहितपात्रे विप्रहस्तं निधाय तदुपरि गोपुच्छं दत्त्वा जलधारां पुच्छोपरि विप्रहस्ते दद्यात् । प्राङ्मुख गामवस्थाप्य स्वयं प्राङ्मुख उदङ्मुखाय विप्राय दद्यात् । अमुकप्रवरोपेतोऽमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं रुद्रदेवत्यां सवस्त्रां ताम्रपृष्ठसुवर्णशृङ्ग रौप्यखुरां दोहनपात्रसहितां सवत्सामिमां गाममुकप्रवरोपेतायामुकगोत्रायामुकशर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे । प्रतिप्रहीता 'देवस्य त्वा ' इत्यादि ' प्रतिगृह्णामि' इत्यन्तमुक्त्वा गृहीत्वा ' क इदं कस्मा अदात् पृथिवी प्रतिगृह्णातु' यजमानः 'प्रतिगृह्णातु भवान्' द्विजः । 'गृह्णामि सुरभी देवीं सर्वदेवमयीं शुभाम् । (?) हि वरदे उभयोस्तारका भव' इति । ततो यजमानः-

यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघौघनाशिनी ।
विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा ॥

इति मन्त्रमुक्त्वा -

घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यो घृतोद्भवाः ।
घृतनद्यो घृताबर्तास्ता मे सन्तु सदा गृहे ।
घृतं मे हृदये नित्यं घृतं नाभ्यां प्रतिष्ठितम् ।
घृतं मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥

इतिपौराणमन्त्रान्पठित्वा जलमुत्सृजेन् । ततो गोदान प्रतिष्ठामि द्वथथ सुवर्ण दक्षिणां दत्वा ब्राह्मणधेन अनुव्रज्य 'गावः सुरभया'

आनन्दकत्सर्वलोके देवानां च सदा प्रिये ।
गौस्त्वं पाहि जगन्नाथे दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपम् ।
सुरभे त्वं जगन्मातदेवि विष्णुपदे स्थिता ।
सर्वदेवमये प्रासमिमं दत्तं मयाऽमतः ॥ गोप्रासम् ।

गोरङ्गेष्वावाहितदेवताभ्यश्च धूपदीप नैवेद्यफलताम्बूलदक्षिणां दद्यात् ।

गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगन्विकाः ।
गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत् ॥
अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम् ।
पावनं सर्वभूतेभ्यो रसन्ति च वहन्ति च ॥
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान्दिवि ।
ऋषीणामग्निहोत्राणां गावो मे सप्रतिष्ठिताः ॥

इति प्रार्थ्य, अयेत्यादिकामं सङ्कल्प्य गोपुच्छे तर्पणं कुर्यात् । तद्यथा- ब्रह्मा तृप्यतु । रुद्रस्तृप्यतु । विष्णुस्तृप्यतु । राकाद्या देवतारतृप्यन्तु | मनवस्तृप्यन्तु । ऋषयस्तृप्यन्तु । रुद्रास्तृप्यन्तु । दितिपुत्रास्तृप्यन्तु | साध्यास्तृप्यन्तु | मरुद्गणास्तृप्यन्तु । ग्रहास्तृप्यन्तु । नक्षत्राणि तृप्यन्तु । योगास्तृप्यन्तु । राशयस्तृप्यन्तु | वसुधा तृप्यतु । अश्विनौ तृप्यताम् । यक्षास्तृप्यन्तु । रक्षांसि तृप्यन्तु । मातरस्तृप्यन्तु | देवमातवस्तृप्यन्तु । श्रीस्तृप्यतु । रुद्राणी तृप्यतु । पिशाचास्तृप्यन्तु | सुपर्णास्तृप्यन्तु । पशवस्तृप्यन्तु । दानवास्तृप्यन्तु । दैत्यास्तृप्यन्तु । योगिनस्तृप्यन्तु । विद्याधरास्तृप्यन्तु । औषधयस्तृप्यन्तु । दिग्गजास्तृप्यन्तु। देवतागणास्तृप्यन्तु । यज्ञास्तृप्यन्तु । देवपत्न्यस्तृप्यन्तु । लोकपालास्तृप्यन्तु । अनिरुद्धस्तृप्यतु । बलदेवस्तृप्यतु । नारदस्तृप्यतु । जन्तवस्तृप्यन्तु । स्थावराणि तुप्यन्तु । जङ्गमानि तृप्यन्तु। नीवीतं कृत्वा । सनकस्तृप्यतु । सनन्दनस्तृप्यतु । सनातनस्तृप्यतु । कपिलस्तृप्यतु । आसुरिस्तृप्यतु । वोल्हस्तृप्यतु । पञ्चशिखस्तृप्यतु । अपसव्यं कृत्वा । कव्यवाहनस्तृप्यतु । अनलस्तृप्यतु । सोमस्तृप्यतु । यमस्तृप्यतु । अर्यमा तृप्यतु । अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तु । बर्हिषद्स्तृप्यन्तु । सोमपास्तृप्यन्तु । पितरस्तृप्यन्तु । यमतर्पणं- यमं तर्पयामि । घर्मराजं त० । मृत्युं त० | अन्तकं त० | वैवस्वतं त० | कालं त० । सर्वभूतक्षयकरं त० । औदुम्बरं त० । दुघ्नं त० । नीलं त० | परमेष्ठिनं त० | वृकोदरं त० | चित्रं त० | चित्रगुप्तं तर्पयामि । पक्षद्वयजातान्पित्तन्तर्पयामि ।

गृहाणार्ध्यं मया दत्तं सौरमेयि नमोऽस्तु ते ॥ अर्ध्यम् ।
देहस्थिता च रुद्राणी शङ्करस्य सदा प्रिया ।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ आचमनीयम् ।
सर्वतीर्थमये देवि सर्वदेवमये शुभे ।
गृहाणेदं मया दत्तं स्नानं ते देविरूपिणि ॥ स्नानम् ।
आच्छादनं गवे दयाच्छुभं शुचि सुनिर्मलम् ।
सुरभे वस्त्रदानेन प्रीयतां परमेश्वरि ॥ वस्त्रम् ।
या लक्ष्मीः सर्वभूतानां सर्वभूतेष्ववस्थिता ।
घेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ चंदनम्, अक्षताः।

अथाङ्गपूजा – यहाँ गौ के अंगों की पूजा के बारे में बतलाया जा रहा है -

ललाटे देव्यै नमः । नासावंशे षण्मुखाय नमः । नासा पुढे कम्बलाश्वतराभ्यां नमः । कर्णयोरश्विभ्यां देवाभ्यां नमः । चक्षुषोः शशिभास्कराभ्यां नमः | दन्तेषु सर्ववायुभ्यो नमः । जिह्वायां वरुणाय नमः । हुङ्ङ्कारे सरस्वत्यै नमः । गण्डयोर्यमयक्षाभ्यां नमः । कुक्षिदेशे रक्षोभ्यो नमः । उरसि

साध्येभ्यो नमः । चतुष्पादेषु धर्माय नमः । जङ्घयोः सायंकालाय नमः । ओष्ठयोः सन्ध्याद्वयाय नमः । श्रीवायामिन्द्राय नमः । कण्ठे सामवेदाय नमः । शृङ्गमूले ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः । शृङ्गामे स्थावरजङ्गमेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः । शिरोमध्ये महादेवाय नमः । खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः । खुराग्रे पन्नगेभ्यो नमः । सर्वगात्रेषु प्रजापतयेनमः | पृष्ठे एकादशरुद्रेभ्यो नमः । सर्वसन्धिषु वसुभ्यो नमः । श्रोणितुटेपितृभ्यो नमः । लागूले सोमाय नमः | वालेष्वादित्येभ्यो नमः । गोमूत्रे गङ्गायै नमः | गोमये यमुनायै नमः । क्षीरे सरस्वत्यै नमः । दनि नर्मदायै नमः | सर्पिधि हुताशनाय नमः | रोमसु त्रयस्त्रिंशत्कोदिदेवताभ्यो नमः । उद्रे पृथिव्यै सकाननायै सशैलायै नमः । पयोधरेषु चतुःसागरेभ्यो नमः। इत्यङ्गपूजा । ततो गवेऽलङ्कारान्दद्यात् । यथा-स्वर्ण शृङ्गे । खुरे रौप्यम् | पृष्ठे ताम्रम् | भाले आदर्शम् । नेत्रयोरत्नद्वयम् । कण्ठे घण्टां चामरं यज्ञोपवीतं वस्त्रं च । पुच्छे मुक्तापवालानि च ।

देवद्रुमरसोद्भूतं गोघृतेन समन्वितम् ।
प्रयच्छामि महाभागे गौधूपं प्रतिगृह्यताम् ॥ धूपम् ।
गोभ्यो यज्ञाः प्रवर्तन्ते गोभ्यो यज्ञाः समुत्थिताः ।
गोभ्यो वेदाः समुत्तीर्णाः सपडङ्गपदक्रमाः ॥
शृङ्गमूले गवां नित्यं ब्रह्मविष्णू समाश्रिती ।
कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुषोः शशिभास्करौ ॥
दन्तेषु वायवः सर्वे जिह्वायां वरुणः स्थितः ।
सरस्वती च डुङ्कारे यमयक्षौ च गण्डयोः ॥
सन्ध्याद्वयं चोष्ठदेशे ग्रीवायामिन्द्र आश्रितः ।
रक्षांसि कुक्षिदेशे तु साध्याचोदरसंस्थिताः ॥
चतुष्पादेषु वै धर्मः सायं जङ्घासु संस्थिताः ।
खुरमध्ये तु गन्धर्वाः खुरात्रेषु च पन्नगाः ॥
पुराणानि च आन्त्रेषु गात्रे चाप्सरसः स्थिताः ।
पृष्ठैकादशरुद्राश्च वसवः सर्वसन्धिषु ॥
श्रोणितटस्थाः पितरः सोमो लागूलमास्थितः ।
आदित्याचाप्यधो वाला: पिण्डीभूता व्यवस्थिताः ॥
साक्षागङ्गा च गोमूत्रे गोमये यमुना तथा ।
क्षीरे सरस्वती देवी नर्मदा रुधिरे स्थिता ॥
हुताशनः स्वयं सर्पिर्ब्राह्मणानां गुरुः परः ।

अष्टाविंशतिदेवानां कोट्यो रोमसु संस्थिताः ॥
उदरे पृथिवी ज्ञेया सरौलवनकानना ।
चत्वारः सागराः पूर्णा गवां ये तु पयोधराः ॥

इतिन्यस्य ध्यायेत्
या लक्ष्मीः सर्वभूतानां सर्वदेवेष्ववस्थिता ।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥
विष्णुवक्षसि या लक्ष्मीः स्वाहा या च विभावसोः ।
चन्द्रार्कशकशक्तिर्या धेनुरूपा समाश्रये ॥
चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्या लक्ष्मीर्धनदस्य च ।
या लक्ष्मीलोकपालानां सा धेनुर्वरदा भव ॥
सौरभेयि सर्वहिते पवित्रे पापनाशिनि ।
प्रगृह्णीष्व मया दत्तं पाद्यं त्रैलोक्यवन्दिते ॥ पाद्यम ।
सर्वदेवमये देवि सर्वतीर्थमये शुभे ।
इतियमोक्तां गोमती विद्यां जपेत्
महाभारतेऽपि गोमती-
गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृङ्गषः पयोमुचः।
सुरभ्यः सौरभेय्यश्च सरितः सागरं यथा॥
गावै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम् ।इति॥
गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥
इति पठित्वा धेनुं द्विजं च प्रदक्षिणीकृत्य दद्यादित्यपि बदन्ति दक्षिणामाह वसिष्ठो गोदानप्रकरणे -
सुवर्ण परमं दानं सुवर्ण दक्षिणा परा।
सुवर्ण पावनं प्राहुः परिमाणं परं तथा।
यजमानस्ततो दद्याद्यथाशक्त्या तु दक्षिणाम् ।इति॥
'तदशक्तपरम्' इति मदनः ।

बोध प्रश्न –

1. शैय्या दान में किसका दान किया जाता है?

क. शयन किये जाने वाली सामग्री ख. लकड़ी ग. चूल्हा घ. वस्त्र

2. शय्या दान के समय ब्राह्मण को क्या बोलना चाहिये। ?

क. कल्याणमस्तु ख. ॐ स्वस्ति ग. मंगलम भवतु घ. कोई नहीं

3. शैय्या दान कब किया जाता है?

क. मृत्यु के समय ख. मृत्यु के उपरान्त ग. जीवीत घ. कोई नहीं

4. शैय्या दान की विधि किस पुराण में दी है?

क. स्कन्द ख. गरूड़ पुराण ग. विष्णु घ. नारद पुराण

5. शैय्या दान में किस भगवान की मूर्ति रखी जाती है।

क. गणेश ख. लक्ष्मी नारायण ग. शिव पार्वती घ. कोई नहीं

17.5 सारांश

प्रस्तुत अध्ययन के बाद आपने जान लिया है कि शैय्या दान प्रकरण में शयन करने के लिए जितनी सामग्रियों की आवश्यकता होती है सबको एकत्रित करके गंध, पुष्प, धूप, वस्त्र, तांबूल, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, दीप, उपानह, छत्र, चामर, व्यजन, आसन, सप्तधान्य और घी से भरा हुआ एक घड़ा तथा इसके ऊपर स्वर्ण की लक्ष्मीनारायण की मूर्ति को रखें। यजमान पूर्वमुख या उदङ्मुख होकर आचमन प्राणायाम करके संकल्प करें कि इस व्रत के उद्यापन हेतु मैं शय्यादान कर रहा हूँ। उसके लिए दिये जाने वाले ब्राह्मण का एवं लक्ष्मीनारायण तथा शय्या का पूजन कर रहा हूँ।

17.6 पारिभाषिक शब्दावली

शैय्या – शयन करने के लिए आवश्यक सामग्री

एकत्रित – इकट्ठा करना

सप्तधान्य – सप्त प्रकार के धान

स्वर्ण – सोना

उद्यापन – व्रत के समाप्ति करने के निमित्त किया जाने वाला कर्मकाण्ड

17.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क

2. ख

3. ख

4. क

5. ख

17.8 सहायक पाठ्यसामग्री

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरिज

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

17.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरीज, वाराणसी

निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन, वाराणसी

व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

17.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. शैय्या दान से आप क्या समझते है?
2. शैय्या दान की विधि क्या है?
3. कर्मकाण्ड में शैय्या दान के महत्व पर प्रकाश डालें।

इकाई - 18 विविध दान विधान

इकाई की संरचना

18.1 प्रस्तावना

18.2 उद्देश्य

18.3 विविध दान विधान

18.4 सारांश

18.5 पारिभाषिक शब्दावली

18.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

18.7 सहायक पाठ्यसामग्री

18.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

18. 9 विविध दान विधान

18.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-301 से सम्बन्धित है, जिसका शीर्षक है- विविध दान विधान। इससे पूर्व की इकाई में आपने गोदान और शैय्या दान विधान का ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

विविध दान विधान से तात्पर्य है - शास्त्रों में दान की जो विधि बतलायी गयी है उसका अध्ययन करना और सार्वकालिक विविध दान विधान को समझना। कर्मकाण्ड में दान विधि का बड़ा महत्व बतलाया गया है। शास्त्रों में वस्तुओं का दान से लेकर कई प्रकार के दानों का उल्लेख मिलता है। प्राचीन समय से दान लेना और दान देना मानव जीवन का एक अभिन्न अंग भी रहा है। युगानुरूप इसकी विधि और क्रियाओं में अन्तर द्रष्टव्य होता है। आइए हम सब इस इकाई के माध्यम से कर्मकाण्ड जनित विविध दानों का विधान जानने का प्रयास करते है।

18.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –

- दान किसे कहते है।
- विविध दान का विधान क्या है।
- मानव जीवन में दान का महत्व क्या है।
- कर्मकाण्ड में दानों की विधि क्या है।

18.3 विविध दान विधान

दान का विधान दान के प्रकार (जैसे सात्विक, राजसिक, तामसिक), पात्र (योग्य व्यक्ति), दान की विधि और समय (जैसे अन्न दान, विद्या दान), और वर्तमान कालखण्ड के अनुसार कानूनी पहलुओं (जैसे दान पत्र का निबंधन) से संबंधित है, जो दान देने वाले के लिए शुद्ध परिणाम और दान लेने वाले के लिए सही उपयोग सुनिश्चित करता है।

दान का शाब्दिक अर्थ है - 'देने की क्रिया'। सभी धर्मों में सुपात्र को दान देना परम् कर्तव्य माना गया है। हिन्दू धर्म में दान की बहुत महिमा बतायी गयी है। आधुनिक सन्दर्भों में दान का अर्थ किसी जरूरतमन्द को सहायता के रूप में कुछ देना है। दान किसी वस्तु पर से अपना अधिकार समाप्त करके दूसरे का अधिकार स्थापित करना दान है। साथ ही यह आवश्यक है कि दान में दी हुई

वस्तु के बदले में किसी प्रकार का विनिमय नहीं होना चाहिए। इस दान की पूर्ति तभी कही गई है जबकि दान में दी हुई वस्तु के ऊपर पाने वाले का अधिकार स्थापित हो जाए। मान लिया जाए कि कोई वस्तु दान में दी गई किंतु उस वस्तु पर पानेवाले का अधिकार होने से पूर्व ही यदि वह वस्तु नष्ट हो गई तो वह दान नहीं कहा जा सकता। ऐसी परिस्थिति में यद्यपि दान देनेवाले को प्रत्यवाय नहीं लगता तथापि दाता को दान के फल की प्राप्ति भी नहीं हो सकती।

सात्विक, राजस और तामस, इन भेदों से दान तीन प्रकार का कहा गया है। जो दान पवित्र स्थान में और उत्तम समय में ऐसे व्यक्ति को दिया जाता है जिसने दाता पर किसी प्रकार का उपकार न किया हो वह सात्विक दान है। अपने ऊपर किए हुए किसी प्रकार के उपकार के बदले में अथवा किसी फल की आकांक्षा से अथवा विवशतावश जो दान दिया जाता है वह राजस दान कहा जाता है। अपवित्र स्थान एवं अनुचित समय में बिना सत्कार के, अवज्ञतार्पूक एवं अयोग्य व्यक्ति को जो दान दिया जात है वह तामस दान कहा गया है।

कायिक, वाचिक और मानसिक इन भेदों से पुन: दान के तीन भेद गिनाए गए हैं। संकल्पपूर्वक जो सूवर्ण, रजत आदि दान दिया जाता है वह कायिक दान है। अपने निकट किसी भयभीत व्यक्ति के आने पर जौ अभय दान दिया जाता है वह वाचिक दान है। जप और ध्यान प्रभृति का जो अर्पण किया जाता है उसे मानसिक दान कहते हैं।

- **विद्या दान** - विद्या देना
- **भू दान** - भूमि देना
- **अन्न दान** - खाना देना
- **कन्या दान** - कन्या को विवाह के लिए वर को देना
- **गो दान** - गाय देना

जिस व्यक्ति को दान दिया जाता है उसे दान का पात्र कहते हैं। तपस्वी, वेद और शास्त्र को जाननेवाला और शास्त्र में बतलाए हुए मार्ग के अनुसार स्वयं आचरण करनेवाला व्यक्ति दान का उत्तम पात्र है। यहाँ गुरु का प्रथम स्थान है। इसके अनंतर विद्या, गुण एवं वय के अनुपात से पात्रता मानी जाती है। इसके अतिरिक्त जामाता, दौहित्र तथा भागिनेय भी दान के उत्तम पात्र हैं। ब्राह्मण को दिया हुआ दान षड्गुणित, क्षत्रिय को त्रिगुणित, वैश्य का द्विगुणित एवं शूद्र को जो दान दिया जाता है

वह सामान्य फल को देनेवाला कहा गया है। उपर्युक्त पात्रता का परिगणन विशेष दान के निमित्त किया गया है। इसके सिवाय यदि अन्न और वस्त्र का दान देना हो तो उसके लिए उपर्युक्त पात्रता देखने की आवश्यकता नहीं है। तदर्थ बुभुक्षित और विवस्त्र होना मात्र ही पर्याप्त पात्रता कही गई है।

दातव्य द्रव्य के तीन भेद गिनाए गए हैं - शुक्ल, मिश्रित और कृष्ण। शास्त्र, तप, योग, परंपरा, पराक्रम और शिष्य से उपलब्ध द्रव्य शुक्ल कहा गया है। कुसीद, कृषि और वाणिज्य से समागत द्रव्य मिश्रित बतलाया गया है। सेवा, द्यूत और चौर्य से प्राप्त द्रव्य को कृष्ण कहा है। शुक्ल द्रव्य के दान से सुख की प्राप्ति होती है। मिश्रित द्रव्य के दान से सुख एवं दु:ख, दोनों को उपलब्धि होती है। कृष्ण द्रव्य का दान दिया जाए तो केवल दु:ख ही मिलता है। द्रव्य की तीन ही परिस्थितियाँ देखी जाती हैं - दान, भोग और नाश। उत्तम कोटि के व्यक्ति अपने द्रव्य का उपयोग दान में करते हैं। मध्यम पुरुष अपने द्रव्य का व्यय उपभोग में करते हैं। इन दोनों से अतिरिक्त व्यक्ति अपने द्रव्य का उपयोग न दान में ही करते हैं न उपभोग में। उनका द्रव्य नाश को प्राप्त होता है। इस प्रकार के व्यक्तियों की गणना अधम कोटि में होती है।

दान के महादान, लघुदान और सामानय दान प्रभृति अनेक भेद गिनाए गए हैं। महादान भी 16 तरह के कहे गए हैं। इनमें तुलादान को प्राथमिकता मिली हैं। इस तुलादान का अनुष्ठान तीन दिनों में संपन्न होता है। प्रथम दिन तुलादान करनेवाला व्यक्ति और उस अनुष्ठान को संपादित करानेवाले विद्वान् लोग दूसरे दिन उपवास और नियमपालन करने का संकल्प करते हैं दूसरे दिन प्रात:काल उठकर अपने आवश्यक दैहिक कृत्य से निवृत्त होकर स्नान और दैनिक आह्निक से छुट्टी पाकर अनुष्ठानमंडप के निकट उपस्थित होते हैं। प्रारंभ में संकल्पपूर्वक महागणपतिपूजन, मातृकापूजन, वसोर्धारापूजन, नांदीश्राद्ध और पुण्याहवाचन होता है। प्रथम शुद्ध की हुई भूमि पर मंडप, कुंड और वेदियों का जो निर्माण हो चुका है उसका संस्कार किया जाता है वस्त्र, अलंकार और पताका से मंडप का प्रसाधन किया जाता है। यजमान के द्वारा अनुष्ठान के निमित्त आचार्य, ब्रह्मा और ऋत्विजों का वरण किया जाता है। सभी विद्वानों का मधुपर्क से अर्चन होता है। इस प्रकार के महादान के अवसर पर चारों वेदों के जानकार विद्वानों की अपेक्षा होती है। आचार्य की जानकारी उसी वेद की होनी चाहिए जो वेद यजमान का हो। यजमान के वेद के अनुसार अनुष्ठान का समस्त कार्य होना चाहिए। अन्य वेदों के जानकार विद्वानों में ऋग्वेदी विद्वान् मंडप के पूर्व द्वार पर, यजुर्वेदी विद्वान् दक्षिण द्वार पर, सामवेदी विद्वान् पश्चिम द्वार पर और अथर्ववेदी विद्वान् उत्तर द्वार पर बैठते हैं। वहीं पर बैठे हुए रक्षा एवं शांति के निमित्त वैदिक मंत्रपाठ करते हैं।

तीसरे दिन वैदिक शांतिपाठपूर्वक कुंड में सविधि अग्निस्थापन होता है। वेदियों पर देवता, दिक्पाल और नवग्रह प्रभृति का स्थापन और पूजन होता है। होतृगण देवता के प्रीत्यर्थ हवन करते हैं। अनंतर दिक्पालों के प्रीत्यर्थ बलिदान करके पूर्वांग कृत्य की समाप्ति होती है।

प्रधान कृत्य के प्रारंभ में यजमान के द्वारा विद्वानों को शय्या "दान" में दी जाती है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि अन्य विद्वानों को जो दिया जाए उससे आचार्य को द्विगुणित दिया जाना चाहिए। शय्यादान के अनंतर मंगलवाद्य एवं मंगलगीत के साथ प्रधान कृत्य का प्रारंभ होता है। सभी विद्वान् वैदिक मंत्रों का पाठ करते हुए यजमान को मांगलिक स्नान कराते हैं। अनंतर यजमान शुद्ध वस्त्र एवं माला धारण किए हुए अंजलि में पुष्प लेकर तुला की तीन प्रदक्षिणा करता है। अंजलि के पुष्पों को देवता को चढ़ाकर दाहिने हाथ में धर्मराज की और बाएँ हाथ में सूर्य की सुवर्णप्रतिमा लेता है। पूर्व की ओर मुँह किए हुए तुला के उत्तरी भाग में पद्मासन से बैठता है। अपने सम्मुख स्थापित विष्णु की प्रतिमा को देखता रहता है। विद्वान् लोग तुला के दक्षिण भाग पर सुवर्णखंड रखते हैं। ये सुवर्णखंड इतने होने चाहिए जो यजमान के बोझ से कुछ अधिक हों। इस प्रकार कुछ क्षण तुला पर बैठकर यजमान नीचे उतर आता है। तुला पर रखा हुआ स्वर्ण विद्वानों को अर्पित किया जाता है। इस सुवर्ण से अतिरिक्त भूमि, रत्न और दक्षिणा विद्वानों को दी जानी चाहिए। इस प्रकार तुलादान की संक्षिप्त रूपरेखा यहाँ दिखलाई गई हैं। इसके अतिरिक्त सुवर्णाचल, रौप्याचल और धान्याचल प्रभृति महादान एवं सामान्य दान हैं जो दान के विधानों के प्रतिपादक ग्रंथों में देखने चाहिए।

वैदिक ग्रंथों के अनुसार दान करने के समय स्नान करके पहले शुद्ध स्थान को गोबर से लीप ले, फिर उसपर बैठकर दान दे और उसके बाद दक्षिणा दे। जहाँ गंगा आदि तीर्थ हों उन्हीं स्थानों को दान के लिपे उपयुक्त कहा है। इन स्थानों पर गाय, तिल, जमीन और सुवर्ण आदि का दान करना चाहिए। बालकों के लिए खिलौने दान करने से विशेष पुण्य बताया है। ग्रहों की शांति के लिए भी दान विधान है।

श्रद्धा, तुष्टि, भक्ति, ज्ञान अलोभ, क्षमा और सत्य ये सात गुण दाता के लिए आवश्यक है। पड़गाहना करना, उच्च स्थान देना, चरणों का उदक ग्रहण करना, अर्चन करना, प्रणाम करना, मन वचन और काय तथा भोजन की शुद्धि रखना - इन नौ प्रकारों से दान देनेवाला दाता पुण्य का भागी होता है।

ये हैं महादान :-

शास्त्रों में दस वस्तुओं के दान को महादान बताया गया है, वे निम्न हैं :-

1. गाय

2. भूमि

3. तिल

4. स्वर्ण (सोना)

5. रजत (चांदी)

6. घी

7. वस्त्र

8. धान्य

9. गुड़

10. नमक (लवण)

तण्डुल पाकपात्र (बड़ा टोकना) **दान विधि** -

- पूर्वाभिमुख **तण्डुल पाकपात्र** (चावल सहित) पर तीन बार इस मंत्र से पुष्पाक्षत छिड़के : **ॐ सतण्डुल पैत्तल तण्डुल पाकपात्राय नमः नमः ॥३॥**
- ब्राह्मण के दाहिने पैर की पुष्पाक्षत से तीन बार पूजा करे : **ॐ ब्राह्मणाय नमः ॥३॥**
- ब्राह्मण को तिल-जल दे : **ॐ इदं सतण्डुल पैत्तल तण्डुल पाकपात्रं ददानि ॥**
- ब्राह्मण दाहिने हाथ से ग्रहण करके **"ॐ स्वस्ति"** कहे।
- **सतण्डुल तण्डुल पाकपात्र** को कुशोदक से अभिसिक्त करे।
- पुनः तिल, जल लेकर इस मंत्र से त्रिकुशा व तिल-जल ब्राह्मण को दे : **ॐ अद्य ……… गोत्रस्य पितुः ……… प्रेतस्य (…… गोत्रायाः मातुः ………. प्रेतायाः) स्वर्गप्राप्तिकाम इदं सतण्डुल पैत्तल तण्डुल पाकपात्रं विष्णु दैवतम् ……… गोत्राय ……… शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥**

- ब्राह्मण कुशजलादि ग्रहण कर **'ॐ स्वस्ति'** कहें।
- पुनः त्रिकुश, तिल, जल, दक्षिणा लेकर दक्षिणा करे : **ॐ अद्य कृतैतत् सतण्डुल पैत्तल तण्डुल पाकपात्र दान प्रतिष्ठार्थं एतावत् द्रव्यमूल्यकं हिरण्यं अग्नि दैवतं .... गोत्राय .... शर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥**
- ब्राह्मण **'ॐ स्वस्ति'** कहकर दक्षिणा ले ले और **सतण्डुल पैत्तल तण्डुल पाकपात्र** स्पर्श करे।
- सोलह महादानों का वर्णन
- शास्त्रों में दान की अपरिमित महिमा आयी है और दान में देय-द्रव्यों की भी संख्या अपरिगणित ही है, किंतु उसमें विशेष बात यह है कि देयवस्तु में दाता का स्वत्वाधिकार होना चाहिए। पुरुषों तथा स्त्रियों में दान के कुछ पदार्थों की संख्या भी नियत रूप में आयी है, जैसे सोलह महादान, दसदान, अष्ट दान, पंचधेनु दान आदि। यहाँ सोलह महादानों की संक्षेप में चर्चा प्रस्तुत है
- एक बार की बात है, सूत से ऋषियों ने प्रश्न किया कि हे सूतजी! सभी शास्त्रों में न्यायपूर्वक धनार्जन, सत्प्रयत्नपूर्वक उसकी वृद्धि, उसकी रक्षा और सत्पात्र को उसको दान करना-कहा गया है तो कृपया बतायें कि वह कौन-सा दान है, जिसके करने से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है ? महादान को भगवान विष्णु पृथ्वी लोक में सोलह रूपों में विभक्त बताया है। वे सभी सोलह दान पुण्यप्रद, पवित्र, दीर्घ आयु प्रदान करने वाले, सभी पापों के विनाशक तथा अत्यन्त मङ्गलकारी हैं। वे दान ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश आदि देवताओं द्वारा पूजित हैं
- यत् तत् षोडशधा प्रोक्तं वासुदेवेन भूतले। पुण्यं पवित्रमायुष्यं सर्वपापहरं शुभम् ॥ पूजितं देवता भिश्च ब्रह्म विष्णु शिवादिभिः ।
- (मत्स्यपु० २७४। ५-६)
- इन दानों की अतीव महिमा है जो निष्काम भावसे इन सोलह महादानों को करता है, उसे पुनः इस मर्त्यलोक में आना नहीं पड़ता, वह मुक्त हो जाता है।
- षोडशैतानि यः कुर्यान्महादानानि मानवः ।
- न तस्य पुनरावृत्तिरिह लोकेऽभि जायते॥
- (मत्स्यपु० २८९। १६)
- ये सोलह दान इस प्रकार हैं
- (१) तुलापुरुषदान, (२) हिरण्यगर्भ दान, (३) ब्रह्माण्डदान, (४) कल्पवृक्षदान, (५) सहस्रनाम, (६) हिरण्यकामधेनुदान, (७) हिरण्याश्वदान, (८) हिरण्य श्वरथदान, (९)

हेमहस्तिरथदान, (१०) पञ्चलांगलकदान, (११) धरादान, (१२) विश्वचक्रदान, (१३) कल्पलतादान, (१४) सप्तसागरदान, (१५) रत्नधेनुदान तथा (१६) महाभूत घटदान।

- सोलह महादानों की परम्परा-प्राचीन काल में इन दानों को भगवान वासुदेव ने किया था, उसके बाद राजर्षि अम्बरीष, भृगुवंशी परशुरामजी, सहस्रबाहुवाले राजा कार्तवीर्यार्जुन, भक्तराज प्रह्लाद, आदिराज पृथु तथा भरत आदि अन्यान्य श्रेष्ठ राजाओं ने किया था। ये सभी दान सामान्य सामर्थ्यवाले के लिये कठिन प्रतीत होते हैं। अत: साधन सम्पन्न पुरुषों द्वारा अपने कल्याण के लिये इन महादानों का अनुष्ठान होता रहा है। इन दानों में से यदि एक भी दान सम्पन्न हो जाय तो उसके सत्फल की इयत्ता नहीं है। इन दानों को करने से पूर्व भगवान वासुदेव, शंकर और भगवान् विनायक की आराधना करनी चाहिये तथा ब्राह्मणों की आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये। किसी तीर्थ, मन्दिर या गोशाला में, कूप, बगीचा या नदी के तट पर, अपने घर पर या पवित्र वन में अथवा पवित्र तालाब के किनारे इन मतदान को करना चाहिये। चूँकि यह जीवन अस्थिर है, सम्पत्ति अत्यन्त चंचल है, मृत्यु सर्वदा केश पकड़े खड़ी है; इसलिये दानादि धर्माचरण करना चाहिये अनित्यं
- जीवितं यस्माद् वसु चातीव चञ्चलम्। केशेष्वेव गृहीतः सन्मृत्युना धर्ममाचरेत्॥
- (मत्स्य पु० २७४। २४)
- महादानों को कब करे- मत्स्यभगवान ने मनुजी को बताया है कि हे राजन्! संसार-भय से भयभीत मनुष्य को अयनपरिवर्तन के समय (कर्क तथा मकर की संक्रान्ति), विषुवयोग में, पुण्यदिनों, व्यतीपात, दिनक्षय तथा युगादि तिथियों में, सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय, मन्वन्तर के प्रारम्भ में, संक्रांति के दिन, द्वादशी तथा अष्टमी (हेमन्त, शिशिर ऋतुओं के कृष्ण पक्ष की चारों अष्टमी) तिथियों तथा यज्ञ एवं विवाह के अवसर पर, दुःस्वप्न देखने पर या किसी अद्भुत उत्पात के होने पर यथेष्ट द्रव्य तथा ब्राह्मण के मिलने पर अथवा जब जहाँ श्रद्धा उत्पन्न हो जाय, इन दानों को करना चाहिये।
- इन सोलह महादानों में तुलादान या तुलापुरुष दान सर्वप्रथम परिगणित है, इसकी विस्तृत विधि पुराणों में बतायी गयी है। तुलापुरुषदान में तुला का निर्माणकर तुला के एक ओर तुलादान करने वाला तथा दूसरी ओर दाता के भार के बराबर की वस्तु तौलकर ब्राह्मण को दान में दी जाती है। तुलादान में इन्द्रादि आठ लोकपालों का विशेष पूजन होता है। तुला में अधिरोहण से पूर्व तुलादाता को श्वेत वस्त्र धारणकर अंजलि में पुष्प लेकर उस तुला की तीन बार परिक्रमा करनी चाहिये और मन्त्रों से उसे अभिमंत्रित करना चाहिये तदनन्तर दाता तुला में आरोहण कर स्थित हो जाए।
- ब्राह्मण गण तुला के दूसरी ओर स्वर्ण आदि (तुलनीय द्रव्य) तब तक रखते जायें, जब तक तराजू का वह पलड़ा भूमिपर स्पर्श न कर ले।

- इसके अनन्तर तुला से उतरकर उस स्वर्ण का दान कर देना चाहिये। यह बताया गया है कि बुद्धिमान् पुरुष उस तौले हुए स्वर्ण को अधिक देरतक अपने घर में न रखे 'न चिरं धारयेद् गेहे सुवर्ण प्रोक्षितं बुधः ॥ (मत्स्यपुराण २७४। ७३)
- ऐसा करने से अर्थात् देर तक रखने से वह भय, व्याधि तथा शोक आदि को देने वाला होता है। अतः शीघ्र ही उसका दान कर देना चाहिये। उसे शीघ्र ही दूसरे को दे देने से मनुष्य श्रेयका भागी हो जाता है।
- दानमयूख में बताया गया है कि रत्न, रजत (चाँदी), लौह आदि धातु, घृत, लवण, गुड़, शर्करा, चन्दन, कुमकुम, वस्त्र, सुगन्धित द्रव्य, कर्पूर, फल तथा अन्नादि द्रव्यों से भी विविध कामनाओं की पूर्ति के लिये तुलादान किया जाता है। इसी प्रकार विविध रोगों की शांति के लिये तथा मृत्युंजय देवता की प्रसन्नता के लिये भी विविध वस्तुओं से तुलादान किया जाता है, सभी रोगों की शांति के लिये लौह से तुलादान किया जाता है-'अथ लोहे प्रदातव्यं सर्वर उपशान्तये' (दानमयूखमें गरुड़ पुराण का वचन)।
- महादानों में दूसरा महादान हिरण्यगर्भ दान है, इसकी विधि भी तुलापुरुषदान के समान है । इसमें सुवर्णमय कलश का विशेष विधि से दान किया जाता है, तीसरा दान है ब्रह्माण्ड दान। इसमें सुवर्ण का ब्रह्माण्ड बनाकर दान किया जाता है, चौथे कल्पपादपदान में सुवर्णमय कल्पवृक्ष का दान होता है। पाँचवें सहस्रनाम के अन्तर्गत एक नन्दिकेश्वर तथा हजार गौओं का दान होता है, उन्हें स्वर्ण से निर्मित किया जाता है। छठे कामधेनुदान में सुवर्ण की धेनु तथा सुवर्ण का ही वत्स बनाकर दान किया जाता है। इसी प्रकार सुवर्णमय अश्व तथा सुवर्णमय अश्वरथ का दान होता है। नौवाँ दान सुवर्णनिर्मित हस्तिरथ का होता है, ऐसे ही दसवाँ दान पंचलांगल दान है। लांगल हल को कहते हैं। इसमें सुवर्णनिर्मित पाँच हल और दस वृष के साथ भूमि का दान होता है। ग्यारहवाँ दान सुवर्णमयी पृथ्वी का दान है । इसका नाम हेमधरादान भी है। इसमें जम्बूद्वीप के आकार की भाँति सोने की पृथ्वी बनवाकर उसका दान किया जाता है । बारहवें विश्व चक्र दान में सोने से विश्व चक्र बनाकर उसके नाभि कमल पर चतुर्भुज विष्णु की प्रतिमा को स्थापितकर उसका दान किया जाता है। तेरहवां दान कनककल्पलता नामक महादान है। चौदहवाँ सप्तसागर नाम का दान है। इसमें सुवर्ण में सात कुण्ड बनाकर प्रथम कुण्ड को लवण से, द्वितीय कुण्ड को दुग्ध से, इसी प्रकार घृत, गुड़, दही, चीनी तथा सातवें को तीर्थोंके जलसे भरकर उसमें विविध देवताओं की सुवर्णमय प्रतिमा का स्थापन कर विशेष विधिसे दान किया जाता है। पन्द्रहवाँ महादान रत्नधेनुदान है, इसमें पृथ्वी पर कृष्ण मृगचर्म बिछाकर उसके ऊपर लवण बिछाकर उसके ऊपर रत्नमयी धेनु को स्थापित करे, विविध रत्नों द्वारा रत्नमयी धेनु का निर्माण होता है। तदनन्तर विधिपूर्वक उसका आवाहनकर दान किया जाता है। सोलहवाँ दान महाभूतघटदान कहा जाता है। इसमें रत्नों से जटित सुवर्णमय कलश की स्थापना कर दुग्ध और घृत से उसे

परिपूर्ण किया जाता है। उस घट में देवताओं तथा वेदों का आवाहन करना चाहिये। तदनन्तर यथाविधि उसका दान किया जाता है।

दान के प्रकार और पात्र

- **सात्विक दान:**

बिना किसी अपेक्षा के, सही समय और सही व्यक्ति को किया गया दान, जो सर्वोत्तम फलदायी होता है।

- **राजसिक दान:**

फल की अपेक्षा के साथ, या किसी स्वार्थ के लिए किया गया दान।

- **तामसिक दान:**

अनुचित व्यक्ति, स्थान या समय पर किया गया दान, जो अयोग्य माना जाता है।

- **सत्पात्र दान:**

दान हमेशा योग्य व्यक्ति को दिया जाना चाहिए।

दान की विधि और समय

- सोच-समझकर दान करना:

दान देने से पहले उसकी ज़रूरतों को ध्यान में रखना चाहिए ताकि दान सही व्यक्ति तक पहुँचे।

- **अनामित दान:**

नाम और प्रसिद्धि की इच्छा के बिना, गुप्त रूप से दान करना।

- **स्वयंसेवी दान:**

अपने समय, योग्यता और विशेषज्ञता का दान करके समाज की सेवा करना।

- **समय का महत्व:**

कुछ ग्रंथों के अनुसार, गोदान (गाय का दान), विद्या दान, और अन्न दान को महादान माना गया है।

बोध प्रश्न -

1. दान का शाब्दिक अर्थ है –

   क. देना ख. देने की क्रिया ग. लेना घ. देना

2. दान किसको देना चाहिये।

   क. कुपात्र को ख. सभी को ग. सुपात्र को घ. किसी को नहीं

3. सनातन धर्म में सबसे बड़ा दान है?

   क. स्वर्ण ख. गौ ग. शैय्या घ. वस्त्र

4. अपने कमाई का कितना प्रतिशत दान करना चाहिये।

   क. 5 ख. 10 ग. 15 घ. 20

5. आधुनिक सन्दर्भ में दान किसे करना चाहिये।

   क. सुपात्र ख. जरूरतमंद ग. कुपात्र घ. ब्राह्मण

18.5 सारांश

प्रस्तुत अध्ययन के बाद आपने जान लिया है कि दान का शाब्दिक अर्थ है - 'देने की क्रिया'। सभी धर्मों में सुपात्र को दान देना परम् कर्तव्य माना गया है। हिन्दू धर्म में दान की बहुत महिमा बतायी गयी है। आधुनिक सन्दर्भों में दान का अर्थ किसी जरूरतमन्द को सहायता के रूप में कुछ देना है। दान किसी वस्तु पर से अपना अधिकार समाप्त करके दूसरे का अधिकार स्थापित करना दान है। साथ ही यह आवश्यक है कि दान में दी हुई वस्तु के बदले में किसी प्रकार का विनिमय नहीं होना चाहिए। इस दान की पूर्ति तभी कही गई है जबकि दान में दी हुई वस्तु के ऊपर पाने वाले का अधिकार स्थापित हो जाए। मान लिया जाए कि कोई वस्तु दान में दी गई किंतु उस वस्तु पर पानेवाले का अधिकार होने से पूर्व ही यदि वह वस्तु नष्ट हो गई तो वह दान नहीं कहा जा सकता। ऐसी

परिस्थिति में यद्यपि दान देनेवाले को प्रत्यवाय नहीं लगता तथापि दाता को दान के फल की प्राप्ति भी नहीं हो सकती।

18.6 पारिभाषिक शब्दावली

दान – देने की क्रिया
व्रतोद्यापन – व्रतान्त में किया जाने वाला कर्मकाण्ड
कामनापूर्ति – कामना या इच्छा का पूरा होना
जरूरतमंद – जिसको आवश्यकता हो

18.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. ख
4. ख
5. ख

18.8 सहायक पाठ्यसामग्री

धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरिज
निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन
व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

18.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

दान मयुख – चौखम्भा प्रकाशन
धर्मसिन्धु – चौखम्भा साहित्य सीरीज, वाराणसी
निर्णयसिन्धु - चौखम्भा सुरभारती भवन, वाराणसी
व्रतराज – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
व्रतार्क – चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
व्रत-पर्व महोत्सव पत्रिका – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, देवतायन, जानकीनगर, वाराणसी

18.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. दान से आप क्या समझते है?
2. दस महादान क्या है?
3. दान के महत्व पर प्रकाश डालें।
4. दान पर निबन्ध लिखिये।